कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M-2304 विषय पुराण

नाव पुरुषोत्तममास माहात्म्यभाषा

लेखक / लिपीकार

पृठ 84 काळ पूर्ण / अपूर्ण

# ॥ अथ भाषाटीकासमेतपद्मपुराणांतर्गतपुरुषोत्तममासमाहात्म्यम् ॥

॥ श्रीशेषशायिने पद्मनाभाय नमः ॥







॥ इति भाषाटीकासमेतपद्मपुराणांतर्गतपुरुषोत्तममासमाहात्म्यम् ॥

# अत्रेयमभ्यर्थना.

अस्माकं मुद्रणालये वेद-वेदान्त-धर्मशास्त्र-प्रयोग-योग-सांख्य-ज्योतिष-पुराणेतिहास-वैद्यक-मंत्र-स्तोत्र-कोश-काव्य-चम्पू-नाटकाऽलं-कार-संगीत-नीतिकथाग्रंथाः, बहवः स्त्रीणां चोपयुक्ता ग्रंथाः, बृहज्ज्योतिषार्णवनामा बहुविचित्रचित्रितोऽयमपूर्वग्रन्थः संस्कृतभाषया, लक्ष्मणमाली श्रीदिभाषाग्रन्थास्तत्तच्छास्त्रार्थानुवादकाः, चित्राणि, पुस्तकमुद्रणोपयोगिन्यो यावत्यस्सामग्र्यः, स्वस्वलौकिकव्यवहारोपयो-गिचित्रविचित्रकालिमलपत्रव्यपुस्तकानि च; मुद्रयित्वा प्रकाशन्ते सुलभेन विक्रयाय । येषां यत्राभिरुचिस्तत्तत्पुस्तकाद्युपलब्धये एवं नव्यतया स्वस्वपुस्तकानि मुमुद्रयिषुभिः सुलभयोग्यमौल्येन सीसकाक्षरैः स्वच्छोत्तमोत्तमपत्रेषु मुद्रितपुस्तकानां स्वस्वसमयानुसारेणोपलब्धये च पत्रि-काद्वारा बोधनीयोऽस्मि ।

अधिकमस्मदीयसूचीपुस्तकस्य भिन्नभिन्नविषयकस्य प्रापणेन "श्रीवेंकटेश्वरसमाचार" पत्रप्रापणेन च ज्ञेयमिति शम् ।


क्षेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर ( स्टीम् ) यन्त्रालयाध्यक्षः ( खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटालेन, ) मुंबईस्थः

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बंबई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटालेन निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया.

दोहा–गौरिगिरागणराजश्री, हरिहरब्रह्ममनाय ॥ श्रीपुरुषोत्तममासकी, भाषा लिखत बनाय ॥ १ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीमत् लम्बोदर ईशाननन्दन आनन्दके बढानेवाले आप विघ्नरूपी वल्लीके नाश करनेको कुठार हो अशुभ दूर करते हो मैं आपकी शरणको प्राप्त होताहूं ॥ १ ॥ मैं सद्गुरुके चरणकमलको प्राप्त होताहूं जिनकी कृपालेशसे आनन्दित हो सज्जन प्रपंचरूपी सागरके पार

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ श्रीमल्लंबोदरेशाननंदनानंदवर्द्धन ॥ विघ्नवल्ली कुठारेशत्वांप्रपद्येमहाशुभम् ॥ १ ॥ वंदेसद्गुरुपादाब्जंयत्कृपालेशनंदिताः ॥ जायंतेसज्जनाःसद्यःप्रपंचार्णवपारगाः ॥ २ ॥ कदा चित्पर्यटंस्तीर्थयात्रामुद्दिश्यधार्मिकः ॥ सूतःपौराणिकोव्यासशिष्योधर्मार्थकोविदः ॥ ३ ॥ बहुतीर्थाम्भसिस्नातःसमगान्नैमिषा लयम् ॥ तत्रापश्यद्द्विजगणैर्वेष्टितंशौनकंप्रभुम् ॥ ४ ॥ मूर्तिमद्भिरिवादित्यैर्वेदवेदांगपारगैः ॥ दिगंबरैर्मुक्तकेशैरंबुवाताशनैरपि ॥ ॥ ५ ॥ निराहारैर्निष्कपटैस्तपसादग्धकिल्बिषैः ॥ आब्रह्मस्पृहणीयैःसच्छ्रद्धापूतांतरात्मभिः ॥ ६ ॥

होजाते हैं ॥ २ ॥ किसी समय तीर्थ यात्राके उद्देशसे परमधार्मिक पुराणके जाननेवाले व्यासजीके शिष्य धर्म अर्थ काम मोक्षकी विद्यामें चतुर सूतजी ॥ ३ ॥ अनेक तीर्थोंमें स्नान करके नैमिषारण्यमें आये; वहां ब्राह्मणोंके सहित कुलपति शौनकजीको देखा ॥ ४ ॥ सूर्यकी समान प्रकाश मान वेदवेदांगके पारगामी दिगम्बर खुले केश जल और पवनके आहारवाले ॥ ५ ॥ निराहार रहनेवाले कपटसे रहित तपसे क्षीणपाप ब्रह्मपर्यन्त

श्रेष्ठ श्रद्धासे पवित्र आत्मावाले ॥ ६ ॥ आस्तिक्य ब्रह्मज्ञानके पात्र चिन्तासे रहित सूर्यको शंकित करनेवाले शापानुग्रह करनेमें समर्थ ॥ ७ ॥ बहुत ऋचा अर्थात् ऋग्वेदके जाननेवाले साम गानेवाले दिव्य यजुर्वेदी गणोंके पवित्र करनेवाले अथर्वज्ञाता उग्र तेजस्वी सब लोकोंसे नमस्कृत ॥ ८ ॥ बहुत ऋचाओंके जाननेवाले वृद्धसम्मत भार्गवकुलोत्पन्न देवताओंमें इन्द्रकी समान ॥ ९ ॥ इनको देखतेही उन्होंने सत्य और विनयवान् पवित्र

आस्तिक्यैर्ब्रह्मसंदोहचिंतानिस्तीर्णहायनैः ॥ परिशंकितमार्तण्डैः शापानुग्रहकारकैः ॥ ७॥ बह्वृचैःसामगैर्दिव्यैर्यजुषांगणपाठकैः ॥ आथर्वणैरुग्रतेजैःसर्वलोकनमस्कृतैः ॥ ८॥ बह्वृचंभार्गवमुनिंशौनकंवृद्धसंमतम् ॥ शिष्यैरुपेतंश्रीमद्भिर्गीर्वाणैरिववासवम् ॥ ९ ॥ दृष्ट्वैवाशुननामैनंसूतोविनयवाञ्छुचिः ॥ प्रयतःप्रांजलिःप्रह्वःशिववाक्शुभलोचनः ॥ १० ॥ तमालोक्यमहातेजाब्राह्म्यालक्ष्म्या विराजितः ॥ सजातोतीवहृष्टात्माप्राणान्प्राप्ययथातनुः ॥ ११ ॥ हर्षगद्गदयावाचातमुवाचमुनीश्वरः ॥ एहिसूतमहाभाग भाग्यवानसिसांप्रतम् ॥ १२ ॥ अत्यंतशुभशीलस्त्वंयन्मेदृष्टोस्तिवैभवान् ॥ १३ ॥ चिरंजीवचिरंपाहिगृणतोनःशुभानन ॥ तिष्ठस्वोच्चासनेशुभ्रेमद्दत्तेधूतपापक ॥ १४ ॥

ऋषिको प्रणाम किया और प्रीतिसे हाथ जोडे, वह सुन्दरलोचन सुन्दर वचन कहनेवाले थे ॥ १० ॥ उन ब्राह्मीलक्ष्मीसे विराजमान महातेजस्वीने उनको देख इस प्रकारकी प्रसन्नता प्राप्त की जिसप्रकार मृतकशरीरमें प्राण आजाते हैं ॥ ११ ॥ और हर्षसे गद्गद कंठ हो मुनीश्वरने उन सूतजीसे कहा; हे महाभाग सूत ! आओ, तुम बडे भाग्यवान् हो ॥ १२ ॥ तुम अत्यन्त शुभशील हो जो मेरे नेत्रगोचर हुए हो ॥ १३ ॥ तुम चिरकालतक जीओ

हमको संसारसागरसे पार करो, आप ऊंचे आसनपर बैठिये यह हम आपके लिये प्रदान करतेहैं ॥ १४ ॥ आप प्रशंसाके योग्य व्यासशिष्य सबके शिरोमणि हो मैं तुमसे एक कथा पूछताहूं सो आप कहिये वह नारायण सम्बन्धी कथा है ॥ १५ ॥ वह बहुत कालसे विचारी हुई मेरे हृदयमें वर्तमान है आपके समान कोई अन्धकारका दूर करनेवाला नहीं है ॥ १६ ॥ जब चतुराईके भूषण सूतजीसे इसप्रकार पूछागया तब वह प्रसन्न हो

श्लाघनीयोसिपूज्योसिव्यासशिष्यशिरोमणे ॥ कथयस्वकथामेकांपृच्छामित्वांहरिप्रियाम् ॥ १५ ॥ चिंतितांचिरकालंमेहृदयेपरिवर्त्तिनि ॥ नास्तित्वत्सदृशोभूमौसंदेहतिमिरापहः ॥ १६ ॥ एवंपृष्टःशौनकेनसूतश्चातुर्यभूषणः ॥ प्रत्युवाचप्रसन्नात्माविनयानतकंधरः॥ १७ ॥ सूतउवाच ॥ शृणुविप्रेशवक्ष्यामियतोहमागतःप्रभो ॥ त्वदीयदर्शनाह्लादपूरितःकरुणानिधे ॥ १८ ॥ आदावहंगतःस्वामिंस्तीर्थंपुष्करसंज्ञितम् ॥ स्नात्वाचम्यचसंतर्प्यसुरानृषिगणान्पितॄन् ॥ १९ ॥ ततःप्रयातोयमुनामापगांपापनाशिनीम् ॥ तस्यानुवेगतस्तीर्थंपुष्कलंभोद्विजेश्वर ॥ २० ॥ सुरनद्यामनुस्नातस्ततःकाशीमुपागतः ॥ वीणायांकृष्णवेणायांगण्डक्यांपुलहाश्रमे ॥ २१ ॥

विनयसे शिरझुका कहने लगे ॥१७॥ सूतजी बोले—शौनकजी ! सुनिये जिसकारण मैं यहां आयाहूं; हे करुणानिधे ! आपहीके दर्शनकी अभिलाषा थी ॥ १८ ॥ हे स्वामिन् ! प्रथम मैं पुष्करतीर्थको गयाथा वहां स्नान कर देवता पितरोंको तृप्त कर ॥ १९ ॥ फिर पापनाशिनी यमुनाके तटपर गया । ब्राह्मणश्रेष्ठ ! वहांसे पुष्कल तीर्थको गया ॥ २० ॥ फिर गंगामें स्नान कर काशी गया वीणा कृष्णवेणी गण्डकी पुलहाश्रम ॥ २१ ॥

पु मा.

॥ २ ॥

धेनुमती रेवती सरस्वतीके तटमें तीन रात रहकर हे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! फिर मैं गोदावरीको गया ॥ २२ ॥ सीता अलकनंदा यवटोदा कृतमाला कावेरी निर्विंध्या ताम्रपर्णिका ॥ २३ ॥ तापी वैहायसी नंदा पापमोचनी नर्मदा पयोष्णी सुरता शुभ्रा अधः दोनों शोणभद्र नद ॥ २४ ॥ हे विप्र ! भद्रा दृषद्वती जो तपस्वियोंसे सेवित रहती है इसप्रकार उसमें स्नान कर पाप रहित हो चर्मण्वती नदीके तटपर आया ॥ २५ ॥ फिर वहांसे नियमित हो कल्याणी

धेनुमत्यांतुरेवत्यांततःसरस्वतीतटे ॥ त्रिरात्रमुषितोब्रह्मंस्ततोगोदावरींगतः ॥२२॥ सीतामलकनंदांवायवटोदामथोनदीम्॥कृतमालां चकावेरींनिर्विंध्यांताम्रपर्णिकाम्॥२३॥तापींवैहायसींनंदांनर्मदांपापमोचनीम्॥पयोष्णींसुरतांशुभ्रामधःशोणानदद्वयम्॥२४॥ भद्रां दृषद्वतींविप्रतापसैरुपसेविताम् ॥ पापसंघान्नाशयित्वाततश्चर्मण्वतींनदीम् ॥२५॥ ततःप्रयातःप्रयतःकल्याणींजगदंबिकाम् ॥ सर्वा भयकरींदेवींसंसारभयनाशिनीम्॥२६॥नमस्कृत्यजगद्धात्रींमहामायांसुरेश्वरीम्॥सिद्धक्षेत्रंसदारम्यंप्राप्तवान्भुविसंस्तुतम्॥२७॥एते ष्वन्येषुतीर्थेषुव्रजन्नागतवान्विभो ॥ कुरुजांगलकंदेशंयत्रागाद्भगवान्प्रभुः ॥२८॥ व्यासपुत्रोमहातेजाःशुकदेवःप्रतापवान्॥ब्रह्मभूतो मुनिवरःश्रीमान्विगतकल्मषः ॥ २९ ॥ श्रीकृष्णपदविन्यस्तमनाभूतोपकारकः ॥ जन्ममृत्युनिवृत्त्यर्थंराजाक्षत्रशिरोमणिः ॥ ३० ॥

जगदम्बाके दर्शनको गया जो देवी सम्पूर्ण भय और संसारभय नाश करनेवाली है ॥ २६ ॥ जगद्धात्री महामाया सुरेश्वरीको नमस्कार करके फिर सिद्धक्षेत्रमें आनकर प्राप्त हुआहूँ ॥ २७ ॥ हे श्रेष्ठ ! इनके सिवाय और भी सिद्ध क्षेत्रोंमें गया फिर कुरुजांगल देशोंमें गया जहां भगवान् प्रभु ॥ २८ ॥ व्यासपुत्र महातेजस्वी शुकदेवजी ब्रह्मरूप पापरहित प्राप्त हुएथे ॥ २९ ॥ जहां श्रीकृष्णके ध्यानमें मनलगाये सबके उपकारी राजोंमें शिरो

भा. टी.

अ. १

॥ २ ॥

मणि राजा परीक्षित जन्ममरणकी निवृत्तिके निमित्त ॥ ३० ॥ वह महाबाहु राजा विरक्त होकर देहादि सम्पूर्ण वस्तुओंको मलकी समान मान्ताहुआ स्थित था ॥ ३१ ॥ वहां अपनी इच्छासे घूमते हुए उसके अनुग्रह करनेको आये उन दिव्य महात्माओंको मुनियोंसे युक्त आया जान ॥ ३२ ॥ मैं भी वहां गया और उसके अनुग्रहसे स्थित हुआ वहां भवसागरसे छुडानेवाली विष्णुकी कथा सुनी ॥ ३३ ॥ जो मनुष्य एकान्त मनसे धीरतायुक्त कथा सुनते

विरक्तस्यमहाबाहोर्विष्णुरातस्यभूपतेः ॥ देहादिसकलंवस्तुमलभूतंतुयन्मते ॥ ३१ ॥ यदृच्छयागतस्तत्रतस्यानुग्रहकारणे ॥ श्रुत्वा तमागतं दिव्यं मुनिभिःपरिवारितम् ॥ ३२ ॥ गतोहमपितत्रैवसंस्थितस्तदनुग्रहात् ॥ श्रुत्वाविष्णुकथास्तत्रभवसागरमोचनीः ॥ ॥ ३३ ॥ चित्तंकृत्वामनोधीरऐहिकामुष्मिकांगतिम् ॥ निराकृत्यहरेःस्थानमंजसैवप्रपद्यते ॥ ३४ ॥ तत्रानेकाःकथाःश्रुत्वाब्रह्मरात प्रसादतः ॥ गतेपरीक्षितिस्थानमनावर्तनमुत्तमम् ॥ ३५ ॥ यत्रगत्वानशोचंतिस्पृहयंतिमनीषिणः ॥ नैतच्चित्रंगतिंज्ञात्वाहरिली लाश्रुतेःकिल ॥ ३६ ॥ सकृद्यन्नामसंस्मृत्ययावत्पातकसंततिम् ॥ दग्धुंशक्तोभवेत्कर्तुंजन्मनापिनशक्यते ॥ ३७ ॥

हैं उनको उभयलोककी प्राप्ति होती है और पापरहित हो वह नारायणके स्थानको प्राप्त होते हैं ॥ ३४ ॥ वहां शुकदेवजीके प्रसादसे अनेक कथाओंको श्रवणकर परीक्षितके पुनरागमनरहित स्थानके प्राप्त होनेपर ॥ ३५ ॥ कि जहां जाकर कोई शोच नहीं रहता मनीषी जिसकी अभिलाषा करते हैं वहां राजा गया; नारायणकी कथा सुन्नेसे यह गति हुई इसमें कुछ चित्र नहीं है ऐसा जानकर ॥ ३६ ॥ कि, एकहीबार जिनका स्मरण करनेसे

पातकोंके समूह नष्ट होजाते हैं जिससे फिर मनुष्यका जन्म नहीं होसक्ता है ॥ ३७ ॥ फिर इस साधुसम्मत परीक्षितकी मुक्ति क्यों न होती है, ब्राह्मणो ! ऐसा विचारकर मैं आपके समीप ॥ ३८ ॥ यहां आनकर प्राप्त हुवा हूं कि आप यहां यज्ञ कररहे हैं आपको देखकर प्रसन्न हुआ हूं अब मैं आपसे यह जाननेकी इच्छा करता हूं कि आपका क्या निश्चय है ॥ ३९ ॥ हे श्रेष्ठ ! जो आप मुझे स्मरण करते हैं इस कारण मैं धन्य

तत्कथंमुच्यतेनायंपरीक्षित्साधुसंमतः ॥ इतिसंचिंतयन्विप्राःसन्निधिंभवतामहम् ॥ ३८ ॥ प्राप्तवान्सत्रिणोज्ञात्वाभवतःकलितो भवात् ॥ तदनुज्ञामथेच्छामियत्कर्तास्यद्यनिश्चितम् ॥३९॥ धन्योस्म्यनुगृहीतोस्मियन्मांस्मरथसत्तमाः ॥ स्वल्पभाग्यतरंमूढंसर्वथाज्ञानजल्पकम् ॥ ४० ॥ जातंचप्रतिलोमेनमूर्खंपंडितमानिनम् ॥ एवं चोक्तास्ततोधीमान्वेदवेदांगपारगम् ॥ ४१ ॥ शौनकंप्रत्युवाचेदंप्रहसञ्श्लक्ष्णयागिरा ॥ साधुपृष्टंमहाभागनिष्पापोस्तिभवान्किल ॥ ४२ ॥ त्वत्समोनास्तिलोकेषुवेदव्यासगृहालयम् ॥ प्रश्नमेनंवदस्वाद्ययन्मेहृदिचिरंस्थिरम् ॥ ४३ ॥

और अनुगृहीत हूं मैं स्वल्पभाग्ययुक्त मूढ और वृथा ज्ञानजल्पक हूं ॥ ४० ॥ प्रतिलोमसे उत्पन्न मूर्ख और वृथा पंडितमानी हूं परम आप यह जानकर वह बुद्धिमान् वेदवेदांगके पारगामी ॥ ४१ ॥ शौनकजीसे हंसते हुए मनोहर वाणीसे बोले; हे महाभाग ! आपने भली बात पूछी है आप पापरहित हो ॥ ४२ ॥ आपकी समान लोकमें कोई नहीं है आप वेदव्यासके गृहरूप हो सो आप मेरा प्रश्न कहिये जो चिरकालसे मेरे हृदयमें

स्थित है ॥ ४३ ॥ हे ब्रह्मन् ! तुम्हारे सिवाय संदेहरूपी रोगकी औषधी नहीं है चैत्रादि महीनोंके ईश्वरादि देवता हैं ॥ ४४ ॥ परन्तु यह तो आप कहिये कि, अधिमासका स्वामी कौन है पूज्य और मानका देनेवाला कौन है उसमें क्या व्रत दान और भोजन करना चाहिये ॥ ४५ ॥ उसमें जप दान उपवास और साधन क्या है सो कहिये किस कृत्यसे देवता प्रसन्न होते और क्या फल देते हैं ॥ ४६ ॥ हे सूत ! औरभी आप विधान

नकश्चित्त्वद्दतेविद्वन्संदेहामयभेषजम्॥ संतिमध्वादयोमासाःसेश्वरास्तेश्रुतामया॥४४॥अधिमासस्यकःस्वामीपूज्यमानश्चकस्तदा॥ तस्मिन्किंस्वित्प्रकर्त्तव्यंव्रतदानादिभोजनम् ॥ ४५ ॥ जपदानोपवासादिसाधनंकिंतुभण्यताम् ॥ तुष्येत्कृतेनकोदेवःकिंफलंवाप्रय च्छति॥४६॥ अन्यच्चब्रूहिनःसूतव्यासशिष्योस्तिवैभवान् ॥ नरायेभुविजायंतेपरभाग्यानुवर्त्तिनः ॥४७॥ दारिद्र्यपीडितानित्यंरो गिणः पुत्रकांक्षिणः॥जडामूकादांभिकाश्चहीनविद्याःकुचेष्टिनः ॥४८॥ नास्तिकालंपटारौद्राजर्जराःपरसेविनः॥नष्टाशाभग्नसंकल्पाः क्षीणकृत्याकुरूपिणः ॥ ४९ ॥ निःश्वासाश्चोपमायत्ताः सततंदुःखभागिनः ॥ इष्टपुत्रकलत्रादिपितृमातृवियोगिनः ॥ ५० ॥

कहिये; कारण कि व्यासजीके आप शिष्य हो जो मनुष्य पृथ्वीमें परभाग्यानुवर्ती उत्पन्न होते हैं ॥ ४७ ॥ नित्य दरिद्रसे पीडित रोगी पुत्रोंकी इच्छा करनेवाले जड मूक पाखण्डी हीनविद्या कुचेष्टावाले ॥ ४८ ॥ नास्तिक लम्पट रौद्र जराग्रसित परसेवी नष्ट आशावाले भग्नसंकल्प क्षीण कृत्य कुरूपी ॥ ४९ ॥ निःश्वास लेनेवाले उपमामें तत्पर निरन्तर दुःखभागी पुत्र कलत्र मित्रादि इष्ट जन और माता पिताके वियोगी ॥ ५० ॥

शोकःदुःखसे शुष्क अंगवाले अपनी इष्टवस्तुसे रहित इसप्रकारके वह किसी कृत्य वा शास्त्रके सुन्नेसे नहीं सो कहिये ॥ ५१ ॥ हे सूत ! इसीप्रकार स्त्रियोंके अनेक दुःख देखकर विधवा वंध्या दुर्भाग्ययुक्त हीनांग महारोगिणी ॥ ५२ ॥ दुःखसे पीडित सर्वांगवाली महादुःखसे युक्त हैं सो आप शीघ्रतासे इनके दुःख दूर होनेका उपाय कहो जिस्से मैं प्रसन्न हूं ॥ ५३ ॥ हे प्रिय ! आप सर्वज्ञ और सब शास्त्रोंके निधान हो । सूतपुत्र यह वचन

शोकदुःखातिशुष्कांगाःस्वेष्टवस्तुविवर्जिताः ॥ पुनर्नैवंविधास्तेस्युर्यत्कृतेनश्रुतेनच ॥ ५१ ॥ नारीणामपिभोसूतदृष्ट्वादुःखान्यनेकशः ॥ वैधव्यवांध्यदौर्भाग्यहीनांगत्वाद्दुराधयः ॥ ५२ ॥ दुःखपीडितसर्वांगावीक्ष्यदुःखान्विताः प्रभो ॥ तद्ब्रूहित्वंहिमामाशुयेनप्रीतोऽभवंपुनः ॥ ५३ ॥ सर्वज्ञःसर्वशास्त्राणांनिधानंत्वमसिप्रिय ॥ सूतपुत्रस्त्विमांवाचंश्रुत्वासंहृष्टमानसः ॥ ५४ ॥ प्रत्युवाच हृषीकेशंस्मरञ्शंखगदाधरम् ॥ ५५ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येऋषिसूतसंवादोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ सूत उवाच ॥ शृणुष्वैकाग्रचित्तस्त्वंद्विजराजशिरोमणे ॥ श्रीकृष्णंपांडुतनयोज्येष्ठःपप्रच्छधर्मवित् ॥ १ ॥ धार्मिकःसत्यसंधोयःकुंतीहृदयतोषकः ॥ यदाद्यूतजितःपार्थःक्लेशितोधृतराष्ट्रजैः ॥ २ ॥

सुन बहुत प्रसन्न हुए ॥ ५४ ॥ और शंख चक्र गदाधारी हृषीकेशको स्मरण करते हुए बोले ॥ ५५ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये ऋषिसूतसंवादो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ सूतजी बोले—हे द्विजराजशिरोमणे ! आप एकाग्रचित्त होकर सुनो । एक समय ज्येष्ठ पाण्डव युधिष्ठिरने श्रीकृष्णसे पूछाथा ॥ १ ॥ धार्मिक सत्यसंध कुंतीके हृदयको संन्तोष करनेवाले जब द्यूतसे दुर्योधनादिद्वारा जीते गये तब क्लेशित हुए ॥ २ ॥

और उसी समय क्रोधसे द्रौपदीके बाल पकडने और वस्त्र खींचे जाने पर जब श्रीकृष्णने रक्षा की ॥ ३ ॥ और युधिष्ठिर अपना देश छोड़कर वनमें गये तब उनका यह वृत्तान्त सुनकर प्रतापवान् श्रीकृष्णजी ॥ ४ ॥ यादवोंसे युक्त श्रीमान् सात्यकिआदिके सहित इनको रुरुसम्बन्धी मृगचर्म धारण किये देख ॥ ५ ॥ कि जटाधारी धूलिसे रूखे शरीरयुक्त हैं इसीप्रकारकी पांचालीकी भी दशा देख वह भक्तवत्सल

कोपेनवेणींसंगृह्यकृष्णादुःशासनेनवै ॥ आकृष्टातत्रवासांसिश्रीकृष्णेनैवरक्षिता ॥ ३ ॥ युधिष्ठिरःस्वदेशंचत्यक्त्वाकामवनंगतः ॥ ज्ञातवृत्तांतआगत्यवासुदेवःप्रतापवान् ॥ ४ ॥ यादवैरावृतःश्रीमान्सात्यकिप्रमुखैर्वृतः ॥ दृष्ट्वातानुरुतापान्वैरौरवाजिनवाससः ॥ ५ ॥ जटिलान्धूलिरूक्षांश्चपांचालीमपितादृशीम् ॥ भक्तदुःखेनातिदुःखीसर्वदाभक्तवत्सलः ॥ ६ ॥ दग्धुकामःसत्रैलोक्यान्धार्त्तराष्ट्रान्स तांपतिः ॥ चक्रेकोपंसविश्वात्माभृकुटीकुटिलेक्षणः ॥ ७ ॥ युगांताग्निसमाकारःकोटिसूर्यकलेवरः ॥ ददृशेरुक्मिणीनाथोदिधक्षन्निव सागरम् ॥ ८ ॥ सीतावियोगंसतदासाक्षाद्दशरथात्मजः ॥ तमालक्ष्यतदावीरोह्यर्जुनोजातवेपथुः ॥ ९ ॥

भक्तके दुःखसे दुःखी हो ॥ ६ ॥ वह सत्पुरुषोंके पति धृतराष्ट्रके पुत्रोंसहित त्रिलोकी भस्म करनेकी इच्छा करने लगे और वह विश्वात्मा भृकुटी कुटिल करने लगे ॥ ७ ॥ युगान्ताग्निकी समान आकारवाले कोटिसूर्यके समान शरीर किये क्षुभित सागरको जलाते हुएसे श्रीकृष्णजी ॥ ८ ॥ उस समय सीताके वियोगसे दुःखी रामचन्द्रकी समान अर्जुनको लक्षित होने लगे तबै अर्जुन वीर

यह देख रोमाञ्च युक्त होगया ॥९॥ तब वह विष्णु जगत्पति विभुको प्रणाम करताहुआ स्तुति करने लगा कारण कि उस समय कालाग्निकी समान उनका महाक्रोध बढरहाथा ॥ १० ॥ अर्जुनने कहा; हे देव महाबाहो ! आप क्षमा कीजिये । हे विभो ! यह आपके क्रोधका समय नहीं है इससे रोककर आनन्द दीजिये ॥ ११ ॥ भूतभव्य भवद्रूप अपनी इच्छासे शरीर धारण करनेवाले आपके भ्रू फेरनेसे ही जगत् नष्ट होसक्ता है क्रोधकी आवश्यकता

प्रणम्यस्तुतवान्विष्णुंभवायजगतांविभुम् ॥ बिडौजानुजमत्युग्रंकालाग्निमिवदीपितम् ॥ १० ॥ अर्जुनउवाच ॥ देवदेवमहादेव क्षमस्वजगदीश्वर ॥ नायंतेकोपसमयःसंयच्छानंदयप्रभो ॥ ११ ॥ भूतभव्यभवन्नाथभक्तेशोपात्तविग्रह ॥ यच्चक्षुःपतनेनैवजगतः प्रलयोभवेत् ॥ १२ ॥ कृपांकुरुजगन्नाथसाधूनांत्वंपरायणः ॥ कंसकेशिकचाणूरमुष्टिकारिष्टमर्दनः ॥ १३ ॥ व्योमवत्साहिका लेयबकयक्षनियामकः ॥ त्राहित्राहिमहाराजजगदेतत्त्वदीयकम् ॥ १४ ॥ त्वत्कोपदग्धंकस्त्राताकृपांकुरुविदांवर ॥ इतिस्तुत्वान नामाशुफाल्गुनःपरवीरहा ॥ १५ ॥ वीतरोषोहरिर्जातःशुशुभेसात्वतांपतिः ॥ सर्वेशुशुभिरेतत्रतारकाइवनिर्मलाः ॥ १६ ॥

क्या है ॥ १२ ॥ हे जगन्नाथ ! कृपा कीजिये, आप साधुओंके परायण हो । हे कंस केशी चाणूर मुष्टिक और अरिष्टके मारनेवाले ॥ १३ ॥ व्योमासुर वत्सासुरके निधनकर्ता कालियके शासक बकासुर और यक्षके नियामक हे महाराज ! रक्षाकरो २ यह जगत् आपहीका है ॥ १४ ॥ हे विदांवर ! आपही कहिये कि आपके क्रोध करनेपर कौन रक्षा कर सक्ता है इस प्रकार स्तुति कर शत्रुघाती अर्जुनने श्रीकृष्णको प्रणाम किया॥१५॥तब क्रोधरहित

होनेसे श्रीकृष्ण अत्यन्त शोभित हुए और भी सब कोई तारागणके समान शोभित हुए ॥ १६ ॥ तब द्वारकाके स्वामी जगत्के आदिकारण भक्त समूहके तारक संसाररोगके निवारक ॥ १७ ॥ गोकुलके आनन्ददाता देवेश लीलासे शरीर धारण करनेवाले हरिको नमस्कार कर युधिष्ठिरजी यही बात पूछने लगे जो तुमने मुझसे पूछी ॥ १८ ॥ यह वचन सुन कालियनागमर्दनकर्ता विष्णु कृष्ण एक मुहूर्तमात्र ध्यान करतेहुए जिनके चरणोंका

ततःकुशस्थलीनाथंजगतामादिकारणम् ॥ तारणंभक्तसंघानांवारणंभवसंततेः ॥ १७ ॥ गोकुलानंददेवेशंलीलागोत्रधरंहरिम् ॥ नत्वा पृच्छत्सुमनसात्वंचपृच्छसिमांतुयत् ॥ १८ ॥ श्रुत्वैतद्भगवान्कृष्णोविष्णुःकृष्णाहिमर्दनः ॥ दध्यौमुहूर्त्तमात्रंतुसिद्धसेवितपंकजः ॥ १९ ॥ ध्यात्वाऽऽश्वास्यसुहृद्वर्गंकृष्णांशशिनिभाननाम् ॥ वक्तुमारभतप्रश्नंयःकृतोधर्मसूनुना ॥ २० ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ शृणुराजन्महा भागसर्वधर्मभृतांवर ॥ प्रश्नोयंदुर्द्धरःसाधोमदन्येनकुरूद्वह ॥ २१ ॥ अनुक्रमेणतेवत्सप्रश्नानामुत्तरंपृथक् ॥ मयापिकथितंनास्ति कस्यचित्पुरतःप्रभो ॥ २२ ॥ मध्वादयोमासवरालवपक्षाश्चनाडिकाः ॥ यामार्द्धयामसहितोमुहूर्तस्त्वयनेउभे ॥ २३ ॥

सिद्ध मुनि सेवन करते हैं ॥ १९ ॥ इसप्रकार ध्यान कर अपने सुहृद्वर्ग और पांचालीको समझाकर श्रीकृष्णजी युधिष्ठिरके किये प्रश्नको कथन करने लगे ॥ २० ॥ श्रीकृष्ण बोले—हे राजन् ! महाभाग सर्व धर्मोंके जाननेवाले सुनिये. हे कुरूद्वह ! मेरे सिवाय दूसरा तुम्हारा प्रश्न कथन करनेको समर्थ नहीं है ॥ २१ ॥ अनुक्रमसे तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर पृथक् २ देताहूं. हे प्रभो ! आजतक मैंने किसीके आगे यह कथन नहीं किया ॥ २२ ॥ चैत्रादिक महीने

लव पक्ष नाडिका आधापहर पहर महीना दिन मुहूर्त दोनों अयन ॥ २३ ॥ वर्ष युग संख्या क्रमसे चारों युग क्रमसे सब नदी समुद्र कूप ह्रद बावडी उज्ज्वल जलके झरने ॥ २४ ॥ औषधी द्रुमवल्ली सम्पूर्ण द्रुम ( वृक्ष ) वनस्पति पुर ग्राम अनेक पत्तन ॥ २५ ॥ यह सब मूर्तिमन्त स्वामीके गुणोंसे पूजित होते हैं ऐसा कोईभी नहीं जो श्रेष्ठगुणयुक्त पूजित न हो ॥ २६ ॥ अपने २ अधिकारमें स्थित हुए सबही पूजित होनेसे फल देते हैं;

हायनंयुगसख्यानंचतुर्युगमनुक्रमात् ॥ नद्योर्णवाह्रदाःकूपावापीपल्वलनिर्झराः ॥ २४ ॥ औषधीद्रुमवल्ल्यश्चसर्वेचैवद्रुमाश्चये ॥ वनस्पतिपुरग्रामागिरयःपत्तनानिच ॥ २५ ॥ एतेसर्वेमूर्तिमंतःपूज्यंतेस्वामिनोगुणैः ॥ नह्येषांकश्चिदप्यस्तिअपूज्यःप्रभुरूर्जितः ॥ ॥ २६ ॥ स्वेस्वेधिकारेसततमर्चंतेसुफलप्रदाः ॥ स्वस्वामियोगमाहात्म्याद्यथायोगेनपांडव ॥ २७ ॥ अधिमासःसमुत्पन्नःकदाचिन्मनुजर्षभ ॥ तमूचुःसकलालोकाअसह्यायंजुगुप्सितम् ॥ २८ ॥ अनर्होमलमासोयंरविसंक्रमवर्जितः ॥ अस्पर्शोऽकर्मकस्तुच्छःसर्वकर्मबहिष्कृतः ॥ २९ ॥ श्रुत्वैतद्वचनलोकान्निरुद्योगोहतप्रभः ॥ दुःखितोतीवसंत्रस्तोमृत्युमगीचकारसः ॥ ३० ॥

हे पाण्डव ! अपने स्वामीके योगमाहात्म्यसे यथायोग्य ॥ २७ ॥ अधिमास किसी समय प्रगट हुआ है, हे मनुष्यश्रेष्ठ ! उसको जनोंके बीचमें बिना विचारे यह भयानक वचन कहे गये ॥ २८ ॥ यह सूर्यसंक्रान्तिसे रहित मलमास कहावेगा यह अस्पृश्य कर्महीन तुच्छ और सबकर्मसे वहिष्कृत होगा ॥ २९ ॥ यह वचन सुन वह निरुद्योग और प्रभारहित होगया और बडे दुःखसे व्याकुल हो उसने अपनी मृत्यु स्वीकार की ॥ ३० ॥

और हृदयमें चिन्ताकर यह मेरी शरणको प्राप्त हुआ, और मनमें विचारकर नारायणकी स्तुति करने लगा ॥ ३१ ॥ वैकुंठमें जाकर परमा सनपर स्थित हो हाथ जोडे दोनों नेत्रोंमें जल बहाता ॥ ३२ ॥ अधिमास कहने लगा; हे देवाधिदेव जगन्निवास जगत्के गुरु भूतपति ! आपको नमस्कार है हे अनाथोंके नाथ ! सब जगत्के पालक विश्वपालक गोपाल दीनोंके दुःख दूर कर्ता ॥ ३३ ॥ जिस प्रकार आपने जानकीका

हृदयेचिंतयित्वातुमामसौशरणंगतः ॥ चेतसाचिंतयंस्तत्रतुष्टावजगदीश्वरम् ॥३१॥ गत्वावैकुंठभवनमास्थितःपरमासने॥ प्रांजलिः प्रणतोभूत्वामुंचन्नश्रूणिनेत्रयोः ॥ ३२ ॥ अधिमासउवाच ॥ देवाधिदेवेशजगन्निवासजगद्गुरोभूतपतेनमस्ते ॥ अनाथनाथाखिल विश्वपालगोपालनारायणवासुदेव ॥ ३३ ॥ यथाविभोतेनिमिराजपुत्रीपौलस्त्यदुष्टेनछलाद्गृहीता ॥ विमोचितागौतमधर्मपत्नीतथै वमांपाहिरघुप्रवीर ॥ ३४ ॥ यथादेवकीकंसदुष्टाद्विमुक्ताचिरग्राहग्राहीगजेंद्रोपिमुक्तः ॥ जरासंधराजन्यनीतामहीपास्तथापाहिमां रुक्मिणीनाथविष्णो ॥ ३५ ॥ यथाजामिलःकोऽपिलुब्धोबलायांयथागोपिकायाज्ञसेनीगरिष्ठा ॥ दरिद्रीकुचैलोद्विजेंद्रोर्चितस्ते विभोजानकीजीवनाधीशपाहि ॥ ३६ ॥

रावणके घरसे उद्धार किया जैसे गौतमकी धर्मपत्नीका उद्धार किया इसी प्रकार मेरा उद्धार करो ॥ ३४ ॥ जैसे आपने दुष्ट कंसके हाथसे देवकीकी रक्षा की और नाकेसे ग्रहण किये गजेन्द्रको छुडाया जरासंधके हाथसे जैसे अनेक राजाओंको छुडाया, हे रुक्मिणीनाथ ! इसीप्रकार आप मेरी रक्षा करो ॥ ३५ ॥ ॥ जैसे वेश्याके लोभी अजामिलको आपने छुडाया जैसे गोपी और द्रौपदीकी

रक्षा की. दरिद्र मैले वस्त्रधारी सुदामाकी जैसी रक्षा की.हे विभो जानकीजीवन ! उसी प्रकार मेरी रक्षा करो ॥ ३६ ॥ आपहीके दोनों चरणकमलकी प्राप्ति कर ऋषिपत्नी आनंद लोकको प्राप्त हुई कृपासागर भक्तोंसे सेवित जानकीजीवनका हम क्यों न भजन करैं॥ ३७॥आपकी इच्छासे अग्नि शीतल होती है और आपकी आज्ञासे सुमेरु चलत्वको पाता है और सागर लघुत्वको प्राप्त होसक्ता है बृहस्पति जडत्वको और सूर्य अंधकारको प्राप्त हो सक्ताहै।हे रुक्मिणीवल्लभ!हमारी रक्षा क्यों नहीं करते॥ ३८॥श्रीकृष्ण बोले-जब यह श्रेष्ठ मास इसप्रकार स्तुतिकर विरामको प्राप्त हुआ और शोकसे

त्वदीयंपदद्वंद्वमासाद्यतत्रऋषेरंगनालोकमाप्तातवैव ॥ कृपानीरधिंशेवधिंसेवकानांकथंजानकीजीवनंनोभजामः ॥ ३७ ॥ तवत्विच्छयाशीततामेतिवह्निश्चलत्वंसुमेरुर्नदीशोलघुत्वम्॥जडत्वंसुरेज्यस्तमस्त्वंदिनेशोभवान्रुक्मिणीवल्लभःकिन्नपासि ॥३८॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ स्तुत्वैवंविररामायंयदामासविभूषणः ॥ गत्वाधरण्यांशोकेनतत्क्षणात्साश्रुलाचनः ॥ ३९ ॥ तमुवाचविनम्रांगमधिमासं पुरःस्थितम् ॥ वत्सवत्सकिमित्येवंदुःखमग्नोसिसांप्रतम् ॥ ४० ॥ यत्किंचिद्धृद्गतंशल्यमुद्धरामिवदाशुमे ॥ नमत्पादाब्जशरणंप्राप्यशोचितुमर्हति ॥ ४१ ॥ पतितोपिमहाबाहोकिंपुनस्त्वत्समोजनः ॥ मल्लोकंविद्धिनिर्दोषंनिर्दुःखमजरंवरम् ॥ ४२ ॥

पृथ्वीमें गिरा, तब उसकी प्रार्थना सुन नेत्रोंमें जल भर ॥३९॥ नम्र होकर आगे स्थित हुए उस अधिमाससे कहा।हे वत्स २ यह क्या दुःख तुम्हारे ऊपर पडा है॥ ४० ॥जो तुम्हारे हृदयका दुःख है वह मैं दूर करूंगा तुम कहो मेरे चरणोंकी शरणमें प्राप्त होकर फिर प्राणी शोच नहीं करतेहैं ॥ ४१ ॥ हे महाबाहो ! पतित होकरभी प्राणी आपकी समान शोच नहीं करते, कारण कि मेरा लोक दोषरहित दुःखरहित जरारहित और श्रेष्ठ है ॥ ४२ ॥

तुमको दुःखी देखकर मेरे अनुचर दुःखी हुए जिसकारण तुम मरनेकी इच्छासे मेरी शरण आये हो वह कहो ॥ ४३ ॥ अधिमास बोला हे विभो ! आप सब कुछ जानते हो कुछभी आपको अज्ञात नहीं है आप चराचरके गुरु स्वामी साक्षी और सबके अन्तःकरणके साक्षी हो ॥ ४४ ॥ आप कूटस्थ सबमें स्थित हो कोईभी आपसे रहित नहीं है फिर क्यों आप मेरे दुःखको नहीं जानते इससे मेरे बराबर कोई अल्पभाग्य नहीं है ॥

त्वामत्रदुःखितंदृष्ट्वाविस्मितामेपुरःसराः ॥ मर्त्तुकामोसियेनत्वंतद्ब्रूहिशरणंगतः ॥ ४३ ॥ अधिमासउवाच ॥ विभोवेत्तिभवान्सर्वंना ज्ञातंकिंचिदस्तिते ॥ चराचरगुरुःस्वामीसाक्षीसर्वस्यचेतसः ॥४४॥ कूटस्थःसर्वसस्थोसिनत्वयारहितःक्वचित् ॥ किंमेनवेत्सिसद्दुः खमल्पभाग्यतरस्त्वहम्॥४५॥तथापिशृणुमेभूमन्दुःखकारणमद्भुतम् ॥ सामान्यधर्मिणःसर्वेसुखंजीवंतिजंतवः ॥४६॥ तत्रहीनत्वमा पन्नोमृत्युमिच्छामिसत्पते ॥ क्षणालवामुहूर्त्तानिपक्षामासादिवानिशम्॥४७॥नामाधिकारप्रभुभिर्मोदंतेनिर्जरायथा ॥ नमेनामनमे स्वामीनमेकिंचिद्व्यपाश्रयः ॥४८॥ निष्कर्मांचविहीनश्चसर्वेसंभूयदुर्जनाः ॥ मलमासोनिषिद्धोयंनित्यंव्याख्यांतिमांसदा ॥ ४९ ॥

॥ ४५ ॥ हे विभो ! तौ भी आप मेरे दुःखका कारण सुनिये जो बडा अद्भुत है सब जन्तु सामान्य धर्मवाले सुखसे जीते हैं ॥ ४६ ॥ सो मैं सब से हीनहो मृत्युकी इच्छा करता हूं । क्षण लव मुहूर्त पक्ष महीने दिन रात वे अपने नामाधिकारको प्राप्त हो देवताओंके समान प्रसन्न होते हैं परन्तु मेरा न कुछ नाम है न कोई स्वामी और न कुछ आश्रय है ॥४७॥४८॥ यह निष्कर्मा है ऐसा सब मिलकर कहते हैं कि, अहो ! यह मलमास निकृष्ट है

इस प्रकार सब प्राणी मुझसे कहा करते हैं ॥ ४९ ॥ इसकारण मैं मरनेंकी इच्छा करताहूं जीना नहीं चाहता कुजीवनसे मृत्यु होनी श्रेष्ठ है नित्य दग्ध कैसे सो सकता है ॥ ५० ॥ हे महाराज ! जो आपके मनमें वर्तता है सो आप कीजिये मैं इसप्रकारसे न जिऊंगा न जिऊंगा ॥ ५१ ॥ इस प्रकारसे जब अधिमासने कहा तब फिर मूर्च्छित हो श्रीभगवान्के चरणोंमें गिरपडा ॥ ५२ ॥ उसके देखनेसे सब पार्षद विस्मयको प्राप्त होगये, हे राजन् ! इस प्रकार उसे देखकर मुझकोभी दया आई ॥ ५३ ॥ हे राजन् ! उस समयका वृत्तान्त सुनो मैं तत्त्वसे कहताहूँ तब मैंने दृष्टिसे गरुडजीके

तस्माद्धिमर्तुमिच्छामिनाहंजीवितुमुत्सहे ॥ कुजीविताद्वरोमृत्युर्नित्यदग्धःकथंस्वपेत् ॥५० ॥तत्कुरुष्वमहाराजयत्तेमनसिवर्त्तते ॥ नजीविष्येनजीविष्येपुनःपुनरुवाचह॥५१॥एवंविज्ञप्तिमुक्त्वावैसोधिमासस्तदाविभो ॥ विसंज्ञोनिपपाताशुपादमूलमुपानतः॥५२॥ विस्मिताःपार्षदाःसर्वेतदर्शमविलोकनात् ॥ ममापिकरुणाजातापरिपूर्णानराधिप ॥ ५३ ॥ शृणुराजंस्ततोवृत्तंयत्तद्वक्ष्यामितत्त्वतः ॥ कटाक्षेणसमादिष्टःसुपर्णस्तमवीजयत् ॥५४॥ पक्षवातेनतरसावीजयामाससादरम् ॥ उत्थितःपुनरेवाहनैतन्मेरोचतेविभो ॥ ५५ ॥ पाहिमांकरुणानाथयत्तेशरणमागतः ॥ गोपीहृदयकामाग्निशमनोजनवल्लभः ॥ ५६ ॥ तमुवाचमहाभागोवेपमानंमदंतिकम् ॥५७॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येऽधिकमासविज्ञप्तिर्नामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

प्रति कथन किया ॥५४॥ तब गरुडजी अपने पंखोंसे आदरसहित उसको पवन करने लगे तब वह उठकर फिर कहने लगा । हे प्रभो! मुझे यह बात नहीं रुचती ॥५५॥ हे करुणानाथ ! जो मैं तुम्हारी शरण आयाहूं इससे मेरी रक्षा करो आप गोपियोंके हृदयकी कामाग्नि शांतकरता जनवल्लभ हो ५६ हे महाभाग ! तब उस कम्पित हुएके प्रति मैं कहने लगा ॥५७॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये अधिकमासविज्ञप्तिर्नामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

॥ श्रीभगवान् बोले, हे सुरश्रेष्ठ ! जो तुमने मेरी शरणली इस कारण तुम धन्य हो, जो मैं तुमको दूंगा वह देवताओं और ऋषि योंकोभी अप्राप्य है ॥ १ ॥ मुझको प्राप्त होकर कोई मनुष्य शोकित नहीं दीखता है इससे तुम स्वस्थ हो, कारण कि, सबसे अधिकतर हो॥ २॥ कीर्ति लक्ष्मीके अनुभाव बल और चारित्र शूरता वीरता गुण ज्ञान प्रज्ञा धीर पराक्रमसे युक्त होनेके कारण ॥ ३ ॥ यह सब जगत् मेरा आत्मा

॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ साधुसाधुसुरश्रेष्ठयन्मामनुसृतोभवान् ॥ यत्तेदद्मितदप्राप्यंसुरैर्ऋषिगणैरपि ॥१॥ नमामुपेतःकुत्रापिशोकवा न्दृश्यतेनरः॥तस्माद्भवतुसुस्वस्थःसर्वाधिकतरोभवान्॥२॥कीर्त्यालक्ष्म्यानुभावेनबलेनचरितेनच॥शौर्यवीर्यगुणज्ञानप्रज्ञाधैर्यपरा क्रमैः ॥३॥यन्मदात्मंजगत्सर्वंवीतशोकोभयंत्यज ॥ ततस्तुममसादृश्यमश्रीयाःसाधिपोभव ॥ ४ ॥ वैराग्यैश्वर्यधर्मार्थप्रतापानु ग्रहाश्रमैः ॥ श्रीभाग्यसौख्यलालित्यगुणैश्वर्यतपोध्वरैः ॥५॥ सखेसंतुष्टिकरुणाकेलिदाक्षिण्यसौष्ठवैः ॥ विद्याविनयनैपुण्यधर्मकर्म सदुक्तिभिः ॥ ६ ॥ एतैरन्यैर्गुणैःशुद्धैरुत्तमःपुरुषेष्वहम् ॥ तस्मादभिज्ञासततंविदुर्मां पुरुषोत्तमम् ॥ ७ ॥

है, शोकरहित होकर भय त्यागन करदो, तुम मासोंके अधिपति मेरी समान होगे ॥ ४ ॥ वैराग्य ऐश्वर्य धर्म अर्थ प्रताप अनुग्रह आश्रम श्री भाग्य सुखलालित्यता गुण ऐश्वर्य तप यज्ञ ॥ ५ ॥ सुख संतुष्टि करना केलि चतुरता सुष्ठुता विद्या विनय निपुणता धर्म कर्म सत्उक्ति ॥६॥ इन गुणोंसे मैं पुरुषोंसे उत्तम हूं इसी कारण पण्डित जन मुझे पुरुषोत्तम कहते हैं ॥ ७ ॥

जब कि, मैं तेरा स्वामी हूं तो तू भी उत्तमताको प्राप्त हो, मनसेही तेरा नाम पुरुषोत्तम ऐसा विख्यात होगा ॥ ८ ॥ नाममात्रके ग्रहणसेही सबके पाप दूर करनेवाला होगा फिर यदि मैंने नामकरण किया तो मेरी कृपासे तू क्यों न श्रेष्ठ हो ॥ ९ ॥ जिसप्रकार देवचक्रमें मैं सबसे श्रेष्ठ हूं इसी प्रकार मनुष्योंके पाप दूरकर संसारसागरसे पार कर देताहूं ॥ १० ॥ इसीप्रकार तुमभी अपने भक्तोंके दुःख दरिद्र दूर करोगे और गंगाकी समान

त्वमप्युत्तमतांयाहियतोहंभवतःप्रभुः ॥मनसैवहितेनामविख्यातंपुरुषोत्तमः ॥ ८ ॥ नाममात्रेणसर्वेषामघकंदनिकृंतनः ॥ किंपुनर्द त्तनामानिसत्कृपानितरात्मनाम् ॥ ९ ॥ यथाहंनैर्जरेचक्रेमुख्यःसर्वोत्तमोत्तमः ॥ विधूयकिल्बिषाटोपमुद्धरामिभवार्णवात् ॥ १० ॥ तथात्वमपिभक्तानांदुःखदारिद्र्यखंडनः ॥ भविष्यसिजगत्पूज्यःस्वर्धुनीसरितांयथा ॥ ११ ॥ सर्वेमासाःकृताःकाम्यानमयात्वंकृत स्तथा ॥ कर्मदास्सन्त्विमेसर्वेनिष्कर्मफलदोभवान् ॥ १२ ॥ अध्यक्षादिष्टदातारोयेयेमासाधिपाःस्मृताः ॥ त्वदीयोस्म्यहमध्यक्ष स्त्वयिसत्कर्मकारिणाम् ॥ १३ ॥ कर्मभिर्वैविमुक्तानांमोक्षदोहंनसंशयः ॥ अकामोवासकामोवायस्त्वय्याचरतेशुभम् ॥ १४ ॥

जगत् तारनेमें समर्थ होगे॥ ११ ॥सब महीने काम्यफलके देनेवाले हैं तुम विना कामना फल देते हो यह और सब कर्म फल देनेवाले और तुम निष्कर्म फलके देनेवाले हो॥ १२ ॥जो जो मासोंके अध्यक्ष और इष्ट फल देनेवाले हैं वे उन्हीके हैं परन्तु तेरा अध्यक्ष और सत्कर्म करानेवाला मैं हूं ॥ १३ ॥ इसमें सन्देह नहीं कि मैं कर्मसे मुक्तहुए पुरुषोंको मुक्ति देता हूं अकाम वा सकाम जो तुममें श्रेष्ठ आचरण करेगा ॥ १४ ॥

जो ब्रह्मस्थान आनंदरूप है जो भोगरूप है वह मैं सम्पूर्ण देनेवाला हूं यह वार्ता सत्य है इसमें सन्देह नहीं ॥ १५ ॥ जहां जाकर फिर प्रवृत्ति नहीं होती भोगान्तमें उसीस्थानको प्राप्त होताहै जिसको महाभाग्यवान् ब्रह्मचारी यत्न करते हैं ॥ १६ ॥ वे मनुष्य त्रिलोकीके दुःख भोगनेवालोंको देखते हैं उसका जो उग्र कारण है उसको वे कोई नहीं जान्ते हैं ॥ १७ ॥ सुनो मैं तुमसे कहताहूं जिससे अकर्मवाले उत्पन्न होते हैं सकाम

आनंदंब्रह्मसदनंयश्चभोगसमुच्चयः ॥ तत्सर्वदोहमुक्तस्तुसत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥ १५ ॥ यद्गत्वाननिवर्ततेभोगांतेतत्प्रयास्यति ॥ यजंतेवैमहाभागाऋषयोब्रह्मचारिणः ॥ १६ ॥ त्रैलोक्यदुःखभोक्तारोदृश्यंतेतेजनाःसदा ॥ तत्रकारणमत्युग्रंनतेजानंतिकेचन ॥ ॥ १७ ॥ शृणुतत्तेप्रवक्ष्यामिजायंतेयेत्वकर्मिणः ॥ सकामकर्मणःसर्वेमासिमासिभवंतिते ॥ १८ ॥ प्रवयःकामनिपुणानतुकैवल्यदायिनः ॥ कारणेनसमंकार्यंसर्वदैतन्निगद्यते ॥ १९ ॥ अगाधध्येयसंबंधोयथानानाव्यवस्थितः ॥ यादृशीकर्मणोवस्थाश्रद्धातोदेशकालतः ॥ २० ॥ सर्वोपकरणेयत्रकालोहिबलवत्तरः ॥ यादृशंकालमासाद्यकुरुतेकर्ममानवः ॥ २१ ॥ फलंतुतादृशंलब्ध्वाभूयएवप्रतप्यते ॥ अतःकालस्यमाहात्म्यंनकेनाप्यवगम्यते ॥ २२ ॥

करने वाले महीने महीनेमें होते हैं ॥ १८ ॥ जो अवस्था युक्त काममें निपुण हैं परन्तु वे कैवल्य देनेवाले नहीं हैं ऐसा कहा है कि कारणके समान कार्य सदा होतेहैं ॥ १९ ॥ जिसप्रकार आधाराधेय सम्बन्धसे अनेक प्रकारकी व्यवस्था है जिसप्रकार कर्मकी अवस्था देशकालके अनुसार है ॥ २० ॥ इस सम्पूर्ण उपकरणमें कालही बलवान् है कारण कि, कालके अनुसारही मनुष्य कर्म करते हैं ॥ २१ ॥ और कर्मके अनुसार

फल पाकर फिर तपित होते हैं इसकारण कालका माहात्म्य जाननेमें कोईभी समर्थ नहीं ॥ २२ ॥ एक मुट्ठी बीज लेकर बोये जाते हैं परन्तु कालके योगसे उसमें असदृश फल लगते हैं ॥ २३ ॥ हे पुरुषोत्तम ! आमोंका यद्यपि एकही वंश है परन्तु उनमेंभी समानता नहीं होती यही कालका योग है सो आप देखिये ॥ २४ ॥ माताके गर्भाशयमें पिताके वीर्यसे प्राप्त होकरभी वह एक समयमें जन्मको प्राप्त होकर कालसेही उनकी

एकमुष्टिगृहीतानांबीजानांरोपणन्तथा ॥ फलान्यसदृशान्येवजायंतेकालयोगतः ॥ २३ ॥ एकवंशसमुद्भूतैःसहकारैर्नसाम्यता ॥ लभ्यतेकालयोगेनपश्यत्वंपुरुषोत्तम ॥२४॥ मातुर्गर्भाशयेलग्नाःपितृवीर्यसुपाश्रिताः ॥ एककालाःकुतस्तेपिनकालेनसमानता ॥ ॥ २५ ॥ तस्मात्काम्येषुमासेषुसकामविहितंनरैः ॥ यत्तत्प्रभुसमादिष्टंयथोक्तंफलदंभवेत् ॥ २६ ॥ किंचिद्भोगानिहालभ्यपश्चाल्लो कांतरंगताः ॥ तत्तद्भोगांतमासाद्यपतंतिक्षीणकर्मिणः ॥ २७ ॥ निर्वर्त्यकर्मसर्वेपिक्लिश्यंतेत्वतिसंकटैः ॥ त्वयिसद्धर्ममिच्छंतःसूर योगुणभूषणाः ॥ २८ ॥ मामाश्रित्यचधैर्येणह्यस्मिन्कालेनिरामये ॥ कालस्यास्यप्रभुर्नित्यमहमस्मिन्नचेतरः ॥ २९ ॥

समानता नहीं होती ॥२५॥ इसकारण काम्य मासोंमें मनुष्य काम्यकर्म करते हैं जो प्रभुने कहा है उसके अनुसार करनेसे यथेष्ट फल मिलताहै॥ २६॥ कुछ भोगोंको यहाँ प्राप्त हो पीछे लोकान्तरोंमें जाकर उन भोगोंको भोग्यकर्म क्षीण होनेपर फिर यहां पतित होते हैं ॥ २७ ॥ कर्मसेही निवृत्त होकर फिर संकटमें पडते हैं परन्तु गुणभूषित कवि आपसेही श्रेष्ठ धर्मकी इच्छा करते हैं ॥ २८ ॥ जो धीरतासे मुझको आश्रय किये हैं वह

निरामय रहते हैं इस कालका प्रभु मैंही हूं दूसरा नहीं है ॥ २९ ॥ इसकारण इसमें जो कृत्य करैगा उसको अनन्त फल प्राप्त होगा, जो मनुष्य इसमें निष्काम वा सकाम कर्म करेंगे ॥ ३० ॥ वे निर्मल हो नित्य भुक्ति मुक्तिको प्राप्त होंगे, जिन मनुष्योंने इसमें कृत्य किये हैं वह मैं सर्वथा बलसे ग्रहण करताहूं ॥ ३१ ॥ जिसप्रकार राजा अपने छठे भागको नहीं छोडता है इसीप्रकार मुझे कर्म अर्पण करनेसे कभी उसके कर्मका अन्त

तस्मात्कृत्यफलस्यास्मिन्संख्यानंनैवलभ्यते ॥ निष्कामंचसकामंचकर्तास्मिन्संचितंजनैः ॥ ३० ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदंनित्यंमय्यधी शेमलात्मभिः ॥ अस्मिन्कृतंनरैःकर्मबलादादद्मिसर्वथा ॥ ३१ ॥ यथाभूमिपतिर्भागंस्वीयंषष्ठंनमुंचति ॥ मद्दत्तकर्मणामंतोन भवेत्कर्हिचित्स्फुटम् ॥ ३२ ॥ अतोनंतसुखावाप्तिरंतेमोक्षफलंलभेत् ॥ विधूयपापतिमिरंनिर्मलोजायतेजनः ॥ ३३ ॥ त्वयिये व्रतिनोदांतादानस्नानजपेरताः ॥ सर्वेसत्कृत्यरहितादेवतीर्थगुरुद्विषः ॥ ३४ ॥ जायंतेदुर्मुखादुष्टाःपरभाग्योपजीविनः ॥ नकदा चित्सुखंतेषांस्वप्नेपिशशशृंगवत् ॥ ३५ ॥

नहीं होता ॥ ३२ ॥ इससे अनन्तसुखकी प्राप्ति और अन्तमें मुक्ति मिलती है पापरहित होकर वह मनुष्य निर्मल होजाता है ॥ ३३ ॥ जो व्रती चतुर दान स्नान और जप आपमें अर्पण करते हैं वे सुखी होते हैं और जो सब सत्कृत्यसे रहित देवता तीर्थ और गुरुसे द्वेष करते हैं ॥ ३४ ॥ वे दुष्ट पराये भाग्यके उपजीवी दुर्मुख होतेहैं उनको स्वप्नमेंभी कभी सुख नहीं मिलता जैसे खरगोशके सींग कभी नहीं होते ॥ ३५ ॥

जो मनुष्य इस मलमासमें धर्मका तिरस्कार कर दंभता करतेहैं और धर्म नहीं करते वे सदा नरकमें पडतेहैं ॥ ३६ ॥ फिर वे नरकसे निकलकर अल्पभागी थोडे विद्यावाले हो यहां जन्म लेते हैं प्रत्येक तीसरे वर्षमें जो पुरुषोत्तम मासको प्राप्त होकर ॥ ३७ ॥ धर्म नहीं करते वे कुंभीपाक नरकमें पडते हैं दुष्कृतकारी जीव पृथ्वीमें जन्म ले सदा शोच करते हैं ॥ ३८ ॥ पुत्र मित्र कलत्रोंकी आशासे शोचते हुए विलाप करते दुःखाग्निमें पडते

तिरस्कृत्यभवंतंयेमलमासेतिदांभिकाः॥नाचरिष्यंतिसद्धर्मंसदानिरयवासिनः ॥ ३६ ॥ अल्पभाग्यास्त्वल्पविद्याजाताश्चनरकेष्विह॥पुरुषोत्तममासाद्यवर्षेवर्षेतृतीयके ॥ ३७ ॥ अविशेषकृतोजीवाःकुंभीपाकेपतंतिते ॥ शोचंतिसततंजीवाभूमौदुष्कृतकारिणः॥३८॥पुत्रमित्रकलत्राप्तशोकसंविग्नमानसाः ॥ विलपंतिपतंत्येतेदुःखदावानलेचिरम् ॥ ३९ ॥ तेकथंसुखमेधंतेयेषामज्ञानतोगतः ॥ श्रीपुरुषोत्तमोमासोवैष्णवःपुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ सदाराणांसरूपाणांगुणिनांदीर्घजीविनाम्॥चतुराणांसुविद्यानामाज्ञासंपादिनांतथा॥४१॥ सद्वृत्तिहृतचित्तानांसाधूनांधैर्यशालिनाम् ॥ सुमुखानांवदान्यानांपुत्राणांशीलवृत्तिनाम् ॥ ४२॥ श्यामाचश्यामवर्णाचश्यामाषोडशवार्षिकी॥ अप्रसूताभवेच्छ्यामाश्यामामधुरभाषिणी ॥ ४३ ॥

हैं ॥ ३९ ॥ जिनके अज्ञानसे वैष्णव श्रेष्ठ पुरुषोत्तममास वृथा बीतजाता है उनको किसप्रकार सुखकी प्राप्ति होसकतीहै ॥ ४० ॥ स्त्रीवाले स्वरूपवान् गुणी दीर्घजीवी चतुर विद्यावान् आज्ञासंपादन करनेवालोंका ॥ ४१ ॥ सद्वृत्तिवाले साधु धैर्यशाली सुमुख चतुर शील वृत्त और पुत्रवानोंका ॥ ४२ ॥ तथा श्यामा श्यामवर्णा अर्थात् सोलह वर्षकी स्त्री श्यामा अप्रसूता श्यामा और मधुरभाषिणीभी श्यामा होती है ॥ ४३ ॥

श्यामगुणवाली दिव्य सम्पूर्ण अलंकारसे भूषित चतुर शीलसे सम्पन्न चित्तमें अरुंधतीकी समान ॥ ४४ ॥ सुन्दर दर्शनीय शरीरवाली कुरंगीचंचलनेत्र गजकुंभके समान स्तनवाली सुन्दर चन्द्रमाके समान मुखवाली ॥ ४५ ॥ जिसके चरण रखनेकी चतुरता देखकर अप्सरा लज्जित होती हैं अपने अंगरागसे मनोहर सुवर्णवेलिके समान ॥ ४६ ॥ स्वरसे कुबेरकी स्त्रियोंको जीतनेवाली तरुणी पतिव्रता सदा पतिकी आज्ञा

श्यामागुणवतीदिव्यासर्वालंकारभूषिता ॥ चतुराशीलसंपन्नाचित्तेनारुंधतीसमा॥ ४४ ॥ सुभगादर्शनीयांगीकुरंगीनयनांचला ॥ करिकुंभस्तनीरम्याशुभाताराधिपानना ॥ ४५॥पदविन्यासचातुर्यंदृष्ट्वालज्जतिचाप्सराः॥ स्वांगरागेणरुचिरावल्लीवकनकोत्कृता ॥ ॥ ४६ ॥ स्वरनिर्जितवित्तेशतरुणीपतिदेवता ॥ आज्ञाकरीसदापत्युश्चोदनांचरतीशुभाम् ॥ ४७ ॥ ईदृशीसुखदारामाकथंत त्तस्यज्ञातोगतोमासोवैष्णवःपुरुषोत्तमः॥४८ ॥भ्रातरःपंडिताःशूरा नवयौवनशालिनः ॥ प्रभिन्नाइवमातंगाःपराक्र महतारयः॥४९॥ईदृशान्कथमीप्सन्तेनकृतपुरुषोत्तमे ॥ सुकृतंकिंचिदप्येवंनदत्तंदानमर्थिने ॥ ५० ॥ सुरूपःसुमुखःशूरःसत्यवाद हितेरतः॥दृढेंद्रियबलोपेतोहरिभक्तिपरायणः ॥ ५१ ॥

करनेवाली उसके कथनका आचरण करनेवाली ॥ ४७ ॥ इसप्रकारकी सुख देनेवाली स्त्री उसको कैसी प्राप्त होतीहै जिसको पुरुषोत्तम मास अज्ञानसे बीतता है ॥ ४८ ॥ पंडित शूर नवीन यौवनशाली हाथीकी समान बली पराक्रमसे शत्रुओंके मारनेवाले भाई ॥ ४९ ॥ उसको कैसे प्राप्त होसकते हैं जिसका पुरुषोत्तम मास अज्ञानसे बीतता है जिसने कुछ सुकृत नहीं किया अर्थियोंको दान नहीं दिया ॥ ५० ॥ रूपवान्

सुमुख शूर सत्यवादी हितमें तत्पर दृढेन्द्रियवाला हरिभक्तिपरायण ॥ ५१ ॥ चतुरताके गुणसे सम्पन्न अंगदवान् सात्विक धर्मात्मा निरन्तर दया करनेवाला ॥ ५२ ॥ सर्वांगसे शोभित पुष्टगात भाग्यवान् जहां जहां जाय वहीं उसके आगे धनराशि स्थित हो ॥५३॥ जिसका मन लोभ और धर्मके प्रमादमें तथा क्रोधमें रत न हो इसप्रकारका सन्तान विना पुरुषोत्तमकी अर्चाके किसप्रकार होसक्ता है ॥५४॥ देवकीनंदन देवका पुरुषोत्तम मासमें

चातुर्यगुणसंपन्नःसुलक्षणसमन्वितः॥अंगदोधार्मिकोविद्वान्सात्विकःसततंघृणी॥५२॥ सर्वांगशोभनोतीवजातगात्रोथभाग्यवान् ॥ येत्रयत्रप्रयात्यग्रेधनराशिस्ततस्ततः ॥ ५३ ॥ लाभोधैर्यंप्रमादश्चक्रोधेनाक्रमतेमनः॥ईदृशोजायतेजंतुःकथंयेननचार्चितः ॥ ५४ ॥ देवकीनंदनोदेवःसंप्राप्तेपुरुषोत्तमे ॥ अथवाजगदानंददायीशीतांशुभूषणः ॥ ५५ ॥ दिनेशोवागणाधीशश्चंडिकाभक्तवत्सला ॥ महाभागामहालक्ष्मीर्बंधमोक्षविधायिनी॥५६॥तेत्वांसंपूजयिष्यंतिजनाःसर्वेममाज्ञया ॥ त्वदीयमेतन्माहात्म्यंनज्ञातंकेनचिद्भुवि॥ ॥५७॥ज्ञानदृष्ट्याऋषिगणाज्ञास्यंतिममहृद्गतम्॥ततस्त्वामर्चयिष्यंतिमच्छंदपरिपालकाः ॥ ५८ ॥ सर्वेषामपिमासानांत्वमप्युग्रो भविष्यसि ॥ तथोत्तमांगमासीनःकिरीटइवराजसे ॥ ५९ ॥

पूजन करना चाहिये अथवा चंद्रमौलि जगतके आनंददाता शंकरका पूजन करै ॥ ५५ ॥ सूर्य ईश वा गणाधीश चंडिका भक्तवत्सल महामाया महालक्ष्मी बंध मोक्षकी विधान करनेवाली है ॥५६॥ मेरी आज्ञासे वे सब मनुष्य तुम्हारा पूजन करेंगे तेरा माहात्म्य पृथ्वीमें आजतक किसीने नहीं जाना है॥५७॥ज्ञानदृष्टिसे ऋषि मेरे हृदयकी बात जान्तेहैं इसकारण मेरी आज्ञाके पालन करनेवाले तुम्हारी अर्चना करेंगे ॥ ५८ ॥ सम्पूर्ण महीनेमें

तुम श्रेष्ठ होगे जिसप्रकार शिरमें किरीट सबसे श्रेष्ठ शोभित होता है ॥५९॥ यह उस महीनेसे कह मैं अन्तर्धान हुआ जो आपने पूछा सो तुमसे सब वर्णन किया ॥ ६० ॥ जो मनुष्य पृथ्वीमें माताके यौवनरूपी वनके छेदन करनेवाले हैं वे किंचित् सुख पानेवाले तैलसे लिप्त कलेवर पृथ्वीमें जन्म लेते हैं ॥ ६१ ॥ वे प्रेतोंकी समान निरानंद पृथ्वीमें विचरते हैं स्त्री पुत्र धन धान्यसे हीन, हीन क्रियावाले होते हैं. ॥ ६२ ॥ हे महाराज ! आप स्त्री और

इत्यादिश्यततोमासमहमंतर्हितोभवम् ॥ इतितेसर्वमाख्यातंयत्पृष्टोहमिहत्वया ॥ ६० ॥ जननीयौवनवनच्छेत्तारोयेनराभुवि ॥ जायंतेसुखलेशाशास्तैलाभ्यंगकलेवराः ॥ ६१ ॥ प्रेताइवनिरानंदाविचरंतिमहीतले ॥ स्त्रीपुत्रधनधान्यादिहीनदीनमनःक्रियाः ॥ ॥ ६२ ॥ भवानपिमहाराजसदारानुजसेवितः ॥ नजानासिपृथिव्यांवैमासेशंपुरुषोत्तमम् ॥ ६३ ॥ नत्वयापिविशेषेणसेवितः पुरुषोत्तमः ॥ अतःपरंनरेंद्रेशमासोवैचागमिष्यति ॥ ६४ ॥ विष्णुप्रियोमहामासोभवतांकाननौकसाम् ॥ प्रमादतोगतामासाः पंचैतेभवतामिह ॥ ६५ ॥ श्रीमद्भिस्तेप्यवज्ञाताभयद्वेषसमन्वितैः ॥ वैकर्तनांधकाःपुत्राःस्वर्धुनीसुतगौतमौ ॥ ६६॥ द्रौणिद्रोणसौबलेभ्योभयसंत्रस्तचेतसाम् ॥ वनवाससुखध्वंसस्वजनायोगदुःखिनाम् ॥ ६७ ॥

अनुजोंके सहित इस पुरुषोत्तममासके माहात्म्यको नहीं जान्तेहो ॥६३॥ न विशेषकर आपने पुरुषोत्तम की सेवाकी है. हे राजन् ! अब वह महीना इसके उपरान्त आनेवाला है ॥ ६४ ॥ वह महामास विष्णुका प्रिय है तुम वनमें रहनेवालोंको प्रमादसे पांच महीने बीतगये हैं ॥ ६५ ॥ आपने भय द्वेषयुक्त हो उनकी अवज्ञा की है कारण कि धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधनादि गंगापुत्र भीष्म कृपाचार्य ॥ ६६ ॥ अश्वत्थामा द्रोण सौबल इनसे तुमारा चित्त

सदा व्याकुल रहता है और वनवासी होनेके कारण तुम्हारा सुखध्वंस होरहा है स्वजनोंके वियोगसे दुःख है ॥ ६७ ॥ वनमें निवास विद्याके आराधनमें तत्पर अर्जुनके अस्त्र सीखनेको स्वर्गमें जानेपर तुमको दुःख प्राप्त होनेपर ॥ ६८ ॥ तथा उसके वियोगसे क्लिष्टशरीर होनेके कारण तुमने पुरुषोत्तमको न जाना. हे राजन् ! इसके प्रभावसे भविष्य साधन होता है ॥ ६९ ॥ इसमें तुमको और क्या कृत्य भविष्यतासे वर्तती है सुख

वनेवासंप्रसादार्थंविद्याराधनतत्परे ॥ धनंजयेगतेस्वर्गमितोस्त्रासिसमुद्यते ॥ ६८ ॥ तद्वियोगपरिक्लिष्टैर्नज्ञातःपुरुषोत्तमः ॥ साधनं जायतेराजन्भविष्यस्यप्रभावतः ॥ ६९ ॥ किमत्रभवतांकृत्यंयद्भविष्येनवर्त्तते ॥ सुखंदुःखंभयंक्षेमंभविष्यादाप्नुतेजनः ॥ ७० ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येभगवतःपुरुषोत्तमवरप्रदानंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ पांचालीयामहा भागापूर्वजन्मनिसुंदरी ॥ कस्यचिद्द्विजमुख्यस्यपुत्रीजातासुमध्यमा ॥ १ ॥ कालेनगच्छतातातसंजातादशवार्षिकी ॥ रूपला वण्यललितनयनापांगशालिनी ॥ २ ॥ चातुर्यगुणसंपन्नापितुरेकैवपुत्रिका ॥ वल्लभातीवतेनेयंपाठितागुणसुंदरी ॥ ३ ॥

दुःख भय क्षेम यह मनुष्य अपने कृत्यसे प्राप्त करता है ॥ ७० ॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये भगवतः पुरुषोत्तमवरप्रदानं नाम तृतीयोध्यायः ॥ ॥ ३ ॥ श्रीकृष्ण बोले, महाभागा द्रौपदी पूर्वजन्ममें किसी ब्राह्मणकी बडी सुन्दर रूपवती पुत्री थी ॥ १ ॥ हे तात ! समय बीतनेपर यह दश वर्ष की हुई यह रूप लावण्यमें श्रेष्ठ सुनेत्रा हुई ॥ २ ॥ यह चतुरताके गुणोंसे सम्पन्न पिताकी एकही पुत्री थी इस कारण यह

गुणसुन्दरी पिताको अधिक प्यारी थी ॥ ३ ॥ इसको ब्राह्मणने पुत्रकी समान पाला, कभी तिरस्कार नहीं किया, यह साहित्यशास्त्रमें कुशल और नीतिमें भी पंडिता थी ॥ ४ ॥ इस कारण अतिचतुर पृथ्वीमें दूसरी लक्ष्मीकी समान थी शुभ अशुभ गुणके ज्ञान और श्रेष्ठतामें विशारद थी ॥ ५ ॥ हे राजन् ! नित्यसुखवाली होनेसे एक दिन वह विचार करने लगी कि मैं पुत्र और पौत्रवाली कब हूंगी ॥ ६ ॥ किस प्रकार मुझे सुख

लालितापुत्रवन्नित्यंनकदाचित्प्रलंभिता ॥ साहित्यशास्त्रकुशलानीतावपिविशारदा ॥ ४ ॥ अतीवतेनचतुरारमान्याचयथाभुवि ॥
शुभाशुभगुणज्ञानसौष्ठवेनविशारदा ॥ ५ ॥ नित्यंसुखवतीराजन्पुत्रपौत्रकृतस्पृहा ॥ चिंतयंतीतदाबालाह्येवंममकथंभवेत् ॥ ६ ॥
गुणभाग्यनिधिर्भर्तासुखदामेसुताःकथम् ॥ एवंमनोरथस्यांतंनगतासामनस्विनी ॥ ७ ॥ किंवाप्रीतिसमायुक्तापूजयामिसुरेश्वरम् ॥
कंवामुनिमुपातिष्ठेकिंवातीर्थमुपाश्रये ॥ ८ ॥ सख्योमेसुतसौंदर्यालोकनाप्तमनोरथाः ॥ ममभाग्यप्रसंगेनदृश्यतेममनैवतत् ॥ ९ ॥
प्रमादीजनकोमेपितेनाहंदुखिताबहु ॥ अध्यक्षाहंसखीवृंदेतेनमानवतीदृढम् ॥ १० ॥

निधान स्वामी मिलै और श्रेष्ठ पुत्र मेरे किस प्रकारसे हों इस प्रकार वह मनस्विनी मनोरथके अन्तको न प्राप्त हुई ॥ ७ ॥ मैं प्रीतियुक्त होकर किस देवताकी उपासना करूं अथवा किस मुनि वा किस तीर्थकी आराधना करूं ॥ ८ ॥ मेरी सखियोंके सुन्दर पुत्र और उनके मनोरथ पूर्ण हैं परन्तु मेरे भाग्यके कारण यह कोई वस्तु नहीं है ॥ ९ ॥ मेरे पिता प्रमादसे मेरा विवाह नहीं करते इससे मैं बडी दुःखी हूं परन्तु सखी समूहकी

अध्यक्षा होनेसे मैं बडी मानवती हूं ॥ १० ॥ मैं सुखकी ज्ञाता नहीं हूं मेरी भगिनी सुखी हैं मैं अल्पभाग्यवती हूं परलोकगामिनी नहीं हूं ॥ ११ ॥ इस प्रकार वह बाला चिन्ता करती मनोरथसागरमें शोकयुक्तमन होकर वारंवार मग्न होनेलगी ॥ १२ ॥ इधर वह बुद्धिमान् ब्राह्मण अपनी पुत्री देनेके निमित्त वरको ढूंढते पृथ्वीमें विचरने लगे ॥ १३ ॥ वह किसी श्रेष्ठ ब्राह्मणकुमारको न प्राप्त हुए अर्थात् अपनी

नाहंचैवसुखाभिज्ञासुखिनोममजामयः ॥ अल्पभाग्यवतीचाहंनकापिपरलोकगा ॥ ११ ॥ एवंचिंतयतीबालामनोरथमहोदधौ ॥ निमग्नज्जातिदुःखेनशोकसंविग्नमानसा ॥१२॥ मेधावीऋषिराजोसौविचचालमहीतलम् ॥पुत्रीदाननिमित्तार्थंविचिन्वन्सदृशंवरम् ॥ ॥ १३ ॥ नाप्तवान्द्विजमुख्येशंसनिर्गतमनोरथः ॥ सुतास्वकीयभाग्येननप्राप्तासदृशंवरम्॥ १४॥ अवापदैवयोगेनज्वरव्याधिंसुदारुणम् ॥ स्फुटत्सर्वांगसंभिन्नहृदयोगतचेतनः ॥ १५ ॥ कन्यादानोक्तसंकल्पभग्नपद्मवनालयः ॥ बह्वामयेनयुक्तोसौस्वगृहागमलालसः ॥ १६ ॥ सचलन्न्यपतन्मूर्च्छामाप्नुवन्नृषिणांवरः ॥ मदिरामदमत्तांगोगजराजइवागमत् ॥ १७ ॥ आगच्छन्नेवभवनंस पपातधरातले ॥ यावत्सुतासमादातुंपितरंद्रवतिक्षणात् ॥ १८ ॥

पुत्रीके भाग्यसे उसको सदृश वर न मिला ॥ १४ ॥ दैवयोगसे उसे बडा दारुण ज्वर प्राप्त हुआ उसके सर्वांगमें हडफूटन होनेलगी हृदयमें चैतन्यता न रही ॥ १५ ॥ उस समय उसके कन्यादानका संकल्प भग्न होगया और महारोगयुक्त होनेसे उसको घर जानेकी इच्छा हुई ॥ १६ ॥ स्वल्प बल होनेसे वह ब्राह्मण मूर्छित हो पृथ्वीमें गिरा और मदसे मत्त गजराजकी समान चलने लगा ॥ १७ ॥ घर आता हुआ वह पृथ्वीमें गिरा

जबतक पुत्री पिताके लेनेको चली ॥ १८ ॥ तब वह ब्राह्मण उसको स्मरण करता पृथ्वीमें गिर प्राण त्यागता हुआ और भावि अर्थके कारण वह मनोरथको प्राप्त न हुआ ॥ १९ ॥ गोविन्द विश्वेश जगन्निवास दामोदर चराचरके आधार सत्यभामाके स्थानमें रहनेवाले चक्रपाणि देवेश मेरी रक्षा करो ॥ २० ॥ इस प्रकार कहकर अपने नेत्रोंके सामने प्राण त्यागन करते देख कि, जो जगतके आनंद देनेवाले गदाग्रजका

तावत्परासुःसंजातोभूसुरस्तामनुस्मरन्॥ भाविनार्थबलेनैवनप्राप्तश्चमनोरथः॥१९॥ गोविंदविश्वेशजगन्निवासदामोदराधारचराचरा णाम्॥श्रीसत्यभामालयचक्रपाणेमांपाहिदेवेशजगन्निवास॥२०॥ इतिब्रुवन्नसून्विप्रःसंपश्यन्नयनाग्रतः॥ तत्याजजगदानंदपादावा पगदाग्रजम्॥२१॥ सानिरीक्ष्यपितुःपातंहाहाकृत्वाप्रधाविता॥ अंकेकृत्वापितुर्देहंविललापातिदुःखिता॥२२॥ कुररीवचिरंका लंविलप्यभृशपीडिता॥ उवाचपितरंबालाजीवमानमिवात्मनः॥२३॥ हाहापितुःकृपापूरपूरितप्रणयालय॥ कस्यांकेमांनिधाया द्यगतोसित्वंमहामते॥२४॥ पित्राविहीनामात्राचबांधवैःश्वशुरेणच॥ भर्त्राश्चश्वाकुमार्यस्मिगतिःकामेभविष्यति॥२५॥

स्मरण कर गिरे हैं ॥२१॥ वह पिताका गिरना देख हाहाकार कर दौड़ पडी और पिताके देहको गोदीमें धर दुःखसे विलाप करने लगी ॥२२॥ वह बहुत कालतक कुररीकी समान विलाप करती हुई महापीडित हुई और अपने जीते हुएकी समान पितासे कहने लगी ॥ २३ ॥ हाहा पिता कृपासे पूर्ण प्राणोंके पालक हे महामते ! मुझे आप किसकी गोदीमें रखकर चले गये ! ॥ २४ ॥ मैं पिता माता बंधु और श्वशुरसे भी रहित हूं तथा भर्ता रहित कुमारी हूं मेरी क्या गति होगी ! कन्याके प्रदानसमयमें आप त्रास करतेथे आनंदके समय तुम यमालयमें जानेके योग्य नहीं

हो ॥ २५ ॥ २६ ॥ अब वेदध्वनिसे रहित तुम्हारे इस आश्रममें किस प्रकार स्थित हूंगी ? हे द्विजश्रेष्ठ ! मेरी जीवनमें अब क्या इच्छा हो सकती है ॥ २७ ॥ हे दुहितृवत्सल ! मेरा विवाह विना किये आप धीरवान् इस लोकसे जानेको योग्य नहीं हो ॥ २८ ॥ यह कह वह बाला आंखोंमें आंसू भरे पिताका मुख चूमने लगी और वह सुन्दरी महादुःखी हो ऊंचे स्वरसे रुदन करने लगी ॥ २९ ॥ तपोवनवासी ब्राह्मण

कन्याप्रदानसमयेकृतस्त्रासश्श्रमत्कृते ॥ आनंदसमयेगंतुंनार्होसित्वंयमालये ॥ २६ ॥ कथंतिष्ठाम्यहंशून्येनिगमध्वनिवर्जिते ॥ आश्रमेतेद्विजश्रेष्ठकानुमेजीवितेस्पृहा ॥ २७ ॥ असंपाद्यैववैवाह्यंविधिंदुहितृवत्सल ॥ नयातुमत्पिताधीरोलोकांतरमितोमम ॥२८॥ इत्युक्त्वाश्रुमुखीश्यामाचुचुंबवदनंपितुः ॥ मुक्तकंठारुरोदार्त्तासुंदरीबहुलव्यथा ॥ २९ ॥ श्रुत्वातन्निनदंविप्रास्तपोवननिवासिनः ॥ किमेतन्महदाश्चर्यंश्रूयतेदारुणस्वनः ॥ ३० ॥ मेधाऋषेःसुताशब्दःश्रूयतेकरुणाकृतः ॥ इतितेसंभ्रमोपेताःसमापेतुःसहस्रशः ॥ ॥ ३१ ॥ शोकसंतप्तमनसोहाहाकारपराद्विजाः ॥ हंसाइवनिदाघार्त्ताःबहुधापरिपीडिताः ॥ ३२ ॥ ददृशुर्ऋषिराजंतंसुतांकस्थकलेवरम् ॥ समाश्वास्यततःकन्यांकाष्ठान्यादायतत्तनुम् ॥ ३३ ॥

उसका रोना सुन कहने लगे कि यह क्या आश्चर्यका शब्द सुनाई आता है ॥ ३० ॥ वह मेधाऋषिकी बेटीका करुणाभरा शब्द सुनाई आता है इसप्रकार सम्भ्रमको प्राप्त हो सहस्रों ऋषि उसके निकट आये ॥ ३१ ॥ शोकसे संतप्तमन हो हाहाकार करने लगे जैसे गरमीसे व्याकुले हंस पीडित होते हैं इसप्रकार होगये ॥ ३२ ॥ और उन ऋषिराजके शरीरको सुताकी गोदीमें देखने लगे तब कन्याको समझाकर काष्ठ लाय उसका शरीर ॥ ३३ ॥

अग्निमें दग्धकर वे सब ऋषि अपने: अपने आश्रमको गये और हीनमनोरथ विपत्तिको प्राप्त हुई कन्या वहां निवास करनेलगी ॥ ३४ ॥
और अपने अनुरूप पति प्राप्त होनेकी इच्छा करने लगी ॥ ३५ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येऋषिभिःकृतमृषिपुत्र्याःसान्त्वनंनामचतु
र्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीकृष्ण बोले, उस वनमें निवास करते उस कन्याकी शोकसे हिमकी सताई पद्मिनीकी समान दशा होगई ॥ १ ॥ शून्य
वनमें यूथसे भ्रष्ट मृगीकी समान आंसुओंसे शरीरको भिजोती हृदयकमलको दग्ध करती ॥ २ ॥ निःश्वास लेनेसे दीन हुई मंत्रसे रुद्ध सर्पिणीकी

दग्ध्वाविभावसौसर्वेगताःस्वेस्वेनिवेशने ॥ बालातस्मिन्निवसतीआपद्गतमनोरथा ॥ ३४ ॥ चिंतयानातुसदृशंपतिमाशुद्विजात्मजा
॥ ३५ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येऋषिभिःकृतमृषिपुत्र्याःसांत्वनंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ निवसं
त्यास्ततस्तस्यास्तस्मिन्नेवतपोवने ॥ शोकेनचपराक्लिष्टांहिमाक्तांपद्मिनीमिव ॥ १ ॥ शून्यकाननमासन्नांयूथभ्रष्टांमृगीमिव ॥
गलद्बाष्पौघपूराक्तज्वलद्धृदयपंकजाम् ॥ २ ॥ निश्वासपरमांदीनांसंरुद्धामुरगीमिव ॥ चिंतयंतीमपश्यन्तींदुःखपारंकृशोदरीम् ॥ ३ ॥
तामाससादभगवान्भविष्यबलनोदितः ॥ यदृच्छयाऋषिर्दृप्तःपरमःकोपनोमुनिः ॥ ४ ॥ यद्विलोकनमात्रेणतप्येदपिशतक्रतुः ॥
जटाकलापसंछन्नःसाक्षाद्दिवसदाशिवः ॥ ५ ॥ यस्तेजनन्याराजेंद्रशैंशवेचप्रसादितः ॥ निर्ज्जराकर्षिणींविद्यांददावस्यैसुपूजितः ॥ ६ ॥

समान स्थित थी और वह कृशोदरी दुःखका पार न जानकर विचारने लगी ॥ ३ ॥ भविष्यके बलसे प्रेरित भगवान् उसके निकट आये अर्थात
वह परम कोपन स्वभाव दृप्तऋषि स्वेच्छासेही वहां आये ॥ ४ ॥ उनके देखने मात्रसेही इन्द्रकोभी अधिक ताप होता था जटाकलापसे
संछन्न साक्षात् शंकरकी समान ॥ ५ ॥ हे राजेन्द्र ! जो कि तुम्हारी माताने बडी प्रीतिसे शिवभक्त दुर्वासाको प्रसन्न कियाथा इसकारण इन्होंने

प्रसन्न हो इनको देवताओंके बुलानेकी विद्या प्रदान की थी ॥ ६ ॥ हे राजन् ! जिन्होंनें अत्यन्त सेवा करनेवाले मुझकोभी अत्यन्त कोपसे पीडित किया कि ऐसा कोई न करैगा ॥ ७ ॥ अर्थात् हमको और रुक्मिणीको कुसुमाकर रथमें लगाया जलकी इच्छा करनेपरभी उस बालाको जल न देकर पीडित किया ॥ ८ ॥ महाक्रोधसे व्याप्तशरीर साक्षात् रुद्रके अंशसे सम्भूत दूसरे कालरुद्रकी समानही दूसरा शरीर धारे ॥ ९ ॥ अत्रिका महातपरूपी वृक्षका दिव्य फल, पतिव्रताशिरोमणि अनसूयाके गर्भसे उत्पन्न ॥ १० ॥ बुद्धिमान् दुर्वासाजी साक्षात् ब्रह्माकी समान

येनाहमपिभूपालचक्रेचर्चितपादुकः ॥ कोपेनपीडितोऽत्यर्थंनयथान्यःपुमान्क्वचित् ॥ ७ ॥ रथेसंयोजितोराजन्रुक्मिण्याकुसुमाकरे ॥ जलमर्थयतीबालातृषयापीडितात्यलम् ॥ ८ ॥ तीव्रकोपपरीतांगःशशापवनितांतदा ॥ साक्षाद्रुद्रांशसंभूतःकालरुद्रइवापरः ॥ ९ ॥ अत्रेरुग्रतपःकल्पवृक्षेदिव्यंफलंमहत् ॥ पतिव्रताशिरोरत्नानसूयागर्भसंभवः ॥ १० ॥ दुर्वासानाममेधावीपरमेष्ठीवमूर्तिमान् ॥ नैकतीर्थजलक्लिन्नजटाभासुरसच्छिराः ॥ ११ ॥ तमालोक्यसमायांतंब्राह्मणीशोकसागरात् ॥ उन्मज्ज्यनेत्रकमलेसुस्वरामृदुभाषिणी ॥ १२ ॥ ववंदेचरणौमूर्ध्नामुनेरद्भुतकर्मणः ॥ नत्वास्वाश्रममानीतावाल्मीकेर्जानकीयथा ॥ १३ ॥ अपूजयद्वरारोहाऋषिराजंतपस्विनी ॥ अर्घादिक्रिययासम्यग्वन्यैरुच्चावचैरपि ॥ १४ ॥

मूर्ति धारण किये अनेक तीर्थोंके जलसे धोई जटाभारसे शोभित थे ॥ ११ ॥ उन ऋषिको आया देख शोकसागरसे उठ वह ब्राह्मणकुमारी अपने नेत्रोंको खोल अच्छे स्वरसे बोलनेवाली ॥ १२ ॥ अद्भुतकर्मा मुनिके चरणोंको शिरसे प्रणाम करती हुई और नमस्कार कर ऐसे उनको अपने आश्रममें लिवा लाई जैसे वाल्मीकि जानकीको लायेथे ॥ १३ ॥ उस तपस्विनी सुमुखीने ऋषिराजकी पूजा वनके छोटे बडे फल पुष्पादिसे

उन की यथेष्ट पूजाकी ॥ १४ ॥ क्रियासे निवृत्त हो सुखसे बैठेहुए ऋषिकी उपासना करनेलगी और वह सुनेत्रा उनका स्वागत कर इस प्रकार पूछने लगी ॥ १५ ॥ हे अत्रिगोत्रोत्पन्न भगवन् ! आप भले आये, हे भगवन् ! आपके चरणोंकी देवसमूह वन्दना करते हैं ॥ १६ ॥ तुम कमलके रजकी समान शोभित होते, जटाभारसे विराजित हो सुरासुरोंसे वन्दनीय ब्रह्मचिन्तनमें तत्पर ॥ १७ ॥ जिनके नामस्मरणसे अनेक दुःखका क्षय होताहै आप सब सिद्धिके समुद्र हो शीघ्र कौन तुम्हारा दर्शन कर सकता है ? ॥१८॥ आपको देखने और नमस्कार करनेसे सब पाप

सत्कृत्यसुखमासीनमुपासांचक्रईश्वरम्॥भामिनीस्वागतंवाक्यमुवाचशुभलोचनी ॥ १५ ॥ स्वागतंतेस्तुभगवन्नत्रिगोत्रसमुद्भव ॥ वृन्दारकवृंदवंद्यपदपद्ममुनीश्वर ॥ १६ ॥ लसत्कदंबकिंजल्कजटाभारविराजित॥सुरासुरैर्वंदनीयब्रह्मचिंतनतत्पर ॥ १७ ॥ यन्नाम स्तुतिमात्रेणह्यनेकदुःखसंक्षयः ॥ सर्वसिद्धिसमुद्रेकःसद्योभवतिदर्शनात् ॥ १८॥त्वांदृष्ट्वाचैवनत्वाचसर्वपापक्षयोभवेत् ॥ मदीयमृ षिशार्दूलयेनप्रश्नेममस्पृहा ॥१९॥कुतोधिगमनंसाधोतीर्थादिनिमिषेणकिम् ॥ अभाग्यायाममपुनर्भाग्यलेशेनप्राप्तवान् ॥ २० ॥ अथवामत्पितुःपुण्यप्रवाहप्रेरितःकिमु ॥ श्रीमद्विचलनंब्रह्मन्नृणामघविनाशकृत ॥ २१ ॥ गृहांधकूपेपतितांस्वैःपापैर्दुष्टचेतसाम् ॥ भवादृशांपदस्पर्शस्तीर्थकोटिसमोभवेत् ॥ २२ ॥

क्षय होजातेहैं हे ऋषिशार्दूल ! मेरे कुछ आपसे पूछनेकी इच्छा है ॥ १९ ॥ हे भगवन् ! आपका इधर आना किसी तीर्थके मिससे हुआहै ? हे भगवन् ! मुझ अभागिनीके भाग्यलेशसे यह वार्ता प्राप्त हुईहै ॥ २० ॥ अथवा कोई मेरे पिताके पुण्यप्रभावसे आपका दर्शन प्राप्त हुआहै, आपका दर्शन मनुष्योंके पापका दूर करनेवाला है ॥ २१ ॥ गृहरूपी अंधकूपमें पडे अपने पापोंसे दुष्टचित्त हुए पुरुषोंको आपके चरणोंका स्पर्श

कोटितीर्थोंकी समान होता है ॥ २२ ॥ यह वाक्य कह कह ब्राह्मणकन्या नीचेको मुखकर स्थित हुई । तब शिवके अंश दुर्वासाजी हँसकर उस्से कहने लगे ॥ २३ ॥ हे ब्राह्मणकन्या ! तू धन्य है तैनैं कुलका उद्धार करदिया मैं धर्ममें तत्पर शिवपूजन कर ॥ २४ ॥ कैलासमें तेरी धर्मशीलता जानकर आयाहूं, मैं तेरे चारित्रसे प्रसन्न और तेरे पिताके स्नेहसे यंत्रित हूं ॥ २५ ॥ तेरे आश्रमको प्राप्त हो तुझसे पूजित हुआहूं, हे वरारोहे ! अब मैं बदरिकाश्रमको जाताहूं ॥ २६ ॥ वहां नरनारायणका दर्शन करूँगा और वहां उग्र तप करनेकी मेरी इच्छा है ॥ २७ ॥

उक्त्वावाक्यंद्विजसुतातस्थौतूष्णीमवाङ्मुखी॥सुस्मितंमुनिराहेदंदुर्वासागिरिशांशजः ॥२३॥साधुसाधुद्विजसुतेकुलमप्युद्धतंत्वया धर्मिष्ठस्यचमेधावेःपरस्यशिवपूजने॥२४॥कैलासादहमागच्छंज्ञात्वातेधर्मशीलताम्॥त्वच्चरित्रेणप्रीतोऽहंत्वत्पितुःस्नेहयंत्रितः २५॥ त्वदाश्रमपदंप्राप्तस्त्वयासंपूजितोह्यहम् ॥ गमिष्यामिवरारोहेश्रीमद्बदरिकाश्रमे ॥२६॥ द्रष्टुंनारायणंदेवंनरयुक्तमनुद्धतम् ॥ तपश्चरं तमेकाग्रमनुग्रंचिरसंस्थितम्॥२७॥द्रष्टुकामोस्मिसुश्रोणितवदुःखंमहत्तरम्॥अंतराधिप्रदीप्तेनवह्निनासाप्रदीपिता॥२८॥कन्योवाच॥ ऋषेत्वद्दर्शनादेवसंशुष्कःशोकसागरः॥परितोपिशुभंभावियत्संतुष्टस्त्वमात्मना ॥ २९ ॥ किन्नवेत्सितपःश्लाघिन्ममशोकस्यकारण म्॥हर्षदंतुनमेकिञ्चिद्दृश्यतेत्वंविचारय॥३०॥नमातानपिताभ्रातानमित्रंनचबांधवः ॥ कुमारोनचमेभर्तासकालोप्यतिवर्त्तते ॥३१॥

हे सुन्दरी ! मैं तुम्हारे महादुःखका कारण देखनेकी इच्छा करताहूं, जो तुम्हारे अन्तरमें अग्निके समान प्रदीप्त है ॥ २८ ॥ कन्या बोली ॥ ऋषे ! आपके दर्शनसे मेरा शोकसागर नष्ट होगया है और जो आप संतुष्ट हुए हो तो आगेको शुभ होनेकीभी आशा है ॥ २९ ॥ हे तपमें तत्पर ! क्या आप मेरे शोकका कारण नहीं जान्ते हो, मुझे कोई भी प्रसन्न करनेवाला नहीं दीखता यह आप विचारिये ॥ ३० ॥ मेरे माता पिता भ्राता बंधु

कोई नहीं है यह जानिये, मेरा विवाह नहीं हुआ कुमारीहूं विवाहका काल बीता जाता है ॥ ३१ ॥ जिधर देखतीहूं वही दिशा मुझे शून्य विदित होती है. हे भगवन् ! कोई भी ऐसा उपाय है ? जिससे मेरा दुःख नष्ट हो ॥ ३२ ॥ आप ऐसा कीजिये जिससे मेरा कल्याण हो, हे शिवांश सम्भूत ! वह करो जिससे शूद्रता प्राप्त नहो मुझको सुख देनेवाला हो ॥ ३३ ॥ जो मेरे पिता होते तो कुछ चिन्ता न थी वह भी अकाल में कालकवलित हुए सबको थोडा बहुत सुख होता है परन्तु मैं क्यों एकान्त दुःखी हूं ॥ ३४ ॥ वह कोकिलकंठी यह वचन कहकर कुछन

यांयांदिशंप्रपश्यामिसासाशून्याविभातिमे॥कोप्युपायःसदृष्टोस्तियेनमेदुःखसंक्षयः ॥ ३२ ॥ दिशतंशिवसंभूतवृषलीयेननोभवम् ॥ भवेस्मिंस्तवशापोस्तिमामेकश्चशुभप्रदः ॥ ३३ ॥ चेद्भवेन्मेजनकःसोप्यकालेदिवंगतः ॥ सर्वथाल्पसुखिन्येवाहंचैकाप्यति दुःखिता ॥ ३४ ॥ वाक्यमुक्त्वापिककंठीकिंचिन्नोवाचसुंदरी ॥ ध्यात्वोवाचऋषिर्देवींकारुण्यभररंजितः ॥ ३५ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ शृणुसुंदरियत्नेनकस्यापिकथितंनमे ॥ वक्ष्यामितुभ्यंसुश्रोणित्वद्गुणेनसुयंत्रितः ॥ ३६ ॥ तृतीयेसुभगेसुभ्रुहायनेपरमाद्भुतः ॥ भविष्यतिवरारोहेमासोवैपुरुषोत्तमः ॥ ३७ ॥ यस्मिन्स्नातोनरस्तीर्थेमुच्यतेभ्रूणहत्यया ॥ अपिस्नानान्महापुण्येमासेकिमुतसा धनात् ॥ ३८ ॥ नायंतुल्योभवेद्देविमासैरन्यैःसुशोभने ॥ साधनानिसमस्तानिऋषिप्रोक्तानिसुंदरि ॥ ३९ ॥

बोली तब ऋषि दयाकर क्षणमात्र ध्यानकर बोले ॥ ३५ ॥ दुर्वासाजी बोले ॥ हे सुश्रोणि ! यत्नसे सुन यह मैंने आजतक किसीसे नहीं कहा परन्तु तेरे गुणसे यंत्रित हो कहताहूं ॥ ३६ ॥ हे सुभ्रू ! तीसरे वर्षमें परम अद्भुत पुरुषोत्तम मास होगा ॥ ३७ ॥ जिस मासमें तीर्थयात्राकर तीर्थमें न होनेसे मनुष्य ब्रह्महत्यासे छूट जाता है स्नानसेही बडा पुण्य होता है साधन करै तो क्या बात है ॥ ३८ ॥ हे देवि ! हे सुशोभने ! इसके समान

और कोई महीना नहीं है. हे सुन्दरी ! इससे ऋषियोंने अनेक साधन कहे हैं ॥ ३९ ॥ और महीने उनकी सोलहवीं कलाके भी बराबर नहीं हैं सब महीने और पखवारे ॥ ४० ॥ भी इसके एक दिनके स्नानके फलको नहीं प्राप्त होते हैं । हे शोभने ! जो अन्नदानका फल होता है ॥ ४१ ॥ वह जप उपवास दानका फल इसके एक दिन सेवनसे होता है, यह सर्वथा सब महीनोंके शिरपर स्थित है ॥ ४२ ॥ इस कारण तुम पुरुषोत्तम मासका सेवन करो ! हे ब्राह्मणकन्ये ! यह नारायणको अत्यन्त प्रिय है ॥ ४३ ॥ हे भामिनी ! यह मास जब प्राप्त होता है तब मैंभी इसकी सेवा

मासस्यतस्यनार्हंतिकलामपिचषोडशीम् ॥ सर्वेमासास्तथापक्षाःसर्वाण्यन्यानिभामिनि ॥ ४० ॥ एकस्मिन्दिवसेस्नानमाहात्म्यंनानुयांतिहि ॥ अन्यदानस्यपुण्यंयद्भूतंभवतिशोभने ॥ ४१ ॥ जपोतवासदानानितदस्मिन्नेकसंख्यया ॥ सर्वथासर्वमासानांशिरःस्थानेव्यवस्थितः ॥ ४२ ॥ तस्मान्निषेवयाशुत्वंमासंवैपुरुषोत्तमम् ॥ अत्यंतकैटभारातिप्रियोयंभूसूरात्मजे ॥ ४३ ॥ मयापिसेव्यतेनित्यंयदाप्राप्नोतिभामिनि ॥ विष्णुनाम्नासविज्ञातःकोन्योभवितुमर्हति ॥ ४४ ॥ मुंचत्राज्ञंबरीषायक्रोधंकृत्वासुदारुणम् ॥ तदात्रातोस्यपुण्येनविष्णुचक्रात्सुदुःसहात् ॥ ४५ ॥ सोहंशक्तःसुनाभस्यतेजःपरमदारुणम् ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशंब्रह्मांडानांचभस्मकृत्॥४६॥युगांताग्निसमंतस्यभूरिशोदाहकस्यचित् ॥ मुक्तोमासप्रभावेणतेजसाहंसमेधितः ॥ ४७ ॥

करताहूं, यह विष्णुके नामसे विख्यात है कौन इसकी बराबरी कर सकता है ॥ ४४ ॥ जब मैंने अज्ञानतासे अम्बरीषके ऊपर दारुण कृत्या छोडीथी तब उसके पुण्यने विष्णुके चक्ररूपसे रक्षा कीथी ॥ ४५ ॥ सो मैं सुनाभके परम दारुण कोटि सूर्यके समान प्रकाशित जगत्के भस्म करनेमें समर्थ ॥ ४६ ॥ युगान्ताग्निके समान चारोंओरसे व्याप्त उसके तेजसे आहत हो मैं इस महीनेके पुण्यप्रभावसेही मुक्त हुआ था ॥ ४७ ॥

नहीं तो नारायणके हाथसे छुटे हुए चक्रसे कौन मुक्त हो सकता है ! चाहै साक्षात् देव इन्द्रके शत्रुके मारनेवालाभी क्यों न हो ॥ ४८ ॥ हे वामोरु ! न और कोई जीवनसे बच सकता है हे वामांगी ! उस दिनसे मुझे बडा विस्मय हुआ ॥ ४९ ॥ अहो इस महीनेका ऐसा प्रभाव है जिसे कोई नहीं जान्ता कारण कि, महामाहात्म्यवाले विष्णुने इसे स्वीकार किया है ॥ ५० ॥ हे सुश्रोणि ! इस कारण श्रीमान् पुरुषोत्तम मासका तुम भजन करो जिसका सम्यक् व्रत करनेसे आनन्दकी प्राप्ति होती है ॥ ५१ ॥ इस सूर्यरूप व्रतसे दुःखरूपी अंधकार दूर होजाता है. हे वरानने ! प्राणी इसको

नोचेद्धरिकरान्मुक्तचक्रकोपाद्विमुच्यते॥यदिसाक्षाद्धवेद्देवःसहस्रनयनारिहा॥४८॥कश्चिदन्योपिवामोरुजीवन्यातिकथंचन ॥ तदा प्रभृतिवामांगिविस्मयोमेमहानभूत्॥४९॥अहोह्येतादृशोमासोनज्ञातःकेनहेतुना॥महामाहात्म्यवान्विष्णुर्येनायमुररीकृतः ॥ ५० ॥ तस्माद्भजत्वंसुश्रोणिश्रीमंतंपुरुषोत्तमम् ॥ यस्मिश्चीर्णव्रताःशश्वत्सौख्यसागरगामिनः ॥ ५१ ॥ दुःखध्वांतोग्रपुंजौघनाशोविद्धिहि भास्करम्॥तावदन्येप्रशंसंतिस्वात्मानंचवरानने ॥ ५२ ॥ नोदितःपातकध्वांतविध्वंसचतुरोरविः ॥ तत्साधनसहस्राणिनिरस्यत्वं द्विजात्मने ॥ ५३ ॥ केवलंहरिनामानंमासंतिष्ठस्वसर्वथा॥इत्युक्त्वामुनिशार्दूलोविरराससखिन्नवत् ॥ ५४ ॥ नशशाकपुनर्वक्तुंमास माहात्म्यमद्भुतम्॥श्रीकृष्णउवाच ॥ इतिश्रुत्वाऋषिबालाबाल्यान्मोहाद्भगवतः ॥ ५५ ॥

जबतक प्राप्त नहीं हुआ है तभीतक दूसरे व्रतोंकी प्रशंसा है ॥ ५२ ॥ जबतक पातकरूपी अंधकार नाश करनेको पुरुषोत्तमरूप सूर्योदय नहीं होता है हे द्विजात्मजे ! सो तू सहस्रों दूसरे साधनोंको छोडकर ॥ ५३ ॥ केवल हरिनाममासके स्मरणमें सर्वथा स्थित हो. इस प्रकार कह खिन्न हुएके समान मुनि मौन हुए ॥ ५४ ॥ और फिर इस मासके माहात्म्य कहनेको समर्थ न हुए, श्रीकृष्ण बोले ॥ वह बाला ऋषिके यह वचन सुन मोह

और गर्वसे ॥ ५५ ॥ और होनहारके वशसे असूया परवश हुई और ग्रंथके मतको ग्रहणकर मुनिके वचनको स्वीकार नहीं किया ॥ ५६ ॥ वह सुन्दरी क्रूर और कल्पित मतको विचारने लगी कन्याने कहा हे ब्रह्मन् ! यह आपका वाक्यविस्तार मुझे अच्छा नहीं लगता ॥ ५७ ॥ माघादि महीनोंको अतिक्रमणकर आप कैसे ऐसे वचन कहतेहो यह सम्पूर्ण शास्त्रका तिरस्कार आपको योग्य नहीं है ॥ ५८ ॥ आप कार्त्तिकादि मास और चान्द्रायणादि व्रत त्यागकर इसको किसप्रकार कहते हो ॥ ५९ ॥ हे मुने ! वैशाख महीना क्या व्रत करनेसे मुक्तिदाता नहीं है, क्या सदाशिवादि

भाविनोपिबलाच्चैवसासूयापूरिताभवत्। अन्यग्रंथमतंगृह्यानादृत्यमुनिभाषितम्।५६। क्रूरमंतककल्पंहिसाचिंतयतिसुंदरी। कन्योवाच। नमह्यंरोचतेब्रह्मंस्त्वदीयोवाक्यविस्तरः॥५७॥ कथंमाघादिमासांस्त्वमतिक्रम्यावभाषसे॥ नवैत्वय्युपपद्येतसर्वशास्त्रोपमर्दनम् ॥५८॥ कथंकार्त्तिकमासंत्वमूनंवदसितद्वद॥ चांद्रायणादिकंत्यक्त्वाविरुद्धंकिंप्रभाषसे॥५९॥ वैशाखःकिमुनोदाताफलानांचरितव्रतः ॥ सदा शिवादयोदेवाःसिद्धिदानभवंतिकिम्॥६०॥ भगवान्रुक्मिणीनाथःसेवितोनसुखप्रदः॥ अथवाभुविमार्तंडोदेवःप्रत्यक्षदर्शनः ॥ ६१ ॥ दर्शनात्स्पर्शनाद्ध्यानाद्दुःखौघौघविनाशनः॥ किंवाष्टादशदोर्दंडराजिताजगदंबिका॥६२॥ शाकंभरीमहादेवीकष्टहंत्रीभवेन्नहि॥ सिंदु रारुणसद्गात्रशुण्डपुष्कर राजितः॥६३॥ दुःखहानभवेत्किंतुश्रीमान्विघ्नविनाशकृत्॥ व्यतीपातादिकान्योगानुपरागानपिप्रभो ॥६४॥

देवता मुक्ति देनेवाले नहीं हैं ॥ ६० ॥ क्या भगवान् रुक्मिणीनाथ सेवन करनेसे सुख देनेवाले नहीं हैं अथवा मार्तण्डदेव सेवन करनेसे प्रत्यक्ष दर्शनवाले नहीं हैं ॥ ६१ ॥ क्या यह देव दर्शन स्पर्श और ध्यानसे दुःखसमूह नाश नहीं करते वा अठारह भुजासे युक्त जगदम्बा ॥ ६२ ॥ शाकंभरी देवी कष्ट हरनेवाली नहीं है सिंदूरकी समान अरुणशरीर शुण्डमें शोभित कमल ॥ ६३ ॥ विघ्नविनाशी गणेशजी क्या दुःखहारी नहीं हैं ?

प्रभो ! व्यतीपातादि योग और ग्रहण ॥ ६४ ॥ सम्पूर्ण पुण्ययोग संक्रांति अयन तप नियम और उपासनीय अनेक देवता हैं ॥ ६५ ॥ आप सब को उल्लंघनकर कहनेमें लज्जित क्यों नहीं होते हो । हे द्विज ! आपने क्या आश्रयकर मलमासका प्रकाश किया है ॥ ६६ ॥ सब साधनोंकी निन्दा कर यह वार्ता आपको कहनी योग्य नहीं है। हे मुने ! सबप्रकारके दुःख और भवसागरसे पार करनेवालेको मैं जान्तीहूं ॥ ६७ ॥ हे भूदेव ! उन्हीको रात दिन चिन्ता करती उनके सिवाय दूसरेको नहीं जानती। कौशल्यानंदन राम और जानकीके सिवाय और नहीं जानती ॥ ६८ ॥ अथवा गंगाधारी

पुण्ययोगानपिसर्वान्संक्रांतिंह्ययनेपिच ॥ तपांस्यन्यानिनियमानुपास्यानपिदेवताः ॥६५॥ सर्वानुल्लंघ्यवदतस्त्रपातेकिंनजायते ॥
किमाश्रित्यत्वयाविप्रमलमासःप्रकाशितः ॥ ६६ ॥ नैवंवकुंभवान्युक्तःसर्वसाधनर्निदनः ॥ वेद्म्यहंसर्वदुःखानांपारदंभवसागरे ॥
॥६७॥ नान्यंपश्यामिभूदेवचिंतयंतीदिवानिशम् ॥ रामाद्वैजानकीजानेःकौसल्यानंदवर्द्धनात् ॥६८॥ अथवास्वर्धुनीपूरधारिणः
शंकरादृते ॥ बाणासुरदशग्रीवादयःसिद्धिंपुरोगताः ॥ ६९ ॥ पुत्रपौत्रमयींसिद्धिंयथेष्टांमाघपूजनात् ॥ भगवान्देवकीपुत्रोब्रह्म
ण्योभक्तवत्सलः ॥ ७० ॥ सदाशिवप्रसादेनलेभेपुत्रान्सहस्रशः ॥ विहायतंमहादेवंधूर्जटिंशशिशेखरम् ॥ ७१ ॥ एतान्विहायसततंक
थमेनंप्रशंससे ॥ नैतन्मेरोचतेब्रह्मंस्तववाक्यंनसंशयः ॥ ७२ ॥

शंकरके सिवाय और कौन देव है जिनकी आराधना करनेसे रावण बाणासुर आदिक सिद्ध होगये ॥ ६९ ॥ माघके पूजनसे पुत्रपौत्रमयी सिद्धि मिलती है उसमें भगवान् भक्तवत्सल देवकीनंदनका पूजन होता है ॥ ७० ॥ सदाशिवके प्रसादसे सहस्रों पुत्रोंको प्राप्त हुए उन धूर्जटि शशिशेखर महादेवको छोडकर ॥ ७१ ॥ तथा अन्य देवताओंको छोडकर आप कैसे इस महीनेको वर्णन करतेहो । हे ब्रह्मन् ! निःसन्देह मुझे आपका वाक्य

अच्छा नहीं लगता ॥ ७२ ॥ उस समय उस कन्याके यह वचन कहने पर वह क्रोधी मुनि शरीरसे प्रकाशमान हो क्रोधसे लाल नेत्र कर ॥ ७३ ॥ जैसे कि घृतसे प्रज्वलित हुत अग्निपर कोई जल छिडकै इसप्रकार व्याकुल हो कुछ न बोले क्रोधसे चित्त और शरीर चलायमान होगया ॥ ७४ ॥ मुहूर्तमात्रतक इधर उधर देखतेरहे और फिर उसके वाक्यको विचारते हुए भगवान् बोले ॥ ७५ ॥ और मित्रसुता जानकर क्रोधित होकरभी उसे शाप

एवमुक्तस्ततोविप्रपुत्र्यासक्रोधनोमुनिः ॥ जाज्वल्यमानोवपुषारोषसंरक्तलोचनः ॥ ७३ ॥ जज्वालाज्यसरिद्धारासिक्तकालाग्निव न्मुनिः ॥ नोवाचकिंचित्कुपितश्चलत्क्लिष्टकलेवरः ॥ ७४ ॥ मुहूर्तमात्रंतत्रैवतस्थौदिगवलोकनः ॥ अथावभाषेभगवांस्तद्वाक्यमनु शीलयन् ॥ ७५ ॥ कुपितोपिशशापैनांनैवमित्रसुताहिसा ॥ कुमारीललिताबालादुःखदग्धानिराश्रया ॥ ७६ ॥ किंकरिष्यतिम च्छापदग्धाप्रागेवभर्जिता ॥ ऋषिरुवाच ॥ भोभोबालेनमेकोपस्त्वयित्रातातातःशुभे ॥ ७७ ॥ येनचेतःप्रसन्नंस्यात्तत्कुरुष्वशुचि स्मिते ॥ नाहंवक्ष्यामितेकिंचित्त्वत्पुरःशुभशंसिवत् ॥ ७८ ॥ नोपचारस्त्वदीयोस्तिमनागपिकथंचन ॥ भाग्यहीनेनरेव्यर्थउपदेशो भवेच्छुभे ॥ ७९ ॥ मुमूर्षोर्भेषजंयद्वत्क्लीबेदारपरिग्रहः ॥ अंधाग्रेचयथादर्शःपुस्तकंचजडाग्रतः ॥ ८० ॥

नहीं दिया, कारण कि वह कुमारीबाला स्वयं दुःखसे दग्ध होरहीथी ॥ ७६ ॥ यह तौ पहलेही दग्ध होरहीहै इसको मेरा शाप क्या करैगा यह विचार ऋषि बोले ॥ हे बाले ! हे शुभे ! तुझपर मेरा कोप नहीं है ॥७७ ॥ हे शुचिस्मते ! जिसमें तेरा चित्त प्रसन्न हो सो करो और मैं तेरा शुभशंसी अब और कुछ नहीं कहूंगा ॥ ७८ ॥ तुझमें किंचितभी उपचार नहींहै भाग्यहीन मनुष्यको उपदेश व्यर्थ है ॥ ७९ ॥ मरनेवालेको औषधी देनी ऐसी है जैसी नपुंसकको

स्त्रीकी प्राप्ति, अंधेके आगे जैसे दर्पण, मूर्खको जैसे पुस्तक ॥८०॥ मरुदेशमें कुएका खोदना और मरे हुएको भूषणोंसे सजाना, ऊषरमें बीजका बोना और सागरमें वर्षा ॥८१॥ कृतघ्न मित्रके ऊपर कृपा, सागरमें जल डालना, दुर्जनसे सद्वचन कहना यह सब निष्फल हैं॥८२॥ हे भाग्यरहिते ! जो तेरे मनमें है वह तू निरन्तर कर मेरा वचन मुझमें स्थित रहो ॥८३॥ औरभी मैं कुछ तुझसे कहताहूं सुन जो कि, तैंने विष्णुके महीनेका निरादर किया

मरौकूपखनिर्यद्वद्वृतासोर्भूषणक्रिया॥ऊषरेबीजनिक्षेपःसागरेवृष्टिरुद्धता॥८१॥कृतघ्नेचमित्रकृपासागरेचयथापयः ॥ तत्सर्वंनिष्फलं यद्वद्दुर्जनेसद्वचस्तथा ॥ ८२ ॥ यत्तेचेतसिसंजातंसुष्ठभाग्यविवर्जिते॥तत्त्वंकुरुष्वसततंमद्वचोमयिसंस्थिते ॥ ८३ ॥ परंकिंचित्स माख्यास्येशृणुतन्निर्व्यलीकतः ॥ विष्णुश्रेयस्यमासस्ययत्त्वयानादरःकृतः ॥८४ ॥ सर्वथातत्फलंलभ्यमिहवापरजन्मनि ॥ गच्छा मितेभ्यनुज्ञातोविशालांबदरीमहम् ॥८५॥ शापंदद्मिनवामोरुमित्रोमेत्वत्पितायतः॥मित्रद्रोहोभवेन्मह्यंशप्तायांत्वयिसर्वथा ॥८६॥ तेनमेसंयतःकोपःकालकूटसमाकृतिः॥स्वस्तितेऽस्तुगमिष्यामिमामेकालव्ययोभवेत् ॥ ८७ ॥

है॥८४॥सर्वथा उसका फल इस जन्म वा परजन्ममें मिलेगा अब मैं तुझसे पूछकर विशाल बदरीवनको जाताहूं ॥ ८५ ॥ हे वामोरु ! जिस कारण कि, तेरे पिता मेरे मित्र थे इसकारण मैं तुझको शाप नहीं देताहूं तुझको शाप देनेमें सर्वथा मित्रद्रोह होताहै ॥८६॥ इसकारण मैंने काला

नलकी समान क्रोधको रोक लियाहै तेरा मंगल हो मैं जाता हूं मेरा कालव्यय न हो ॥८७॥ होनहार सुख दुःखको कोई नहीं जानसकता ॥८८॥ इतिश्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये दुर्वाससऋषिपुत्र्यासह संवादो नाम पंचमोध्यायः ॥ ५ ॥ यह वचन कह अत्रिपुत्र दुर्वासाजी चलेगये और उनके वाक्यसे ऋषिसुता क्षणमात्रमें प्रभाहीन होगई ॥ १ ॥ और बहुतकालतक विचार करती रही कि, अब मुझको क्या करना चाहिये अब मैं तपसे पार्वतीपति देवेशकी आराधना करूंगी ॥ २ ॥ दुःखरूपी अग्निदुःखका कुण्ड दुःखका स्रुव है उसमें दुःखरूप दुर्वासाही होता और

शुभंशुभेतरंभाविनकेनाप्यवगम्यते॥८८॥इतिश्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्येदुर्वाससऋषिपुत्र्यासहसंवादोनाम पंचमोऽध्यायः५॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ इतिवाचमुदीर्यासौजगामात्रिसमुद्भवः ॥ क्षणादृषिसुताजातानिष्प्रभामुनिवाक्यतः ॥१॥ विमृश्यसुचिरंकालंकिंनुकार्यंमयाधुना॥आराधयामिदेवेशंतपसापार्वतीपतिम्॥२॥दुःखाग्नौदुःखकृत्कुंडेदुःखसुस्रुवसंभृते॥ दुर्वासादुःखहोतायंदुःखाज्यंहुतवान्किल॥३॥समिद्धपावकस्यास्यसेक्तानास्त्यधुनांबुना॥सदाशिवादृतेशंभोर्दृढसंकटमोचनात् ॥ ४ ॥ इतिनिश्चित्यमनसाह्यापैयीकन्यकातदा॥अनादृत्यमुनेर्वाक्यंमुग्धादुर्वाससःशुभम् ॥ ५ ॥ समारभतकल्याणीतपःपरमदुष्करम् ॥ चिंतयंतीशिवंशांतंपंचवक्त्रसनातनम्॥६॥भुजंगभूषणंदेवंनंदिभृंगिनिषेवितम् ॥ चतुर्विंशतितत्त्वेशंगुणैस्त्रिभिरभिष्टुतम् ॥ ७ ॥

दुःखरूपी घृत आहुति है ॥ ३ ॥ इस समिद्ध हुई अग्निको कोई जलसे बुझानेवाला नहीं है केवल संकटमोचन शंकरही इससे छुडानेवाले हैं ॥ ४ ॥ यह मनमें विचार कर वह ऋषिकन्या मुनिके वाक्यको अनादर कर दुर्वासाके वाक्यसे मुग्ध हुई ॥ ५ ॥ वह कल्याणी दुष्कर तप करनेलगी और पंचमुख सनातन शिवका विचार करने लगी ॥ ६ ॥ भुजंगभूषण देव नंदी भृंगीसे सेवित चौवीस तत्त्वोंके अधिपति तीन गुणोंसे युक्त ॥ ७ ॥

आठ महासिद्धि और प्रकृति पुरुष दीप्त महत्तत्त्व और अहंकारसे स्तुतिको प्राप्त ॥ ८ ॥ चन्द्रकान्तिसे शोभित मस्तक जटासमूहसे शोभित शिवके उद्देशसे वह बाला दुष्कर तप करने लगी ॥ ९ ॥ ऐसा तप करने लगी कि, कोई कर न सके ग्रीष्मकालमें पंचाग्नि तापती ॥ १० ॥ हेमन्तमें शीतल जलमें बैठ तप करती इसप्रकार तप करती वह महाभागा, केवल पद्मिनीकी समान शोभित हुई ॥ ११ ॥ श्यामकेश अलकोंसे युक्त जम्बालकी

महासिद्धिभिरष्टाभिःप्रकृत्यापुरुषेणच ॥ महत्तत्त्वेनदीप्तेनह्यहंकारेणसंस्तुतम् ॥ ८ ॥ चंद्रकांत्यालसद्भालंजटाराजिविराजितम् ॥
चचारदुश्चरंबालातमुद्दिश्यसदाशिवम्॥९॥ कर्तुंशक्यंनकेनापितपःपरमदारुणम् ॥ पंचानामग्निनांमध्येस्थायिनीग्रीष्मगेरवौ॥१०॥
हेमंतेशिशिरेशीतवारिकुंडनिवर्तिनी ॥ राजतेचमहाभागापद्मिनीवतुकेवला ॥ ११ ॥ शिरोधःप्रसृतश्मामनीलालकविगुंफिता ॥
जंबालवल्लरीपुंजपरितःपरिवेष्टिता ॥ १२ ॥ ब्रह्मरंध्रोद्गतश्रीमद्धूमराजिप्ररोहिणी॥ नलिनीसेव्यमानेवहंसीवसततंस्थिता ॥ १३ ॥
वपुषादीप्यमानेनसेवमानासदाशिवम्॥संध्ययोरुभयोस्तन्वीधूम्रपानकृतस्पृहा ॥ १४॥ विशंकासुरसंघानांकालेनाल्पेनसाभवत् ॥
दुर्द्धर्षादिविजैःसिद्धैःस्पृहणीयामहर्षिभिः॥१५॥तपस्यायांप्रवृत्तायांतापस्यांनृपभूषण॥ गतान्यष्टसहस्राणितदाराजन्यपूजित॥१६॥

बेलके समूहसे चारों ओर वेष्टित ॥ १२ ॥ कि, जिसके ब्रह्मरंध्रसे धूम निकलने लगाथा और कमलिनीकी समान हंसी जिसकी निरन्तर सेवा कररही थीं ॥ १३ ॥ दीप्तिमान् शरीरसे सदाशिवकी सेवा करती हुई दोनों संध्या मानों उससे धुमेली हो रही हैं ॥ १४ ॥ थोडेही समयमें वह देव समूहसे विशंक होगई देवता और सिद्धोंसे दुर्धर्ष और महर्षियोंकी स्पृहा करने योग्य हुई ॥ १५ ॥ हे राजन् ! जब वह इसप्रकार शिवपूजनमें

प्रवृत्त हुई तब तप करते उसको आठ सहस्र वर्ष बीत मये ॥ १६ ॥ तब उसके तपसे भगवान् शंकर संतुष्ट हुए तब उस स्त्रीके समीप स्थिब हो
प्रत्यक्ष दर्शन दिया ॥ १७ ॥ तब उस कन्याने नम्र हो शंकरको प्रणाम किया जो गणेश कार्तिकेय और नंदिआदिगणोंसे पूजित थे ॥ १८ ॥
विश्वेश्वर प्रभुको मानसी उपचारोंसे पूजन कर भक्तियुत चित्तसे जगन्नाथको संतुष्ट करने लगी ॥ १९ ॥ हे सर्वव्यापक हे पार्वतीवल्लभ प्राण
नाथ ! हे प्रभो गर्भभूतेश गौरीपति शंभु सूर्य सोम अग्निनेत्र अम्बिकेश सदाधार मुण्डमालाधारीके निमित्त नमस्कार हो ॥ २० ॥ जटाजूटमें

संतुष्टस्तपसातस्याभगवान्भगनेत्रहा ॥ प्रत्यक्षदर्शनोजातस्तस्यानार्याःसमीपगः ॥ १७ ॥ वनिताऽवनताभूत्वाननामगिरिजापतिम् ॥
गजषण्मुखनंदीशैःसुसेव्यंसुरपूजितम् ॥ १८ ॥ मानसैरुपचारैस्तुपूज्यंविश्वेश्वरंविभुम् ॥ तुष्टावजगतांनाथंभक्तिप्रह्वेणचेतसा ॥ १९ ॥
कन्योवाच ॥ विभोशैलजावल्लभप्राणनाथप्रभोभर्गभूतेशगौरीशशंभो ॥ नमःसूर्यसोमाग्निनेत्रांबिकेशमदाधारमुंडांगमालिन्नमस्ते ॥
॥ २० ॥ जटाजूटगुच्छोल्लसत्स्वर्धुनीभाभराशुभ्रितानीलकर्णावतंसिन् ॥ लसद्रक्तकोटिद्युतिद्योतितांगभुजंगाधिनाथायतुभ्यंनमस्ते ॥
॥ २१ ॥ असावद्भुतानेकपुण्यप्रसंगैःसमाश्रीयतेमानवैर्दानवैर्वा ॥ प्रभोवाण्यगम्यप्रभावस्तवास्तेकथंवर्णयेकेवलंत्वांनतास्मि ॥ २२ ॥
कथंवर्णयामीशतेवैगुणौघान्मुखेवैखरीभारतीमेल्पवर्णा ॥ सहस्रैर्मुखैर्युक्तनागाधिपोपिगुणान्वर्णितुंवैप्रभुस्तेनमोस्तु ॥ २३ ॥

गंगा धारण किये कांतिसे शुभ्र शरीर नील कर्णमें अवतंस धारे कोटि बिजलीकी समान कान्तिमान् भुजंगाधिनाथ आपके निमित्त
नमस्कार है ॥ २१ ॥ आपकी अनेक पुण्योंसे दानव और मानव सेवा करते हैं, हे प्रभो ! भवानी आपके प्रभावको जान सकती है मैं आपका क्या
वर्णन करूं ? केवल नमस्कार करतीहूं ॥ २२ ॥ मैं आपके गुण क्या वर्णन करूं जहां वैखरी वाणी और सरस्वती भी मौन होती हैं सहस्रमुखसे

नागाधिप शेषभी आपके गुण वर्णन नहीं करसकते आपको नमस्कार हो ॥ २३ ॥ हे पुरारि जो आपके चरणोंके शरणमें आजाता है फिर उसे संसारका भय नहीं होता; हे दयालु ! शरणमें आये हुओंका उद्धार करनेवाले विभो ! धूर्जटे ! दीनबन्धू मेरी रक्षा करो ॥ २४ ॥ यह प्राणी अनेक तापसे तापितहो परम घोर संसारके मार्गमें पडा है; यह दुष्ट कालके गालमें पड़ता है विमुग्ध होकर आपकी शरणको प्राप्त नहीं होता ॥ २५ ॥ सदा सब प्रकार सब अंगसे उत्तीर्णचित्त विभु शंकर नीलकंठकी शरणमें प्राप्त हूं सो आप शीघ्र कर्मके महाबंधनको छिन्न किजिये

त्वदीयंप्रपन्नःपदाब्जंपुरारेनवैविद्यतेतस्यसंसारभीतिः ॥ दयालुःशरण्यागतोद्धारकर्त्ताविभोधूर्जटेपाहिमांह्यार्त्तबंधो ॥ २४ ॥ नरो नैकतापाभिभूतांगपीडःपरंघोरसंसारमार्गेप्रपन्नः ॥ खलव्यालकालोग्रदंष्ट्राभिदष्टोविमुह्येद्भवंतंशरण्यंनयाति ॥ २५ ॥ सदाशर्व सर्वांगमोत्तीर्णचित्तोविभुंशंकरंनीलकंठंप्रपन्नः ॥ तदैवाशुसंछिन्नकर्मोग्रजालःपरंब्रह्मभूयायजंतुःप्रयाति ॥ विभोयेनबाणःस्वकीयी कृतस्तेमृताजीवितालर्कभूपालपुत्री ॥ २६ ॥ दयालोकृपालोकपर्दिन्यथेशविदर्भांगजायाःकृतंवांछितंते ॥ तथामामकेमानसेयोऽ भिलाषःकुरुत्वंभवानीशसाक्षात्समेत्य ॥ २७ ॥ जनःप्राकृताघौघसंप्लुष्टदेहोदयालुंशरण्यंसुरेशंनयाति ॥ दिभोनाथभूतेशचंडीश भर्गभवप्राणमृत्युंजयोक्षेशगामिन् ॥ २८ ॥

जिससे यह प्राणी अपने ब्रह्मरूपको प्राप्तहो, हे प्रभो ! आपने जिस बाणका प्रहारकर अलर्क राजाकी पुत्री मृत्युसे बचाईथी ॥ २६ ॥ हे भक्तजन रक्षक ! शंकर सुखदायक ! मेरीभी रक्षा करो शरण हूं; हे दयालु ! कृपासागर जटाजूटधारी आपने विदर्भराजपुत्रीका मनोरथ सिद्ध किया है; इसीप्रकार मेरे हृदयमें जो अभिलाष हैं हे भवानी पति ! उन्हें आप पूर्ण कीजिये ॥२७॥ यह प्राकृत मनुष्य अनेकप्रकारके पापसे युक्तहोकर शंकरकी शरणमें नहीं

जाते ! हे विभो ! हे नाथ ! हे भूतेश ! हे चण्डीश ! भर्ग भवत्राणकर्ता मृत्युंजय उक्षेशगामिन् ॥२८॥ मैं अबला होनेके कारण आपकी स्तुति करनेको नहीं समर्थ हूं; हे पुरारि ! हे अंधकारि ! आपको प्रणाम है प्रणाम है ॥ २९ ॥ श्रीकृष्ण बोले ॥ इसप्रकार स्तुतियोग्य शर्व शर्वांग ईश्वरकी स्तुति करके वह कन्या मौन हुई तब उसकी स्तुतिसे प्रसन्नहो ॥ ३० ॥ प्रसन्न मुखकमल कृपासागर अनेक दुःखसागरके शोषनेमें अगस्त्यकी समान शिव बोले ॥ ३१ ॥ हे द्विजनंदिनी ! जो कुछ तुझे अभिमतहो सो कह, हे वर वर्णिनी ! तैंने निरन्तर तपमें मन लगाया है ॥ ३२ ॥

स्तुतिंनैवकर्तुंसमर्थाबलाहंपुरारेंधकारेनमस्तेनमस्ते॥ २९ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ तमीड्यंचैवंह्युपरताशर्वंशर्वांगमीश्वरम् ॥ सुसंतुष्टस्त यास्तुत्याजगादवचनंहरः ॥ ३० ॥ प्रसन्नवदनांभोजःप्रपन्नपरवारिधिः ॥ अनेकदुःखसामुद्रशोषणेगस्त्यसन्निभः ॥ ३१ ॥ वदभामि नितेचैत्त्यंदग्भितेद्विजनंदिनि ॥ नित्यमद्भुततपसिरतासिवरवर्णिनि॥३२॥सूत उवाच ॥ मुदितानादमाकर्ण्यसाक्षादश्वाकुलेक्षणा॥ निदाघार्कांशुसंतप्तोवारिप्राप्ययथाकृशः ॥ ३३ ॥ वरमन्वर्थयत्तन्वीकामधन्विषुमर्दिता ॥ पतिकामानाप्तसुखाबहुसौख्यगतस्पृहा ॥ ३४ ॥ कुमार्युवाच ॥ संतुष्टोसिभवान्मह्यंयदित्वंप्रमथाधिप ॥ शितिकंठममोद्देशंकुरुसत्यंवृषध्वज ॥ ३५ ॥ पतिंदेहिपतिंमह्यं पतिंपतिमहंवृणे ॥ पतिंदेहिमहाराजनान्यंमेचिंतितंहृदि ॥ ३६ ॥

सूतजी बोले ॥ यह शिवके वचन सुनकर वह प्रसन्न हुई नेत्रोंमें आंसू भर आये जैसे गरमीमें सूर्यकी किरणोंसे तप्त भूमिपर जल पडनेसे कृषक प्रसन्न होता है इसप्रकार सुखी हो ॥ ३३ ॥ वह कामारि शिवजीसे पतिकी इच्छाकर उसीमें मन लगाये अन्य सुखोंसे इच्छा दूर किये बोली ॥ ३४ ॥ हे प्रमथपति ! यदि आप मेरे ऊपर प्रसन्न हो तौ हे शितिकंठ ! मेरा उद्देश आप सफल करो ॥३५॥ आप मुझे पति दो पति दो पति दो पति दो पति दो

हे भगवन् ! इसके सिवाय मैं अन्य वरकी इच्छा नहीं करती यही मेरे हृदयमें वर्तता है ॥ ३६ ॥ इसप्रकार जगत्के गुरु शिवजीसे कह वह ऋषि कन्या विरामको प्राप्त हुई । शिवजीने उससे कहा हे शुचिस्मिते ! ऐसाही होगा ॥ ३७ ॥ हे शुभे ! एकही वर तैंने पांचबार मांगा है इसकारण तुम्हारे पांच पति होंगे ॥ ३८ ॥ मनुष्य नहीं किन्तु वे साधु धर्मज्ञ सत्यपराक्रमी देवता होंगे यज्ञ करनेवाले अपने गुणोंसे विख्यात सत्यसन्ध जितेंद्रिय

विरराम तदार्षेयी शिवं प्रार्थ्य जगद्गुरुम् ॥ शर्वोऽप्युवाच वनितामेवमस्तु शुचिस्मिते ॥ ३७ ॥ पंचकृत्वस्त्वया भद्रे याचितोयं वरोधुना ॥ भविष्यंति वरारोहे पतयः पंच भामिनि ॥ ३८ ॥ सुराः सकलधर्मज्ञाः साधवः सत्यविक्रमाः ॥ यज्वानः स्वगुणख्याताः सत्यसंधा जितेंद्रियाः ॥ ३९ ॥ त्वन्मुखप्रेक्षकाः सर्वे भाविनो लोकपूजिताः ॥ येषामैश्वर्यं देवानां स्पृहणीयं भविष्यति ॥ ४० ॥ अन्येषामपि देवानां स्पृहणीयं भविष्यति ॥ त्वं भर्तृकामिनी रामा भविष्यस्यन्यभूमिजा ॥ ४१ ॥ सूत उवाच ॥ श्रुत्वैतत्कर्णकटुकं वाक्यं वाक्यविशारदा ॥ पुनरूचे शिवं देवं मैवमस्तु जगत्पते ॥ ४२ ॥ एकायाः किल कामिन्या एक एव पतिर्भवेत् ॥ पंचभर्तृमती काचिन्न दृष्टा न श्रुता क्वचित् ॥ ४३ ॥ एकस्य पंच कामिन्यः पुरुषस्य भवंति हि ॥ न तु नार्या भवेयुश्च भर्त्तारः पंच एव हि ॥ ४४ ॥

॥ ३९ ॥ सब लोकपूजित तेरेही मुखको देखनेवाले होंगे जिनके ऐश्वर्यकी देवताभी आकांक्षा करेंगे ॥ ४० ॥ तथा औरभी देवताओंकी स्पृहणीय होंगे: और तूभी स्वामीकी इच्छावाली भूमिसे उत्पन्न होगी ॥ ४१ ॥ वह वाक्य बोलनेमें चतुर यह श्रवणकटु वाक्य सुनकर शिवजीसे बोली हे जगत्पते ! यह बात न हो ॥ ४२ ॥ कारण कि एक स्त्रीका एकही पति होता है पांच भर्ता एक स्त्रीके न देखे न सुने ॥ ४३ ॥ एक पुरुषकी स्त्रियें तो

कई होसक्ती हैं परन्तु एक स्त्रीके कई पति तौ नहीं होसक्ते ॥ ४४ ॥ हे अहिभूषण ! यह वार्ता कहनेको आप योग्य नहींहो आप सब भूतोंके हृदयको जानतेहो मैं यह वार्ता नहीं चाहती ॥ ४५ ॥ तब शिवजी पंच मुख कंपित करते उस्से बोले हे भीरु ! इस जन्ममें नहीं किन्तु जन्मान्तरमें यह बात होगी ॥ ४६ ॥ और उस जन्ममें तपके बलसे तू योनिसे उत्पन्न नहोगी अयोनिसे होगी और भर्ताके महासुखको प्राप्त होगी ॥ ४७ ॥ मेरा वाक्य अन्यथा नहीं होता जो कहा है सो अवश्य होगा. हे शुभे ! जैसे मक्षिकाके चरणमात्रभी विष विषही है ॥ ४८ ॥ इसीप्रकार थोडी की

नैवंवक्तुंभवानर्हःसर्वथाह्यहिभूषण ॥ सर्वभूताशयज्ञस्त्वंकपर्दीशनकामये ॥ ४५ ॥ ततःप्रोवाचतांपंचशिरांस्याधूयशंकरः ॥ मास्तुतेस्मिन्भवेभीरुभाव्यंजन्मांतरेषु तत् ॥ ४६ ॥ अयोनिसंभवातस्मिन्भवित्रीत्वंतपोबलात् ॥ भर्तृसौख्यंसुविपुलंभुक्त्वाप्राप्स्यं पदंतव॥४७॥भाव्यन्यन्नचमेवाक्यंयदुक्तंतद्भविष्यति ॥ मक्षिकापापमात्रंहिविषंस्याद्विषमेवहि ॥ ४८ ॥ तथातुविहिताल्पापि क्रियातत्फलदाभवेत् ॥ तस्माद्विमृश्यकृत्यंहिविधेयंचैवतापसि ॥ ४९ ॥ दुर्वासामेप्रियामूर्त्तिर्ब्रह्ममूर्त्तिकृतश्रमः ॥ सत्वयावमतः पूर्वंसोपदेशोमुनीश्वरः ॥ ५० ॥ सकोपावृतसर्वांगोनिर्दहेज्जगतांत्रयम् ॥ त्वयाचातुर्यशालिन्याब्रह्मतेजःप्रमर्दितम् ॥ ५१ ॥ परब्रह्मात्मकोमासोमासाद्यःपुरुषोत्तमः ॥ सोपिवामपदाक्रांतस्त्वयामानिनिमानतः ॥ ५२ ॥

हुई क्रिया भी फलवाली होती है, हे तापसि ! इसकारण विचारकर कृत्य करना चाहिये ॥ ४९ ॥ दुर्वासा मेरी प्रियमूर्ति ब्रह्ममूर्त्तिमें किये हैं श्रम जिन्होंने उन मुनिके उपदेश करनेपरभी पहले तैने उनका निरादर किया है ॥ ५० ॥ वह क्रोध करके तौ त्रिलोकीको भस्म कर सकते हैं तैने अपनी चतुरतासे उस ब्रह्मतेजका तिरस्कार किया है ॥ ५१ ॥ जो पुरुषोत्तममास परब्रह्मात्मक है हे मानिनि ! अपने

मानसे तैंने उसे चरणाक्रान्त कर दिया ॥ ५२ ॥ मैं ब्रह्मा प्रजापति जो नारद आदि मुनीश्वर हैं इन्द्र सूर्य अग्नि पवन वरुण ॥ ५३ ॥ जिसकी आज्ञाको उल्लंघन नहीं कर सकते कौन उसकी आज्ञा उल्लंघन करसकता है यह पुरुषोत्तम मास मुझसे भी अधिक प्रिय है ॥ ५४ ॥ वह मुनिके कहने पर भी तैंने कुछ न गिना इस कारण तुझे पांचही पतियोंसे सुखकी प्राप्ति होगी ॥ ५५ ॥ हे सुभ्रु ! पुरुषोत्तमके खण्डनसे सुख नहीं होता पृथ्वीमें पुरुषोत्तममासकी भक्ति करनेवाले मनुष्यको ॥ ५६ ॥ इस लोक और परलोककी सिद्धि वारंवार आती और जाती है, हम सब

अहंब्रह्माप्रजेशायेनारदाद्यामुनीश्वराः ॥ हरिवाजिपतंगाग्निसमीरणजलेश्वराः ॥ ५३ ॥ यन्निदेशाद्विधेयात्मातदाज्ञांकोविलंघयेत् ॥ ततःप्रियो हि मासोयंनाम्नायःपुरुषोत्तमः॥५४॥सत्वयानैवगणितःख्यातोपिमुनिनासकृत्॥अतस्तेपंचनाथानांभविष्यंतिसुखोद्गमाः ॥५५॥नान्यद्भाविसुखंसुभ्रुपुरुषोत्तमखंडनात्॥पुरुषोत्तममासस्यभक्तायेभुविमानवाः॥५६॥ऐहिकामुष्मिकींसिद्धिंयातायास्यंतिया न्तिच॥वयंसर्वेपिगीर्वाणाःश्रीपुरुषोत्तमसेविनः।५७यस्मिन्संसेव्यमानेयंप्रीयतेमधुहाहरिः।भजनीयंकथंमासंनभजामःसुमध्यमे५८ इत्युक्तंचैवमेवाक्यंनैवमिथ्याभविष्यति ॥ परिपाल्याद्विजश्रेष्ठाःसदसद्वादिनोपिहि॥५९॥सेविताःसर्वदाभद्रेनिर्दहंत्यवमानिताः ॥ प्रतीतिर्द्विजवाक्येषुतेषांलोकाःसनातनाः ॥ ६० ॥ वदन्नेवंशितिकंठःसर्वप्रथमपूजितः॥ क्षिप्रमंतर्दधेराजन्सहेरंबषडाननः ॥ ६१ ॥

देवता पुरुषोत्तमसेवी हैं ॥ ५७ ॥ जिसके सेवन करनेसे हरि प्रसन्न होते हैं. हे सुमध्यमे ! फिर वह महीना क्यों न सेवाके योग्य हो ? ॥ ५८ ॥ इस कारण मेरा कहा वाक्य मिथ्या न होगा सद्असद्वादी ब्राह्मणोंके वाक्य अवश्य मानना चाहिये ॥ ५९ ॥ हे भद्रे ! उनका सदा सेवन करना वे अवमानित हो भस्म कर देते हैं जो ब्राह्मणोंके वाक्यमें प्रतीति करते हैं उनको सनातन लोक प्राप्त होते हैं ॥ ६० ॥ सबसे प्रथम पूजित शिव

इस प्रकारके वचन कह कर गणेश कार्तिकेयसहित तत्काल अन्तर्हित होगये ॥ ६१ ॥ माथेपर शोभित चन्द्रमावाले शिवके अन्तर्धान होनेपर उसको बडी चिन्ता हुई ॥ ६२ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे श्रीकृष्णयुधिष्ठिरसंवादेभाषाटीकायांपुरुषोत्तममाहात्म्येसदाशिवाद्वरप्राप्तिर्नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ श्रीकृष्ण बोले ॥ हे राजन् ! इसप्रकार शिवजीके चले जानेपर कान्तिरहित हो वह बाला परम दीन हो श्वास लेती हुई आंखोंसे जल त्यागन करती थी ॥ १ ॥ उसके नेत्रोंका जल पृथ्वीपर न पडकर अत्यन्त तापसे युक्त हृदयको भिज़ाता हुआ ॥ २ ॥ इस प्रकार वह सुन्दरी दुःखसागरके पार

शशांकलेखांकितभालदेशेसदाशिवेंतर्द्दशिसंप्रयाते ॥ चिंताबबाधेमुनिराजकन्यांहत्वायथावृत्रहणंमुनीशाः ॥ ६२ ॥ इति श्रीपद्म पुराणे श्रीकृष्णयुधिष्ठिरसंवादेपुरुषोत्तममाहात्म्येसदाशिवाद्वरप्राप्तिर्नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ एवंगतेशिवेराज न्साबालाविगतप्रभा ॥ निःश्वासपरमादीनाशुष्यन्नेत्राक्कृशोदरी ॥ १ ॥ तस्यानयनजंवारिबह्वप्यप्राप्यभूतलम् ॥ अत्यंततापसंतप्तं वक्षोऽसिञ्चचभारत ॥ २ ॥ दुःखोदधेश्वपारंवैकदाचिन्नापसुंदरी ॥ अत्यंतायासकृत्येनापीहवंध्यातनूजवत् ॥ ३ ॥ शोकसंताप निःश्वासशुष्यद्वदनपंकजा ॥ सर्वांगेदह्यमानासादावदग्धालताइव ॥ ४ ॥ हाहाकारपरानित्यमभितःपरिधावति ॥ आत्मानंदर्श यामासजडांधबधिरोपमम् ॥ ५ ॥ वाच्यमानापिनब्रूतेश्राव्यमाणाशृणोतिन ॥ नेच्छयाचरतिक्कापिपवनोद्भूततूलवत् ॥ ६ ॥

न हुई जैसे अत्यन्त यत्न करनेसेभी वंध्या पुत्रको प्राप्त नहीं होती ॥ ३ ॥ शोक संताप और दीर्घ श्वासके कारण उसका मुखकमल सूखगया और सारे अंगसे अग्निसे दग्धलताकी समान व्याकुल होगई ॥ ४ ॥ हाहाकार करती हुई वह चारोंओर धावमान होतीथी और अपनेको जड अंधे बहरेके समान दिखाने लगी ॥ ५ ॥ कहनेपर भी कछु नहीं कहती सुनानेपर नहीं सुनती न इच्छासे चलती केवल पवनसे उडाईरुई की समान भ्रमण करती ॥ ६ ॥

इस प्रकार मार्गमे वर्तमान रहते कुछ समय बीत गया, वह जगद्भक्षी काल एक समय ऋषिकन्याके निकट सहसा आनकर प्राप्त हुआ ॥ ७ ॥ जैसे मूषेके स्थानमें सर्प प्राप्त होता है, कालको आया जानकर वह प्रसन्न हुई ॥ ८ ॥ और बोली मेरे दुःखका अन्त करनेके निमित्तही विधाताने कालको भेजा है यह कहती हुई ब्राह्मणकन्याको कालने अपने वशमें किया ॥ ९ ॥ जैसे मेघयुक्त बलाका पवनसे चलायमान होती है इसी प्रकार तपसे हीनपाप हुई वह आश्रमपदमें नष्ट हुई ॥ १० ॥ इसी अवसरमें द्रोणाचार्यपर क्रोधित हुए द्रुपदराजा ब्राह्मणोंसे

एवंमार्गेवर्त्तमानाकियान्कालोऽत्यजायत ॥ जगद्भैक्षयन्कालःकदाचिद्दृषिकन्यकाम्॥७॥सहसाससमापन्नःफणीवाखुनिवेशनम्॥ ननंदांतकमायांतंज्ञात्वैतत्प्रियजल्पति॥८॥ममायमेवदुःखांतोमान्यःसृष्टोस्तिवेधसा ॥ इतिब्रुवन्तीकालेनवशंनीताद्विजांगजा ॥९॥ यथासमीरणोद्भूतामेघयुक्ताबलाकिनी ॥ तदाश्रमपदेनष्टातपसादग्धकल्मषा ॥१०॥ एतस्मिन्नेवसमयेद्रोणायाभिचरन्क्रुधा॥याजोपयाजविप्राभ्यामास्थितोदारुणाकृतिः ॥११॥ चकारयज्ञंसुभृशंरक्तचंदनचर्चितम् ॥ क्रूरभावसमाविष्टोब्राह्मणेकृतमर्षणः ॥ १२ ॥ हूयमानेचहवनेब्राह्मणैर्वेदपारगैः ॥ जज्वालपावकस्तत्रहोमेतस्मिन्युधिष्ठिर ॥ १३ ॥ ततश्चटचटाशब्दोविनिष्क्रांतोविभावसोः ॥ निससारोज्ज्वलद्गात्रावेदिमध्यादनिंदिता ॥१४॥ सेयंद्रुपदशार्दूलतनयावोरहोगता ॥ द्रौपदीचंद्रकांतीचह्यार्षेयीयाभवत्पुरा॥१५॥

द्रोणके ऊपर अभिचार करानेलगे ॥ ११ ॥ रक्तचंदनसे चर्चित सुन्दर यज्ञ कराया वह राजा ब्राह्मणपर क्रोधकर क्रूर भावमें आश्रित हुआ ॥ ॥ १२ ॥ जब वेदपारगामी ब्राह्मणोंने अग्निमें आहुति दी, हे युधिष्ठिर ! तब उस हवनमें अग्नि बल उठी ॥ १३ ॥ तब अग्निमेंसे चटचटा शब्द निकलने लगा तब प्रकाशितशरीर उस वेदीके मध्यसे निन्दारहित ॥ १४ ॥ वही राजा द्रुपदकी कन्यारूप प्रगट

हुई वह द्रौपदी चन्द्रमाकी कान्तिके समान प्रगट हुई ॥ १५ ॥ यह सब राजोंके बीचमें अर्जुनको प्राप्त होकरभी अनेक दीर्घबाहु राजकुमा रोंको तृणकी समान मानती हुई ॥ १६ ॥ वही यह दुश्शासनके हाथसे केश आकर्षणको प्राप्त हुई. हे राजन्! इसके निमित्त कानोंको शूल देनेवाले वचन सुनकरभी ॥ १७ ॥ पुरुषोत्तमके तिरस्कार करनेसे मैंने इसकी उपेक्षा की जब वह दुष्ट इसके वस्त्र खेंचनेमें प्रवृत्त हुआ ॥ १८ ॥ तब उस धृतराष्ट्रपुत्र दुर्बुद्धि दुःशासनकी दुष्टता विचार मैंने इसको वस्त्रमय कर दिया ॥ १९ ॥ यह सदा मुझमें

लब्धार्जुनेनपांचालीसर्वराजन्यमंडले ॥ तृणीकृत्वानृपसुतान्दीर्घबाहूननेकशः ॥ १६ ॥ सेयंकचग्रहंप्राप्तादुःशासनकराग्रगा ॥ वचांसिकर्णशूलानिश्राविताचरवर्णिनी ॥ १७ ॥ मयाचोपेक्षिताराजन्पुरुषोत्तमहेलनात् ॥ यदाक्षेपेप्रवृत्तोसावंशुकस्यपृथात्मज ॥ ॥ १८ ॥ दुःशासनोदुष्टबुद्धिर्धृतराष्ट्रतनूद्भवः ॥ प्रदत्तानितदाराजन्मयावासांस्यनेकशः ॥ १९ ॥ सदामयिकृतस्नेहामामेति प्रियजल्पती ॥ मामेवध्यायतीनित्यंसाध्वीगुणविभूषणा ॥ २० ॥ यदाबभाषेराजेंद्रइतिवाचःसुपेशलाः ॥ ताःश्रुतामेमहाबाहो दयार्द्रीकृतचेतसा ॥ २१ ॥ मातानबंधुःसहजोननेतासख्योनजामिर्नचभागिनेयः ॥ नेष्टःसुहृद्वर्गतनूजवर्गस्तस्माद्धृषीकेशत्वमेव रक्ष ॥ २२ ॥ तदामेस्मरणंजातंपांचाल्याःशत्रुकर्शन ॥ तेननालोकितातन्वीस्रस्तवस्त्रासभांगता ॥ २३ ॥

स्नेह कर मेरी ही चर्चा करतीहै और गुणयुक्त यह साध्वी नित्य मेराही ध्यान करती है ॥२०॥ हे राजन्! जब इसने मनोहर वचनोंसे मेरी पुकार की उससमय इसके वचनसे चित्त दयामय होगया ॥ २१ ॥ द्रौपदीने कहाथा माता बंधु सहज मित्र सखी बहन भानजा सुहृद्वर्ग पुत्र आदि तथा पति इस समय कोई मुझे बचानेको समर्थ नहीं है इस कारण हे हृषीकेश! तुम मेरी रक्षा करो ॥ २२ ॥ उस समय पांचालीने मेरा स्मरण कियाथा इस

कारण सभामें कोई इसको वस्त्ररहित न देखसका ॥ २३ ॥ वनमें रहना दुःखरूप है और बड़ा दारुण शत्रुताप है, हे राजन् ! इसीकारण मैंने उपेक्षा की ॥ २४ ॥ जैसा यह महीना मुझे प्यारा है ऐसे अन्य महीने नहीं हैं. यह सदा देवताओंसे सेवने योग्य है मनुष्योंकी तो कौन कहै ॥ २५ ॥ हे राजन्यश्रेष्ठ ! इसकारणसे होनहार अवश्य होगी शिवका कहा वचन सत्य होगा द्रौपदी पुत्र सुखभागिनी न होगी ॥ २६ ॥ सूतजी बोले ॥ त्रिलो

वनेवासोतिदुःखार्तःशत्रुलंभःसुदारुणः ॥ उपेक्षितोमयाराजन्मत्प्रियोपेक्षणेनवै ॥ २४ ॥ यथायंमत्प्रियोमासस्तथेमेद्वादशापिन ॥ सर्वदासुरसेव्योयंमानुषैःकिमुतापरैः ॥२५॥ तद्राजन्यवरश्रेष्ठतत्तथैवभविष्यति ॥ शिवेनोक्तंवचःसत्यंनकृष्णासुतसौख्यभाक्॥२६॥ सूतउवाच॥शनैस्तद्वचनंश्रुत्वाहरिस्त्रैलोक्यपावनः ॥ पुनस्तांसांत्वयामासयज्ञसेनसुतांप्रियाम् ॥२७॥ धृष्टद्युम्नानुजेबालेपश्यसित्वं वरानने॥वर्षेचतुर्दशेदेवियद्भाव्यंगजगामिनि ॥२८॥ व्यालोकिचिकुरव्रातस्तवायंयैःकृशोदरि॥ तन्नारीणांवरारोहेनिर्वपिष्येऽलकान हम्॥२९॥सुयोधनादिभूपालान्सर्वान्नेष्येयमक्षयम्॥इतिसत्यंब्रवीम्यद्यत्वंजानीहिसुमध्यमे॥३०॥नप्रियामेतथालक्ष्मीःप्रियोनापिह लायुधः॥नतथादेवकीदेवीप्रद्युम्नोनैवसात्यकिः॥३१॥नानिरुद्धःसुपर्णोवानचचक्रंसुदर्शनम्॥नमेचतुर्भुजंरूपंप्रियंताहक्सुमध्यमे ३२॥

कीके पवित्र करनेवाले श्रीकृष्णने शनैः २ यह वचन सुनाकर फिर द्रौपदीको समझाया ॥ २७ ॥ हे वरानने ! जो कि, तुम अपने मोटे भ्राता बाल धृष्टद्युम्नको देखती हो जो कुछ चौदहवें वर्षमें होनहार है ॥ २८ ॥ हे वरारोहे ! जिन्होंने तुम्हारे साथ व्यतिकर कर्म कियाहै उनकी स्त्रियोंके बाल खुलवा दिये जायंगे ॥ २९ ॥ सुयोधनादि सबराजोंको यमलोक पहुँचाऊंगा । हे सुमध्यमे ! यह मैं तुमसे सत्य कहताहूं ॥ ३० ॥ मुझे लक्ष्मी बलराम देवकी प्रद्युम्न सात्यकि ॥ ३१ ॥ अनिरुद्ध गरुड सुदर्शन चक्र तथा चतुर्भुजरूप ऐसा प्यारा नहीं है ॥ ३२ ॥

जैसे मुझे भक्त प्रिय हैं ऐसी कोई वस्तु प्रिय नहींहै, त्रिलोकीमें भक्तके तुल्य कोई वस्तु प्रिय नहींहै ॥३३॥ हे शुभे! जो मेरे साथ द्वेष करताहै मैं उसको उसके सौवें भागकी बराबर नहीं मानता जैसा कि, भक्तके दुःखसे दुःख मानताहूं॥३४॥ हे सुश्रोणि! सावधान हो तुमको सुखकी प्राप्ति होगी विना दिया स्वप्नमेंभी नहीं मिलता जैसे खरगोशके शृंग नहीं होते॥३५॥ द्रौपदीको समझाकर श्रीकृष्ण बोले हे अजातशत्रु! धर्मज्ञ सम्पूर्ण धर्मोंके जाननेवाले॥३६॥

यथावैमेप्रियाभक्तास्तादृङ्मेनास्तिकिंचन ॥ त्रिषुलोकेषुयद्वस्तुभक्ततुल्यंनविद्यते ॥ ३३ ॥ येनमेपीडितोभक्तस्तैरहंशतशःशुभे ॥ द्वेष्योमेनास्तितत्तुल्योयन्मेविप्रकृतोजनः ॥ ३४ ॥ समाश्वसिहिसुश्रोणिभविष्यतिसुखंतव ॥ नादत्तंप्राप्यतेस्वप्नेकदापिशशशृंगवत् ॥ ३५ ॥ समाश्वास्यद्रुपदजामुवाचमधुसूदनः ॥ अजातशत्रोधर्मज्ञसर्वधर्मभृतांवर ॥ ३६ ॥ राजन्मामनुजानीहियास्याम्यद्य कुशस्थलीम् ॥ सीरपाणिर्महाबाहोयमुनाकर्षणोबली ॥ ३७ ॥ आहुकोवसुदेवश्चगदसांबोद्धवादयः ॥ देवकीचमहाभागारौक्मिणेयोथसारणः ॥ ३८ ॥ सर्वेतेऽनिमिषैर्नेत्रैर्ममागमनकांक्षिभिः ॥ मन्मार्गमुक्तनयनाश्चितयंतोदिवानिशम् ॥ ३९ ॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्तवंतंदेवेशंकथंचित्पांडवाग्रजः ॥ कृष्णप्रयाणकातर्याद्गद्गदाश्रुप्रमुक्तवान् ॥ ४० ॥

अब मुझे आज्ञा दो तो मैं द्वारकाको जाऊं यह हलधर महाबली जिन्होंने यमुनाका आकर्षण कियाहै ॥ ३७ ॥ तथा आहुक वसुदेव गद साम्ब उद्धव देवकी रुक्मिणीपुत्र प्रद्युम्न सारण ॥ ३८ ॥ यह सब हमारे आनेकी बाट देखरहे हैं मेरे मार्गमें नेत्र लगाये दिनरात विचार करते हैं ॥३९॥ सूतजी बोले ॥ देवेशके ऐसा कहनेपर युधिष्ठिरने कठिनतासे श्रीकृष्णके जानेसे कातर हो उनको जानेकी आज्ञा दी ॥ ४० ॥

नारायणके वचन श्रवणमें रति करनाही विष्णु भक्तोंको परम उचित है, आप हमको फिर शीघ्र दर्शन देना॥ ४१ ॥ हे देवकीनंदन ! आप हमारे जीवन हो आप पाण्डवोंके स्वामी जगत्में प्रतिष्ठित हो ॥४२॥ हे कृष्ण ! सदा हमारी रक्षा करो, मनसे भूलना मत, आप हमारे चित्तरूप कमलके भ्रमर हो ॥ ॥ ४३ ॥ वारंवार पाण्डुपुत्रसे मिलकर श्रीकृष्ण आनर्तवासियोंसे पूजित हो द्वारकापुरीमें गये ॥ ४४ ॥ कौमोदकीधारी प्राणनाथ जगत्प्रिय

जीवनंविष्णुभक्तानांहरिरेवचनेतरत् ॥ पुनर्दर्शनमल्पेनकालेनास्तुगदाग्रज ॥ ४१ ॥ देवकीनंदनःश्रीमानस्माकंजीवनंभवान् ॥
पांडवानांहरिर्नाथोजगत्येतत्प्रतिष्ठितम् ॥४२॥ सदानःपाहिदाशार्हमानोविस्मरणंकुरु॥अस्मच्चेतःसरोजानांषट्पदोस्तुभवान्विभो॥
॥४३॥ असकृत्पांडुपुत्रेषुगृणत्स्वेवंयदूद्वहः ॥ प्रायाद्द्वारवतींब्रह्मन्नानर्त्तजनपूजितः ॥४४॥ गतेकौमोदकीबाहौप्राणनाथेजगत्प्रिये ॥
राजापिभ्रातृसहितःपर्यतप्यद्द्विजोत्तम॥४५॥ चचारानेकतीर्थानिचिंतयन्पुरुषोत्तमम्॥पुनःपुनश्चराजेंद्रोविस्मितेनांतरात्मना॥४६॥
भीमादीननुजान्सर्वानुवाचधीमतांवरः ॥ श्रुतंभवद्भिर्वचनंविष्वक्सेनस्यसत्तमाः॥४७॥अहोमासस्यमाहात्म्यंयदुक्तंशार्ङ्गधन्वना ॥
कथंसौख्यंहिलभ्येतनाभ्यर्च्यपुरुषोत्तमम्॥४८॥संपूज्योभारतेवर्षेसंपूज्यःश्रेष्ठएवसः॥देवताभिःपूजनीयोभाग्यवान्वैधरातले ॥४९॥

श्रीकृष्णके जानेपर राजाभी उनके वियोगसे भाइयोंसहित परितापित हुए ॥ ४५ ॥ और पुरुषोत्तमका ध्यान करते अनेक तीर्थोंमें विचरनेलगे । हे राजेन्द्र ! वे वारंवार विस्मत हो ॥ ४६ ॥ अपने भीमादि सब भ्राताओंसे बोले, हे भ्राताओ ! तुमने श्रीकृष्णके वचन सुने ? ॥ ४७ ॥ अहो इस पुरुषोत्तम मासका कैसा माहात्म्य है पुरुषोत्तमको विना अर्चन किये किसप्रकार सुखकी प्राप्ति हो सकतीहै ॥ ४८ ॥ इस भारत वर्षमें सबसे

अधिक श्रेष्ठ और पूज्य वही है और देवताओंसे पूजित हो पृथ्वीमें भाग्यवान् होते हैं ॥ ४९ ॥ जिनका यह मास अनेक प्रकारकी पूजा और नियमसे बीता वही पुरुषोत्तम है ॥ ५० ॥ अहो श्रीकृष्णका कहा यह कैसा अद्भुत पुरुषोत्तम मासका फल है यह देवताओंको भी दुष्प्राप्य है फिर मनुष्योंकी कौन कहै ? ॥ ५१ ॥ इसप्रकार कहकर वह बहुत समय ( वर्षों ) तक भ्रमण करते रहे उसके अन्तमें श्रीकृष्णके प्रसादसे उनको राज्यकी प्राप्ति हुई ॥५२॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये भाषाटीकायां पुरुषोत्तममहिमप्रशंसनोनामसप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥ इसप्रकार यह महीना

विविधैर्नियमैर्येषांहरिपूजाविधानकैः॥ साधनैर्विगतोमासःपुरुषोत्तमएवसः ॥५०॥ अहोमासस्यमाहात्म्यंयदुक्तंचक्रपाणिना॥देवा नामपिदुष्प्रापंकिंपुनर्मानुषेजने ॥५१॥ एवंवदन्भूमिपतिर्बभ्रामबहुलाःसमाः ॥ तदंतेराज्यमतुलमापकृष्णप्रसादतः ॥५२॥इति श्री पद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येपुरुषोत्तममहिमप्रशंसनंनामसप्तमोऽध्यायः ॥७॥ सूतउवाच ॥ एवंभूतोधिमासोयंमहापापप्रणाशनः ॥ महिमानंयस्यवक्तुंनालंशक्तश्चतुर्मुखः ॥१॥ मासस्यास्यप्रसादेनपुराराजर्षिसत्तमः ॥ दृढधन्वाइतिख्यातोह्यवापमहतींश्रियम् ॥२॥ भोगांतेजगतांनाथंप्राप्तःपारंभवांबुधेः ॥ पुरापुत्रवियोगाप्तव्याधीराजाधरातले ॥ ३॥ संप्राप्यसौख्यसीमानंमहिम्नःपुरुषोत्तमात् ॥ एतन्मासस्यमाहात्म्यमतुलंमुनिसत्तम ॥४॥ नाहंवक्तुंसमर्थोस्मिमहिमानंभृगूद्वह ॥ अप्रमेयबलोमासोयथानारायणोहरिः ॥५॥

महापापका नाश करनेवाला है जिसकी महिमा कहनेको ब्रह्माजी समर्थ नहीं है ॥ १ ॥ इस महीनेके प्रसादसे पहले राजर्षिश्रेष्ठ दृढधन्वाको बडी लक्ष्मी प्राप्त हुईथी ॥ २ ॥ भोगके अन्तमें जगत्पति नारायणको प्राप्त हुआ प्रथम राजाको पुत्रवियोगसे बडी व्याधि प्राप्त हुईथी ॥ ३ ॥ इसी मासकी महिमासे उसको सुखकी प्राप्ति हुईथी. हे मुनिश्रेष्ठ ! इस महीनेका अतुल माहात्म्य है ॥ ४ ॥ हे भृगुकुलोद्भव ! इस मासकी महिमा

कहनेको मैं समर्थ नहीं हूं. इसका अप्रमेय बल है जैसे नारायण हरि हैं ॥ ५ ॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! यह जानिये कि, इसकी तुल्य और महीना नहीं है इस मासके गुणका विस्तार मैंने व्यासजीसे ॥ ६ ॥ सुना परन्तु सर्वथा वे भी कहनेको समर्थ नहीं हुए इन सब महीनोंके शिरोमणि नारायणप्रिय माससे अधिक कौन है ? ॥ ७ ॥ इसके सम्पूर्ण माहात्म्यको कौन जान सकता है ? जिसको स्वयं नारायणने वर दिया है जिसके जाननेसे करोडों यज्ञका फल होता है ॥ ८ ॥ शौनकजी बोले ॥ हे महाभुज सूतजी ! आप जगत्पतिकी यह कथा कहिये जिसमें पुरुषोत्तम मासके गुण वर्णन हों ॥ ९ ॥

जानीहिमुनिशार्दूलनैतत्तुल्योस्तिकश्चन ॥ पुरुषोत्तममासस्यकृष्णद्वैपायनादहम् ॥ ६ ॥ शृण्वन्गुणस्यविस्तारंवक्तुंनैवशशाकसः ॥ कोन्योमहिम्नोभुवनेसर्वमासशिरोमणेः ॥ ७ ॥ माहात्म्यमखिलंवेत्तियस्यनारायणःस्वयम् ॥ यस्मिञ्ज्ञातेभवेद्विद्वान्कोटियज्ञमिदंफलम् ॥ ८ ॥ ॥ शौनक उवाच ॥ ॥ कथयस्वकथामेतांसूतसाक्षाज्जगत्पतेः ॥ पुरुषोत्तममासस्यगुणान्वदमहाभुज ॥ ९ ॥ विस्तराच्छ्रोतुकामानांसुराज्ञोदृढधन्वनः ॥ पुरुषोत्तममाहात्म्यात्कथमापसुखानिसः ॥ १० ॥ कथंवैकुंठनाथस्यपदंसाक्षाज्जगत्पतेः ॥ अलंबुद्धिर्नमेतातकथापीयूषपानतः ॥ ११ ॥ ततोविस्तरतोब्रूहिकथामेतांसुदुर्लभाम् ॥ कृतक्षणोस्म्यहंसूततुष्यामिगदतस्तव ॥ १२ ॥ अस्मद्भाग्यप्रसंगेनह्यद्यसंदर्शितोभवान् ॥ चिरसंभृतपापस्यक्षयंनेतुंमहाभुज ॥ १३ ॥

मैं राजा दृढधन्वाके चरित्र विस्तारसे सुनना चाहताहूं. पुरुषोत्तममाहात्म्यसे कैसे उसे सुख प्राप्त हुआ ॥ १० ॥ किस प्रकार साक्षात् वैकुंठनाथ जगत्पतिके गुणोंसे सुख हुआ हे तात ! इस कथारूप अमृतके पानसे मेरा मन तृप्त नहीं होता ॥ ११ ॥ आप इस दुर्लभ कथाको विस्तारसे कहिये हे सूत ! आपसे कथा श्रवणकर मैं कैसे तृप्त हो सकताहूं ? ॥ १२ ॥ हमारे भाग्यसेही आपका दर्शन हुआ है. हे महाभुज ! आप हमारा

चिरकालके पाप नष्ट करनेकोही आये हैं ॥ १३ ॥ यह परम मनोहर भृगुवाक्य श्रवणकर मुनियोंको प्रसन्न करते हुए सूतजी बोले ॥ १४ ॥ हे द्विजेश्वर शौनकजी ! सुनो पवित्र कथा वर्णन करताहूं यह व्यासके मुखसे निकली गंगाकी समान पवित्र करनेवाली है ॥ १५ ॥ उन व्यासजीको नमस्कारकर उनके वाक्यरूपी जलमें मज्जन करनेसे ब्रह्महत्यारा और सुरापान करनेवालाभी पापसे छूट जाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ १६ ॥ जो इसमें सन्देह करते हैं वे मृत्युको प्राप्त होते और सब जन्मोंमें भाग्यहीन प्रज्ञाहीन निर्बुद्धि होते हैं ॥ १७ ॥ वे पराधीन रोगग्रस्त अपुत्र होते

श्रुत्वाभार्गववाक्यानांसौकुमार्यमनुत्तमम् ॥ सूतःप्रोवाचसंहृष्टोमुनीनांसुखयन्निव ॥ १४ ॥ शृणुशौनकवक्ष्यामिकथांपुण्यांद्विजेश्वर ॥ व्यासवक्त्रसमुत्पन्नांस्वर्धुनीमिवपाविनीम् ॥ १५ ॥ नत्वाकृष्णायमुनयेयद्वाक्यजलमज्जनात् ॥ ब्रह्महापिसुरापोऽपिमुच्यते नात्रसंशयः ॥ १६ ॥ अत्रसंशयिनःसर्वेचरंतोऽपिमृतायते ॥ सर्वजन्मसुदुर्भाग्याहीनप्रज्ञाह्यबुद्धयः ॥ १७ ॥ पराधीनागदग्रस्ताअपुत्राःस्युर्नसंशयः ॥ मृताः प्रयांतिविप्रेशकुंभीरौरवशूकरान् ॥ १८ ॥ युगकोटिसहस्रांतेप्रेतयोनिमवाप्नुयुः ॥ निर्जलेरण्यदेशेतेवसंत्यत्यंतदुःखिनः ॥ १९ ॥ येव्यासवाक्यविमुखानास्तिकाःकपटावृताः ॥ पुराणेदृढविश्वासाःकृष्णसायुज्यभागिनः ॥ ॥ २० ॥ शृणुदिव्यांकथांविप्रतद्राज्ञोदृढधन्वनः ॥ आस्तिकस्यसुव्रतस्यकृष्णभक्तस्यभूपतेः ॥ २१ ॥

हैं इसमें सन्देह नहीं । हे विप्रेश ! वे कुम्भीपाक और रौरव नरकको जाते हैं ॥ १८ ॥ और कोटि सहस्र युगके अन्तमें प्रेतयोनिको प्राप्त होते हैं और निर्जल देशमें उत्पन्न होनेके कारण अत्यन्त दुःखभागी होते हैं ॥ १९ ॥ जो व्यासके वाक्यसे विमुख नास्तिक और कपटी हैं वे दुःख पाते हैं पुराणमें दृढविश्वास करनेवाले कृष्णकी सायुज्य मुक्ति पाते हैं ॥ २० ॥ हे विप्र ! उस दृढधन्वाराजाकी कथा सुनो जो बडा

आस्तिक सुव्रत कृष्णभक्त था ॥ २१ ॥ यह श्रीमान् राजा हैहयदेशका रक्षक था, यह चित्रवर्मानामसे विख्यात और सत्यपराक्रमी था ॥ ॥ २२ ॥ इसका तेजस्वी पुत्र दृढधन्वा था वह भी सर्वगुणसम्पन्न सत्यवान् धर्मात्मा शुचि था ॥ २३ ॥ वह महातेजस्वी गुणोंके साथही बढने लगा जैसे शुक्लपक्षमें चन्द्रमा बढता है इस प्रकार वह शत्रुनाशी बढने लगा ॥ २४ ॥ अंगोंसहित वेदोंको पढ वह सम्पूर्ण शास्त्रका जाननेवाला एकवारही कही बातको ग्रहण कर लेताथा ॥ २५ ॥ उसने गुरुजनोंको बडी दक्षिणा दी थी, वह धीर उनकी आज्ञासे बडा

आसीद्धैहयदेशस्यगोप्ताश्रीमान्महीपतिः ॥ चित्रवर्मेतिविख्यातोधीमान्सत्यपराक्रमः ॥ २२ ॥ तस्यपुत्रोतितेजस्वीदृढधन्वेतिविश्रुतः ॥ ससर्वगुणसंपन्नःसत्यवाग्धार्मिकःशुचिः ॥२३॥ अवर्धतमहातेजाःसार्द्धंगुणगणेनसः ॥ शुक्लपक्षेमृगांकोवासर्वशत्रुनिबर्हणः २४ अधीत्यसांगान्निगमान्सर्वशास्त्रविशारदः ॥ सकृन्निगदमात्रेणप्रागधीतमिवस्फुटम् ॥ २५ ॥ ददौबहुतरास्तेभ्योदक्षिणाःसुमनोहराः ॥ तेषामनुज्ञयाधीरोमुमुदेऽसौमहाबलः ॥२६॥ मंत्रिणांब्राह्मणानांचप्रकृतीनांतथैवच ॥ सर्वेषांचमतंज्ञात्वापित्राराज्येऽभिषेचितः ॥२७॥ गुरुंसंपूजयामाससततंराज्यभुक्पुनः ॥ चित्रवर्मापितंपुत्रंदृष्ट्वालेभेपरांमुदम् ॥२८॥ अभिषिक्तंमहाबाहुमरातिगणशोषणम् ॥ निवृत्य विषयेभ्योऽक्षांश्चिंतयामासनिःस्पृहः ॥२९॥ इतःप्रभृतिकेनाहंहेतुनाघोरसागरे ॥ संसारलक्षणेतीव्रविषयव्यालदुःखिते ॥ ३० ॥

प्रसन्न होताथा ॥ २६ ॥ मंत्री ब्राह्मण और प्रजा इन सबके मतको जानकर पिताने उसका युवराज्यमें अभिषेक करदिया ॥ २७ ॥ वह निरन्तर राज्य भोगकर गुरुकी पूजा करता चित्रवर्माभी उस राजाको देख परम आनन्दको प्राप्त हुआ ॥ २८ ॥ उसे इसप्रकार शत्रुगणोंके नाशमें अभिषेक किया सम्पूर्ण विषयोंसे निवृत्तहो स्पृहाहीनहो विचार करनेलगा ॥ २९ ॥ कि, अब मैं किसप्रकार इस महासंसारसागरसे पारहूंगा

जिसमें तीव्र विषयरूपी व्याल दुःखित करते हैं ॥ ३० ॥ अनेकों दुराशाओं और क्रोध रूपी दंष्ट्रासे विदारण करनेवाले आधिव्याधिसे सबप्रकार परिवारीत ॥ ३१ ॥ इस संसारमें अपनेको नष्ट न करके मैं विश्वनाथ जगन्नाथ सबके सुख देनेवाले नारायणकी शरण जाताहूं ॥ ३२ ॥ जिनके एक बार नामस्मरण करनेसे चाण्डालभी नारायणताको प्राप्त होता है उन सनातन वासुदेवकी मैं शरणमें जाता हूं ॥ ३३ ॥ यह संसारसागर अक्षोभ्य है मनुष्योंको दुस्तर है इसमें अनेक आशाकी तरंगें उठती हैं और अनेक आशाके आवर्त उठते हैं ॥ ३४ ॥ अनेक विहंगरूपी वितर्क और दारुण

दुराशाबहुलेक्रोधशितदंष्ट्राविदारणे ॥ आधिभिर्व्याधिभिश्चैवसर्वतःपरिवारिते ॥३१॥ आत्मानंमज्जयामीहयामिसन्मनसाहरिम् ॥ विश्वनाथंजगन्नाथंसर्वेषांसुखदायकम्॥३२॥ सकृद्यन्नाममात्रेणश्वादोपिहरितांव्रजेत् ॥ तंयामिशरणंविष्णुंवासुदेवंसनातनम् ॥३३॥ कृष्णसागरमक्षोभ्यंधिगिमंदुस्तरंनरैः ॥ आशातरंगबहुलंरागावर्त्तविभीषणम् ॥ ३४ ॥ वितर्कानेकविहगंदारुणंजनभीकरम् ॥ शुभाशुभमनःसृष्टकल्पनाचारिसंभृतम् ॥ ३५ ॥ चिंतोत्तुंगगिरिव्रातश्रोणीभिश्चविराजितम् ॥ कथंहरिपदंपोतविहीनस्तारितुंक्षमः ॥ ॥३६॥ पुत्रोयंममधर्मात्माश्रीमान्विनयकोविदः ॥ प्रजाःपालयतेनित्यंस्वीयान्पुत्रानिवौरसान् ॥ ३७ ॥ पितराविवजनःसर्वो विश्वस्तोस्मिन्सुतेमम ॥ महाभागवतः श्रीमान्विष्णुभक्तिपरायणः ॥ ३८ ॥

भयंकर शुभ अशुभ मनसे निर्मित कल्पनाओंसे युक्त ॥ ३५ ॥ चिन्तारूपी ऊंचे पर्वतोंके समूह और श्रोणि ( तट ) भागसे विराजित इसको विना हरि नामस्मरण नौकाके प्राणी कैसे तर सकता है ॥ ३६ ॥ यह मेरा श्रीमान् पुत्र धर्मात्मा विनययुक्त है अपने पुत्रोंकी समान प्रजापालन करता है ॥ ॥ ३७ ॥ और प्रजा इसमें पिताके समान विश्वास करती है यह मेरा पुत्र महाभाग्यवान् विष्णुभक्तिपरायण है ॥ ३८ ॥

इससे अधिक और चित्तकी स्थिरताका क्या प्रयोजन होगा मैं विष्वक्सेन जनार्दनका आराधन करताहूं॥ ३९॥ध्रुव अम्बरीष शर्य्याति ययाति शिबि धुंधुमार प्रतर्दन वसुमना हरिश्चन्द्र नल मनु॥ ४०॥क्षेमधन्वा रंतिदेव शशबिन्दु भगीरथ प्रियव्रत भूरिषेण यौवनाश्व बलि नृग ॥ ४१ ॥ भीष्म युधिष्ठिर कर्ण दुष्यन्त भरत विभु महाभाग पृथु मांधाता सगर अंशुमान् ॥ ४२ ॥ दिलीप पृषध्र पुण्डरीक क्रतुध्वज इत्यादिक औरभी धर्म कर्ममें उद्योगकर

अतःपरंकिमत्रास्तिस्थैर्यचित्तप्रयोजनम् ॥ आराधयामिदेवेशंविष्वक्सेनंजनार्दनम् ॥ ३९ ॥ ध्रुवोंऽबरीषःशर्यातिर्ययातिःशिबिधुं धुरुः ॥ प्रतर्दनोवसुमनाहरिश्चंद्रोनलोमनुः ॥ ४० ॥ क्षेमधन्वारंतिदेवःशशबिंदुर्भगीरथः ॥ प्रियव्रतोभूरिषेणोयौवनाश्वोबलिर्नृगः ॥ ४१ ॥ भीष्मोयुधिष्ठिरःकर्णोदुष्यन्तोभरतोविभुः ॥ पृथुश्चैवमहाभागोमांधातासगरोंशुमान् ॥ ४२ ॥ दिलीपश्चपृषध्रश्चपुंड रीकःक्रतुध्वजः ॥ एतेचान्येपिराजानोधर्मकर्मकृतोद्यमाः ॥ ४३ ॥ भुक्तभोगामिमांत्यक्त्वाराज्यलक्ष्मीमतंद्रिताः॥ नागास्त्वचंय थाजीर्णांनिर्विशंकावनंगताः ॥ ४४ ॥ तत्रोपास्येहरिंभक्त्याहृषीकेशंसनातनम् ॥ इतिनिश्चित्यमनसाजगामपुलहाश्रमम् ॥ ४५ ॥ तत्रैवजानकीनाथं भक्त्यातिदृढयास्वया ॥ कंचित्कालंतपस्तप्त्वाचित्रवर्मामहीपतिः ॥ ४६ ॥ प्रापनारायणंदेवंगण्डक्युपवने शुभे ॥ कालोत्तमांगमाक्रम्यपदासव्येनभूमिपः ॥ ४७ ॥

नेवाले राजा ॥ ४३ ॥ आलस्यरहितहो इस भुक्तभोगवाली राजलक्ष्मीका त्यागकर वनको चले गये वैसा मैंभी जिसप्रकार नाग पुरानी कैंचली त्याग गमन करते हैं ॥४४॥वहां भक्तिसे सनातन हृषीकेशकी उपासना करूं यह विचार राजा पुलहऋषिके आश्रमको गया ॥ ४५ ॥ वहां जानकी नाथकी परम दृढभक्तिसे आराधनाकर राजा चित्रवर्मा तप करतारहा ॥ ४६ ॥ गण्डकीके सुन्दर उपवनमें नारायण देवको प्राप्तहो कालके

ऊपर अपना वाम चरण रखकर ॥ ४७ ॥ स्तुति करते हुए उनकी मनोहर वाणी श्रवण करता चला और उस नारायणके स्थान वैकुंठको प्राप्त हुआ जहांसे जाकर फिर कोई नहीं लौटता ॥४८॥ और कृतकृत्य होनेके कारण उनसे पुत्रादिकी अपेक्षा न की,जब दृढधन्वा राजाने इसप्रकार अपने पिताकी वैष्णवी गति श्रवण की ॥ ४९ ॥ तब शोक और हर्षयुक्तहो पिताका और्ध्वदैहिक कर्म किया ब्राह्मणोंकी आज्ञासे पिताकी भक्तिसे राजाने श्रेष्ठ कर्म किये ॥ ५० ॥ उस महाशोभायमान पुष्करावर्त नगरमें अनेक गुणगणोंसे युक्त प्रजाको पालनेलगा ॥ ५१ ॥ उसकी गुणसुंदरी

जगामस्तुवतांतेषांशृण्वन्वाचःसुपेशलाः॥वैकुंठाख्यंहरिपदंयतोनावर्त्ततेगतः॥४८॥सुतादिकृतकृत्यानांनापेक्षांकुरुतेयतः॥दृढधन्वा पिशुश्रावस्वपितुर्वैष्णवींगतिम्॥४९॥शोकहर्षपरीतात्माह्यकरोदौर्ध्वदेहिकीम्॥ पितृभक्त्यामहीपालःसम्यग्द्विजवराज्ञया ॥ ५० ॥ पुष्करावर्त्तकेपुण्येनगरेतीवशोभिते॥पुपोषचप्रजाःसर्वानानागुणगणैर्युतः ॥५१॥ तस्यशीलवतीभार्यानाम्नावैगुणसुंदरी॥ पुत्रीविदर्भराजस्यरूपेणाप्रतिमाभुवि॥५२॥पुत्रांस्तुसुषुवेदिव्यांश्चतुरानतिशोभितान्॥पुत्रींचारुमतींनाम्नासर्वलक्षणपूजिताम्॥५३॥ चित्रवाक्चित्रबाहुश्चमणिमांश्चित्रकुंडलः ॥ सर्वेचमानिनःशूराविख्याताःपृथिवीतले॥५४॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येदृढधन्वोपाख्यानेऽष्टमोऽध्यायः॥८॥ सूत उवाच ॥ दृढधन्वागुणैर्युक्तःशांतोदांतोजितेंद्रियः ॥ पुष्करावर्तकंनामनगरंतस्यधीमतः ॥ १ ॥

नाम शीलवती भार्या थी वह विदर्भराजाकी पुत्री पृथ्वीमें महारूपवती थी ॥५२॥ उसके दिव्य अति सुन्दर पुत्र चार उत्पन्न हुए और चारुमती नाम पुत्री सर्व लक्षणोंसे लक्षित थी ॥ ५३ ॥ चित्रवाक् चित्रबाहु मणिमान् चित्रकुंडल यह सब मानी बडे शूर पृथ्वीमंडलमें विख्यात हुए ॥५४॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये दृढधन्वोपाख्याने भाषाटीकायामष्टमोऽध्यायः ॥८॥ सूतजी बोले ॥ दृढधन्वा गुणोंसे युक्त शान्त दान्त

जितेन्द्रिय पुष्करावर्त नाम नगरमें निवासकरताथा ॥ १ ॥ रूपवान् गुणवान् धनुर्धारी श्रीमान् स्वभावसे सुन्दर धार्मिक सत्यवादी सत्यसंध पवित्र ॥ २ ॥ वेदवेदांगधर्मज्ञ धनुर्वेदपरायण कामक्रोधादि षड्वर्गके जीतनेवाला शत्रुसमूहके नाशक ॥ ३ ॥ जिसके मुखकी शोभासे राकेशमण्डल पराजित था जिसके धनुषकी टंकार सुनकर भयव्याकुलहो ॥ ४ ॥ उसके वैरी पातालमें प्रवेश करगये. जिसके भुजदंडमें कराल तलवार सदा स्थित रहतीथी ॥ ५ ॥ जिसको देखकर सम्पूर्ण वैरी प्राण छोडते थे, जिसकी शत्रुभयदायी धनुषटंकार सुनकर ॥

रूपवान्गुणवान्धन्वीश्रीमान्प्रकृतिसुंदरः ॥ धार्मिकःसत्यवादीचसत्यसंधःसमःशुचिः ॥२॥ वेदवेदांगधर्मज्ञोधनुर्वेदपरायणः॥सुनिर्जितारिषड्वर्गःशत्रुसंघविदारणः ॥३॥ वक्रलावण्यनिर्धूतस्फुरद्राकेशमंडलः ॥ यदीयकरकोदंडटंकारवभयार्दिताः ॥४॥ रसातलं प्रयांत्यद्धात्रासान्निर्जरवैरिणः ॥ करालकरवालंयद्वाहुदंडोपलालितम् ॥५॥ यंदृष्ट्वावैरिणःसर्वेभ्रांतावैविरमंतिच ॥ यस्यटंकारवंश्रुत्वाशत्रूणांभयदायकम्॥६॥दिग्गजाश्चदिशोयातास्त्रासादिवमदोद्धताः॥ यन्नामश्रुतिमात्रेणविघ्नायद्भवार्णवात्॥७॥पलायंतेदिशःसर्वाःशत्रवोनात्रसंशयः॥ यद्यशःश्रवणंकृत्वालीयंतेशत्रवोपुरि ॥ ८ ॥ यन्नामश्रवणत्रासाद्वदंतिहिरिपुस्त्रियः॥ यद्यशःश्रवणंनास्ति दृढधन्वनिशास्तरि॥ ९ ॥ यत्प्रयाणोत्सवेनागाःपातालतलवासिनः ॥ जायंतेमारुताहाराश्चिताकुलितचेतसः ॥ १० ॥

॥ ६ ॥ दिशाओंके दिग्गज व्याकुल हो दिशाओंके अन्तको चले गये जिसके नाम श्रवणमात्रसे संसारसागरके विघ्नकीसमान ॥ ७ ॥ सब शत्रु दिशाओंके अन्तको चले जाते थे इसमें संदेह नहीं. जिसका यश श्रवण कर शत्रु अपने नगरमें लीन हो जातेथे ॥ ८ ॥ जिसके नाम स्मरणमात्रसे शत्रुकी स्त्री कहने लगती थीं "इस दृढधन्वा राजाके भयसे त्रस्त हुई हम किसकी शरणमें जायँ" ? ॥ ९ ॥ जिसके प्रयाणके समय

पातालतलवासी नाग चिन्तासे व्याकुलहो केवल पवनका आहार करतेथे ॥ १० ॥ तुरंग स्यंदन गज पैदलके चरणोंसे चूर्ण हुए जातेथे जिसके सेनाके रजसे सूर्य आच्छादित हो जाता था ॥ ११ ॥ जिसकी यात्राके अवसरको सुनकर पर्वतभी शंकित होते थे कि, यह घोड़ोंके पदाघातसे हमको रेणुवत् कर डालेगा ॥ १२ ॥ हे प्रभो ! इस प्रकार वह राजा श्रेष्ठ उस स्थानमें राज्य करता था. लोक उसके राज्यमें आनंदको प्राप्त हो पुत्रपौत्रवाले हुए ॥ १३ ॥ वह वाञ्छावितरणसे चिन्तामणिके समान शोभित हुआ जगतके रंजन करनेसे पूर्ण चन्द्रमाके

तुरंगस्यंदनगजपदातिपदचूर्णितैः ॥ रजोत्करैर्दिशारोधःसूर्यमाच्छादयन्निव ॥ ११ ॥ यद्यात्रावसरंश्रुत्वागिरयोपिशशंकिरे ॥ तुरंगाणांपदाघातैर्नःकर्त्तात्रसरेणुताम् ॥ १२ ॥ इतिराजन्यशार्दूलेभूराज्यंशासतिप्रभो ॥ लोकाआनंदसंयुक्ताबभूवुःपुत्रपौत्रिणः ॥ १३ ॥ वांछावितरणाच्चासौबभौचिंतामणिर्यथा ॥ जगद्रंजनशीलेनशीतांशुरिवसाबभौ ॥ १४ ॥ कुबेरइवकोशाढ्यःक्षमयापृथिवीसमः ॥ हरिभक्तियुतोनित्यंगांभीर्येजितसागरः ॥१५॥ दंडधारणसामर्थ्येक्रोधेचैवयमोपमः ॥ पितामहसमःसाम्येतेजस्वीहव्यवाडिव॥१६॥ अनुल्लंघ्योगिरिरिवस्थैर्येचहिमवानिव॥कौशिकेनसमःशौर्येदृढत्वेमेरुणासमः॥१७॥ ब्रह्मोपदेशेनिपुणोसाक्षाद्वाचस्पतिर्यथा॥स्वकीयरूपलावण्येमूर्तिमानिवमन्मथः॥१८॥स्वसौंदर्यातिबाहुल्यान्मानिनीमानहारकः॥ एकपत्नीव्रतधरोनान्यनार्यवलोककः ॥१९॥

समान शोभित हुआ ॥ १४ ॥ कुबेरकी समान धनी, क्षमामें पृथ्वीकी समान, हरिभक्तिमें तत्पर, गंभीरतामें सागर ॥ १५ ॥ दण्ड धारणकी सामर्थ्यसंयुक्त, क्रोधमें यमराजकी समान, समतामें पितामहकी समान, तेजमें अग्निके समान ॥ १६ ॥ स्थिरतामें पर्वतकी समान, धैर्यमें हिमालय, शूरतामें कौशिक, दृढतामें मेरु ॥ १७ ॥ ब्रह्मके उपदेशमें साक्षात् बृहस्पतिके समान अपने रूपमें साक्षात् कामदेव ॥ १८ ॥ अपनी सुन्दरताकी

अधिकतासे मानिनीके मानका हरण करनेवाला वह राजाभी एकपत्नीव्रतधारी दूसरी स्त्रीको स्वप्नमेंभी नहीं देखता था ॥ १९ ॥ अपने बलसे वह रामचन्द्रकी समान त्रिलोकीके अभय देनेमें समर्थ था सत्यमें तत्पर मानों दूसरा हरिश्चन्द्रही था ॥२०॥ अपने धर्ममें शिवि और उशीनरकी समान सदा तत्पर था जिस राजाने त्रेताको सतयुगका समय बना दिया ॥ २१ ॥ उसके रूपकी समान किसीका रूप नहींथा प्राकृत और विकृत यज्ञोंसे उसने गरुडध्वज नारायणको प्रसन्न किया ॥ २२ ॥ दूसरे कार्तिकेयकी समान महाकीर्तिको प्राप्त हुआ जिसके राज्य करनेपर लोकोंमें भ्रम कुओंपर घटोंमें

त्रैलोक्याभयदःश्रीमान्कौसल्यानंदनोयथा ॥ सत्यपाशविनीतात्माहरिश्चंद्रइवापरः ॥ २० ॥ सदास्वधर्मनिरतःशिबिरौशीनरो यथा॥त्रेतायांयेनभूपेनकालःकृतसमःकृतः ॥२१ ॥ कस्तेनसमतामेतिप्रतिरूपोनकश्चन ॥ प्राकृतैर्विकृतैर्यज्ञैस्तर्पितोगरुडध्वजः ॥ ॥ २२ ॥ अत्युग्रकीर्तिमान्धन्वीकार्तवीर्यइवापरः ॥ यस्मिन्राजनिलोकेषुभ्रमःकूपघटेष्वभूत् ॥ २३ ॥ बंधनंकेशपाशानांप्रजा सुनकथंचन ॥ कामिनीसुरतेष्वेववस्त्राक्षेपोनचेतरः ॥ २४ ॥ हारःसुललनोत्तुंगकुचकुण्डलभूषणः ॥ रोषःकामिषुकामिन्याःप्रेम जोनतुवैरजः ॥ २५ ॥ वंचनंपुस्तकेष्वेवह्यक्षेषुमरणंतथा ॥ संभ्रमःक्रूरतादैन्यंमिथ्यालापस्तुकंचन ॥ २६ ॥ काठिन्यंनास्ति कत्वंचस्वल्पभाग्यंदरिद्रता ॥ भूतहिंसापरद्रोहःपरदाररतिःक्रुधिः ॥ २७ ॥

होताहुआ ॥ २३ ॥ केशपाशोंका बंधन होताथा प्रजामें कभी बंधन नहीं होताथा सुरतमें कामिनीका वस्त्र उघड जाताथा और किसी प्रकार नहीं ॥ २४ ॥ हरण करना ललनाओंके ऊंचे कुचोंका और कुंडल भूषण तथा काम कलामें कामिनियोंमें क्रोध होताथा किन्तु वैरसे नहीं होताथा ॥ २५॥ वंचन पुस्तकोंमें और मरण अक्ष (पाशों)में गुट्टका होताथा संभ्रम क्रूरता दैन्यता मिथ्याप्रलाप ॥ २६ ॥ कठिनता नास्तिकता स्वल्प भाग्य

दारिद्रता भूतहिंसा परद्रोह परदाराओंमें रति क्रोध ॥ २७ ॥ मलिनता मत्सर चोरी दस्युता जडता चुगली क्लेश क्रोध पराये धनका लेलेना ॥ २८ ॥ अनार्यत्व निर्गुणत्व लालच शत्रुता तृष्णा दंभ कपट कृपणता हरिका न सेवन ॥ २९ ॥ माता पिताका असन्मान वृत्तिके वास्ते धर्मसेवन दृढधन्वाके राज्यमें इनमेंसे कोई वार्ता नहींथी ॥ ३० ॥ जैसे खरगोशके सींग मृगतृष्णाका जल गगनके फूल वंध्याके पुत्र नहीं होता इसी प्रकार इन वस्तुओंका अभाव था ॥ ३१ ॥ ब्राह्मण अपने २ धर्ममें निरत श्रुति स्मृतिमें परायण थे इस प्रकार उस दृढधन्वा राजाके राज्य शासन करने

मालिन्यंमत्सरोत्यर्थंचौर्यंदस्युत्वजाड्यता॥पैशुन्यंकलहःक्रोधोऽनपत्यत्वंपरार्थना॥२८॥अनार्यत्वंनिर्गुणत्वंलोलुपत्वमरातिता॥
तृष्णादंभश्चकापटयंकार्पण्यंहरिसेवनम् ॥२९॥ मातापित्रोरसन्मानंवृत्त्यर्थंधर्मसेवनम् ॥ एतान्यविद्यमानानिदृढधन्वनिशासति ॥
॥३०॥यथाशशविषाणानिमृगतृष्णाजलानिच॥यथागगनपुष्पाणियथावंध्यासुतोद्भवः ॥३१॥ स्वधर्मनिरताविप्राःश्रुतिस्मृतिपरा
यणाः॥दृढधन्वनिराजेंद्रेतस्मिन्राज्यंप्रशासति॥३२॥बुद्धींद्रियमनःप्राणतेजांसियस्यभूपतेः ॥ अव्याहतान्यसौयावच्छशासक्षितिमे
कराट्॥३३॥गदजंनभयंनृणामस्यराज्येश्रुतंनच॥नस्यात्तस्करपैशुन्यंशत्रुभ्यश्चपराभवः॥ ३४ ॥ राज्ञोराजीवनेत्रस्यशूरस्यदृढधन्व
नः॥गुणानवर्णितुंशक्यागुणिनःसर्वचेतसः॥३५॥महत्सुखंतस्यराष्ट्रेहरिभक्तियुतेशुभे ॥हरिभक्तियुतान्येवदिनान्यायांतियांतिच ।३६।

में था ॥ ३२ ॥ जिस राजाके बुद्धि इन्द्रिय प्राण तेज अव्याहत थे इस कारण वह एक राजाकी समान पृथ्वी पालन करता था ॥३३॥ इसके राज्यमें किसीने रोगभय श्रवण नहीं कियाथा तस्करता पिशुनता शत्रुओंसे पराभव सुनाई नहीं आताथा ॥ ३४ ॥ उस कमललोचन दृढधन्वा राजाके गुणोंको कोई गुणी वर्णन करनेको समर्थ नहीं है ॥ ३५ ॥ हरिभक्तियुक्त उसके राज्यमें बडा सुख था उसके

दिन नित्य प्रति नारायण भक्तिमें बीततेथे ॥ ३६ ॥ उसका पुष्करावर्त नाम नगर सम्पूर्ण समृद्धिमान् था जिसमें धर्मात्मा बुद्धिमान् दृढधन्वा राजा निवास करताथा ॥ ३७ ॥ जिसप्रकार स्वर्गमें देवताओंकी अमरावती शोभित होती है इसीप्रकार राजाने सुन्दरतासे सम्पूर्ण पुरी स्थापित करदी ॥ ३८ ॥ गली और चौराहोंसे शोभित चैत्य और गुल्मोंसे मनोहर चित्र ध्वजा पताकाओंसे जहांकी धूप निवारित होतीथी ॥ ३९ ॥ जहांका चतुष्पथ मार्ग हाथियोंके मदसे सिक्त होताथा चमेलीकी माला मार्गमें जहां तहां शोभित होतीथीं ॥ ४० ॥ चन्दन मिले पानीसे जहां छिडकाव

पुष्करावर्त्तकंनामपुरंसर्वसमृद्धिमत्॥यस्मिन्वसतिमेधावीदृढधन्वानराधिपः॥३७॥यथामरावतीस्वर्गेभातिदेवगणान्विता॥धरासंस्थापिसर्वांगशोभनानृपसापुरी॥३८॥वीथिचत्वरशोभाढ्याचैत्यगुल्ममनोहरा॥चित्रध्वजपताकाभिर्वारितातपसत्पथा॥३९॥मातंगानांमदेनैवसिक्तमार्गचतुष्पथा॥ मालतीनांचमालाभिर्वासितानांमनोरमा॥४०॥ श्रीखंडामोदपानीयसिक्तमार्गाचसर्वतः॥नित्योत्सवविनोदार्थंकृतकौतुकतोरणा॥४१॥ज्वलत्कृष्णागुरूद्दामधूपपूजाविराजिता॥ विचित्रविकसत्पुष्पदामभिस्त्वतिमंडिता॥४२॥विकीर्णकुसुमामोदमाद्यद्भ्रमरयूथपा ॥ गलद्गजेंद्रदानौघसिक्तमार्गचतुष्पथा ॥४३॥ तस्याःपुर्याश्चशोभावैनकेनाप्युपमीयते॥बलभीसंश्रितानकक्रीडाद्विजकृतारवा ॥ ४४ ॥ सततधातुदृढोत्तुंगप्राकारवरदुर्द्धरा॥ सुरैरपिदुराराध्याकिंपुनर्भूचरैर्नरैः॥ ४५॥

होताथा जहां नित्य उत्सवके विनोदके निमित्त ध्वजा लगाई जातीथी ॥ ४१ ॥ काला अगर जलायाजाता था सहस्रों पुष्पोंकी माला जहां लटकतीरहतीथीं ॥ ४२ ॥ बिखरे हुए फूलोंकी सुगन्धि उडनेसे भौंरे गुंजार रहेथे हाथियोंके मद चूनेसे राजमार्गमें छिडकावसा रहताथा ॥ ४३ ॥ उसकी पुरीकी उपमा किसीसेभी नहीं दीजासकती छज्जोंके ऊपर क्रीडा पक्षी बनाये हुए शब्द करतेथे ॥ ४४ ॥ उसका बडा दुर्धर प्राकार सात

धातुका बना हुआथा जिसको देवताभी प्राप्त होनेमें समर्थ नहींथे पृथ्वीमें फिरनेवाले मनुष्योंकी तो कौन कहै ॥ ४५ ॥ मानों लक्ष्मी अपना स्थान छोडकर वहां स्वयं निवास करती है जहांके मनुष्योंके घर लक्ष्मीके रहनेके स्थान थे ॥ ४६ ॥ वे घर अत्यन्त मनोहर सहस्रोंही थे जिनके चारों ओर झरोखोंके द्वारोंसे कान्ति निकलती शोभित होतीथी ॥ ४७ ॥ अनेक किवाडोंमें सोनेकी कीलें लग रहीथीं द्वार द्वारमें सजेहुए अनन्त योधा स्थितथे ॥ ४८ ॥ दिव्य घोडोंके शब्दोंसे दिग्गजोंका शब्द तिरस्कृत होताथा सोने चांदीके मनोहर ऊंचे मन्दिर ॥ ४९ ॥ वैडूर्य मणिकी बनी

श्रितायावैस्वयंत्यक्त्वाकमलाकमलालयम् ॥ गृहाणियत्रदृश्यंतेनागराणांमहात्मनाम् ॥ ४६ ॥ रम्याणिरम्यरामाभिरावृतानिसहस्रशः ॥ यस्यांभांतिचतुर्दिक्षुगोपुरद्वाररोचिषः ॥ ४७ ॥ स्वर्णकीलैःकपाटैश्चखचितानेकशःशुभाः ॥ द्वारद्वारेषुसन्नद्धाःसुभटाःकोटिशःस्थिताः ॥ ४८ ॥ दिव्यवादित्रनिर्घोषबधिरीकृतदिग्गजाः ॥ सौवर्णैराजतैःशुभ्रैःसुधाबद्धबलैर्वरैः॥४९॥वैडूर्यकृतसोपानैर्नानामणिगणोचितैः ॥ वज्रनद्धकपाटाग्रैरिंद्रनीलशतव्रजैः ॥५०॥ स्फाटिकाट्टालकूलैश्चनानाधातुविचित्रितैः ॥ हरिन्मणिकृताशेषवेदिकाशतराजितैः ॥ ५१ ॥ महामरकतव्रातरचितस्तंभपंक्तिभिः ॥ पद्मरागशताकीर्णैःसरोभिर्विमलर्द्धिभिः ॥५२॥ येषुकीरगणाःशश्वत्पतंतिदाडिमभ्रमात् ॥ वीक्ष्यस्फटिककुंडेषुमहामारकतान्मणीन् ॥५३॥

सीढी अनेक मणिगणोंसे खचित वज्रसे बंधे किवाड सैकडों इन्द्रनील मणियोंसे जटित ॥ ५० ॥ स्फटिकमणियोंके समूह और अनेक धातुओंसे चित्र विचित्र हरित मणियोंसे विराजित सैकडों वेदिका थीं ॥ ५१ ॥ जहांके स्तभोंमें महामरकत मणि जटित हैं पद्मराग मणियोंसे आकीर्ण विमल ऋद्धिमान् सरोवर ॥ ५२ ॥ जिनमें दाडिमके भ्रमसे अनेक तोते वारंवार पडतेथे स्फटिकके आंगनमें महामरकत मणि जटित देखकर ॥ ५३ ॥

बिडालके नेत्रोंकी भ्रांतिसे तोते और चूहे नहीं स्थित होतेथे अनेकप्रकारके उज्ज्वल शृंगाटक और सुवर्ण कलश ॥ ५४ ॥ महा उपवनसे संसिक्त द्विजराशिसे विराजित और बावडियोंकी सीढ़ीसे पृथ्वी महा शोभित होतीथी ॥ ५५ ॥ कुमुद, शतपत्र, कह्लार, कमल, अम्बुज, कोमल उत्पन्न कह्लार, इन्दीवर ॥ ५६ ॥ चान्दीके रेतीके नदी तथा पक्षियोंके शब्द हंस सारस चकवा चकवी जलकुक्कुट ॥५७॥ जलमें मदोन्मत्त होकर

बिडालनयनभ्रांत्यानसंत्याखुशुकादयः ॥ नैकशृंगाटकैःशुभ्रैःशिखरैर्हैमकुम्भकैः ॥५४॥ महोपवनसंसिक्तद्विजराजिविराजितैः ॥ वापीभिःकृतसोपानराजिराजितभूमिभूः ॥ ५५ ॥ कुमुदैःशतपत्रैश्चकह्लारकमलांबुजैः ॥ कोमलैरुत्पलैश्चैवकह्लारेंदीवरैरपि ॥ ५६ ॥ राजताभिर्नदीभिश्चस्वनैःसत्तमपक्षिणाम् ॥ हंससारसचक्राह्वक्रौंचैश्चजलकुक्कुटैः ॥ ५७ ॥ मदोन्मत्तैःसललनैर्मोदिताभिर्मनोरमैः ॥ नैकपुष्पभरानम्रशिखरैःशाखिभिर्वृतैः ॥ ५८ ॥ प्रमदाभिर्वृतैर्वीरकोटियूथपभूषितैः ॥ सुरनारीतिरस्कारविभ्रमाभिरहर्निशम् ॥ ५९ ॥ ईदृग्विधैःसौधवरैःशोभितैःशतकोटिभिः ॥ सरोजनयनायत्रकुचभारावनामिताः ॥ ६० ॥ क्षाममध्याःपृथुश्रोण्यश्चलत्कुंडलरोचिषः ॥ चलंत्यःशोभयंतिस्मतांपुरीमलकामिव ॥ ६१ ॥ सुप्रोक्षिताविलासिन्योमानिन्योमदिरेक्षणाः ॥ सुरनारितिरस्कारलावण्याविलसंतियाः ॥ ६२ ॥

शब्द करतेथे, अनेक पुष्पोंके भारसे जहांके पुष्प नम्र होरहेथे ॥ ५८ ॥ अनेकों वीरस्त्रियोंसे व्याप्त जिनके विलासोंसे देवस्त्री तिरस्कृत होतीथीं ॥ ५९ ॥ इसप्रकारके अनेक कोटि महल वहां शोभित होतेथे जहां कमलनेत्रवाली स्त्री कुचोंके भारसे नम्र थीं ॥ ६० ॥ जिनकी पतलीकमर भारी नितम्ब श्रोणीभाग पृथु चलायमान कुंडल थे वे विचरती हुई उस पुरीको शोभित करतीथीं ॥ ६१ ॥ वह अच्छी प्रकार स्नान किये

विलासिनी मानिनी मदिरेक्षणा अपने शृंगारसे देवताओंकी स्त्रियोंको तिरस्कारतीथीं ॥ ६२ ॥ चन्द्रमाकी समान मुख, खंजनकी समान नेत्र, बिम्बोंकी तुल्य ओष्ठ, भुजगपतिकी तुल्य बाल पीन ( पुष्ट ) कुच जो हाथीके बच्चेके कुंभस्थलकी समान कठिन थे न जाने यह स्त्री विधाताने कैसे बनाई हैं ॥ ६३ ॥ वह राजा इन्द्रकी समान लक्ष्मीको भोग करता हुआ महेन्द्रके भुवनकी समान ऋद्धिको भोगता प्रसन्न होताथा ॥ ६४ ॥ जिसके स्पृहणीय गुण थे वह बड़ा शूर देवताओंके निमित्त बडा दान करताथा

मुखंचंद्राकारंनयनयुगलंखंजननिभंस्फुरद्बिंबाभोष्ठंभुजगपतितुल्योऽलकचयः ॥ कुचौपीनौकान्तौकरिकलभकुम्भाभकठिनौनजाने रामेयंकथमिहविधात्राविरचिता॥६३॥सौनासीरामिवस्फीतांश्रियंभुंजन्महामनाः ॥ महेंद्रभवनस्पर्द्धिसद्मेहस्थोमुमोदह ॥ ६४ ॥ स्पृहणीयगुणःशूरःसुराणामपिभूरिदः ॥ महाभक्तिगुणयुतःसदाविष्णुपदार्चकः ॥ ६५ ॥ शशासभूमंडलमुग्रतेजाःप्रपन्नरापन्नशरण्य मूर्तिः ॥ विराजयन्देशममानभावःस्वर्गैविडौजाइवभूतलेऽस्मिन् ॥६६॥ यदीयपादद्वयमिंद्रसूनोस्तीर्थानिनान्यत्रचचालविद्वन् ॥ जगादजिह्वाजगदीशनामाकरोज्जगन्नाथपदाब्जपूजाम् ॥ ६७ ॥ ननामनारायणदासवर्यमृतेकदाचिन्नशिरस्तदीयम् ॥ शुश्रावसीता पतिचित्रगाथांव्यालोकितोनेत्रयुगेनविष्णुः ॥ ६८ ॥

महाभक्तिके गुणसे युक्त सदा विष्णुके चरणोंका पूजन करनेवाला ॥ ६५ ॥ महातेजस्वी भूमंडलकी रक्षा करताथा साक्षात् शरण देनेवालोंकी श्रेष्ठमूर्ति था इस देशको इस प्रकार शोभित करता हुआ मानों राजा इन्द्रही भूतलमें प्राप्त हुआ है ॥ ६६ ॥ जिस राजाके दोनों चरण तीर्थोंको चलते जिह्वा नारायणके गुण गाती और हाथ जगन्नाथकी पूजा करतेथे ॥ ६७ ॥ केवल हरिभक्त महात्माओंकेही

निमित्ति उसका मस्तक झुकताथा कानोंसे सीतापतिकी कथा सुन्ता और दोनों नेत्रोंसे विष्णु भगवान्‌का दर्शन करता ॥ ६८ ॥ उस वीरवरका शील और नारायणका भजन किस प्रकार वर्णन हो सक्ता है जिसकी सुन्दरताके विचारकालमें इन्द्रादिक देवता चित्रकी समान हो गयेथे ॥ ६९ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्ये दृढधन्वोपाख्याने राजधानीवर्णनंनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ सूतजी बोले ॥ वह चन्द्रकी समान कान्तिमान् राजाओंका राजा चन्द्रवत् मित्र मंडलको आनंद करता था और शत्रुओंके निमित्त सूर्यकी समान तपता था ॥ १ ॥ कमललोचनी

किंवर्ण्यतेवीरवरस्यशीलंकिंवर्ण्यतेतद्भजनंमुरारेः ॥ यदीयसौंदर्यविचारकालेसेंद्राःसुराश्चित्रगताइवासन् ॥ ६९ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्येदृढधन्वोपाख्यानेराजधानीवर्णनंनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ ७ ॥ सूतउवाच ॥ द्विजराजःसराजावैराज मंडलमंडनः ॥ रेजेसपत्नवर्गेषुसूर्यवत्कुलनंदनः ॥ १ ॥ तंसिषेवेतिसुभगाराज्ञीराजीवलोचना ॥ सर्वसौंदर्यसंयुक्तानाम्नायागुण सुंदरी॥२॥पतिव्रतामहाभागानित्यंभर्तृहितेरता ॥ यस्यागुणसमानत्वेभुविनास्त्यन्यसुन्दरी ॥ ३ ॥ नारीगुणगणःसर्वोयामाश्रित्य विराजते ॥ तरुणीरूपसंपन्नामानिनीमदिरेक्षणा ॥ ४ ॥ महाभाग्यवतीसाचदयायुक्तातपस्विनी ॥ प्रणयावनतानित्यंसौंदर्यमद वर्जिता ॥ ५ ॥ सुधाधारप्रतिस्पर्द्धिलोललोचनराजिता ॥ विलोक्ययन्मुखंयातित्रपयेवशनैःशशी ॥ ६ ॥

सौभाग्यवती रानी उसकी सेवा करतीथी वह गुणसुन्दरी नामवाली सम्पूर्ण सुन्दरताके गुणोंसे युक्त थी ॥ २ ॥ पतिव्रता महाभागा नित्य स्वामी के हितमें तत्पर पृथ्वीमें जिसके गुणकी समान अन्य स्त्री नहींथी ॥ ३ ॥ जिसके आश्रय सम्पूर्ण स्त्रियोंके गुण थे वह तरुणी रूपसम्पन्न मानिनी मंदिरेक्षणा थी ॥ ४ ॥ वह तपस्विनी महाभाग्यवती दयावती थी प्रायः वह सुन्दरताके मदसे वर्जित थी ॥ ५ ॥ अमृतकी समान वचन चलाय

मान दृष्टिसे विराजित जिसके मुखको देखकर चन्द्रमा लज्जित होता था ॥ ६ ॥ खंजनके तिरस्कार करनेवाले उसके दोनों नेत्र थे जिनकी सुन्दरता देख मृग वनको चले गये ॥ ७ ॥ जिसके दोनों कपोल सुवर्णके संपुटकी समान थे बिम्बाफलकी समान अधर मधुव्रतवरूथिनी ॥ ८ ॥ कुछेक नीले केशोंके सहित कानोंमें कर्णफूल पहरे हुए ऐसे शोभित होतीथी मानो दो चन्द्रमाओंको राहु ग्रास करनेको आगया है ॥ ९ ॥ जिसकी नासिकासे शुक लज्जित होताथा सुन्दर ठोडीवाली जिसके मुखकी समान किसीका मुख नहींथा जो उपमा दीजाय ॥ १० ॥ वैडूर्य मणिकी समान जनमनो

लसत्खंजनसन्मानहरितंनयनद्वयम् ॥ तत्सौंदर्याशयेनैवकुरंगाःकाननौकसः ॥ ७॥ सौवर्णसंपुटस्पर्द्धिकपोलयुगमोहिनी॥लसद्बिंबाधरभ्रांतमधुव्रतवरूथिनी ॥ ८ ॥ किंचिच्चिकुरसंवीतकर्णताटंकशालिनी ॥ बिभ्रतीवशशियुग्मंराहुग्रस्तार्द्धमंडलम् ॥ ९ ॥ नासिकालज्जितशुकालसच्चिबुकशोभिनी ॥ नतुतन्मुखसौंदर्योपमानंविद्यतेक्कचित् ॥ १० ॥ लसद्ग्रैवेयसौंदर्यग्रीवाजनमनोहरा ॥ अत्यंतकर्कशोत्तुंगवृत्तपीनघनस्तनी ॥ ११ ॥ स्मराभिषेककलशौसौवर्णाविवबिभ्रती ॥ शुद्धजांबूनदोद्भूतमालयापरिवेष्टितौ॥१२॥ भारितोन्नयनयुग्ममध्यतोमध्यगश्चिकुरनीलकलापः ॥ किंसुधाघटरिरक्षयाधृतोभोगिराजइवदुश्च्यवनेन ॥ १३ ॥ यद्राजतेतुंगसरोजयुग्ममगापीनमुद्यत्कलधौतकांति ॥ मन्येधृतंतुंगयुतंमृगाक्ष्यालावण्यवारांनिधिलंघनाय ॥ १४ ॥

हर ग्रीवा विदित होतीथी अत्यन्त कर्कश ऊंचे पीनपयोधरोंसे युक्त थी ॥ ११ ॥ मानो कामदेवके अभिषेक करनेको सुवर्णके कलश धारण करती है शुद्ध सुवर्णनिर्मित मालासे वेष्टित हो रहेथे ॥ १२ ॥ उसके केशपाशसे दोनों ओर नीले बिखरे हुए बाल शोभित हो रहेथे मानों अमृतके घडे रक्षा करनेको दो सर्पराज आनकर स्थित हुए हैं ॥ १३ ॥ जो कि ऊंची कलीवाले कमलकी समान सुवर्णकी कांतिवाले

स्तन शोभित थे वे ऐसे विदित होतेथे मानों इस मृगनयनीने सुन्दरताका समुद्र इसमें रख छोड़ा है ॥ १४ ॥ अथवा उसके दोनों स्तन हाथीके कुम्भस्थलकी समान विदित होतेथे और उनपर मोतियोंका हार गंगाकी समान शोभित होताथा ॥ १५ ॥ उदरपर बडी सीधी कोमल रोमराजि विदित होतीथी उससे कुचरूपी कुम्भ बडे मनोहर लगतेथे और नाभिरूप कूपको देख कामी जन प्यासेकी समान विदित होतेथे ॥ १६ ॥ इस कृशोदरीका मध्यभाग नहीं दीखता था मानों वह स्तनरूपी पर्वतके त्राससे पलायन कर नाभिरूप ह्रदमें गिर पड़ा ॥ १७ ॥

करिकुंभलसद्युग्मकुचकुंभोपरिस्थिता ॥ मुक्तालतातथाभातिस्वर्णकुंभेमरापगा ॥ १५ ॥ रोमराजिलसद्रज्जुःकुचकुंभौमनोरमौ ॥ अभ्यर्णनाभिसत्कूपतृषिताःकिमुकामिनः ॥ १६ ॥ वक्षोजभूधरत्रासान्नाभिह्रदगतंकिमु ॥ मध्यंनलक्ष्यतेतस्याःकृशोदर्याःपलायितम् ॥ १७ ॥ त्रिवलीदलसौवर्णसोपानानिमृगीदृशः ॥ लावण्योच्चयमारोढुमिवपंचेषुभूपतेः ॥ १८ ॥ गजराजलसच्छुण्डादंडशोभिविलोमशम् ॥ तदूरुयुगलंभातिशृंगाराधारभासुरम् ॥ १९ ॥ नितंबचक्रमेणाक्ष्याःप्रतिरूपविवर्जितम् ॥ लावण्याख्यकुलालेनरचितंचातिसुन्दरम् ॥ २० ॥ तस्याःसुजातचरणावुपमानविवर्जितौ ॥ मुष्णंतौयावकरसमुद्गिरंताविवस्फुटम् ॥ २१ ॥

उसके उदरमें जो त्रिवली पडतीथी वही मानों उसकी लावण्यरूप पर्वतपर चढनेकी सीढी है ॥ १८ ॥ हाथीकी सूँडकी समान चढाव उतारकी उसकी परम मनोहर जंघा ऐसे शोभित होतीथीं मानों शृंगारका भार संभारनेको खंभ हैं ॥ १९ ॥ उसके नितंबकी शोभा वर्णनसे बाहर है मानो लावण्यनामक कुलालने उनकी रचना की है ॥ २० ॥ उसके सुन्दर चरणोंकी उपमा किसीसे नहीं देस

कते मानों लीलायुक्त होकर यावकका रस प्रत्यक्ष ग्रहण किये हुएहैं ॥ २१ ॥ ऐसी गुणसुन्दरी महारूपवती उस राजाकी इसप्रकार उपासना करतीथी जैसे चन्द्रमासे रोहिणी प्रेम करतीहै ॥ २२ ॥ उसके सुन्दर शब्दसे अर्थात् स्वरसे पवन स्तंभित होजातीथी वह मेखला उसकी कमरमें महा शोभित होतीथी और उसके चलनेके समय बडा मनोहर नूपुरोंका शब्द होता था ॥ २३ ॥ उसके सब गात्र सुन्दर थे और वह सम्पूर्ण आभरणोंसे भूषितथी पतिव्रत धारण करनेवाली साध्वी राजाके वशवर्ती थी ॥ २४ ॥ हे महाराज ! वह राजाकी विष्णुबुद्धिसे आराधना करतीथी

सेयंस्वरूपचारित्रशोभिनीगुणसुंदरी ॥ तमुपास्तेमहाराजंरोहिणीवनिशाकरम् ॥२२॥ स्वरुचारोचिताबालास्तंभयंतीमरुद्गणान् ॥ मेखलाकटिशोभाढचारणत्कंकणनूपुरा ॥२३॥ सर्वसुन्दरसद्गात्रासर्वाभरणभूषिता ॥ पतिव्रतधरासाध्वीराज्ञश्छंदानुवर्त्तिनी ॥२४॥ विष्णुबुद्ध्यामहाराजमाराधयतिभामिनी ॥ किंवर्ण्यतेमहाभाग्यंभूपतेर्दृढधन्वनः ॥ २५ ॥ वामांगेयस्यसंयुक्तालसच्चामरधारिणी ॥ सेवतेमेदिनीनाथंछायेवगुणसुंदरी ॥२६॥ नित्यंसुरासुरायस्याःसौष्ठवालोककांक्षिणः ॥ शृणुष्वान्यद्द्विजेशानभाग्यंराज्ञःकलानिधेः ॥ २७ ॥ चत्वारस्तनयास्तस्यनिदेशाकांक्षिणःसदा ॥ चातुर्यनिधयःशूरावेदवेदांगपारगाः ॥ २८ ॥ धार्मिकाःसत्यसंधाश्चधनुर्विद्याकृतश्रमाः ॥ पंचकर्मसुनिर्विण्णाविक्रांताःसिंहयोधिनः ॥ २९ ॥

राजा दृढधान्वाका भाग्य कौन वर्णन कर सकताहै ॥ २५ ॥ जिसके वाम अंगमें वह चमरधारिणी लक्षित होतीथी छायाकी समान गुणसुंदरी राजाकी सेवा करतीथी ॥ २६ ॥ जिसके देखनेकी नित्य देवताभी इच्छा करतेथे. हे महाराज ! आप उस राजाके भाग्यकी महिमा सुनो ॥ २७ ॥ जिसके पुत्र सदा उसकी आज्ञामें रहतेथे जो चतुरताके निधि शूर वेद और वेदांगके पारगामी थे ॥२८॥ धर्मात्मा सत्यसंध धनुर्वि़द्यामें श्रम करनेवाले

पांचों कर्ममें तत्पर विक्रान्त सिंहकी समान युद्ध करनेवाले ॥ २९ ॥ समुद्रकी समान दुर्गम शत्रुओंको तापित करनेवाले ब्राह्मणोंके निमित्त विक्रम करनेवाले विष्णुभक्तिमें परायण ॥ ३० ॥ सम्पूर्ण सद्गुणके सागर सूर्यके समान अपने पिताकी उपासना करनेवाले ॥ ३१ ॥ सत्यरूप सब कार्यके अर्थत्यागी पिताकी भक्तिमें परायण सब दिशाओंके जीतनेवाले धीर अनेक राजाओंसे वंदित ॥ ३२ ॥ नित्य अपने आचारमें निरत साधुओंको प्रसन्न करनेवाले जिनके नामश्रवणमात्रसे शत्रुकी स्त्री क्षणमात्रमें ॥ ३३ ॥ स्खलितगर्भा होजातीहैं और हतउत्साह होजातीहैं कि

समुद्राइवदुष्पाराःप्रतापतापितारयः ॥ ब्राह्मणार्थेपराक्रांताःपितृभक्तिपरायणाः॥३०॥सर्वसद्गुणवार्योघसंपूर्णाःसागराइव ॥ आदित्यमिवचोद्यंतमुपासंतःपितुर्मुखम्॥३१॥संत्यक्तसर्वकार्यार्थाःपितृभक्त्यामहारथाः॥ सर्वदिग्जयिनोधीरानैकभूपतिवंदिताः॥३२॥ स्वाचारनिरतानित्यंकृतरंजितसाधवः॥यन्नामश्रुतिमात्रेणरिपुनारीगणाःक्षणात् ॥३३॥ स्खलद्गर्भाहतोत्साहालसत्कटितटाःपुनः॥ कांदिशीकाःकुतोयामकुत्रयामेतिजल्पकाः ॥ ३४ ॥ एवंविधामहात्मानःसाधवःशंसितव्रताः ॥ चत्वारस्तनयाराज्ञोराजानममितौजसम् ॥३५॥ उपाचरंतिनियतंकिंकराइवभूपतिम् ॥ नृपाज्ञापरतंत्रास्तेसूत्रबद्धाःशुकाइव ॥ ३६ ॥ नित्यंबलिइराराज्ञोनसिप्रोतावृषाइव॥नतथानेकभोगेननंदिनोनृपनंदजाः॥३७॥जनिकर्तृनिदेशेनयथासानंदविग्रहाः॥सत्पुत्रैरावृतःश्रीमात्रेजेभूपशिखामणिः ॥३८॥

किस दिशामें कहां जायँ इसप्रकार कहने लगतीथीं ॥ ३४ ॥ इसप्रकारके महात्मा शंसितव्रत महापराक्रमी राजाके पुत्र विचरतेथे ॥ ॥ ३५ ॥ राजाकी किंकरकी समान उपासना करतेथे और राजाकी आज्ञाको सूत्रमें बंधे शुककी समान करतेथे ॥ ३६ ॥ वे नथे बैलकी समान नित्य राजाकी आज्ञा करनेवाले थे और राजाकी आज्ञामें जैसे आनंदथे ऐसे भोगमें नहीं ॥ ३७ ॥ जैसे अपने पिताकी आज्ञामें आनंद मानतेथे

वह राजा सत्पुत्रोंसे युक्त हो ऐसा शोभायमान हुआ ॥ ३८ ॥ कि, जैसा देवेन्द्रका हाथी एक साथ उत्पन्न हुए चार दांतोंसे शोभायमान होताहै अथवा भगवान् महदादि विभूतियोंसे शोभायमान होतेहैं ॥ ३९ ॥ सुन्दर गिरि वा चार वेदोंकी समानथे राजनीतिके आठों अंग पूर्णथे कोष धनसे पूर्णथे ४० सेवक सब पवित्र और स्वामीकी सेवामें तत्पर थे वे साधुओंके अभिलाषकी पूर्ति प्राणोंसे भी करतेथे ॥ ४१ ॥ दासोंको वे सदा गुणोंके उपकारसे रंजित करतेथे उसकी दासी सोलह वर्षकी अवस्थावाली गुणोंके उपकारसे रंजितथीं कंठमें सोनेके कंठे पहरेथे ॥ ४२ ॥ श्यामा सोलह वर्षकी सुन्दर चलने

सुरेंद्रवारणोदन्तैश्चतुर्भिःसोद्भवैरिव ॥ ईश्वरोभगवान्यद्वन्महदाद्यैर्विभूतिभिः ॥३९॥ शुभैःशुभैर्गिरिवरोविरिंचिर्निगमैरपि ॥ अष्टौवै द्रव्यकोशाश्चसदाभाग्यप्रपूरिताः ॥४०॥ भृत्याः पवित्राःसुभृताभर्तृप्रियहितेरताः ॥ प्राणैरप्युपकुर्वंतिसाधूनांवांछितानिच ॥४१॥ दासान्सुदानाःसततंगुणोपकृतिरंजिताः॥दास्यःषोडशवार्षिक्योनिष्ककंव्योविभूषिताः ॥४२॥ श्यामामंथरगामिन्यःपीनोन्नतपयोधराः॥हावभावकटाक्षैश्चमोहयंतिजगत्त्रयम्॥४३॥नित्यमेवमुपासंतेशतशोथसहस्रशः॥विंशद्योजनपर्यंतंप्राकारःपरितःसदा ॥४४॥ बद्धास्तिष्ठंतिमातंगानित्यमत्ताःप्रहारिणः ॥ सर्वेरिपुविभेत्तारोमहाबलपराक्रमाः ॥४५॥ हयाःशुकनिभाश्चैवसिंधुदेशसमुद्भवाः ॥ चपलाश्चपलानेकशिक्षागतिविशारदाः ॥४६॥ केचित्तित्तिरिवर्णाश्चशुकनासानिभाःपरे ॥ हंसवर्णाःपवनभाःखेचराइवपक्षिणः४७

वाली पीनपयोधरवाली हाव भाव कटाक्षोंसे तीनों लोकोंको मोहित करनेवाली थीं ॥ ४३ ॥ ऐसी सैंकडों उसकी नित्य उपासना करतीथीं उस नगरके परकोटाका विस्तार बीस योजनका था॥४४॥ बंधे हुए मातंग नित्य प्रति स्थिर रहतेथे यह सब महाबल पराक्रमी शत्रुओंके पुरके भेदन करनेवालेथे ॥ ४५ ॥ शुककी समान श्रेष्ठ सिंधुदेशके उत्पन्न हुए घोडे थे वे बडे चंचल अनेक शिक्षा गतिमें चतुर थे ॥ ४६ ॥ कोई तीतर वर्णवाले कोई

शुकनासाकी समान नाकवाले हंसवर्णवाले पवनकी समान गमन करनेवाले पक्षियोंकी समान गतिमान् ॥ ४७ ॥ पर्वतोंके उल्लंघन करनेवाले उच्चैःश्रवाके कुलमें उत्पन्न वे घोडे थे ऐसे अनेक घोडे और हाथी नित्य राजद्वारमें स्थित रहतेथे ॥ ४८ ॥ कांचनवर्णके चित्र अंगवाले सुन्दर घोड़ों से जुते ध्वजा पताकाओंसे युक्त सुन्दर पहिये और कूबरवाले ॥ ४९ ॥ सुन्दर वरूथ सुन्दर नीडवाले अच्छी प्रकार सजाये हुए विमानकी समान सब प्राणियोंको मनोहर ॥ ५० ॥ अनेक योधा और गुणी मनुष्योंसे आश्रित स्वर्ग पाताल और दैत्य दानवकी सभामें जानेवाले रथ थे ॥ ५१ ॥

पर्वतोल्लंघिनःसर्वउच्चैःश्रवकुलोद्भवाः ॥ राजद्वारगतानित्यंराजंतेवाजिराजयः ॥ ४८ ॥ रथाःकांचनचित्रांगास्सदश्वपरियोजिताः॥ सुध्वजाःसुपताकाश्चसुचक्रवरकूबराः ॥ ४९॥ सुवरूथाःसुनीडाश्चस्वास्तीर्णाःसाध्वलंकृताः ॥ विमानसदृशाःसर्वेसर्वेप्राणिमनोहराः ॥५०॥अनेकभटशौंडीरैःसंश्रितागुणिभिर्नरैः ॥ स्वर्गेलोकेचपातालेदैत्यदानवसंसदि ॥ ५१ ॥ सनास्तिविभवोलोकेयोनात्रविद्यते जने ॥५२॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येसुधन्वोपाख्यानेसमृद्धिवर्णनंनामदशमोध्यायः ॥ १० ॥ ऋषिरुवाच ॥ यस्मिन्सं सक्तहृदयोदृढधन्वामहीपतिः॥नबुध्यतेसुखासक्तःसंवत्सरगणान्बहून् ॥१॥ संवत्सराणांनियुतत्रयंराज्यमपालयत् ॥ कदाचिच्छय नारूढअश्वानांहेषितंश्रुतम् ॥ २ ॥ बृंहितंगजवृंदस्यसुभटानामहंकृतिम्॥ स्नेहयुक्तानिरम्याणिवचांसिभृत्यवर्गतः ॥ ३ ॥

पृथ्वीमें ऐसी कोई वस्तु नहींथी जो उसके मनुष्योंको प्राप्त न हो ॥ ५२ ॥ इति श्रीप० पुरु० सुधन्वोपाख्याने समृद्धिवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥ ॥ १० ॥ ऋषि बोले ॥ इसप्रकार वह दृढधन्वा राजा उनमें मन लगाये सुखमें आसक्त होनेके कारण बीते हुए बहुत वर्षोंकोभी न जानता हुआ ॥ १ ॥ तीस सहस्र वर्षतक उसने राज्य किया एक समय लेटेहुए उसने घोडेका हींसना सुना ॥ २ ॥ जो हाथियोंके मध्यमें सुभटोंके अहंकारपूर्वक

सुनागया और भृत्योंके स्नेहयुक्त वचन सुने ॥ ३ ॥ दास और दासियोंके मनोहर वचन सुने जो अपनी भक्तिसे युक्त चन्द्रमाकी समान निर्मल थे ॥ ४ ॥ इसप्रकार महाधनसे युक्त अपनी आज्ञा पालन करनेवाले तथा पुत्र पौत्रादिकोंकोभी अपनी आज्ञा पालन करनेवाले देखकर ॥ ५ ॥ निर्दोष लक्ष्मी और रोगरहित अपना कलेवर देख अपने नामकी विख्याति स्वर्गतक देखकर ॥ ६ ॥ अतुल और दिव्य समृद्धि मनोहर

दासदासीगणेशानांश्रुत्वावाचःसुपेशलाः।आत्मभक्तिगुणोदर्काःप्रियाश्चंद्रांशुशीतलाः।४।निरीक्ष्यवसुपीठंस्वंस्वीयाज्ञापरिपालकम्।
पुत्राःपौत्राःपवित्राश्चभक्तियुक्तामनोहराः॥५॥निर्दोषाश्चप्रभालक्ष्मीर्नीरुजंस्वंकलेवरम्।यन्नामत्रिदिवंयातमालोकालोकविश्रुतम्६॥
समृद्धिरतुलादिव्याकामिन्यश्चमनोहराः॥पृथिवीसर्वशोभाढ्यालोकाधर्मपरायणाः॥७॥नगरीसुरभोग्येवजनानिर्जरसुंदराः॥अनेक
सौख्यसलिलेपरिपूरितवारिधौ ॥८॥ नलेभेचिंतयन्वीरोदुःखपंकमनागपि ॥ तदासंचिंतयामासकेनपुण्येनलब्धवान् ॥ ९ ॥ अतुलं
निर्मलंसौख्यंस्वर्गिणामपिदुर्लभम् ॥ नपश्यामितपस्तप्तंनदत्तंनहुतंक्वचित् ॥ १० ॥ नाराधितोऽस्तिमेदेवःकेनाहंप्राप्तवानिदम् ॥
किमिदंपरिपृच्छामिस्वीयमैश्वर्यकारणम् ॥ ११॥ अतःपरंतुकिंभाविघोरसंसारसागरे॥नतादृशंमुनिंपश्येसंदेहंयःपराणुदेत् ॥ १२ ॥

कामिनी, सब शोभायुक्त पृथ्वी धर्म परायण लोक ॥ ७ ॥ देवताओंके भोगकी समान नगरी जरारहित सुन्दर जन आनंदके सागरको सुखरूपी जलसे पूर्ण देख ॥ ८ ॥ विचार कर उस वीरने कहीं दुःखका लेशभी न जाना तब विचारनेलगा किस पुण्यसे मुझको यह लब्धि हुईहै ॥९॥ यह निर्मल सुख स्वर्गवासियोंकोभी दुर्लभ है न कुछ तप मैंने किया है न हवन कियाहै ॥ १० ॥ न किसी देवताका आराधन किया यह किस देवता का फल है अपने ऐश्वर्यका कारण किससे पूछूं ॥ ११ ॥ इससे आगे घोर संसार सागरमें क्या होना है ऐसा संदेह दूर करनेवाला कोई मुनिभी

नहीं विदित होता ॥ १२ ॥ ऐसा विचार करके राजाको बहुत रात्रि बीत गई और उषःकाल होगया तब सहसा उठ बैठा ॥ १३ ॥ वैतालकिकके मुखसे मनोहर स्तुतियोंके वाक्य श्रवण करते हुए उठकर राजाने आवश्यकीय कार्य कर गंगाजलसे स्नान कर ॥ १४ ॥ निकलते हुए सूर्यको अर्घकर देवताओंको पूजन कर फिर शृंगारके स्थानमें आया ॥ १५ ॥ और शृंगारके वस्त्रोंको पहर स्वस्तिवाचन कराय अपने पुरोहितको नमस्कार कर सिन्धुदेशमें उत्पन्न हुए घोडेपर स्थित हो ॥ १६ ॥ पर्वतोंके स्थानमें मृगया करनेको चलागया और साथमें मुख्य योधा और

एवंसंचितयन्राजायामिन्यतंतमवाप्तवान्॥ उषस्युत्थायसहसासमंदुंदुभिनिःस्वनैः॥ १३॥ वैतालिकमुखोद्गीतस्तुतिवाक्यैर्मनोरमैः ॥
आवश्यकंविधायाशुस्नात्वागंगोदकेनतु ॥१४॥ उपस्थायार्कमुद्यंतंसुरान्संपूज्ययत्नतः ॥ततःशृंगारभवनमागत्यपरिधत्तवान्॥१५॥
शृंगारान्वसनंसर्वंस्वस्तिवाच्यद्विजातिभिः ॥ पुरोधसेनमस्कृत्यवाजिनंसिंधुजंशुभम् ॥१६॥ आरुह्यगिरिकूटेषुमृगयांगंतुमुद्यतः ॥
साकंसचिवमुख्यैश्चयोधमुख्यैःपदातिभिः॥१७॥ श्वजीविभिर्वागुरिकैरणग्राहभटैरपि ॥ बहुशूरावृतःश्रीमांश्चचारगहनंवनम् ॥१८॥
नीलमेघसमंहृद्यंविचित्रद्विजराजितम् ॥ ईहामृगगणाकीर्णंबहुपादपशोभितम् ॥१९॥ पक्षिभिःक्वचिदाकीर्णंक्वचिच्चैवातिसुंदरम्॥ झिल्लिकोलूकशब्दैश्चक्वचिच्चातिभयानकम्॥२०॥ फेरूणांचैवशब्देनद्वीपिशब्दैर्वृतंक्वचित्॥ क्वचिन्मत्तमयूरोग्रशब्देनैवविराजितम् ॥२१॥

मुख्य २ मंत्री थे ॥ १७ ॥ तथा श्वजीवी व्याधे और बडे बडे योधाथे इसप्रकार वह लक्ष्मीवान् अनेक शूर योधाओंसे युक्त उस गहन वनमें विचरने लगा ॥ १८ ॥ जो वन नीले मेघकी समान सघन विचित्र पक्षियोंसे युक्त ईहामृग तथा अनेक पक्षियोंसे शोभित था ॥ १९ ॥ कहीं पक्षियोंसे आकीर्ण कहीं ऊंचे शब्द बोलनेवालोंसे व्याप्त कहीं झिल्ली तथा उलूकोंके शब्दोंसे पूर्ण कहीं अतिभयानक ॥ २० ॥ कहीं गीदड और

कहीं गेंडोंके शब्दोंसे पूर्ण कभी मत्त मोरोंके शब्दोंसे पूर्ण ॥ २१ ॥ कबरे श्वेत कंठवाले कबूतरके बच्चोंसे व्याप्त सारिका कोकिला तथा भौरोंके शब्दोंसे व्याप्त ॥ २२ ॥ हंस सारस चकवा चकवीके अनेक कुलोंसे सम्पूर्ण कहीं पारावत कबूतरके अनेक शब्दों तथा विहगोंके शब्दोंसे पूर्ण है ॥ ॥ २३ ॥ शाल ताल तमाल प्रियाल पनस अर्जुन हिन्ताल कोविदार आम महुआ कुटजादि वृक्षोंसे व्याप्त है ॥ २४ ॥ रसाल अशोक बदरीफल रंभा तिलक टेसू नागकेशर आम बहेड़ा पाटल लोध घोटक ॥ २५ ॥ सिंदूर ऐरण्ड बकुल पिलखन न्यग्रोध चंपा धव पीपल खैर बेल आमला तिंदुल

कर्बुरंशितिकंठैश्चआनीलंशुकपोतकैः ॥ श्यामितंषट्पदध्वांक्षभाससारिककोकिलैः ॥२२॥ हंससारसचक्राह्वबकोटकुलसूचितम् ॥ पारावतशकुंतौघैर्व्याप्तंनानाविहंगमैः ॥ २३ ॥ शालतालतमालैश्चप्रियालपनसार्जुनैः ॥ हिंतालकोविदाराम्रमधूककुटजासनैः ॥ ॥ २४ ॥ रसालाशोकबदररंभातिलककिंशुकैः ॥ केसराम्रातभल्लातैःपाटलाकोडघोटकैः ॥ २५ ॥ सिंदूरैरंडबकुलप्लक्षन्यग्रोधचंपकैः ॥ धवाश्वत्थोग्रखदिरबिल्वामलकतिंदुलैः ॥ २६ ॥ कर्पूरागरुखर्जूरकेतकीदाडिमेंगुदैः ॥ सुरदारुकपित्थाक्षपत्रजीवकसेचकैः ॥ २७ ॥ जंबुजंबीरनारिंगशेलुश्रीपर्णचंदनैः ॥ एभिश्चान्यैर्द्रुमव्रातैर्वनंतत्सर्वतःशुभम् ॥ २८ ॥ विवेशमृगयाशीलःकामीववनिताव्रजम् ॥ चचारमृगयाशूरोनिघ्नन्मृगगणान्बहून् ॥ २९ ॥

॥ २६ ॥ ( जामन जंबीरी नारियल श्रीफल चन्दन तथा इनके सिवाय ) कपूर अगर खजूर केतकी दाडिमी इंगुदी देवदारु कैथ अखरोट जीवक सेचक ॥ २७ ॥ जामुन जंभीरी नारियल श्रीफल पर्पट चन्दन इनके सिवाय और भी अनेक प्रकारके वृक्षोंसे चारोंओर व्याप्त हो रहाथा॥ २८॥ वह मृगया शील राजा इस प्रकार वनमें प्रविष्ट हुआ जिस प्रकार कामी स्त्रियोंके समीप गमन करता है अनेक मृगसमूहोंको मारता वनमें विचरने लगा ॥ २९॥

मृग रीछ शूकर खड्ग शल्लक गैंडे हाथी चित्रमृग चमर सृमर बल ॥ ३० ॥ गवय सिंह गोपुच्छ शार्दूल भैंसे रुरु इसप्रकार अनेक मृगोंको मारता विचरने लगा ॥ ३१ ॥ वह महाबाहु वनमें अनेक प्रकारके मृगोंका वध करने लगा और अपने पासके मृगोंको एकही बाणसे नष्ट करने लगा ॥ ३२ ॥ भल्ल पट्टिश प्रास भिंदिपाल मुद्गर कुंड दंड शतघ्नी गदा मुशल लांगल ॥ ३३ ॥ तोमर सृणि पाश शूल चक्र

मृगानृक्षान्वराहांश्चखड्गांश्चशशशल्लकान् ॥ द्वीपिनोद्विरदांश्चित्रांश्चमरान्सृमरान्बलान् ॥ ३० ॥ गवयान्सिंहगोपुच्छाञ्छार्दूलान्महिषान्रुरून् ॥ एवंविधाननेकांश्चसर्वान्वनचरान्बहून् ॥ ३१ ॥ जघानसमहाबाहुःशरैर्नानाविधैर्वने ॥ अभ्याशवर्तिनःखड्गैश्शरैश्चशरगोचरान् ॥ ३२ ॥ भल्लैश्चपट्टिशैःप्रासैर्भिंदिपालैश्चमुद्गरैः ॥ कुंडैर्दंडैःशतघ्नीभिर्गदामुसललांगुलैः ॥ ३३ ॥ तोमरैःसृणिभिःपाशैःशूलचक्रपरश्वधैः ॥ भुशुण्डीभिर्गदाभिश्चनिस्त्रिंशैःपरिघैःपलैः ॥ ३४ ॥ शूकराणांवधेनापिलोडयामासतद्वनम् ॥ रुद्राक्रीडसमंघोरंकृतंतेनमहात्मना ॥ ३५ ॥ कदाचित्तेनबाणेनमहाबलयुतेनच ॥ कश्चिन्मृगोहतोरण्येबाणेनदृढधन्वना ॥ ३६ ॥ समृगोंतर्हितोजातोबाणमादायसत्वरम् ॥ तंजगामतुराजेंद्रःशर्वःक्रतुमृगंयथा ॥ ३७ ॥ मृगःकुत्रापिसंलीनोभ्रमन्नेवापतन्नृपः ॥ क्षुत्तृड्दुःखपरीतात्माबभ्रामवनसंकटे ॥ ३८ ॥

परशे भुशुण्डी गदा निस्त्रिंश परिघ पलसे ॥ ३४ ॥ शूकरोंको वध करता हुआ उस वनको विलोडित करने लगा ॥ उस महात्माने उस वनको शिवके क्रीडा करनेकी समान महाघोर कर दिया ॥ ३५ ॥ एक समय उसने महाबलसंयुक्त बाण द्वारा दृढ धनुषसे घोर मृग वनमें मारा ॥ ३६ ॥ वह मृग उस बाणको लेकर अन्तर्धान होगया राजा उसके पीछे ऐसे चलने लगा जैसे शिव यज्ञ मृगके पीछे गयेथे ॥ ३७ ॥ परन्तु राजाको वह मृग

वनमें कहीं न मिला और बराबर दुःखी चित्त हुआ राजा वनमें भ्रमण करने लगा ॥ ३८ ॥ जैसे विष्णु भगवान्से पराङ्मुख जीव कामिनीके वशीभूत हो विचरण करता है । फिर वह वीर बहुत शीघ्र महागहन सागरकी समान सरोवरमें प्रविष्ट हुआ ॥ ३९ ॥ जहां हंसोंका कुल शब्द करताथा तथा चकवा चकवी शब्द करतेथे ॥ ४० ॥ जलकुक्कुट दात्यूह पक्षियोंसे कुररीकी समान शब्दायमानथा तथा मानस सरोवरकी समान स्वच्छ जलसे पूर्णथा ॥ ४१ ॥ जिसके अन्तरमें अनेक क्रूर ग्राहगण दुष्टोंके हृदयकी समानथे; जिसमें मत्स्य स्फुरायमानथे जिसका सुन्दर

कामिनीनयनाविद्धोयथाविष्णुपराङ्मुखः ॥ आससादचिराद्वीरःकासारंसागरोपमम्॥ ३९ ॥ कूजद्धंसकुलप्रेष्ठंचक्रवाकरवेणच ॥
सारसारावसरसंकारंडवनिषेवितम्॥४०॥जलकुक्कुटदात्यूहकुररीबककूजितम् ॥ स्वच्छपानीयसंपूर्णंयथासज्जनमानसम् ॥ ४१ ॥
अंतर्ग्राहगणक्रूरंखलानांहृदयंयथा॥स्फुरन्मत्स्यचलत्पद्मरेणुरंजितसत्पयः॥४२॥ लसत्पंकजनिर्व्यूहैःपरितःपरिवेष्टितम् ॥ स्वच्छ
मत्स्यंयथाचंद्रमंडलंकारकावृतम् ॥ ४३ ॥ तत्सरःसंलिलंपुण्यंसर्वाजीव्यंवगाहतः ॥ यथाप्रपंचसंतप्तोविष्णुभक्तिंविगाहते ॥४४॥
सर्वाजीव्यंवारिवीरोययौपातुंचभक्तितः ॥ नीरंपीत्वाततस्तीरआगत्यमनुजाधिपः ॥ ४५ ॥ अपश्यच्चवटंवीरःकेतुभूतंवनांतरे ॥
सर्वत्रसंवृतंपत्रैर्घनच्छायंमनोहरम् ॥ ४६ ॥

जल कमलोंसे व्याप्तथा ॥ ४२ ॥ चारों ओर कमलोंसे व्याप्त हो रहाथा जिसप्रकार स्वच्छ चन्द्रमण्डल तारकाओंसे आच्छादित होता है ॥ ॥ ४३ ॥ उस सरोवरके निर्मल जलमें अनेक जीव अवगाहन करते थे जिसप्रकार विष्णुभक्त प्रपंचसे संतप्तहो नारायणके नामका अवगाहन करते हैं ॥ ४४ ॥ वह राजा यथायोग्य अश्वके ऊपर चढाहुआ उस सरोवरका जलपान करनेको उसके तटपर आया ॥ ४५ ॥ उसने उस वनमें

एक सबसे ऊंचा केतुभूत वटका वृक्ष देखा वह पत्ते और घनी छायासे संयुक्तथा ॥ ४६ ॥ वीरने उस वृक्षको देखकर इस बातकी चिन्ताकी कि, यह न्यग्रोधका वृक्ष अनेक घनी छायासे समन्वित है ॥ ४७ ॥ पत्र पुष्प फल जटा दारु निर्यास वल्कलसे युक्त है; क्षणमात्रमें इसके नीचे बैठकर मैं सुखी तो हो जाऊं ॥ ४८ ॥ जिस प्रकार घोर संसारसे पीडित हो महात्मा नारायणके धर्मको प्राप्त होते हैं यह विचारकर राजा घोडेसे उतरा ॥ ४९ ॥ और वहीं घोडेकी काठीपैसे वस्त्र उतार कर बिछालिया और स्वयं राजा उसके ऊपर सोने लगा ॥ ५० ॥ घोडा वटके वृक्षकी

दृष्ट्वाव्यचिंतयद्वीरःक्षोणीमंडलमंडनः ॥ न्यग्रोधोयंबहुच्छायःसर्वसत्त्वसुखप्रदः॥ ४७॥ पत्रैःफलैर्जटाभिश्चदारुनिर्यासवल्कलैः ॥ क्षणमेनमुपाश्रित्यभविष्यामिह्यहंसुखी ॥ ४८ ॥ हरिधर्मोयथासाधुर्घोरसंसारपीडिनाम् ॥ इतिनिश्चित्यमनसाहयादुत्तीर्यभूमिपः ॥ ४९ ॥ निषसादधरोपस्थेचैलास्तीर्णेसुशाद्वले॥ चर्मोपधानमादायसुष्वापधरणीतले॥५०॥जटासुवाजिनंबद्धासर्वतोऽलोकयद्द्रुमम् ॥ निरीक्षमाणेनृपतौवटशाखाःसहस्रशः ॥ ५१ ॥ पंचयोजनविस्तीर्णाःसप्तयोजनमुद्गताः ॥ तत्रागमत्खगःकश्चित्कीरःपरमशोभनः ॥ ५२ ॥ सत्प्रवाललसच्चंचुःकृष्णग्रीवोहरिच्छदी ॥ अत्यंतविलसन्नेत्रःसुपादःशोभनोदरः ॥ ५३ ॥ मानुषीमीरयन्वाणीमतुलांनृपमोदिनीम् ॥ यदाकर्णनमात्रेणदुःखंसद्यःप्रशाम्यति ॥ ५४ ॥

जटामें बांध दिया और वटकी सहस्रों शाखाओंको देखने लगा ॥ ५१ ॥ जो पांच योजनके विस्तारमें और सात योजन ऊंचीथीं वहां कोई परम सुन्दर कीर ( तोता ) आनकर प्राप्त हुआ ॥ ५२ ॥ जिसकी चोंचमें मूंगे जडेथे. काली गर्दन हरित वर्ण अत्यन्त सुन्दर नेत्र सुंदर चरण और उदर था ॥५३॥ वह राजाको प्रसन्न करनेवाली मानुषी वाणीसे बोला जिसके श्रवणमात्रसे तत्काल दुःख शान्त हो जाता है॥५४॥

जिस अमृतको पान कर राजा प्रसन्नमुख हो गया और कुलद्वारा प्रेरण कियेकी समान तत्काल शयनसे उठ बैठा ॥ ५५ ॥ राजाने आदरसे तोतेकी श्रेष्ठ वाणी सुनी तोतेके मुखसे बारंबार यह वाणी राजाको सुनाई दी ॥ ५६ ॥ वह अतीतात्मा राजा अतुल सुख विद्यमान होनेपर भी विचार नहीं करता फिर किसप्रकार संसारके पार होगा ॥ ५७ ॥ बारंवार यह श्लोक पढकर राजाके आगे पतित हुआ और अमृत भरी वाणीसे समझानेलगा ॥ ५८ ॥ यह वटशाखापरसे वाणी राजाको सुनाई इसप्रकार राजाको सुख देनेवाला तोता कहकर आकाशमें उडगया ॥ ५९ ॥ राजा

पीयूषक्षरणंपीत्वाहृष्टरोमानृपोऽभवत्॥उत्थायशयनात्तूर्णंयंत्रोत्क्षिप्तइवस्वयम्॥५५॥ शुश्रावशुकसद्वक्राद्वाणीमादरतोनृपः ॥ शुकः स्ववक्रात्सुश्लोकंपपाठासौपुनःपुनः॥५६॥विद्यमानातुलंसौख्यमालोक्यातीतमात्मनः॥नचिंतयतिसंमूढःसकथंपारमेष्यति ॥५७ ॥ वारंवारमिदंपद्यंपपाठनृपतेःपुरः॥बोधयन्निवसंमूढंवाचापीयूषकल्पया॥५८॥वटशाखामलंकृत्यमुहूर्तमीरयन्निदम् ॥ शुकःशुक्रसमो राज्ञोऽनिच्छतःखमुपारुहत् ॥ ५९ ॥ श्रुत्वातस्यवचःश्रीमान्मुमुदेमुमुहेपिच ॥ किमेतदुक्तवान्धीरःशुकःपद्यंपुनःपुनः ॥ ६० ॥ समुपालब्धवान्किवामद्भाग्यंसुमनोहरम् ॥ किंवाचायंभवेत्कृष्णद्वैपायनसुतोऽपरः॥६१॥अथवादेवकापुत्रःकिंवाकश्यपनन्दनः ॥ स्वमथानुचरंज्ञात्वाममदृष्टिपथंगतः ॥ ६२ ॥ ममानुग्रहकर्त्ताचवासुदेवोभविष्यति ॥ इतिचिंतापरेराज्ञिसासेनासमुपागता ॥६३॥

सुखी होकर बहुत प्रसन्न हुआ और बारंबार कहनेलगा यह तोतेने क्या कहा है ॥ ६० ॥ यह इसने श्रेष्ठ वाणी क्या कही है क्या यह कृष्णद्वैपायनके पुत्र दूसरे शुकदेव हैं ॥ ६१ ॥ अथवा यह देवकीपुत्र यदुनन्दन हैं अपना दास जान मुझे दर्शन देनेको आये हैं ॥ ६२ ॥ यह हमारे ऊपर अनुग्रह करनेवाले वासुदेव होंगे. राजा यह चिन्ताही करताथा कि, उस समय राजाकी सेना आनकर प्राप्त हुई ॥ ६३ ॥

विना जाने राजाको वह ढूँढती फिरतीथी हाथी घोडे पैदल आदि चतुरंग समूहसे युक्तथी ॥ ६४ ॥ उस सेनाके प्राप्त होनेसे यह राजा बहुत प्रसन्न न हुआ परन्तु कनखियोंसे मंत्रियोंकी ओरको देखनेलगा ॥ ६५ ॥ उसने जाना कि, राजाको कोई चिन्ता है कौन उसे दूर करसकता है इसप्रकार राजा चिन्ता करके कहींभी सुख न पाता हुआ ॥६६॥ न खाता न पीता न क्रोध करताथा आनंदसागरमें योगीकी समान ध्यानमें मग्न होगया ॥ ६७ ॥ कहनेपरभी कुछ नहीं बोलता हँसानेसे नहीं हँसता न पुत्रोंको आलिंगन करै न भार्यासे प्रसन्न होता ॥६८ ॥ न कोई राजाके मनकी चिंता जाननेको

आजानेयखुरक्षुण्णामेदिनीलोकिनीचिरात्॥वाजिवारणपादातरथवृंदलसद्भटा ॥ ६४ ॥ तामाप्यदृढधन्वासौनातिहृष्टमनाययौ ॥
परंतुसचिवैःसाकंनयनापांगलक्षितः॥६५॥नृपोप्यचिंतयच्चित्तेकोमेशोकंपराणुदेत्॥इतिचिंतापरोराजानलेभेशर्मकुत्रचित् ॥ ६६ ॥
नशासतेनवैभुंक्तेनहृष्यतिनकुप्यति॥ध्यानमेवाश्रितःश्रीमान्योगीवानंदसंप्लवे॥६७॥वाच्यमानोनचब्रूतेहास्यमानोननंदति ॥ परि
रंभतनोपुत्रान्नभार्यामभिनंदति॥६८॥नचतच्चित्तगांचिंतांकोपिवेदनृपेतरः॥कदाचिदासाद्यपतिंसाध्वीसागुणसुन्दरी ॥६९॥रहःप्रोवा
चराजानंपौलोम्येवमरुत्पतिम्॥गुणसुन्दर्युवाच॥भोभोनृपतिशार्दूलशत्रुसेनाभयावह ॥ ७० ॥ महाराजनरेशानसर्वसाधुजनप्रिय ॥
किमेनमाधिंदुर्धर्षांहृदिधारयसेविभो॥७१॥नाहंजानामिवीरेशसज्जनानंदवर्द्धन ॥ त्वदाधिमूलंभूपालत्रैलोक्येपिकुतोयथा ॥७२॥

समर्थ होताथा एक समय वह गुणसुन्दरी अपने पतिके निकट आनकर प्राप्त हुई ॥ ६९ ॥ और एकान्तमें राजासे कहनेलगी जैसे पौलोमी इन्द्रसे बोलती है. हे नृपशार्दूल ! शत्रुओंको भय देनेवाले ॥ ७० ॥ हे महाराज नरेशोंके नरेश सम्पूर्ण साधुजनोंके प्यारे हृदयके बीचमें आप कैसी दुर्धर्ष अग्निको धारण किये हैं ॥ ७१ ॥ हे वीरेश ! मेरे हृदयके आनंद देनेवाले मैं इस वार्ताको नहीं जानती हे महीपाल ! आपके हृदयका शूल त्रिलो

कीमें होना नहीं देखती हूं ॥ ७२ ॥ नाग यक्ष पिशाच सुपर्ण उरग चारण गन्धर्व नर राक्षस सुर असुर मृग खग ॥ ७३ ॥ सदा आपके गुणोंका गान करते रहते हैं आपके प्रसादरूप अमृतकी सब कोई कामना करते रहते हैं ॥ ७४ ॥ सो आप किसप्रकार दुःखाग्निमें पडे रहते हैं ? हे स्वामिन् ! ऐसी चिन्ताको मनमें रखना आपको शोभा नहीं देता है ॥ ७५ ॥ हे वीर ! जो कुछ आपके अन्तःकरणमें हो पुत्र मंत्री आदिका यदि कोई अपराध हो तौ आप क्षमा कीजिये ॥७६॥ माताके गर्वसे उत्पन्न हुआ बालक दुर्धर पदाघातको करता है तौ माता उसके ऊपर क्या विकार करती

नागायक्षपिशाचाश्चसुपर्णोरगचारणाः॥गंधर्वानरररक्षांसिसुरासुरमृगाःखगाः ॥७३॥ सद्गुणग्रामपीयूषपयोधिप्लाविताःसदा ॥ त्वत्प्रसादसुधासिंधुमाकांक्षंतिनिरंतरम् ॥७४॥ सभवान्कथमत्युग्रंचिताज्वलनमुद्धतम् ॥ हृदिधारयतेसाधोनैतत्त्वय्युपपद्यते॥७५॥ यदिकिंचिन्मयावीरभवांतःप्रकृतंभवेत्॥तनूजैःसचिवैर्वापिक्षमस्वत्वंमहीपते ॥७६ ॥ मातुर्जठरजोबालःपदाघातंसुदुर्धरम् ॥ करोत्यपिममाधारकिमितिविक्रियांभजेत्॥७७॥ततःक्षमस्वभूपालअपराधशतानिचेत् ॥ शरच्छीतांशुसंदोहशोभनंवदनंतव ॥ ७८ ॥ कथंनराजतेभूपहेमंतेकमलंयथा ॥ प्रसन्ननयनापांगालोकनानंदनिर्वृता ॥ ७९ ॥ साहंकथंनिरानंदेत्वयिस्यांहृदयेश्वर ॥ आपीयकर्णरस्यानिमहिलावचनान्यपि ॥ ८० ॥ तथैवास्तेसभूपालोनकिंचिदभिजल्पसे ॥ स्मरञ्छुकवचस्तप्यंदुर्विज्ञेयंसुरासुरैः ॥ ८१ ॥

है ? ॥ ७७ ॥ हे राजन् ! इसीप्रकार आपको सौ अपराध क्षमा करने चाहियें आपके मुखकमल शरदके चन्द्रमाकी समान मनोहर है ॥ ७८ ॥ हे महाराज ! हेमन्तकालीन कमलकी समान वह शोभित नहीं होता है आपके नेत्रोंकी दृष्टिसे सब लोक प्रसन्न होजाते हैं ॥ ७९ ॥ हे जनेश्वर ! सो आपके होते मैं कैसे निरानंदताको प्राप्त होती हूं ? इसप्रकार अमृतकी समान अपनी भार्याके वचन श्रवणकर ॥ ८० ॥ वह राजा वैसेही

स्थित रहा और कुछभी न बोला और देवता असुरोंकोभी दुर्विज्ञेय शुकके वचन स्मरण करता रहा ॥ ८१ ॥ और पतिव्रतमें परायण अपनी भार्यासे कुछ न बोला वहभी भर्ताके दुःखसे दुःखी हो गरम श्वास ले ॥ ८२ ॥ राजाके चिन्ता करनेके कारणको न जानसकी, इसप्रकार राजाको कितना एक समय बीतगया ॥८३॥ और संसारसागरसे पार होनेको बहुत कालतक विचार करनेलगा ॥ ८४ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये दृढधन्वोपाख्याने भाषाटीकायां शुकवाक्यं नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ सूतजी बोले ॥ एक समय वह

नकिंचनोवाचप्रियांपातिव्रत्यपरायणाम् ॥ वाग्मिनीसापिनिःश्वस्यभर्तृदुःखातिपीडिता ॥८२॥ नबुबोधधरानाथचिंताकारणमद्भुतम् ॥ एवमेवकियान्कालः प्रवव्राजमहीपतेः ॥ ८३॥ संदेहसागरोत्तारहेतुंचिंतयतश्चिरम् ॥८४॥ इति श्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्ये दृढधन्वोपाख्याने शुकवाक्यंनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ छ ॥ सूतउवाच ॥ कदाचिच्चिन्तयानस्यराज्ञःशोकातुरस्यच ॥ आजगामप्रसन्नात्मावाल्मीकिर्भगवान्विभुः॥१॥योरामचरितंदिव्यंचकारपरमाद्भुतम् ॥ यस्यश्रवणमात्रेणब्रह्महापिविमुच्यते॥ २॥ नृपतिस्तमथालोक्यमित्रावरुणनंदनम् ॥ अतिसंहृष्टवदनःस्वात्मानंबह्वमन्यत ॥ ३ ॥ अभ्यर्णवर्त्तिनांनारीमुवाचगुणसुंदरीम्॥बाले ममाद्यदुःखानामन्तःप्राप्तोहरीच्छया ॥ ४ ॥

गुणोंसे श्रेष्ठ राजा विचार करतेथे इसी समय भगवान् प्रभु वाल्मीकिजी आये ॥ १ ॥ जिन्होंने परम श्रेष्ठ रामचरित वर्णन कियाहै जिसके श्रवणमात्रसे ब्रह्महत्या छूट जातीहै ॥ २ ॥ उन उदार मित्रावरुणको राजा देखकर बहुत प्रसन्न हो अपने आपको कृतार्थ मानता हुआ ॥ ३ ॥ और अपने निकट वर्तमान स्त्रीसे इसप्रकार कहने लगा; हे बाले ! आज मेरे दुःखोंका अन्त प्राप्त हुआहै ॥ ४ ॥

यह वाल्मीकिही नहीं साक्षात् स्वयं नारायणही हैं साधु सब प्राणियोंमें दयायुक्त दीनवत्सल होतेहैं ॥५॥ यह साक्षात् रामके परम प्रिय मुनि हैं. हे शुभे! द्विजातियोंमें इनके समान कोई दूसरा नहीं है॥६॥जिसने रामायण बनाकर त्रिलोकीको पवित्र कियाहै. हे वामोरु! वही यह चले आते हैं इससे अधिक और क्या मेरा भाग्य होगा? ॥७॥ सूतजी बोले॥ इसप्रकार कहता हुआ राजा मुनीश्वरके समीप गया और वह पृथ्वीमंडलका ईश्वर उनके चरणोंमें

नायंवाल्मीकिरायातिकिंतुसाक्षाद्धरिःस्वयम् ॥ सर्वभूतदयायुक्ताःसाधवोदीनवत्सलाः ॥५॥ अयंसाक्षान्महाभागःश्रीरामदयितोमुनिः ॥ नानेनसदृशोलोकेद्विजातिर्विद्यतेशुभे॥६॥कृत्वारामायणंयेनपावितंजगतांत्रयम्॥सोयमायातिवामोरुकिंमेभाग्यमतःपरम्॥ ॥ ७ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ एवंरटन्महीपालःप्रत्युद्गम्यमुनीश्वरम् ॥ पपातचरणोपांतेक्षोणीमंडलनायकः ॥८॥ तमासाद्यमुनिंप्रेम्णावाल्मीकिंजगतांगुरुम्॥ आनंदेनयुतोराजाददौवैपरमासनम्॥९॥मधुपर्कविधानेनसंपूज्यमुनिपुंगवम् ॥ धेनुंनिवेद्यातिथयेविश्राम्यमुनिभूषणम्॥१०॥पादावंकगतौकृत्वाकराभ्यांप्रामृजन्नृपः॥ पादावनेजनीरापःशिरसातिमुदावहन्॥ ११॥उवाचस्निग्धयावाचास्मरन्कुकवचोहृदि ॥ हार्दचिंतःतमाकाक्षन्मानयन्मुनिपुंगवम् ॥ १२ ॥

गिर गया ॥ ८ ॥ जगतके गुरु वाल्मीकिजीको प्रेमसे मिलकर राजाने परमानन्दको प्राप्त हो उनके निमित्त आसन दिया ॥ ९ ॥ और मधुपर्कके विधानसे मुनिश्रेष्ठका पूजन किया अतिथिसत्कारके निमित्त धेनु निवेदन कर विश्राम करनेको कहा ॥ १० ॥ और राजा अपने हाथसे उनके चरण दाबने लगा और उनके चरणोंका जल अपने शिरपर धारण किया ॥ ११ ॥ और हृदयमें तोतेके वचन स्मरण कर

राजाने कहा और अपने हृदयकी चिन्ता इसप्रकार उन मुनिश्रेष्ठसे सुनाने लगा ॥ १२ ॥ राजा बोले ॥ हे मुनीश्वर ! मैं कृतकृत्य और भाग्यवान् हूं
आज मेरी सब क्रिया और जन्म आपके दर्शनसे सफल हुआहै ॥ १३ ॥ हे विभो ! आज आपके चरणदर्शनसे मेरा ज्ञान सफलहै ॥ १४ ॥ हे
द्विजश्रेष्ठ ! मैं कृतार्थ हूं जो आप मेरे दृष्टिगोचर हैं इससे मेरा श्रुत शास्त्र सफल हुआहै ॥ १५ ॥ यह विचार करकेभी मैं नहीं जान सक
ताहूं कि किस पुण्यसे आपका दर्शन हुआहै जो त्रिलोकीके ताप दूर करनेवाले आप हमारे नेत्रगोचर हुएहो ॥ १६ ॥ आज हमारे पितर

राजोवाच ॥ भगवन्कृतकृत्योऽहंसभाग्योऽस्मिद्विजेश्वर ॥ अद्यमेसफलंजन्मअद्यमेसफलाःक्रियाः ॥ १३ ॥ अद्यमेसफलंज्ञानं
विभोत्वत्पाददर्शनात् ॥ १४ ॥ कृतार्थोहंकृतार्थोहंकृतार्थोऽहंद्विजेश्वर ॥ श्रुतंमेसफलंजातंयद्भवानक्षिगोचरः ॥ १५ ॥ विमृश
न्नानुपश्यामिकेनपुण्येननोभवान् ॥ त्रैलोक्यतापसंहारयन्नेत्रविषयीकृतः ॥ १६ ॥ अद्यमेपितरस्तृप्ताःसेंद्रालोकेप्रतिष्ठिताः ॥ स्थूल
सूक्ष्मात्मकोदेवोविष्णुस्तुष्टोमहेश्वरः ॥ १७ ॥ किमुवर्ण्यंमहद्भाग्यंजगत्पावनपावन ॥ दृश्यतेमत्सभासंस्थोवाल्मीकिःसुरदु
र्लभः ॥ १८ ॥ अहोस्वप्नःकिमथवामायावामनसोभ्रमः ॥ अलभ्यमपिलोकेशैःपश्याम्यद्यसमक्षतः ॥ १९ ॥ त्वत्समागमतो
ब्रह्मन्किमलभ्यंममाधुना ॥ यत्त्वयाजगतांनाथस्त्रैलोक्यपावनोहरिः ॥ २० ॥

इन्द्रादि देवताओंसहित प्रतिष्ठित हुए आज स्थूलसूक्ष्मात्मक विष्णु महेश्वर सन्तुष्ट हुए ॥ १७ ॥ मैं अपने जगत्के पवित्र करनेवाले
भाग्यका क्या वर्णन करूं जो सभाके बीचमें सुरदुर्लभ वाल्मीकिजीका दर्शन करताहूं ॥ १८ ॥ क्या यह स्वप्न माया वा मनका भ्रम है जो
इन्द्रादिको अलभ्य देव मेरे नेत्रगोचर हुएहैं ॥ १९ ॥ हे भगवन् ! आपके दर्शनसे मुझको क्या अलभ्य है जो कि आपने त्रिलोकीके पवित्र करने

वाले नारायणका इस प्रकार निरूपण किया है ॥ २० ॥ कि ऐसा और कोई निरूपण नहीं कर सकता तुम्हारे मुखसे निकले हुए हरिकथारूपी अमृतके पान करनेसे ॥ २१ ॥ मनुष्य मुखसे संसारसागरके पार होजाते हैं; सूतजी बोले ॥ इस प्रकार राजा मुनिसे कह नमस्कार कर मौन हुआ. पुत्र त्रिम मंत्रिजनभी इसी प्रकार मुदित हुए ॥ २२ ॥ इस प्रकार वाल्मीकि राजाको प्रसन्न और विस्मययुक्त देख कर उनके वचना मृतसे तृप्त होकर बोले ॥ २३ ॥ वाल्मीकिजी बोले हे राजन् ! तुम धन्य हो यह भक्ति तुममें ही हो सकतीहै, हे राजन् रामके भक्तजन सदा

तथानिरूपितोरामोयथानान्येनकेनचित् ॥ पिबतस्त्वन्मुखांभोजाच्च्युतंहरिकथामृतम् ॥ २१ ॥ मुच्यंतेभवपाशेभ्यःसुखेनै दाजिताजनाः ॥ सूतउवाच ॥ ॥ विररामभुनिंनत्वास्तुत्वानृपतिनंदनः ॥ सपुत्रःस्वजनामात्यःसपत्नीकःसबांधवः ॥ २२ ॥ वाल्मीकिरथतंदृष्ट्वाराजानंविस्मयान्वितम् ॥ उवाचपरमप्रीतःपीत्वातद्वचनामृतम् ॥ २३ ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ साधुसाधुनृप श्रेष्ठत्वय्येवउपपद्यते ॥ रामभक्ताःसदाराजन्परोपकृतयेनराः ॥ २४ ॥ धन्योस्मिनृपशार्दूलवदयत्तेमनोगतम् ॥ अदेयमपिदा स्यामिनादेयंविद्यतेतव ॥ २५ ॥ त्वद्विधागुणिनोराजन्वरार्हानेतरेनृप ॥ किंचिद्वक्तुंस्पृहातेऽस्तिज्ञातमद्येंगितैस्तव ॥ २६ ॥ राजोवाच ॥ ॥ त्वत्प्रसादान्मुनेकिंचिन्न्यूनंनास्तिममाधुना ॥ यदहंवसुधापीठेकामयेसुखकारणम् ॥ २७ ॥

परोपकारके निमित्त होते हैं ॥ २४ ॥ हे राजन् ! तुम्हारी वार्तासे मैं धन्य हूं जो आपके मनोगत हो उसको कहिये जो अदेय वस्तु होगी उसेभी देसकताहूं मुझे कोई वस्तु आपको अदेय नहीं है ॥ २५ ॥ हे राजन् आपसरीखे राजा ही श्रेष्ठ हैं दूसरे नहीं जो कुछ तुम्हारे पूछनेकी इच्छा हो सो कहो मैं कहूंगा ॥ २६ ॥ राजाने कहा, हे ब्रह्मन् ! आपके प्रसादसे मुझे किसी प्रकारकी न्यूनता नहीं है वसुधाके पीठपर अर्थात् सिंहासनपर

स्थित हो सुखके कारणकी कामना करतेही पूर्ण होता है ॥ २७ ॥ आपके चरणोंकी कृपा मेरे ऊपर पूर्ण है हे विद्वन् ! तथापि मेरे हृदयमें संदेह है ॥ २८ ॥ इसके दूर करनेको आपके सिवाय कोई दूसरा नहीं है हे ब्रह्मन् ! सो आप मेरे हृदयका संदेह दूर कीजिये जो चिरकालसे मेरे मनमें शल्यके समान स्थित होरहा है ॥ २९ ॥ हे राजेंद्र ! आप शीघ्र कहिये ऐसा कहनेपर राजाने कहा । राजा बोला ॥ हे ब्रह्मन् ! मैं राज्य करता हूं और कोई इसतरह न करसकै ॥ ३० ॥ मैं जहांतक देखता हूं वहांतक सुखका पार नहीं देखता हूं पुत्र पत्नी प्रजा भृत्य बांधव स्वजन ॥ ३१ ॥ हाथी घोडे

तत्त्वदीयपदांभोजकृपयाचास्तिमेऽखिलम् ॥ परंतुहृदयेविद्वन्संदेहोविद्यतेमम ॥ २८ ॥ तस्यपारप्रदस्त्वत्तोनान्यस्त्रिभुवनेष्वपि ॥ तत्पराणुदमेब्रह्मन्मनःशल्यंचिरार्पितम् ॥ २९ ॥ सत्वरंवदराजेंद्रेत्युक्तोभूपोप्युवाचह ॥ राजोवाच ॥ ब्रह्मन्राज्यंकरोम्यद्यकथं नान्यःकरिष्यति ॥ ३० ॥ सुखानामपिनोपारंपश्यामिप्रविलोकयन् ॥ पुत्राःपत्न्यःप्रजाभृत्याबांधवाःस्वजनाममम ॥ ३१ ॥ हया नागारथाधान्यंधनंकोशोबलंसुहृत् ॥ मित्राणिमेदिनीसर्वाशरीरंचासनानिच ॥ ३२ ॥ सर्वमेतच्छुतंतेस्तियथानान्यत्रविद्यते ॥ नापे क्षामानुषेलोकेत्रिदिवेपिमुनीश्वर ॥ ३३ ॥ केनपुण्यप्रभावेणलब्धमैश्वर्यमद्भुतम् ॥ स्पृहणीयंसुरेशाद्यैरपिकिंमानवैर्मुने ॥ ३४ ॥ काशीकोशलकर्णाटकांबोजकुरुकैकयान् ॥ मत्स्यमागधगांधारगौडसैंद्रेन्द्रसैन्धवान् ॥ ३५ ॥

रथ धान्य धन कोश बल अधिक मित्र मेदिनी शरीर आसन ॥ ३२ ॥ वह मैंने सब कुछ प्राप्त किया है जो और स्थानमें नहीं है हे मुनीश्वर ! मुझे त्रिलोकीमें किसीप्रकारकी अपेक्षा नहीं है ॥ ३३ ॥ केवल यही पूछताहूं कि मैं किस पुण्यके प्रतापसे इस अद्भुत ऐश्वर्यको प्राप्त हुआहूं यह ऐश्वर्य इन्द्रादिकोंकोभी दुर्लभ है मनुष्योंकी कौन कहै ॥ ३४ ॥ काशी कोशल कर्णाटक काम्बोज कुरु केकय मत्स्य मगध गांधार गौड सैंद्र इन्द्र सैंधव ॥ ३५ ॥

कलिंग वंग पाण्ड्य अनंग कैकट केरल दशार्ण नीच चैलेय लाटक मरु धीवर ॥ ३६ ॥ काश्मीर मरुपांचाल मरुमालव कैकय सौराष्ट्र जांगल आनर्त हूण हैहय जनक ॥ ३७ ॥ त्रिगर्त हय पांचाल पाटच्चर कुठच्चर पण्यपश्नीक लम्बोष्ठ दरद आभीर भैरव ॥ ३८ ॥ हयवर्त करीनास कर्ण प्रावरण औरभी देश तथा चित्र योधा राजाभी महायुद्ध करनेवाले हैं ॥ ३९ ॥ हे महामुने ! वह सब लीलाहीसे मुझे भेटें देते हैं और प्रतापसे अनेक प्रकारके धन धान्य भेट करते हैं ॥ ४० ॥ हे राजन् ! हमारे पुत्रोंने इनको वेश्याकी समान करदाता बना दियाहै हे ब्रह्मन् ! इसमें क्या कारणहै

कलिंगवंगपांड्यांश्चानंगकैकटकेरलान् ॥ दशार्णनीचचैलेयाँल्लाटकान्मरुधीवरान् ॥३६॥ काश्मीरमरुपांचालमरुमालवकैकयान् ॥ सौराष्ट्रजांगलानर्त्तहूणहैहयजानकान् ॥३७॥ त्रिगर्तहयपांचालपाटच्चरकुटच्चरान् ॥ पण्यपश्रीकलंबोष्ठदरदाभीरभैरवान् ॥३८॥ हयवर्तान्करीनासान्कर्णप्रावरणानपि ॥ अन्यानपिचदेशान्मेतन्नृपाश्चातियोधिनः ॥ ३९ ॥ लीलयाबलिमादायनत्वायांतिमहामुने ॥ प्रतापादेवराजन्याधान्यंयच्छंतिसत्वराः ॥४०॥ कृतामेतनयैर्वीरैर्वेश्याइवकरप्रदाः ॥ किमत्रकारणंब्रह्मंस्तपोदुःखिदयाथवा ॥४१॥ अन्यत्त्वहृदयाद्यन्मेह्यनिशंनापसर्प्पति ॥ शृणुतन्मेमुनिश्रेष्ठसंदेहंमेपराणुद ॥४२॥ कदाचिन्मृगयाकामोगतोहंगहनंवनम् ॥ चरित्वासुचिरंप्राप्तोदुश्चरंगहनंवनम् ॥ ४३ ॥ श्रमन्नपश्यन्कासारंतत्रपीतंजलंमया ॥ श्रमापनोदमाकांक्षंस्तीरेन्यग्रोधमाश्रितः ॥ ४४ ॥

सो आप हमसे कहिये ॥ ४१ ॥ हे भगवन् ! इसी विचारमें मेरा मन रहताहै दूसरे स्थानमें नहीं जाता हे मुनिराज ! इस मेरे चरित्रको श्रवण करे आप मेरा सन्देह दूर कीजिये ॥ ४२ ॥ मैं एकसमय वनमें मृगयाको गयाथा वहां बहुत कालतक वनमें विचरता रहा ॥ ४३ ॥ वहां वनमें भ्रमण करते मुझको एक सरोवर मिला वहां जलपान कर उसके किनारे न्यग्रोधका वृक्ष था उसके नीचे श्रम दूर करनेको मैं बैठ गया ॥ ४४ ॥

जिसकी सुन्दर छाया नन्दनवनकी समान मनको आनन्द देनेवालीथी वहां मैंने परम मनोहर एक शुकको अवलोकन किया ॥ ४५ ॥ बडा मधुर भाषण करता था उसको देखकर मेरा मन बडा प्रसन्न हुआ जबतक मेरे चित्तकी वृत्ति उस पक्षीमें पडे तबतक वह शुक मधुर वाणीसे मुझसे बोला अर्थात् उसने एक श्लोक पढा ॥ ४६ ॥ बारंबार वह पक्षी उस श्लोकको पाठ करने लगा मेरे अतीव सुखकी विद्यमानतामें उसने उपदेश किया ऐसा सुख देखकरभी ॥ ४७ ॥ जो विचार नहीं करता वह मूढ किसप्रकारसे पार होगा यह बात श्रवणकर मैं बडा विस्मित हुआ ॥ ४८ ॥

सुच्छायंसुंदरतरंमनोनयननंदनम् ॥ अपश्यंदर्शनीयांगंशुकमेकंमनोहरम् ॥४५॥ मधुराभाषिणंविप्रंदृष्ट्वामेहर्षितंमनः ॥ चेतोवृत्तिर्यतस्तस्मिन्यावन्ममपतत्रिणि ॥ तावन्मांसम्मुखोभूत्वाश्लोकमेकंपपाठह ॥४६॥ पुनःपुनस्तदेवासौपद्यंपठतिपक्षिराट् ॥ विद्यमानातुलंसौख्यमालोक्यातीतमात्मनः ॥ ४७ ॥ नचिंतयतिसंमूढस्तत्कथंपारमेष्यति ॥ इतिवाचंशुकेनोक्तामाकर्ण्याहंसुविस्मितः ॥ ४८ ॥ समुत्थितस्ततःशीघ्रंकीरराड्गगनंगतः ॥ नतज्जानाम्यहंब्रह्मन्किमुवाचहरिच्छदः ॥ ४९ ॥ कोसौशुकःकिमाहायंमह्यंवैभावयन्मुने ॥ इमंमेहार्दसंदेहंभवानुच्छेत्तुमर्हति ॥ ५० ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येदृढधन्वोपाख्यानेदृढधन्ववृत्तांतकथनंनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ सूतउवाच ॥ श्रुत्वावाक्यानिभूपस्यवाल्मीकिर्मुनिसत्तमः ॥ प्राणायामपरोभूत्वामुहूर्त्तंध्यानमाश्रितः ॥ १ ॥

इसप्रकार वह पक्षिराट् कहकर आकाशको चला गया हे ब्रह्मन् ! यह मैं नहीं जानताहूं कि, पक्षिराजने क्या कहा ॥ ४९ ॥ वह शुक कौन था क्या उसने मुझे उपदेश किया मेरे इस हृदयके संदेह दूर करनेको आपही योग्य हो ॥ ५० ॥ इतिश्रीप० पुरुषोत्तममा० दृढधन्वोपाख्याने भाषाटीकायां दृढधन्ववृत्तान्तकथनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ मुनिश्रेष्ठ वाल्मीकिजी राजाके वचन श्रवण कर प्राणायाम करके एक मुहूर्तभर तक

ध्यानमें स्थित हुये ॥ १ ॥ भूत भविष्य वर्तमान उनको हाथमें आमलेकी समान वर्तमानथा इसीकारण मुनिश्रेष्ठने मनमें ध्यान किया ॥ २ ॥ फिर हँसकर मुनिराजने राजासे कहा और विस्मयको प्राप्त होकर बारंबार शिर कंपित करने लगे ॥ ३ ॥ वाल्मीकिजी बोले ॥ हे राजन् ! अपना पहले जन्मका चरित्र श्रवण कीजिये हे राजन् ! जिस पुण्यके प्रतापसे आपको यह परम ऐश्वर्य प्राप्त हुआ है ॥ ४ ॥ हे राजेन्द्र ! पहले जन्ममें तुम द्रविडदेशमें ताम्रपर्णी नदीके किनारे सुदेव नामसे विख्यात विप्र थे ॥ ५ ॥ आश्वलायनप्रोक्त कर्ममें तत्पर सदाचारमें परायण धर्मात्मा सत्यवादी यथाला

करामलकवद्विश्वंभूतंभव्यंभवच्चयत् ॥ व्यालोक्यसमुनिश्रेष्ठोध्यानस्तिमितमानसः ॥२॥ ततोविहस्यभगवान्राजानंमुनिरूचिवान् ॥ विस्मितःशुभयावाचाशिरोधुन्वन्पुनःपुनः ॥३॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ शृणुभूपतिशार्दूलप्राग्जन्मचरितंतव ॥ येनपुण्येनभगवांस्त्वय्यै श्वर्यंसमर्पयत् ॥ ४ ॥ पुराजन्मनिराजेंद्रभवान्द्रविडदेशजः ॥ द्विजःकश्चित्सुदेवाख्यस्ताम्रपर्णीतटेवसन् ॥ ५ ॥ आश्वलायनसंभूतः सदाचारपरायणः ॥ धार्मिकःसत्यवादीचयथालाभेनतुष्टिमान् ॥६॥ स्वाध्यायव्रतसंपन्नःसदाविष्णुपरोऽभवत् ॥ तस्यैवंवर्तमानस्य भार्यासीद्वरवर्णिनी ॥ ७ ॥ गौतमीतिसुविख्यातासद्वंशजननीशुभा ॥ पतिपर्यचरत्प्रेम्णाशीतांशुंरोहिणीयथा ॥ ८ ॥ तस्यैवंगृहमेधे चवर्त्तमानस्यधर्मतः ॥ व्यतीतःसुमहान्कालःप्रापनासौसुसंततिम् ॥ ९ ॥

भसेही संतुष्ट होनेवाले ॥ ६ ॥ वेदपाठके व्रतमें सम्पन्न सदा विष्णुके भजनमें तत्परथे उनकी परम श्रेष्ठ भार्या वर्तमानथी ॥ ७ ॥ वह गौतमी नामक श्रेष्ठ वंशमें उत्पन्नथी और प्रेमसे पतिव्रत धर्म पालन करतीथी जैसे रोहिणी चन्द्रमाकी परिचर्या करतीहै ॥ ८ ॥ उसके साथ यथायोग्य गृहस्थ धर्ममें वर्तमान होकर उसको बहुत समय बीतगया तथापि कोई सन्तति न हुई ॥ ९ ॥

एक समय वह अपनी स्त्रीसे सेवित हो स्थितथा और वह शोकसे गद्गद कंठ होकर कहनेलगा ॥ १० ॥ हे सुन्दरी ! संसारमें पुत्रप्राप्तिकी बराबर
सुख नहीं है उस पुत्रकी प्राप्तिके विना मेरा जीवन निष्फल है ॥ ११ ॥ यदि मेरे पुत्र न हो जो श्रेष्ठ और मान देनेवालाहै तौ मेरी मृत्यु होनाही
श्रेष्ठ है मुझको अपुत्र रहना अभीष्ट नहींहै ॥ १२ ॥ इसप्रकार वह प्रियभाषी बडे खेदसे अपनी स्त्रीको देखकर दुःखी हुआ तब वह प्रियवादिनी अपने
स्वामीको समझाती हुई वचन बोलनेमें चतुर श्रेष्ठ वचन कहने लगी ॥१३॥ गौतमी बोली ॥ हे द्विजराज ! इसप्रकारके वचन आप मत कहिये आप

एकदाससमासीनःसेव्यमानःस्वकांतया॥जगादवचनंविप्रःशोकेनगद्गदाक्षरम् ॥ १० ॥ अयिसुंदरिसंसारेनास्तिसौख्यंसुतात्परम् ॥
तमप्राप्यवरंपुत्रंजीवितंममनिष्फलम्॥ ११॥नलभेयंसदृक्षंचेत्सुतंमानिनिमानदम्॥ सद्योमेमृतिरेवास्तुनहिपुण्यंप्रियंमम॥१२॥अति
खेदसमाविष्टंप्रियंवीक्ष्यप्रियंवदा ॥ आश्वासयत्स्वभर्त्तारंवाक्यैर्वाक्यविशारदा ॥१३॥ गौतम्युवाच॥मैवंविधानिवाक्यानिब्रूहिवल्ल
भभूसुर॥भवद्विधाभागवतानैवंमुह्यंतिसूरयः॥१४॥सत्यधर्मपरोऽसित्वंजितःस्वर्गस्त्वयाविभो॥ साधुचारित्रसाहस्रैःकिंतुपुत्रैःकरिष्य
सि॥१५॥यदिनारायणःपुत्रंनदास्यतिहरिप्रिय॥कथंपुत्रैःसुखावाप्तिर्भवित्रीतवसुव्रत॥१६॥ चिंतनंरघुनाथस्यहरिपादार्चनंविभो ॥
सुखंदास्यतिविप्रेंद्रनतुपुत्रःकथंचन ॥ १७ ॥ यदिपुत्रजसौख्येतुकामनास्तिदृढातव ॥ कथंनदेवदेवेशमाराधयसिकेशवम् ॥ १८ ॥

सरीखे भक्त विद्वान् इसप्रकारसे शोच नहीं करतेहैं ॥ १४ ॥ आपने सत्य धर्ममें तत्पर होनेके कारण स्वर्ग जीत लिया है आपके चरित्रही बडे
पवित्र हैं आप पुत्रोंसे क्या करोगे ॥ १५ ॥ यदि नारायणकी इच्छा पुत्र देनेकी न हो तो पुत्र और सुखादिकी प्राप्ति किसप्रकार होसकतीहै ॥ १६ ॥
रामका चिन्तना करना और हरिके चरणोंका पूजन करनाही सुखका देनेवाला है न कि पुत्र ॥ १७ ॥ और यदि आपकी कामना पुत्रकेही सुखमें

है तौ फिर आप देवदेवेश केशवकी आराधना क्यों नहीं करतेहो ॥ १८ ॥ हे ब्रह्मन् ! पूर्वकालमें जिनकी आराधना कर कर्दमको सुखकी प्राप्ति हुई उन सर्व सुखके निधानको प्राप्त हो पीछे हरिपदको प्राप्त हुए ॥ १९ ॥ सर्वेश्वर हरि जगत्के नाथकी सेवा करो जिनकी किंचित् कृपासे प्राणी उभयलोकमें प्रसन्न होता है ॥ २० ॥ ब्राह्मणश्रेष्ठ अपनी स्त्रीके यह वचन श्रवणकर उसके साथ निश्चयकर ताम्रपर्णी नदीके किनारे गया ॥ २१ ॥ और एकान्तमें स्थित होकर परम दुष्कर तप करनेलगा चार सहस्र वर्षतक तप किया जिससे देवता कंपित होगये ॥ २२ ॥ जगन्नाथ हृषीकेश

यमाराध्यपुराब्रह्मन्कर्दमःसुखमाप्तवान् ॥ सर्वसौख्यनिधिंप्राप्यपश्चाद्धरिपदंगतः ॥१९॥ सेवस्वजगतांनाथंहरिंसर्वेश्वरंविभुम् ॥ यत्कृपापांगलेशेनइहामुत्रचमोदते ॥ २० ॥ इतिवाक्यानिरामायाःश्रुत्वाविप्रशिखामणिः ॥ निश्चित्यैवंतयासार्द्धंताम्रपर्णीतटं गतः ॥ २१ ॥ चचारविजनेतस्मिंस्तपःपरमदुष्करम् ॥ चतुर्वत्सरसाहस्रंयेनदेवाश्चकंपिरे ॥ २२ ॥ सभाजयञ्जगन्नाथंहृषीकेशं जगद्गुरुम् ॥ विष्णुःसर्वेश्वरोदेवश्चिरात्तुष्टःसमागमत् ॥ २३ ॥ दृष्ट्वातंकमलाकांतंसुपर्णोपरिशोभितम् ॥ तुष्टावपरयाभक्त्यास पत्नीकःप्रहर्षितः ॥ २४ ॥ सुदेव उवाच ॥ नमस्तेजगतांनाथत्रैलोक्याभयदप्रभो ॥ सर्वेश्वरनमस्तेस्तुत्वामहंशरणंगतः ॥ २५ ॥ पाहिमांपरमेशानशरणागतवत्सल ॥ जगद्वंद्यनमस्तेऽस्तुनमस्तेपुरुषोत्तम ॥ २६ ॥

जगद्गुरुको ध्यान करते रहे सर्वेश्वर देव विष्णु बहुत कालमें सन्तुष्ट हुए और उनके समीप आये ॥ २३ ॥ उन कमलाकान्तको गरुडजीके ऊपर स्थित देखकर वह स्त्रीके सहित उनको परम भक्तिसे संतुष्ट करनेलगे॥ २४ ॥ सुदेव बोला ॥ गरुडके ऊपर स्थित कमलाकान्तको नमस्कार है जगत्पति त्रिलोकीके अभय देनेवाले सर्वेश्वर आपको नस्कार है मैं आपकी शरणमें प्राप्त हुआहूं ॥ २५ ॥ हे परमेशान ! शरणागतवत्सल आप मेरी रक्षा

कीजिये. हे जगद्वन्द्य पुरुषोत्तम ! आपके निमित्त नमस्कार है ॥ २६ ॥ जैसे दूसरे देवताओंके भक्त अज्ञानसंकटमें दुःख पाते हैं इसप्रकार आपके भक्त दुःखी नहीं होते हे पुरुषोत्तम देव ! आपको नमस्कार है ॥ २७ ॥ हे महाराज ! जैसे आपने देवकीको कंसके संकटसे छुडाया है इसीप्रकार घोर दुःखसे मेरी रक्षा करो ॥ २८ ॥ जिसप्रकार यज्ञसेनसुता द्रौपदी दुर्योधनके वशीभूत हुई विलाप करती हुईकी आपने रक्षा की थी ऐसे मेरी रक्षा करो ॥ २९ ॥ हे प्रभो ! जब कि आपने जरासंधके वशीभूत राजाओंको महासंकटसे छुडाया तौ आप हमारी रक्षा क्यों नहीं करतेहो ॥ ३० ॥ हे

यथान्यसुरभक्तस्तुक्लिश्यत्यज्ञानसंकटे ॥ नतथाभवदीयायेतेनत्वंपुरुषोत्तमः ॥ २७ ॥ यथावितामहाराजदेवकीकंससंकटात् ॥ तथैवरक्षमांस्वामिन्घोरदुष्पारसागरात् ॥ २८ ॥ यज्ञसेनसुतादुष्टदुर्योधनवशंगता ॥ लालप्यमानाऽविरतंत्वयैवपरिरक्षिता ॥ २९ ॥ दुष्टमागधभूपालसंरोधपरिकर्षिताः ॥ राजन्यारक्षिताविष्णोनमांकिमिहरक्षसि ॥ ३० ॥ दारुणाजगरग्रस्तानेकाहीरसुतान्विभो ॥ यस्त्वंरक्षितवान्कृष्णसमांपाहिव्रजेश्वर ॥ ३१ ॥ बल्लव्योविरहाक्रांतदेहाःकाननविभ्रमाः ॥ मध्यतांदर्शयित्वातेह्यनल्पसुखपूरिताः ॥ ॥ ३२ ॥ पाहिमांजगदानंदगोविंदशरणागतम् ॥ प्रपन्नभयहेत्येवंव्रतंतेऽस्तिगदाधर ॥ ३३ ॥ जतुगेहेप्रचंडाग्निज्वालाभिःपरिवेष्टिताः ॥ रक्षिताःपांडुतनयास्त्वयैवजगदीश्वर ॥ ३४ ॥

विभो ! महा अजगरसे ग्रसे हुए अहीर पुत्रोंकी जैसे आपने रक्षा कीथी उसीप्रकार आप हमारी रक्षा करो ॥ ३१ ॥ गोपी विरहसे व्याप्तहो वनमें भ्रमण करतीथीं आपने भक्तिसे सन्तुष्टहो उनको दर्शन देकर महासुखसे पूरित किया ॥ ३२ ॥ हे गोविन्द ! मैं शरणमें प्राप्त हुआ हूं आप मेरी रक्षा करो; आप प्रसन्न होकर मुझको अभय दीजिये. हे गदाधर ! यही आपका व्रत है ॥ ३३ ॥ लाक्षागृह जिस समय महा प्रचंडाग्निसे प्रज्वलित

हो रहाथा हे जगदीश्वर ! उस समय आपनेही पाण्डुपुत्रोंकी रक्षा की ॥ ३४ ॥ हे दामोदर ! हमारे आधार भक्तोंके अभय करनेवाले लक्ष्मी कान्त गरुडध्वज ॥ ३५ ॥ चौवीस तत्त्व जीवनके कारणसे वर्जित वासवानुज विश्वेश चक्रपाणि आपके निमित्त नमस्कार है ॥ ३६ ॥ हे ईश्वर ! ब्रह्मादि देवता आपकी स्तुति करनेको समर्थ नहीं हैं मैं मनुष्य अल्पबुद्धि किस प्रकारसे आपकी स्तुति कर सकूं ॥ ३७ ॥ इस प्रकार स्तुति कर वह ब्राह्मण नारायणके आगे स्थित हुआ, तब भगवान् उसके खेदको दूर करते हुए मधुरवाणीसे बोले ॥ ३८ ॥ विष्णु बोले धन्य हो

दामोदरममाधारभक्तानामभयंकर ॥ क्षीरोदतनयाकांतसुपर्णांकितकेतन॥३५॥चतुर्विंशतितत्त्वौघजीवनायविवर्जित ॥ वासवानुज विश्वेशचक्रपाणेनमोस्तुते॥३६॥नत्वांब्रह्मादयोदेवाःस्तोतुंशक्तारमेश्वर ॥ मनुष्योह्यल्पबुद्धिश्चकथंस्तोतुंक्षमोह्यहम्॥३७॥इतिस्तुत्वा द्विजस्तस्थौखिन्नोह्यिपुरतोहरेः ॥ ततोविष्णुर्ब्राह्मणंतंदृष्ट्वाम्लानमुखंपुरः ॥ प्रोवाचस्निग्धयावाचातत्खेदंशमयन्निव ॥ ३८ ॥ श्री विष्णुरुवाच ॥ साधुसाधुद्विजश्रेष्ठकिमिच्छसिवदस्वतत् ॥ यत्तेऽभिलषितंचित्तेदास्यामितवभूसुर ॥ ३९ ॥ सुदेवउवाच ॥ ॥ किम ज्ञातंमहाराजकूटस्थाखिलचित्तज ॥ सर्वेंद्रियनियंतासिसर्वसाक्षीजगत्पतिः ॥ ४० ॥ यदिप्रीतोसिभगवन्मेतद्वक्ष्यामितेग्रतः ॥ अना थनाथनाथोसिशृणुष्वत्वमधोक्षज ॥ ४१ ॥ प्रभोपुत्रैर्विनाशून्यंगार्हस्थ्यंकाननोपमम्॥इहामुत्रसुराधीशनैराश्यंतनयैर्विना ॥ ४२ ॥

ब्राह्मण तुम बडे श्रेष्ठ हो तुम्हारी क्या इच्छा है कहो; हे ब्राह्मणश्रेष्ठ जो तुम्हारी अभिलाषा होगी सो मैं दूंगा ॥ ३९ ॥ सुदेवने कहा हे कूटस्थ सबके हृदयकी जाननेवाले आपको क्या अज्ञात है सम्पूर्णकी इन्द्रियोंके ज्ञाता आप जगत्पति हो ॥ ४० ॥ जो आप प्रसन्न हो तो मैं आपके आगे कहताहूं हे अधोक्षज ! आप अनाथोंके नाथ हो श्रवण कीजिये ॥ ४१ ॥ हे प्रभो ! पुत्रके विना गृहस्थ पन शून्य अर्थात् वनकी समान है. हे सुराधीश !

पुत्रके विना मुझको दोनों लोक शून्य प्रतीत होते हैं ॥ ४२ ॥ इस प्रकार केशव ब्राह्मणके मुखके वचन श्रवणकर अत्यन्त प्रसन्न होकर वचन कहने लगे ॥ ४३ ॥ भगवान् बोले हे विप्र ! शेषजीकी पुच्छसे ले विचित्र भुवनपर्यन्त अनेक सुख हैं उनको मैं तुझे देता हूं ॥ ४४ ॥ परन्तु हे द्विजराज ! पुत्रका सुख तुम्हारे भाग्यमें नहीं है. मुने ! जो भाग्यमें हो वही प्राणीको मिलता है इसमें तपका हेतु है ॥ ४५ ॥ सो पुत्रके विना और जो इच्छा हो सो मांगो पुत्रके शरीरका स्पर्श भाग्यके विना नहीं हो सकता है ॥ ४६ ॥ हे सुव्रत ! इस कारण दूसरी वार्ता कहो वह मैं तुमको प्रदान

इतिविप्रसुखोद्गीतांवाचमाकर्ण्यकेशवः ॥ उवाचवचनंश्रीमान्नतिहृष्टमनाविभुः ॥४३॥ विष्णुरुवाच ॥ शेषलांगूलतोविप्रविचित्र भुवनावधि ॥ संतिसौख्यान्यनेकानितानितेवितराम्यहम् ॥ ४४ ॥ नतुपुत्रसुखंतेस्तिद्विजराजकुलोत्तम ॥ दीयतेभाग्यनिर्दिष्टंत पसाहेतुनामुने ॥ ४५ ॥ अधुनासर्वदातास्मितनुजाभ्यर्थनंविना ॥ पुत्रगात्रपरिष्वंगस्तवभाग्येनविद्यते ॥ ४६ ॥ तस्मादन्यत्स माचक्ष्वतत्तेदास्यामिसुव्रत ॥ अर्जितंवर्षसाहस्रैस्तत्तेपुण्यंददाम्यहम् ॥ ४७ ॥ इत्युक्तोपरतेविष्णौद्विजःपरमदुर्मनाः ॥ पपातसह साभूमौछिन्नमूलइवद्रुमः ॥ ४८ ॥ पतिंपतितमालोक्यरुरोदप्रमदाभृशम् ॥ निराशंपश्यतीनाथंबालाबालस्पृहासती ॥ ४९ ॥ उत्तिष्ठभूसुरश्रेष्ठशृणुष्ववचनानिमे ॥ यद्भाग्यरचितंवस्तुलभेन्नारायणादपि ॥ ५० ॥

करूंगा सहस्रों वर्ष जो तुमने तप किया है उसके पुण्यका फल ग्रहण करो ॥ ४७ ॥ विष्णुके यह वचन कहनेपर ब्राह्मण महादुःखी हुआ और तत्काल पृथ्वीमें जडकटे वृक्षकी समान गिर पडा ॥ ४८ ॥ अपने पतिको गिरा देख उसकी स्त्री अत्यन्त रुदन करने लगी अर्थात् वह अपने पतिको निराश देख महा दुःखी हो बालककी इच्छा किये हुए बोली ॥ ४९ ॥ हे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! उठो और मेरे वचन सुनो; जो भाग्यमेंही रची हुई वस्तु

नारायणसे मिलती है ॥ ५० ॥ और कमलकी समान श्यामवर्ण नारायण अधोक्षजको देखकरभी जो वस्तु प्राप्त नहीं होसकी वह कहांसे मिल सकती है ॥ ५१ ॥ रमानाथ और सुरेश्वर क्या करसकते हैं अथवा कैलासपति शिव वा महेश्वरी क्या करसकती हैं ॥ ५२ ॥ श्रीमान् गणेश तथा लोकपितामह ब्रह्मा अग्नि तथा कोई मुनि क्या करैगा ॥ ५३ ॥ पितृपति वरुण वा अनन्त नाग अथवा गरुडजी क्या कर सकते हैं जब नारायणहीकी इच्छा नहीं तो उसका किया सब व्यर्थ है ॥ ५४ ॥ हे नाथ ! रमाकान्तके वचन श्रवण कीजिये आपसे क्या कहा जाय यदि

यदिचेंदीवरश्यामंनारायणमधोक्षजम् ॥ समक्षीकृत्यनोप्राप्तस्तत्कुतोविंदसेविभो ॥ ५१ ॥किंकरोतिरमानाथःकिंकरोतिसुरेश्वरः ॥ कैलासनिलयःशंभुर्भवानीवामहेश्वरी ॥ ५२ ॥ गनेंद्रवदनःश्रीमान्पितालोकपितामहः ॥ वीतिहोत्रःकिंचकुर्यान्मुनिर्वाकिंकरिष्यति ॥ ५३ ॥ पितृराजोजलेशोवाअनंतोनागराडपि ॥ तस्यव्यर्थंभवेत्सर्वंव्यर्थस्तस्यपरिश्रमः ॥ ५४ ॥ शृणुनाथरमाकांतकिंते वदतिसंगतः ॥ यदितेभाग्यविभ्रंशःकुतोदद्यात्तुपुत्रकम् ॥ ५५ ॥ अस्मद्भाग्यविनाशेनहरिदर्शनजंफलम् ॥ इहदुःखायचोत्पन्नमसुत्रसुखदंविभो ॥ ५६ ॥ क्रतुदानतपःसत्यव्रतेभ्योहरिसेवनम् ॥ वरंनाद्यापिपश्यामिभाग्यंतस्माद्बलाधिकम् ॥ ५७ ॥ श्रुत्वावचांसिब्राह्मण्याःशोकवेगाकुलानिच ॥ अत्यंतक्षोभसंजातवेपथुर्विनतात्मजः ॥ ५८ ॥

आपका भाग्यही नष्ट है तौ आपके पुत्र कहांसे प्राप्त होगा ॥ ५५ ॥ हमारे भाग्य नष्ट होनेके कारणसेही नारायणके दर्शनका पुण्यफल हमारे दुःखके निमित्तही प्राप्त हुआ ॥ ५६ ॥ यज्ञ दान तप सत्य व्रतोंसे नारायणका सेवन करनाभी विना भाग्यके नहीं होसकता इस कारण भाग्यही अधिक बलवान् है ॥ ५७ ॥ इस प्रकार शोकवेगसे युक्त ब्राह्मणीके वचन सुनकर विनतापुत्र गरुड अत्यन्त क्षोभको प्राप्तहो कंपित

होनेलगा ॥ ५८ ॥ और शोकसे पीडितहो भगवान्से बोले कारण कि ब्राह्मणकी पीडा देखकर उनके नेत्रोंसे जल बह रहाथा ॥ ५९ ॥ गरुडजी बोले; हे भगवन् ! हमको बड़ा आश्चर्य है कि इस समय आपकी ब्रह्मवत्सलता क्या हुई जो इस दीन तपस्वीको देखकर आपके मनमें व्यथा उत्पन्न नहीं होती ॥६०॥ हे विभो ! जब कि पतितोंको मुक्ति देनेमें आप विचार नहीं करते तो इस ब्राह्मणके ऊपर तुच्छ बातमें दया क्यों नहीं आती ६१ मुक्ति आठसिद्धि सार्वभौम राज्यकी प्राप्तिभी आपके स्मरण करनेवालोंको दुर्लभ नहीं है फिर पुत्रकी इच्छा क्या बडी बातहै ॥६२॥ हे गोविन्द ! इस

पद्मनाभमुवाचेदंब्राह्मणीशोकपीडिता ॥विप्रमालक्ष्यनयनक्षरद्बाष्पकलाकुलम् ॥ ५९ ॥ गरुडउवाज ॥ अहोतेदेवकीसूनोब्रह्मण्य त्वंकुतोगतम् ॥ यदिमंतापसंदीनंदृष्ट्वानालक्ष्यतेव्यथा ॥ ६० ॥ यदिकैवल्यदानेतेनास्तिविष्णोविचारणा ॥ पतितानामपि विभोनहिकिन्तापसेदया॥ ६१ ॥ कैवल्यंसिद्धयोऽप्यष्टौसार्वभौमादिसंचयः ॥ नह्यलभ्यस्तवस्मर्तुःकिंवराकीसुतस्पृहा ॥ ६२ ॥ तदस्मैदेहिगोविंदपुत्रमेकंगुणाधिकम् ॥नदास्यसिहृषीकेशसदोषंतवचार्हणम् ॥ ६३ ॥ त्वदीयानुचराःसर्वेविनष्टाःकीर्तिदूषणात् ॥ मास्तुनःश्रवणेवाक्यमिदंभूमन्कदाचन ॥ ६४ ॥ त्वामाराध्यजनःसर्वंफलंप्राप्नोतिवांछितम् ॥ तत्राप्ययंद्विजवरस्त्वत्पादांबुजसेवकः ॥ ६५ ॥ अदांभिकःकृपाशीलःसाधुसद्गुणभाजनः ॥ ब्राह्मणीचमहाभागात्वयिसंन्यस्तमानसा ॥ ६६ ॥

कारण इसके निमित्त एक गुणी पुत्र दीजिये, यह पापरहित आपकी सदा पूजा करता रहाहै नहीं तो आपकी पूजामें दोष रहेगा ॥ ६३ ॥ कीर्तिदूषणसे आपके अनुचर नष्ट होंगे सो ऐसे वाक्य हमारे श्रवणगोचर कभी न हों ॥६४॥ आपकी आराधना कर सब प्राणी मनोवांछित फलको प्राप्त होतेहैं फिर उसमें तो यह ब्राह्मण आपके चरणोंकी सेवा करताहै॥६५॥तथा पाखण्डरहित कृपाशील साधु सद्गुणका पात्रहै और इसीप्रकार यह ब्राह्मणी आपमें मन

लगायेहै ॥६६॥ हे विश्वेश! इनको देखकर आपके मनमें दया क्यों नहीं उत्पन्न होती? इसके नेत्रोंसे निकला जल जाने क्या करेगा ॥६७॥ यह कानोंको अमृतकी समान गरुडजीके वचन सुनकर गरुडको साश्चर्य कहते हुए ॥६८॥ प्रभु बोले हे गरुडजी जो आपके मनमें स्थितहै वह इस ब्राह्मणको दो, ब्राह्मणको अभीष्ट विना दिये मेरा हृदयभी परितप्तहो रहाहै॥६९॥ क्या करूंगा इसके भाग्यके वशसे मेरे मुखसे निकल गया जो इसका मनचिन्तित दियाजावे

एनामालक्ष्यविश्वेशघृणातेकिंनजायते ॥ एतयोर्नेत्रसंभूतोवारिधिःकिंकरिष्यति ॥ ६७ ॥ श्रुत्वासुपर्णवचनपीयूषंश्रुतिसुप्रियम्॥हरिःप्रसन्नःप्रोवाचवैनतेयंस्मयन्निव ॥ ६८ ॥ नागारेदेहिविप्राययत्तेमनसिवांछितम् ॥ ममापिहृदयंतप्तमदत्त्वाद्विजचिंतितम् ॥ ६९ ॥ किंकरोम्यस्यभाग्येनममवक्त्राद्विनिर्गतम् ॥ ममापिस्यात्प्रियंह्येतद्ददातिचिंतितंभवान् ॥ ७० ॥ इत्याकर्ण्यहरेर्वाक्यंवैनतेयःप्रसन्नधीः ॥ ददौयथेप्सितंकामंविप्रायसुमहात्मने ॥ ७१ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्येसुदेवायवरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ छ ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ क्षोणीपतेततोजातंवृत्तांतं कथयाम्यहम् ॥ सुपर्णः केशवादेशाद्वाक्यमाहद्विजेश्वरम् ॥ १ ॥ गरुडउवाच ॥ द्विजराजानृतंनाहविष्णुःपद्मविलोचनः ॥ भाग्ययोगेनचसुखंभवतीहद्विजोत्तम ॥ २ ॥

तो इसमें मेराभी प्रिय होगा ॥ ७० ॥ यह वचन सुनकर गरुडजीने प्रसन्न होकर उस महात्मा ब्राह्मणके निमित्त पुत्रप्रदान किया ॥ ७१ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये सुदेवाय वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ वाल्मीकिजी बोले; हे राजन्! आपसे मैं वृत्तान्त कहताहूं गरुड़जी भगवानकी आज्ञासे उस ब्राह्मणसे कहने लगे ॥ १ ॥ गरुड़जी बोले; हे ब्राह्मण! कमललोचन विष्णु भगवानने असत्य नहीं कहा; हे द्विज!

भाग्यके योगसेही यहां सुख होताहै ॥ २ ॥ विष्णुके वाक्य अनादरकर मैं तुमको पुत्र नहीं देताहूं. हे पापरहित ! जो मेरा स्पर्श करताहै वह सर्वथा अभय हो जाताहै ॥ ३ ॥ इस कारण अपने अंशसे तुमको पुत्र देताहूं इसकारण सत्य आशीर्वादसे गौतमीमें पुत्रकी प्राप्ति करोगे ॥ ४ ॥ हे द्विजश्रेष्ठ जो कि तुम्हारी नारायणके चरणोंमें मति प्राप्तहै इससे तुम धन्यहो. सकामा अकामा कैसी भी हो हरिभक्ति सुख देनेवालीहै ॥ ५ ॥ जिसप्रकार पत्तेपर स्थित जल क्षणमें नष्ट होजाताहै इसप्रकार यह शरीर क्षणमें विध्वंस होनेवालाहै ॥ ६ ॥ उसमें जो रघुनाथजीके चरणकमलको हृदयमें चिन्तन नहीं

विष्णुवाक्यमनादृत्यनचेद्दास्यामितेसुतम् ॥ योहिमांस्पृशतेघोरोह्यभयःसर्वथानघ ॥ ३ ॥ तस्मान्ममांशतस्तुभ्यंसुतंदद्मिमनोहरम् ॥ येनत्वमाशिषःसत्यालप्स्यसेगौतमीसुतम् ॥ ४ ॥ धन्योसिद्विजशार्दूलयत्तेजाताहरौमतिः ॥ सकामाप्यथनिष्कमाहरिभक्तिःसुख प्रदा ॥ ५ ॥ पल्लवाग्रलसद्बिंदुक्षणध्वंसिजनेवयः ॥ तत्रराघवपादाब्जंधन्यश्चिंतयतेहृदि ॥ ६ ॥ विषयाविषरूपावैनराणांतुच्छसौख्य दाः ॥ कौशल्येयमनादृत्यतेषुमूढोऽतिलंपटः ॥ ७ ॥ इंद्रियाणिप्रमाथीनिबांधवाइवदुर्द्धियः ॥ तदर्थेजानकीनाथंनोपसर्पतिमंद धीः ॥ ८ ॥ नाशंवसुमतीगंत्रीगंतारोगिरयोद्रुमाः ॥ आपगाःसागरानागाःसुरादैत्याःखगामृगाः ॥ ९ ॥ यत्किंचिद्दृश्यतेलोकेस्थू लंसूक्ष्मंपरंचयत् ॥ सर्वनाशात्मकंपश्यन्नोपयातिजनार्दनम् ॥ १० ॥

करताहै वह जन्म वृथा गमाताहै कारण कि; यह विषय तुच्छ सुख देनेवालेहैं मूर्ख रामचन्द्रको अनादर कर उनमें लम्पट होरहाहै ॥ ७ ॥ यह इन्द्रिय मनुष्योंको प्रमथन करनेवाली तथा दुर्बुद्धि बांधवोंकी समानहैं इनके विषयमें तत्पर हुआ भी यह मूर्ख नारायणके समीप नहीं प्राप्त होता है ॥ ८ ॥ पृथ्वीका एक दिन नाश होगा पर्वत वृक्ष नष्ट होंगे नदी सागर नाग सुर दैत्य खग मृग ॥ ९ ॥ जो कुछ लोकमें दीखताहै तथा जो कुछ स्थूल सूक्ष्म

हैं यह सबको नाशात्मक देखकर भी जनार्दनके निकट उपस्थित नहीं होताहै ॥ १० ॥ अहो यह महा मोहका अज्ञान तथा यह बुद्धिका महाभ्रम है इसको देखकर भी मूर्ख इससे पृथक् होकर हरिका सेवन नहीं करता है ॥ ११ ॥ क्या स्त्री पुत्र वा सुहृत् कोई भी अपना नहीं है धन घर भृत्य राज्य हाथी घोडे॥१२॥इन सबको बलसे मृत्यु अपनेमें मिलाती है ऐसा जानकरभी जो मनुष्य कोशलपतिको चिन्तन नहीं करता उसको धिक्कार है ॥ १३ ॥ सिवाय पुण्डरीकाक्षके कौन उसको अवलम्बन दे सकता है नारायणके सिवाय दूसरा तारनेवाला नहीं है नहीं है

अहोमोहांधतामिस्रमहोयंबुद्धिविभ्रमः ॥ नाशात्मकंसमालोक्यरघुवीरंनसेवते ॥ ११ ॥ किमुपत्नीसुतोवापिकिमुकन्याकथंसुहृत् ॥ कथंधनंकथंगेहंराज्यंभृत्यागजाहयाः ॥ १२ ॥ मृत्युनावर्तयंतीहबलात्कारोपयोजिताः ॥ धिग्जनंकोशलाधीशंनानुचिंतयतीहयः ॥ १३ ॥ तमृतेपुंडरीकाक्षंकोऽवलंबयतेपरम् ॥ नैवनैवेतिनैवेतिहरेरन्योनतारकः ॥ १४ ॥ हरेःकृपावलोकेनमयादत्तःसुतस्तव ॥ संसारसंभवंसौख्यंभुंक्ष्वविप्रेश्वरक्षितौ ॥ १५ ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ ॥ दंपत्योःपश्यतोःसद्योदत्त्वावरमनुत्तमम् ॥ ससुपर्णःसलक्ष्मीकोहरिरंतरधीयत ॥ १६ ॥ सगौतम्यासुदेवोपिजगामनिलयंस्वकम् ॥ हर्षसागरमासाद्ययथेच्छमभजत्सुखम् ॥ १७ ॥ कालानुक्रमतस्तस्यांदोहदःसमपद्यत ॥ पांडुरंचमुखंदध्रेगौतमीपतिदेवता ॥ १८ ॥

॥ १४ ॥ नारायणकी कृपादृष्टिसे मैंने तुमको पुत्र दिया है. हे ब्राह्मण ! पृथ्वीमें तू संसारके सुखोंका अनुभव कर॥१५॥वाल्मीकि बोले;दोनों स्त्री पुरुषोंको इस प्रकार वर देकर गरुड और लक्ष्मीसहित नारायण वहांसे अन्तर्धान हो गये॥१६॥वह गौतमी और सुदेवभी अपने स्थानको गये और प्रसन्नताके सागरको प्राप्त हो यथेच्छ सुख भोगने लगे ॥ १७ ॥ कालक्रमसे गौतमीको गर्भ रहा अर्थात् उस पतिव्रता स्त्रीका मुख श्वेत होगया॥१८॥

वह गर्भवती हो भर्ताको आनन्द देनेवाली शोभित हुई जैसे जयन्तको गर्भमें धारण करनेसे इन्द्राणी शोभित हुईथी ॥ १९ ॥ उस महाभाग्यवती ने चेतना प्रसादकी समान सर्वगुणयुक्त पुत्रको उत्पन्न किया जिसका मुख चन्द्रमाकी समान था ॥ २० ॥ मुनिश्रेष्ठने उसके जातकर्मादि किये और प्रसन्नताके कारण अपनेको बहुत मानते हुए ॥ २१ ॥ अहो मुझ अल्पभाग्यको पुत्रप्राप्ति कहां हो सकती है ? शंख चक्र गदा पद्म धारण करनेवाले नारायणहीकी कृपासे सब कुछ हो सकता है ॥ २२ ॥ इस प्रकार महा प्रसन्न हो उसने पुत्रके जातकर्म किये और उस महात्मा

अंतर्वत्नीरराजेयंभर्तुरानंदवर्धिनी॥यथापौरंदरीरेजेजयंतेगर्भमागते ॥ १९ ॥ साप्रसूतामहाभागाप्रसादमिवचेतना ॥ सुतंसर्वगुणोपेतंपूर्णचंद्रनिभाननम्॥२०॥जातकर्मादिकार्याणिचकारमुनिपुंगवः॥महताहर्षयोगेनस्वात्मानंबह्वमन्यत॥२१॥अहोममाल्पभाग्यस्यकुतःपुत्रस्यवैसुखम् ॥ विनादयांसुरेशस्यशंखचक्रगदाभृतः ॥ २२ ॥ इत्यानंदसमायुक्तःसर्वकार्याण्यथाकरोत् ॥ ब्राह्मणान्भोजयामासविष्णुबुद्ध्यामहात्मनः॥२३॥नामचास्याकरोद्धीमान्ब्राह्मणैःस्वजनैर्युतः॥असौशिशुःसुपर्णेनदत्तःप्रेम्णातिशोभनः॥२४॥ यस्माच्छ्लोकेनप्रहितोदीव्यतीवदिवाकरः॥शुकदेवेतिनाम्नायंतस्माद्भवतुबालकः ॥ २५ ॥ व्यवर्द्धतशिशुःशीघ्रंशुक्लपक्षइवोडुराट् ॥ पितुर्मनोरथैःसाकंमातुर्मानसनंदनः ॥२६॥क्रमाद्बभूवषड्वर्षःकंदर्पसमशोभनः ॥ कदाचित्तद्गृहाभ्याशमाजगाममुनिःस्वयम्॥२७॥

ने विष्णुबुद्धिसे ब्राह्मणोंको भोजन कराया ॥ २३ ॥ और इस महात्माने अपने कुटुम्बी जनोंके साथ इसका नामकरण किया जिस कारणसे कि, प्रसन्न हो गरुडजीने यह पुत्र दियाथा ॥ २४ ॥ जिस कारणकि श्लोकके द्वारा दिव्य प्रकाश हुआ इस कारण इस बालकका शुकदेवही नाम होगा ॥ २५ ॥ तब यह बालक शुक्लपक्षके चन्द्रमाके समान बढने लगा पिता और माताको आनंदित करने लगा ॥ २६ ॥ कामदेवकी समान

शोभायमान वह बालक क्रमसे छः वर्षका हुआ. एकसमय उसके स्थानमें स्वयं मुनिराज ॥ २७ ॥ तेजसे प्रकाशमान नारदजी आये. उनका विधि पूर्वक पूजन कर ब्राह्मणने उनकी गोदीमें अपने पुत्रको ॥ २८ ॥ परम भक्तिसे लिटाकर प्रणाम किया और कहा; हे विप्रश्रेष्ठ ! सब प्रकारसे मंगल करनेवाला यह बालक आपहीकाहै ॥ २९ ॥ नारदने भी बडे प्रेमसे उस बालकको देखा उसे देखकर वारंवार हास्य किया ॥ ३० ॥ और गौतमीके

नारदःसुरसंकाशस्तेजसाप्रज्वलन्निव॥तमर्च्यविधिवद्विप्रस्तदुत्संगेसुतंस्वकम् ॥२८॥ निधायपरयाभक्त्याननामानतकंधरः॥बालस्तवायंविप्रर्षेपाठचःसर्वात्मनेहितः॥२९॥नारदःस्नेहसंयुक्तःकुमारमवलोकयन्॥नयनोपगतंकृत्वास्मयित्वाचपुनःपुनः॥३०॥ उवाचगौतमीनाथंसुदेवंसात्त्विकंद्विजम्॥भोभोधन्योऽसियत्साधोतुष्टस्तेयादृशोहरिः ॥३१॥तपसाराधितःपुत्रंदत्तवानतिसुन्दरम्॥किमत्रश्शृणुमेवाक्यंप्रसादेविष्णुसंभवे॥३२॥तिर्यगूर्ध्वमधोमानेह्यष्टोत्तरशतांगुलःसुदेवतनयस्तेऽयंकिन्नुस्यात्पृथिवीपतिः ॥ ३३ ॥ अहो किमेतत्पश्यामिकरेबालस्यधीमतः॥सच्छत्रंचामरयुगंहरेर्जेष्यतिकिंपुरम्॥३४॥कनिष्ठामूलतोरेखातर्जन्यंतमुपाश्रिता॥ अक्षतानिर्मलादीर्घादीर्घायुष्यप्रदायिनी ॥ ३५ ॥ अच्छिद्रौकठिनौरक्ततलौपद्मोपमौकरौ ॥ राजाङ्कसूचकौरक्तनखौदीर्घांगुलीशुभौ ॥ ३६ ॥

पति सुदेव सात्विक ब्राह्मणसे कहा हे ब्राह्मणदेव ! तुम धन्य हो जो कि, तुम्हारे ऊपर नारायण प्रसन्न हुएहैं ॥ ३१ ॥ और तपसे प्रसन्न हो तुमको पुत्र दियाहै और इस विष्णुकी प्रसन्नतामें मेरे वचनको सुनो ॥३२॥ ऊपर नीचे तिरछे सर्वत्र एकसौ आठ अंगुल यह तुह्मारा पुत्र है. हे सुदेव ! यह तुम्हारा पुत्र पृथ्वीका पति होगा ॥३३॥ अहो मैं किसप्रकारसे इस बालकके हाथमें छत्रचामर देखताहूं क्या यह वैकुंठका जीतनेवाला होगा ॥ ३४ ॥ कनिष्ठिकाके मूलसे रेखा तर्जनीके अन्ततक चली गई है और जो निर्मल तथा दीर्घ है यह आयुकी देनेवाली है ॥ ३५ ॥ छिद्ररहित रक्तवर्णके हाथकमलकी

समान हैं दीर्घ अंगुली और लाल रंगके दीर्घ नखून राजा होनेका चिह्न कथन करते हैं ॥ ३६ ॥ जंघापर्यन्त लम्बायमान मांसल पुष्ट इसके हाथ हैं यह तुम्हारा पुत्र समुद्रपर्यन्तका राजा होगा ॥ ३७ ॥ मधुकी समान पिंगलवर्णके नेत्र श्याम शरीर स्निग्ध तथा घूंघरवाले बाल ऊंची छाती पुष्ट गर्दन समान कर्ण बैलकी बराबर ऊंचे कंधे ॥ ३८ ॥ गूढहंसली गहरीनाभि त्रिवलीसे विभूषित उदर ह्रस्वलिंग पद्म गंधि वीर्ययुक्त पृथु कटि ॥ ३९ ॥ सुंदर जंघा और ऊरुभाग सुन्दर आकृति पाठीन मछलीकी समान कोमल रक्तवर्ण पृथ्वीकी स्पर्श

आजानुलंबिनौहस्तौहस्तितुल्यौसुमांसलौ ॥ आवारिधेर्भूमिपालोभविष्यतिसुतस्तव ॥ ३७ ॥ मधुपिंगेक्षणःश्यामःस्निग्ध कुंचितमूर्द्धजः ॥ तुंगवक्षाःपृथुग्रीवःसमकर्णोवृषांसकः ॥ ३८ ॥ गूढजत्रुर्गूढनाभिस्त्रिवलीभूषितोदरः ॥ ह्रस्वलिंगःपद्मगंधिवीर्य युक्तःपृथुःकटौ ॥ ३९ ॥ सुजानुःसुन्दरतरोजंघाभ्यांचशुभाकृतिः ॥ पाठीनपृष्ठसदृशौकोमलारक्तभूस्पृशौ ॥ ४० ॥ सुकुमारांगु लीसौम्यावूर्ध्वरेखांबुजान्वितौ ॥ सुगुप्तगुल्फौसत्पार्ष्णीपादौतस्यमनोहरौ ॥ ४१ ॥ पाणिपादनखान्यक्षिजिह्वोष्ठौगण्डतालुके ॥ अष्टौरक्तानिदृश्यंतेभाग्यचिह्नानितेसुते ॥ ४२ ॥ मूत्राधारशिरःकेशौदक्षिणावर्त्तिनौयदि ॥ सालकंहृदयंविप्रदीर्घसौख्यप्र काशकम् ॥ ४३ ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णःपुत्रोभाग्यनिधिर्द्विज ॥ निंद्यंनैवात्रपश्यामिपरमाणुनिभंक्वचित् ॥ ४४ ॥

करनेवाली ॥ ४० ॥ ऊर्ध्व रेखावाली सुकुमार अंगुलियोंको अलंकृत सुन्दर रक्षित गुल्फ सत्यही मानो लक्ष्मीके स्थान उनके चरण हैं ॥ ४१ ॥ हाथ चरण नखून नेत्र जिह्वा ओष्ठ गाल और तालु यह आठ वस्तु जिसके लाल देखो उसे भाग्यवान् जानो ॥ ४२ ॥ जिसका मूत्राधार तथा शिरके बाल यदि दक्षिणावर्ति हों और हृदय जिसका रोम सहित चौडा हो वहभी बडा सुख पाताहै ॥ ४३ ॥ हे विप्र ! यह तुम्हारा पुत्र भाग्यवान् सब

लक्षणसे सम्पन्न है और परमाणुमात्र भी मैं इसमें पाप नहीं देखताहूं ॥ ४४ ॥ परम कान्तिमान् देवर्षि यह वचन सुनाकर फिर श्वास लेकर विचारते शिर धुन्ने लगे ॥ ४५ ॥ कि जब समय अपने अनुकूल होताहै तब सब शुभ दीखताहै और जब प्रतिकूल होताहै तब तत्काल नष्ट हो जाताहै ॥ ४६ ॥ इसीकारण हे सुदेव ! यह तुम्हारा पुत्र बारहवें वर्षमें मृत्युको प्राप्त होगा इसमें शोक न करो ॥ ४७ ॥ ईश्वरकी इच्छासे होनेवाले

इतिवाचमुदीर्यासौदेवर्षिःपरमद्युतिः ॥ निःश्वसन्मौलिमाधुन्वन्पुनराहविचारयन् ॥ ४५ ॥ शुभंसंपश्यतेसर्वंयदाकालःप्रदक्षिणः॥ सयदाप्रतिकूलःस्यात्सर्वंनश्यतिहेलया ॥ ४६ ॥ सुदेवतनयस्तेऽयंद्वादशेहायनेगते ॥ मृत्युमेष्यतितत्रत्वंमाशोकेमानसंकृथाः ॥ ॥ ४७ ॥ अवश्यंभाविनोभावाभवंत्येवेश्वरेच्छया ॥ तत्रप्रतिविधिंनान्यःकर्तुमर्हतितंविना ॥ ४८ ॥ भवादृशांवदान्यानांधार्मिकाणांसुवर्चसाम् ॥ सज्जनप्रियकृत्कृष्णोनासुखानिक्षमिष्यति ॥ ४९ ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ ॥ इत्युक्तानिर्ययौब्रह्मलोकंब्रह्मतनूद्भवः ॥ सुदेवःसहगौतम्यानिपपातधरातले ॥ ५० ॥ खातमूलोगिरिर्यद्वच्छिन्नमूलोयथातरुः ॥ ध्वजयष्टिर्यथावायोर्दंपती धरणींगतौ ॥ ५१ ॥ व्यलुंठत्सुचिरंभूमावपस्मारहतोयथा ॥ ततःकिसलयस्पर्द्धिकरद्वंद्वांचितःक्षणात् ॥ ५२ ॥

भाव अवश्य होतेहैं उनके विना कोई प्रतिनिधि करनेको समर्थ नहीं है ॥ ४८ ॥ आपसरीके वदान्य धर्मात्मा तेजस्वी जनोंके सज्जन और प्रियबंधु कृष्णही सब मंगल करेंगे ॥ ४९ ॥ वाल्मीकिजी बोले; इस प्रकारके वचन कह नारदजी ब्रह्मलोकको चले गये और सुदेव गौतमीके सहित पृथ्वीमें गिर पडा ॥ ५० ॥ जैसा जड़ खोदा हुआ पहाड़ और छिन्नमूल वृक्ष गिरजाता है अथवा वायुसे जैसे ध्वजा गिरती है ऐसे दोनों स्त्रीपुरुष गिरपडे ॥ ॥ ५१ ॥ और पृथ्वीमें लोटने लगे जैसा अपस्मारयुक्त मनुष्य गिर जाता है कमलकी समान स्पर्धा करनेवाले दोनों हाथोंका स्पर्शकर ॥ ५२ ॥

ब्राह्मण अमृत प्राप्त हुएकी समान तत्काल उठ बैठा और वह सुन्दरी बाला उस बालकको लेकर प्रेमसे उसका मुख चूमती हुई अपने स्वामीसे बोली हे द्विजराज ! होनहार वस्तुओंमें आपको भय करना नहीं चाहिये॥५३॥५४॥होनहार हुए विना नहीं रहती और जो होनहार नहीं है वह नहीं होती. होनहार वस्तुका किसी प्रकार लोप नहीं होता ॥ ५५ ॥ यदि अवश्य होनहार वस्तुओंका प्रतीकार होता तौ नल राम युधिष्ठिर कदाचित् दुखी न होते ॥ ५६ ॥ दानवेन्द्रका बंधन यदुकुलका क्षय कार्तवीर्यके शिरका छेदन दशग्रीवका नाश ॥ ५७ ॥ राम जानकीका विरह

सद्योऽमृतप्राप्तइवसमुत्तस्थौद्विजोत्तमः॥अथसासुंदरीबालास्वकमादायबालकम्॥५३॥ चुचुंबवदनंप्रेम्णाततःस्वामिनमाहसा॥द्विज राजनतेकार्याभीतिर्भाव्येषुवस्तुषु ॥५४॥ नाभाव्यंकुत्रचिद्भाविभाव्यंनैवविनश्यति॥अवश्यंभावियद्वस्तुसर्वथानोपलुप्यते ॥५५॥ अवश्यंभाविभावानांप्रतीकारोभवेद्यदि॥तदादुःखैर्नबाध्यंतेनलरामयुधिष्ठिराः॥५६॥ बंधनंदानवेंद्रस्यक्षयोयदुकुलस्यच॥कार्त्तवीर्य शिरश्छेदोदशग्रीवविनाशनम्॥५७॥विरहोरामजानक्योर्लक्ष्मणस्यविवासनम् ॥ वालिगोपुच्छनिर्णाशस्त्रिशंकुतनयापदः ॥ ५८ ॥ वधोहिरण्यकशिपोर्वृत्रासुरनिबर्हणम्॥त्रैलोक्येतानिभोनाथज्ञेयान्यमितबुद्धिना ॥ ५९ ॥ बहूपायैरपिविभोनाभाव्यंभवतिक्वचित् ॥ भाव्यस्यापिनरःकर्त्तानासीत्सुरवरोऽपिसन्॥६०॥अकार्यंशक्यतेकर्त्तुंयदिकेनापिभूसुर॥ मागधारुद्धभूपालाःकथंजीवितमाप्नुयुः६१

लक्ष्मणका त्याग वालिका नाश त्रिशंकुके पुत्रपर आपत्ति ॥ ५८ ॥ हिरण्यकशिपुका वध वृत्रासुरका विनाश. हे नाथ ! यह त्रिलोकीमें वार्ता हुआ करती हैं सो बुद्धिमानको जाननी उचित हैं ॥ ५९ ॥ हे विभो ! कितने भी उपाय करो होनहार नहीं चुकती होनहारका कर्ता कहीं कोई देवताभी नहीं हो सकता है ॥ ६० ॥ हे भूसुर यदि कोई अकार्य करनेमें समर्थ हो तो जरासंधके घेरे हुए राजा किस प्रकारसे जीवनको प्राप्त हो

सकते ॥ ६१ ॥ राजर्षि परीक्षित दानवोत्तम प्रहलाद अजगरग्रसित भीम अर्जुनका भीष्मकी जय करना ॥ ६२ ॥ लाक्षागृहसे कुंतिका मृत्युके मुखसे निकलना अथवा शंबरका रुक्मिके पुत्रका हरण करना ॥ ६३ ॥ सीताका रावणके हाथमें पडना चित्राश्वका मृत्युपाशमें पडना तथा दशपुत्र होनेपरभी पिताका मुख न पाना ॥ ६४ ॥ इस प्रकार जो होनेवाले भाव हैं वह अवश्य होकर रहते हैं. हे विप्र ! इसमें तुमको किसी प्रकारकी शंका करनी उचित नहीं है ॥ ६५ ॥ यदि हमको पुत्रसे सुखकी प्राप्ति होनहार है तो उसको इन्द्र वरुण और कुबेर किसी प्रकार

परीक्षिदपिराजर्षिःप्रह्लादोदानवोत्तमः ॥ भीमोऽप्यजगरग्रस्तःपार्थोभीष्मंधनंजयः ॥६२॥ लाक्षागृहेतदाकुंतीमृत्युवक्राद्विनिर्गता॥ शंबरोव्याहरद्ब्रह्मन्रौक्मिणेयंमहाबलम् ॥६३॥ पौलस्त्यकरगासीताचित्राश्वोमृत्युपाशगः॥ दशपुत्रपिताविप्रोनापपुत्रसुखंचसः ॥ ॥ ६४ ॥ एवंयेभाविनोभावास्तानालक्ष्यकदाचन ॥ द्विजराजनतेशंकाकार्याचेतसिपुत्रके ॥ ६५ ॥ यद्यस्माकंसुखावाप्तिर्भवित्रीसुतसंभवा ॥ नसापकर्षुंशक्यावैसेंद्रैरपिसुरासुरैः ॥ ६६ ॥ नकार्यस्तत्रसंत्रासःक्लेशोवापिकथंचन ॥ नित्यंधर्मेरमस्वत्वंमाशोकेमानसंकृथाः ॥ ६७ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येसुदेवगौतम्याश्शोकापनोदनंनामचतुर्दशोऽध्यायः॥ १४ ॥वाल्मीकिरुवाच ॥ इतिताः शीतलावाचःसमाकर्ण्यप्रियामुखात् ॥ नियमेमानसंबुद्ध्वानिनायानिमिषंहितत् ॥ १ ॥

दूर नहीं कर सकते ॥ ६६ ॥ इसमें क्लेश और संताप किसी प्रकार करना उचित नहीं है तुम नित्य धर्ममें रमण करो किसी प्रकार तुम्हारे मनमें शोक होना उचित नहीं है ॥ ६७ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये सुदेवस्य शोककरणं नाम चतुर्दशोध्यायः ॥ १४ ॥ वाल्मीकिजी बोले इस प्रकार अपनी स्त्रीके मुखसे वह शीतल वचन सुन मनमें शोकका अधिक होनेके कारण भाग्यको प्रबल मान्ता हुआ ॥ १ ॥

अनेक निश्वासोंको त्यागता हुआ बहुतकालतक शंकित रहकर क्या होनहार है इस प्रकार वह ब्राह्मण मनमें विचार करने लगा ॥ २ ॥ एक समय समिधाकुश फलके भोजनोंके निमित्त वनको गया. सुदेव शान्तचित्त कृष्णके चरणोंका सेवी था ॥ ३ ॥ उसी समय इसका कान्तिमान् पुत्र अपनी समान अवस्थाके बालकोंके साथ जलमें प्रवेश कर क्रीडा करने लगा ॥ ४ ॥ पिचकारियें छोडते हुए बालकोंके साथ प्रत्येक कमलके निकट विचरने लगा जैसे विषयोंमें मन विचरता है ॥ ५ ॥ यह चतुरताके गुणवाले बालकोंके साथ रमण करने लगा पानीके ऊपर एक दूसरे

निःश्वासान्बहुलान्मुक्त्वासुशंकितमनाश्चिरम् ॥ किंमेभावीतिमनसाचिंततासौद्विजेश्वरः ॥२॥ समित्कुशफलाहारःकदाचित्काननं ययौ॥सुदेवःशांतकरणःकृष्णपादांबुजाश्रयः॥३॥तदास्यतनयःश्रीमाञ्जलवापींमनोरमाम्॥आविश्यक्रीडयामासवयस्यैरावृतःशुचौ ॥४॥वारियंत्रैःक्षिपन्वारिपद्मगंधाधिवासितम्॥पद्मेपद्मेचविहरन्विषयेषुमनोयथा ॥५॥ चातुर्यगुणसंयुक्तोबालकात्रमयत्यसौ॥आरुह्यारुह्यपानीयेनिपतन्पातयन्स्वकान्॥४॥जलक्रीडासुचतुरोवयस्यैरावृतःसुधीः ॥ एवंद्विजातितनयेरमणासक्तमानसे ॥७॥ तत्रकश्चिन्महाग्राहोविधिनानोदितोबलात्॥पद्भ्यामाकृष्यतंबालंभीतमंतर्जलंगतः॥८॥ समानवयसःसर्वेहाहाकृत्वाप्रधाविताः॥ गौतम्यैवेदयांचक्रुर्बहुशोकपरायणाः ॥ ९ ॥ मातस्तेतनयःक्रीडन्नस्माभिःसहितःसुहृत् ॥ जलेजलचरग्रस्तःपरासुर्नविलोक्यते ॥ १० ॥

को डालने लगे ॥ ६ ॥ इस प्रकार वह बालक जलक्रीडामें चतुर बालकोंसे आवृत हुआ बालकोंके संग क्रीडामें आसक्त था ॥ ७ ॥ उस समय कोई महाग्राह बडा बलपूर्वक शब्द करता हुआ उस बालकको चरणोंसे पकड कर जलके भीतर चला गया ॥ ८ ॥ तब समान अवस्थावाले सम्पूर्ण बालक हाहा करके धावमान हुए और महाशोकसे व्याकुल हो गौतमीसे यह वचन कहते भये ॥ ९ ॥ हे मात ! तुम्हारा पुत्र

क्रीडा करताथा परन्तु किसी जलचरने उसको ग्रहण करलिया अब वह दिखाई नहीं देता ॥ १० ॥ हे राजन् ! जिस समय दयासे युक्त वे कुमार इस प्रकारके वचन दयायुक्त होकर कह रहे थे उसी समय सुदेव समिधा लेकर वनसे आया ॥ ११ ॥ उन बालकोंके वह दोनों स्त्रीपुरुष वज्रपातकी समान वचन सुनकर उस बालककी क्रीडा करनेवाली बावडीके निकट गये ॥ १२ ॥ उसमें उसको न देखकर वह बडा शब्दकर रुदन करने लगे तब चलकर उन दोनों मिलकर उस स्थानमें जाकर ॥ १३ ॥ उस पुत्रको मृतक देख छिन्न पंखवाले पक्षीकी समान शिथिलहो छिन्नमूलवाले

किशोरेषुवदत्स्वेवंदयायुक्तेषुभूपते ॥ आजगामवनाद्विप्रःसुदेवःसमिदाहरः ॥ ११ ॥ वज्रपातोपमंवाक्यमाकर्ण्यद्विजदंपती ॥ जग्मतुर्यत्रसावापीतनूजक्रीडनालया ॥१२॥ तौतत्रतमपश्यंतौचक्रतूरुदनंबहु ॥ तावत्पुरालयैस्ताभ्यांधृतःपुत्रोनिवेदितः ॥ १३ ॥ दृष्ट्वाएत्रंपरासुंस्वंछिन्नपक्षौयथाद्विजौ ॥ पेततुःशिथिलांगौतौछिन्नमूलाविवद्रुमौ ॥१४॥ परमांग्लानिमापन्नौबुबुधातेनजीवितम् ॥ चिरात्कथंचिदालभ्यसंज्ञांपुत्रानुरागिणौ ॥१५॥ आकृष्यसुतदेहंतावालिंग्यचपुनःपुनः ॥ अंकेपुत्रंनिधायादौचुचुंबतुरधोमुखौ ॥१६॥ धैर्यमुत्सृज्यमंदौतौरुदंतौचपुनःपुनः ॥ वदपुत्रशुभांवाणीमस्मत्कर्णसुखप्रदाम् ॥ १७ ॥ नविहातुंभवानर्हःस्थविरौपितरौतव ॥ एतादृशानिवाक्यानिऊचतुर्दुःखितौभृशम् ॥ १८ ॥

वृक्षकी समान गिर पडे ॥१४॥ और परमग्लानिको प्राप्तहो उन्होंने अपने जीवनकोभी न जाना. बहुत कालमें उन पुत्रके अनुराग करनेवालोंको संज्ञा प्राप्त हुई ॥ १५ ॥ पुत्रके देहको खैंच वारंवार आलिंगन करके उस बालकको गोदीमें धर वारंवार उसका मुख चूमने लगे ॥ १६ ॥ और धैर्य त्यागनकर वारंवार रुदन करने लगे कि हे पुत्र ! आप हमारे कानोंको सुख देनेवाली वाणी कहिये ॥ १७ ॥ तू अपने बूढे मातापिताको

छोड़नेके योग्य नहीं है इस प्रकारके वचन वे दोनों दुःखी होकर कहनेलगे ॥ १८ ॥ हे शिशो ! यदि मैंने कोई तेरा विकृत किया हो तौ क्षमा कर मूत्रादि ऊपर करनेपरभी तेरी सेवा कीथी सो किस कारण हमको त्याग कर तुम वहां चलेगये ॥ १९ ॥ तुम्हारे मनोहर वचनोंसे हमारा हृदय अमृतकी समान सींचाजाताथा सो आज हमारे मनोरथ रूप चमेलीकी बेल शोकरूपी दवाग्निसे जलाई गईहै ॥ २० ॥ कुररी समान वह चिरकाल पर्यन्त इस प्रकार रुदन करते रहे, हे पुत्र ! हे तोते ! किस प्रकारकी तुम्हारी दशा होगई तुम कैसे यहां आयेथे ॥ २१ ॥ हे पुत्र ! यह तुम्हारा कोमल

अयिशिशोमयितेविकृतंतवपरिचितंयदमुत्रविनिर्गतः ॥ सुविधुरंकरणंगलिताशिषःप्रविलपंतमिहैवविहायमाम् ॥ १९ ॥ तव कलाक्षरवाक्यसुधाघनेविरमितेहृदयंगमवर्णिनि ॥ विपुलशोकदलानलसंहृताममनोरथमाधविकाततिः ॥ २० ॥ सुतशुकेतिशुके तिविलापितंकुररियूथमिवस्वजनंचिरम् ॥ किमवलंब्यविधेविषयेशिशुंपरमितोनयतासकलंहृतम् ॥ २१ ॥ अयिशिशोसुकुमार तनोकथंकुटिलतीव्रधनंजयदीप्तयः ॥ कलपिनाकिरणैररुणप्रभोअरुणतामगमद्वदनंतव ॥ २२ ॥ अयिविधेमयितेऽर्थमतिःकृता बतकुमारवधेनुविमुंचता ॥ किमितिनिर्दयमाननयस्यहोकमपरावमहंकृतवांस्त्वयि ॥ २३ ॥ तवमनोहरवक्त्रसमुद्गताकलपदाल्पितानिपुनःपुनः ॥ अतिसुखानिदहंतिहृदंतरंजवयजानियथासुतमागमान् ॥ २४ ॥

शरीर किस प्रकारसे अग्निकी लपटको सहन करैगा मैं विलाप करताहूं हे पुत्र ! तुम्हारे मुखसे अभीतक अरुणता नहीं गई है ॥ २२ ॥ हे विधाता ! इस कुमारके वध करनेसे तुमने बडी निष्ठुरता दिखाई है इसको पुनर्जीवन देकर हमारी ओर कृपादृष्टि करो अथवा मानियोंको बडी निष्ठुरता होती है मैंने तुम्हारा क्या अपराध कियाथा ॥ २३ ॥ हे पुत्र ! तुम्हारे मुखसे जो वारंवार मनोहर तोतले शब्द निकलतेथे वह हमारे मनको बडा आनंद

देतेथे अब वह स्मरणकर हमारा हृदय दग्ध हुआ जाता है ॥ २४ ॥ जब घर जाकर तुम्हारे विना मैं अग्निशालाको देखूंगा हे पुत्र ! तब मुझसे वहां स्थित न रहा जायगा मैं किस प्रकार स्थित रहूंगा ॥ २५ ॥ न मैंने कोई गुप्त पाप किया है न ब्रह्महत्या की है न स्त्रीहत्या न गर्भहत्या की है यह किस पापका फल है ॥ २६ ॥ हे विधाता ! मुझ दीनके ऊपर कृपा करो मैं प्रार्थना करताहूं शुकदेवके आश्रित मार्गकी मुझे शीघ्र प्राप्ति कराओ ॥ २७ ॥ हे विधाता ! इस कार्यको करके तुमने क्या फल पाया है जो मुझ दीन दुःखीके दोनों नेत्र निकाललिये ॥ २८ ॥ मुझ निर्धनका धन और अन्धेका नयन

द्रक्ष्यामिगेहमागत्यवह्निशालाम्मृतेत्वया ॥ कथंभजामिसत्पुत्रकमरण्येसमाश्रये ॥ २५ ॥ नमयाचरितंगुह्यंब्रह्महत्यापिनोकृता ॥ स्त्री हत्याभ्रूणहानास्मिकस्येदंकर्मणःफलम् ॥ २६ ॥ अहोधातःकिमेतावत्त्वयालब्धंमहत्फलम् ॥ लोचनद्वंद्वमाकृष्टंदीनस्यममदुःखिनः ॥२७॥ धातस्तातकृपांधेहिमयिदीनेवदामिते ॥ शुकदेवाश्रितंमार्गंमह्यंलंभयमाचिरम् ॥ २८ ॥ निर्धनस्यधनंह्येतदंधस्यनयनंमम ॥ हत्वाकिन्तेशुभंभाविविधेदारुणदारुण ॥२९॥ रवेविप्रसुतास्तुभ्यंभवंतिचयतःप्रियाः ॥ कथंनत्रायतेत्रासाज्जगद्वंद्येद्विजप्रिय ॥३०॥ कुतोगत्वानुकिंकृत्वापृथिव्यंतमपिभ्रमन् ॥ द्रक्ष्येतवाननंसूनोसुनसंचारुलोचनम् ॥३१॥ पर्जन्याच्च्यवतेवारिसूतेधान्यंधरापिच ॥ रत्नंतिमिरदुर्गेषुमुक्तासारंपयोनिधौ ॥ ३२ ॥ फलानिद्रुमषंडेषुधातवोऽचलसानुषु ॥ नतंदेशंप्रपश्यामियत्रगत्वामनोहरम् ॥ ३३ ॥

यही था सो तुमने मेरा ग्रहण कर लिया हे विधे ! मुझे दारुण दुःख देकर तुम्हैं क्या शुभ होगा ॥ २९ ॥ हे सूर्यदेव ! स्वभावसेही तुमको ब्राह्मणपुत्र प्रिय होतेहैं हे जगद्वंद्य द्विजप्रिय ! सो दुःखसे उनकी रक्षा क्यों नहीं करते ॥ ३० ॥ कहां जाऊं पृथ्वीमें कहां भ्रमण करूं मैं अपने सुनेत्र पुत्रको कहां देखूं ॥ ३१ ॥ मेघजल वर्षाते पृथ्वी धान्य उत्पन्न करती है अन्धकार गहनतममें रत्न और सागरमें मोती होते हैं ॥ ३२ ॥ वृक्षखण्डोंमें फल पर्वतोंमें धातु

होती हैं परन्तु उस देशको नहीं देखताहूं जहां जाकर मनोहर ॥ ३३ ॥ पुत्रके शरीरको आलिंगनकर हृदयके दाहको मिटाऊं बारबार आलिंगनकर अपने आसूँ पोंछूं॥ ३४॥ हे पुत्र! कोई वचन हमको सुनाकर हमारे ऊपर दया करो क्या वृद्ध मातापिताकोभी देखकर तुमको दया नहीं आती॥ ३५॥ हे वीर ! मुझसे विना कहे तुम कहीं नहीं जातेथे हे पुत्र ! अब मेरे पूछे विना कैसे दीर्घ मार्गको चले गये ॥ ३६॥ हे पुत्र ! रात्रिमें पढनेको अब मैं

पुत्रगात्रंसमालिंग्यहृद्गतंदाहमुत्सृजे ॥ भूयोभूयःसमाश्लिष्यप्रकरोम्यश्रुमार्जनम् ॥ ३४ ॥ सुतकामपिवाचंमेश्रावयाशुदयांकुरु ॥ जरठंपितरंदीनंवीक्ष्यनायातितेदया ॥ ३५ ॥ अननुज्ञाप्यमांवीरनकदापिगतोभवान् ॥ मामपृष्ट्वाकथंदीर्घंमार्गंयातोसिपुत्रक ॥ ॥ ३६ ॥ निशायांपठनार्थायबोधयिष्यामिकंसुत ॥ सशुकोपररात्रांतेत्वामृतेवह्लभात्मज ॥ ३७ ॥ हरितःसावकाशामेसर्वाःशून्या स्त्वयाविना ॥ कुतोऽपितातताततेतिशुभांवाचंशृणोम्यहम् ॥ ३८ ॥ अरेप्रमादिताःप्राणाःकुतःस्वस्थाःकलेवरे ॥ कथंसुखाशया रूढाःकुतोनप्रचलंत्युत ॥ ३९ ॥ श्रुत्यानुसारिणींवाचंकस्यश्रोष्यामिपुत्रक ॥ गेहमद्यसमासाद्यधिङ्मांदुर्जीविनंखलम् ॥ ४० ॥

किसको जगाऊँ हे पुत्र ! तुम्हारे बिना यह तोता प्रातःकालमें शब्द करताहुआ तुम्हारेविना शोभित नहीं होता॥ ३७ ॥ हे पुत्र! तुम्हारे विना सब दिशा मुझे शून्य लगतीहैं हे पिता ! हे तात ! अब मैं ऐसे शब्दोंको कहां सुनूं ॥ ३८॥ अरे प्राणो ! क्या प्रमाद करते हो क्यों कलेवरमें पडे हो अब कौनसे सुखकी कथा तुमको प्राप्त होगी अब तुम क्यों नहीं निकलते हो॥ ३९ ॥हे पुत्र ! अब मैं शास्त्रानुसारिणी किसकी वाणी श्रवण करूंगा आज घरमें प्राप्त होकर

मेरा जीवन धिक्कार है ॥ ४० ॥ हे वीर ! मैं तेरे मनोहर वाक्योंको स्मरण करता हुआभी मेरे हृदयके सौ टुकडे नहीं होते ॥ ४१ ॥ आज हमारे बडे मानकी संकल्पित वल्ली ( बेल ) जल गई अब हमारा तप भी अधिक नहीं है इससे फिर वह किस प्रकार उत्पन्न हो सक्ती है ॥ ४२ ॥ मैं दशरथकोही इस विषयमें धन्य मानताहूँ जो दशरथ कुमारोंके वनमें प्रवेश करनेपर अपने शरीरको त्यागते भये और मेरा पुत्र नष्ट होगया तथापि मैं जीवन धारण करताहूँ मुझे धिक्कार है ॥ ४३ ॥ कुबेरके छोटे भ्राताही को धन्य है जो पुत्रकी विपत्तिको सुनकर रामरूपी अग्निमें प्रविष्ट हुआ पुत्रकी व्याधिसे तप्त

त्वामनुस्मरतोवीरंकलवाक्यंमनोहरम् ॥ शतधादीर्यतेनाद्यहृदयंत्वायसंमम ॥ ४१ ॥ बहुमानस्यसंकल्पवल्लीप्रज्वलिताऽधुना ॥ अत्यंतपापिनोमेद्यपुनरुद्भवतेकथम् ॥ ४२ ॥ मन्येसुधन्यंकिलकोशलेशंयःकाननंदाशरथौप्रयाते ॥ दधारनोसूंस्तनयाधिदग्धोधिङ्मांतनूजप्रलयेप्यनष्टम् ॥ ४३ ॥ धन्योधनेशावरजस्तनूजमाकर्ण्यकीर्णंरघुवीरबालात् ॥ पुत्राधितुन्नःप्रविवेशरामवह्नितुधिङ्मामलयंसुतार्तम् ॥ ४४ ॥ गोविंदविष्णोरघुनंदनेशसीतापतेदाशरथेसुरारे ॥ दीनानुकंपिन्भगवन्दयालोमांत्राहिमग्नंसुतशोकवार्धौ ॥ ४५ ॥ श्रीकृष्णनारायणवासुदेवगोविंदविष्णोभगवन्मुरारे ॥ श्रीयादवेशाऽखिललोकनाथमांत्राहि० ॥ ४६ ॥ हरेविभोकंसनिषूदनाघमर्दिन्बकारेमधुकैटभारे ॥ घोराहिमूर्द्धांगणखेलनाद्यमांत्राहि० ॥ ४७ ॥

हुए मुझको धिक्कारहै ॥ ४४ ॥ हे गोविन्द ! हे विष्णो ! हे मुरारे ! हे रघुनन्दन ! हे सीतापते ! दीनोंके ऊपर दया करनेवाले भगवान् दयालु मुझे पुत्रशोकसे पार कीजिये मैं शोकसागरमें पडाहूं इससे मेरा उद्धार करो ॥ ४५ ॥ हे श्रीकृष्ण नारायण वासुदेव गोविन्द विष्णु भगवन् मुरारी श्रीयादवेश सम्पूर्ण लोकके नाथ पुत्रके शोकसागरसे मेरी रक्षा करो ॥ ४६ ॥ हे हरी हे विभो हे कंसनिषूदन हे अघासुरके मारनेवाले हे बकासुरमर्दन करनेवाले हे मधुकैट

भारी घोर सर्प मुझको ग्रास किये लेताहै इस सुतशोकसे मेरी रक्षा करो ॥ ४७ ॥ हे देवाधिदेव ! सम्पूर्ण लोकनाथ गोपाल बालरक्षक अग्निपान करता कलिन्दकन्यासे रमण करनेवाले पुत्रशोकसागरसे मेरी रक्षा करो ॥ ४८ ॥ हे वैकुंठ ! हे नरकासुरशत्रु ! चराचरके आधार रथांगपाणे काकुत्स्थवंशके अधिपति कोशलेन्द्र मुझे पुत्रशोकसागरसे बचाओ ॥ ४९ ॥ मेरी समान कोई मूढ नहीं होगा जो नारायणके वचनको उल्लंघन कर पुत्रकीही दुराशा की प्रारब्धमें न होनेवाली वस्तुको कौन प्राप्त हो सकता है ॥ ५० ॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये सुदेवस्य पुत्र

देवाधिदेवाखिललोकनाथगोपालबालोग्रनिपीतवह्ने ॥ कलिंदकन्यारमणैकबंधोमांत्राहि० ॥ ४८ ॥ वैकुंठविष्णोनरकासुरारेचराचराधाररथांगपाणे ॥ काकुत्स्थवंशाधिपकोशलेंद्रमांत्राहि० ॥ ४९ ॥ मूढोमदन्योभवतेनकोपियोदेवकीसूनुवचोविलंघ्य ॥ पुत्रेदुराशांकृतवान्सुरेशलभेतकोदिष्टविनष्टवस्तु ॥ ५० ॥ इति श्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येसुदेवस्यपुत्रविलापोनाम पंचदशोऽध्यायः ॥ ॥ १५ ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ एवंविलपतस्तस्यबहुशोकयुतस्य च ॥ अकालजलदोभ्यागाद्गर्जन्नाच्छादयन्दिशम् ॥ १ ॥ ववर्षाविरतं वारिनूनंस्फुरितविद्युतः ॥ अत्यासारातिवाताभ्यांतर्जयन्निवमानवान् ॥ २ ॥ गंभीरतमसालुप्तदिग्विवेकविकल्पकः ॥ ववर्षमासमात्रंचसांवर्तकइवापरः ॥ ३ ॥

विलापो नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ इसप्रकार महाशोकसे उस ब्राह्मणके विलाप करनेपर अकाल मेघ गर्जनासे दशोंदिशाओंको आच्छादन करता प्राप्त हुआ ॥ १ ॥ और बिजली चमकने लगी जल वर्षने लगा और दिशाओंको आच्छादन कर मनुष्योंको तर्जन करती पवन चलने लगी ॥ २ ॥ गंभीर अंधकारसे दिशाओंका ज्ञान किसीको न रहा एक महीनेतक प्रलयकी समान वर्षा होती रही ॥ ३ ॥

परन्तु पुत्रशोकके कारण ब्राह्मणने कुछभी न जाना और पुत्रको गोदीमें लिये कुररेके समान विलाप करनेलगा ॥ ४ ॥ उसने कुछभी जलकी वर्षाको न जाना और उसके सिवाय और कुछभी न कहता हुआ न अपने आसनसें चलायमान हुआ न उसको शांति हुई ॥ ५ ॥ उसको अज्ञात पुरुषोत्तम मास बीतगया और वह नारायणके नाम उच्चारण करनेसे तपोरूप होगया जिसके कारण महामना कमललोचन विष्णु भगवान् प्रगट हुए ॥ ६ ॥ जगन्नाथके प्रगट होतेही अनेक पापराशी दूर हो गई जब उन्होंने लक्ष्मीपति लक्ष्मणके बडे भ्राताको देखा ॥ ७ ॥ तब ब्राह्मणने

नासौविज्ञातवान्किंचित्पुत्रशोकनियंत्रितः ॥ तथैवसुतमादायरुरोदकुररोयथा ॥ ४ ॥ नपयोबुबुधेचैवजल्पन्नान्यन्नकिंचन ॥ नचचालनसुष्वापनोपलेभेसुखंस्थितः ॥ ५ ॥ तदज्ञाततपोजातंपुरुषोत्तममासतः ॥ विष्णुःकमलपत्राक्षःप्रादुरासीन्महामनाः ॥ ६ ॥ प्रादुर्भूतेजगन्नाथेविलीनाःपापराशयः ॥ ददर्शकमलाकांतंभूषणंलक्ष्मणाग्रजम् ॥ ७ ॥ द्विजस्तुहृष्टमनाःपुत्रदेहंभूमौनिधायच ॥ सपत्नीकोनमश्चक्रेदंडवज्जानकीपतिम् ॥ ८ ॥ कोटिचंद्रसमाह्लादंकोटिसूर्यातिभासुरम् ॥ प्रसन्नवदनाम्भोजंसुपर्णोपरिराजितम् ॥ ९ ॥ तंहरिंसायुधंदृष्ट्वाविस्मितोभूद्द्विजोत्तमः ॥ भगवानपिविश्वात्मातुष्टस्तत्कर्मरंजितः ॥ १० ॥ उवाचप्रश्रितांवाणींपीयूषस्राविणीं मुदा ॥ द्विजसाधनसंभूतपुण्यर्द्धिबहुयंत्रितः ॥ ११ ॥

पुत्रका देह पृथ्वीमें रखकर पत्नीसहित जानकीपतिको प्रणाम किया ॥ ८ ॥ कोटिचन्द्रकी समान आह्लाद देनेवाले करोड़ सूर्यके समान प्रकाशमान प्रसन्न कमलसा मुख गरुडके ऊपर विराजमान ॥ ९ ॥ आयुध लिये नारायणको देख ब्राह्मण विस्मित होगया और विश्वात्मा भगवान्भी उसके कर्मसे प्रसन्न हुए ॥ १० ॥ और अमृतकी समान सुन्दर वाणी बोले कारण कि, ब्राह्मणके साधनसे वह महाप्रसन्न होगयेथे ॥ ११ ॥

भगवान् बोले हे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! इस समय तू बडा पुण्यवान् है तेरे भाग्यका प्रमाण मैंभी नहीं करसकता हूं ॥ १२ ॥ हे ब्राह्मण ! तुम श्रवण करो बारह सहस्र वर्षतक यह तुम्हारा सुख देनेवाला पुत्र इन्द्रके ऐश्वर्यकी समान सुख देनेवाला होगा ॥ १३ ॥ हे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! इसप्रकार के सुखकी प्राप्ति तुम करोगे देव मनुष्य नाग ऋषि यक्ष किन्नर ॥ १४ ॥ तुम्हारे पुत्रके ऐश्वर्यको कोईभी प्राप्त न होगा तुम्हारे पुत्रका ऐश्वर्य देखकर उसकी स्पृहा करैंगे और तुम्हारे पुत्रका विलास देखकर वे स्वयं पुत्रकी उत्कंठा करैंगे ॥ १५ ॥ जिसप्रकार सुखदायक पुत्र दूसरोंने तपसे प्राप्त

श्रीविष्णुरुवाच ॥ भोभोद्विजवरश्रीमन्पुण्यवानसिसांप्रतम् ॥ त्वद्भाग्यमानंकर्तुंनोमयाप्यन्यैर्नशक्यते ॥ १२ ॥ शृणुधात्रीसुरेशानयत्तेभाविब्रवीमिते ॥वर्षद्वादशसाहस्रंपुत्रोयन्तेसुखप्रदः ॥ १३ ॥ तादृशंपुत्रसौख्यंत्वंप्राप्स्यसिद्विजसत्तम ॥ देवमानवनागाश्च ऋषयोयक्षकिन्नराः ॥ १४ ॥ त्वत्तनूजसुखंवीक्ष्यसस्पृहास्त्वत्प्रशंसकाः ॥ त्वामेवबहुमन्यंतेभविष्यंतिसुतोत्सुकाः ॥ १५ ॥ यथान्येतपसालब्धाःपुत्राहिसुखदायकाः ॥ भवंतिनतथाविप्रमयादत्तःसुतस्तव ॥ १६ ॥ पुरामुनीश्वरःकश्चिद्धनुषाख्योमहामनाः ॥ मृतियुक्तान्सुताँल्लोकेपश्यन्दीनमनाभवत् ॥ १७ ॥ सतपस्तत्तवान्नद्याःपुलिनेत्वन्नवर्जितम् ॥ तपंतंबहुकालंतर्मायुःसेंद्राःसुरावदन् ॥ ॥ १८ ॥ वरेणच्छन्दयामासुरमरंवृतवान्सुतम् ॥ तमूचुर्निर्जरानैवममरःकोऽपिभूतले ॥ १९ ॥

किये हैं हे द्विज ! इसप्रकारका तुम्हारा पुत्र न होगा ॥ १६ ॥ पहले एक मुनीश्वर धनुष नामक महात्मा थे वह अपने पुत्रोंको मृत्युयुक्त देखकर बडे दीनमन हो गये ॥ १७ ॥ तब वह निर्धनतायुक्त पुत्र होनेके निमित्त तप करने लगे बहुत कालपर्यन्त उनको तप करते देखकर इन्द्रादि देवता कहने लगे ॥ १८ ॥ और बरदान देनेके निमित्त उसको वरण किया तब उसने कहा मैं ऐसे पुत्रकी इच्छा करता हूं जो अमर हो, देवताओंने

कहा पृथ्वीमें कोई अमर नहीं हो सकता ॥ १९ ॥ तब ब्राह्मणने देवताओंसे कहा तौ किसी निमित्तताके युक्त आयु दीजिये देवता बोले क्या निमित्त किया जाय सो आप कहिये ब्राह्मणने निमित्तका वर्णन किया ॥ २० ॥ समयपर उस धनुष नामकने आनन्द देनेवाले पुत्रको प्राप्त किया और उसका आनन्द पुत्रके साथ बढने लगा ॥ २१ ॥ उस पुत्रको उस महात्माने सम्पूर्ण विद्या पढाई तब अपने पुत्रको विद्यायुक्त देखकर मुनीश्वर कहने लगे ॥ २२ ॥ हे पुत्र ! विद्यासे मुनीश्वरोंको जय करता हुआ विचरणकर यह वचन सुन वह मुनि सम्पूर्ण ब्राह्मणोंको उद्वेजित करता हुआ विचर

पुनराहद्विजोदेवान्निमित्तायुर्भवेत्सुतः ॥ सुराःप्रोचुर्निमित्तंकिंवदसोप्यवदद्द्विजः ॥ २० ॥ धनुषाख्यःसुतंलेभेकालेनाल्पेनमानद ॥ सपुत्रोववृधेतस्यसाकंहर्षेणमानदः ॥२१॥ तत्पुत्रंपाठयामाससर्वांविद्यांमहामनाः ॥ स्वपुत्रंविद्ययायुक्तंदृष्ट्वोवाचमुनीश्वरः ॥२२॥ चरपुत्रमुनीन्सर्वान्विद्ययाविजयन्सदा ॥ तथेत्युक्त्वाचचारासौमुनिमंडलमुद्विजन् ॥ २३ ॥ वरदानकृतोत्साहोब्राह्मणानवमन्यत ॥ कदाचिन्महिषोनामऋषिःपरमकोपनः ॥ २४ ॥ शशापमुनिपुत्रंतमद्यैवमरणंव्रज ॥ चेतसाचिंतयामासनिमित्तायुरयंभवेत् ॥ २५ ॥ इतिचिंतयतातेननिःश्वासात्प्रकटीकृताः ॥ महिषाःकोटिशोविप्रतैर्गिरिःशकलीकृतः ॥ २६ ॥ ममारमुनिपुत्रोऽपि धनुषाख्योतिदुःखितः ॥ विलप्यबहुकालंसगृह्यपुत्रकलेवरम् ॥ २७ ॥

नेलगा ॥ २३ ॥ और वरदानके उत्साहके कारण ब्राह्मणोंका तिरस्कार करनेलगा किसी महिष नामके परम कोपवान् ऋषिने ॥ २४ ॥ उसको शाप दिया कि तू अभी मृत्युको प्राप्तहो परन्तु फिर चित्तसे विचारने लगा कि यह तो निमित्तायु है ॥ २५ ॥ यह विचारकर उन ऋषिराजने अपने श्वाससे अनन्त महिष प्रगट किये उन्होंने वह पर्वत खण्ड खण्ड करदिया ॥ २६ ॥ उसके फटनेसे महा दुःखी हो मुनिपुत्रभी मृत्युको प्राप्त

हुआ तब बहुत कालतक विलापकर पुत्रके कलेवरको ले ॥ २७ ॥ उसका पिता बडा दुःखीहो अग्निमें प्रविष्ट हुआ इसप्रकार नीतिसे सुख देनेवाले बलसे प्राप्त पुत्र नहीं होते हैं ॥२८॥ और यह पुत्र तुझको मेरे वाहन गरुडजीने दिया है यह तुझको इस जन्ममें दुर्लभ पुत्र सुखको देगा ॥२९॥ और मृत्युको प्राप्त होकर तू ब्रह्मलोकमें अनेक सुखको प्राप्त होकर निवास करैगा फिर बहुत कालकतक पृथ्वीमें चक्रवर्ती होकर रहेगा ॥ ३० ॥ उस समय तुम महापुण्यको प्राप्त हो पृथ्वीमें अनेक भोगोंको भोगोगे तीस सहस्र संवत्सर पर्यन्त राज्य करेगा ॥३१॥चार पुत्र और एक पुत्री तुम्हारे

प्रविवेशपितावह्निंसुतदुःखातिपीडितः ॥ एवंबलात्तपुत्रायेभवेयुर्नातिसौख्यदाः ॥ २८ ॥ अयंतुतनयस्तुभ्यंसुपर्णोममवाहनम् ॥ इहजन्मनितेदत्त्वापुत्रसौख्यातिदुर्लभम् ॥ २९॥ मृतस्त्वंब्रह्मणोलोकेवसिष्यसिसुखैर्युतः ॥ बहुकालंततोऽवन्यांचक्रवर्त्तीभविष्यसि ॥ ३० ॥ तदापित्वंमहापुण्यैःक्षितौख्यातोभविष्यसि ॥ संवत्सराणांनियुतत्रयंराज्यंकरिष्यसि ॥ ३१ ॥ चत्वारस्तनयाभाव्यास्त त्रपुत्रीचतेऽपरा ॥ भार्याचात्यंतसुभगाइयमेवभविष्यति ॥ ३२ ॥ भुक्त्वाभोगान्सुदुष्प्रापान्सुरैरप्यमराधिपैः ॥ अयमेवतदापु त्रस्त्वन्निस्तारनिमित्तभूः ॥ ३३ ॥ भविष्यतिशुकोभूत्वावाक्यमेकंवदिष्यति ॥ श्रुत्वावाक्यंशुकप्रोक्तंनिर्विण्णस्त्वंगृहाश्रितः ॥ ३४ ॥ दुर्मनाश्चिंत्यमानस्तुवाल्मीकिंमुनिमाप्स्यसि ॥ तेननिर्भिन्नसंदेहजालःसद्योविमुक्तिमान् ॥ ३५ ॥

होंगी और यही अत्यन्त सौभाग्यवती भार्या तेरे होगी ॥ ३२ ॥ देवताओंकोभी दुष्प्राप भोगोंको भोगकर यही पुत्र तुम्हारे निस्तार करनेका निमित्त होगा ॥ ३३ ॥ अर्थात् तोतेका रूप धारणकर एक वचन बोलेगा शुकके वचन सुनकर तू घरसे विरक्त हो जायगा॥ ३४ ॥तब दुर्मनाय मान हो चिन्ता करता हुआ वाल्मीकि ऋषिको प्राप्त होगा उससे सन्देह रहित हो शीघ्र सब दुःखजाल दूर. होजायँगे ॥ ३५ ॥

हे ब्राह्मण ! मेरे चरणसेवनसे उत्तम कालके अंगको प्राप्त होकर स्त्रीसहित तू मेरे उत्तम स्थानको प्राप्त होगा ॥ ३६ ॥ जिस पदको जाकर कभी फिर निवृत्ति नहीं होती शान्त संन्यासी जिसकी सदा उत्कंठा करते रहते हैं इस प्रकार अमित तेजस्वी विष्णु भगवान्‌के कहनेसे ॥ ३७ ॥ वह ब्राह्मणपुत्र पिताका मन प्रसन्न करता हुआ उठ बैठा और सब देवता प्रसन्न हो वारंवार फूलोंकी वर्षा करने लगे ॥ ३८ ॥ सब दिशा प्रसन्न और सब जन्तु परम आनन्दित हुए और शुकदेवनेभी अपने माता पिता तथा हरिको प्रणाम किया ॥ ३९ ॥ उस ब्राह्मणके पुत्रको देख गरुडजी

कालोत्तमांगमाकृष्यपदासव्येनभूसुर॥मदीयमुत्तमस्थानंसपत्नीकःसमेष्यसि ॥ ३६ ॥ यद्गत्वाननिवर्ततेशांताःसंन्यासिनोऽमलाः ॥ एवंप्रवदतस्यस्यविष्णोरमिततेजसः॥३७॥द्विजात्मजःसमुत्तस्थौपित्रोरानंदयन्मनः ॥ सुराःसर्वेचसंतुष्टाःकुसुमैर्ववृषुर्मुहुः ॥ ३८ ॥ सुप्रसन्नादिशोजाताःसानंदाःसर्वजंतवः ॥ ननामशुकदेवोपिपितरंमातरंहरिम् ॥ ३९ ॥ सुपर्णोप्यतिसंहृष्टःससुतंवीक्ष्यभूसुरम् ॥ दंपतीअतिसंहृष्टौपरिषस्वजतुर्मुदा ॥ ४० ॥ द्विजोभूच्चकितस्तूर्णमतिविस्मितमानसः ॥ प्रोवाचभुवनेशानंकेनतुष्टोसिमेविभो॥४१॥ चतुर्वत्सरसाहस्रंतपस्तप्तंपुरामया ॥ नददौकिंसुतंमह्यंभाग्यहीनस्त्वितिब्रुवन् ॥ ४२ ॥ अधुनाकेनमेभाग्यमुद्भूतंजगदीश्वर ॥ ये ननष्टं सुतंभोगानन्यजन्मनिदुर्लभान् ॥ ४३ ॥

महा सन्तुष्ट हुए और वे दोनों स्त्री पुरुष महा प्रसन्न हो पुत्रको हृदयसे लगाते हुए ॥४०॥और ब्राह्मणभी विस्मयको प्राप्त हो बडा चकित हुआ और नारायणसे बोला ॥ हे प्रभो ! आप क्यों मेरे ऊपर प्रसन्न हुए इसका कारण कहो ॥४१॥ पहिले मैंने चार सहस्र वर्षतक तप किया उस समय भी आपने भाग्यहीनताके कारण मुझको पुत्र न दिया ॥ ४२ ॥ हे जगदीश्वर ! अब किस पुण्यके प्रतापसे मैं भाग्यवान् होगयाहूं सो आप कहिये

जिससे नष्ट पुत्रकी प्राप्ति हुई और अन्य जन्ममेंभी दुर्लभ भोग भोगूंगा ॥ ४३ ॥ और अन्तमें देवदुर्लभ मुक्ति मिलेगी हे महाराज ! सो आप कहिये इसमें मुझे महा संदेह है ॥ ४४ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्ये सुदेवस्यपुत्रजीवनंनाम षोडशोध्यायः ॥ १६ ॥ विष्णुभगवान् बोले ॥ हे द्विज राज ! जो तुमने किया है वैसा कोई नहीं करेगा जिसने कि, देवताओंको दुरासद मेरा स्थान जीतलिया है ॥ १ ॥ तथा वह लोकभी जीतलिया इससे मैं तेरे ऊपर महा प्रसन्नहूं जिससे मैं प्रसन्न हुआहूं इस वार्ताको तुम जानते नहीं हो ॥ २ ॥ यह मेरा प्रिय पुरुषोत्तम मास बीतता है काम

तदंतेमोक्षमेवापिसुरैरपिसुदुर्लभम् ॥ तन्मेब्रूहिमहाराजसंशयोत्रमहान्मम॥४४॥इति श्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येसुदेवस्यपुत्रजीवनंनाम षोडशोऽध्यायः॥१६॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ द्विजराजकृतंयत्तेनैतदन्यःकरिष्यति॥ जितंयेनममाप्युच्चैःपदंदेवैर्दुरासदम्॥१॥ अयंलोकोऽपिविजितस्तुष्टश्चाप्यहमद्भुतम्॥नतद्वेत्तिभवान्नूनंयेनाहंतुष्टिमाप्तवान्॥२॥अयंममप्रियोमासःप्रयातःपुरुषोत्तमः॥ कामात्क्रोधाच्चविद्वेषाल्लोभाद्दंभाद्भयादपि॥३॥एकमप्युपवासंयःकरोत्यस्मिन्द्विजोत्तम ॥ स्नानंवापिरजोमात्रंदानंवाचापिशोभनम् ॥४॥ सोऽनेकजन्माचरितकोटिपातकपंजरम् ॥ भित्त्वाप्नोतिमहत्स्थानंनिर्मलंस्वेनकर्मणा ॥५॥ सुतशोकमिषेणाद्यत्वयाततंमहत्तपः॥मासमात्रंनिराहारस्त्वकालजलदोभ्यगात्॥६॥त्रिषुलोकेषुतेविद्वन्स्नानानिप्रतिवासरम्॥ अभ्रावकाशंदुःध्प्राषमस्मिह्लब्धंत्वयातपः॥७॥

क्रोध लोभ विद्वेष पाखण्ड भयसे ॥ ३ ॥ जो ब्राह्मण इसमें एकभी उपवास करता है वा स्नान अथवा रजमात्रभी जो दान देता है ॥ ४ ॥ वह अनेक जन्मके किये कोटि दुस्तर पापोंको दूर कर अपने निर्मल मेरे कर्मसे शाश्वत स्थानको प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ तैंने पुत्रशोकके निमित्तसे बडा तप किया है अकाल मेघकी वर्षा सहकर एक महीने पर्यन्त निराहार रहा ॥६॥ हे ब्रह्मन् ! त्रिलोकीमें तू प्रतिदिन तप करके प्रतिदिन स्नान करता रहा

और अनाच्छादित स्थानमें स्थिति करनेसे तुझको महातपकी प्राप्ति हुई है ॥ ७ ॥ आसन जीते हुए निराहार जितालोक जितेन्द्रिय शोकमेंभी मेरेही नामका जप बराबर करते रहे ॥ ८ ॥ हे ब्राह्मण ! जो कर्म तैंने अहंकार रहित होकर किया है ऐसा कौन कर सकता है हे द्विज तुम्हारे विना कोईभी पुरुष यह तप करनेको समर्थ नहीं है ॥ ९ ॥ यह लोक परलोक तथा इससे आगेकेभी लोक तैंने इस कृत्यसे जीत लिये अब और क्या सुन्नेकी इच्छा है ॥ १० ॥ हे द्विजश्रेष्ठ इस तेरे साधनकी महिमा मैं कहनेको समर्थ नहीं हूं दूसरा कैसे कह सकता है ॥ ११ ॥ सुदेवने कहा ॥ हे

जितासनोजिताहारोजितालोकोजितेंद्रियः ॥ मन्नामालापचतुरःशोकेनापिभवानभूत् ॥८॥ निरहंकारिणाविप्रयत्कृतंतेकरोतिकः ॥ नैतत्कर्तुंपुमाञ्छक्तस्त्वदन्यःपृथिवीसुर ॥९॥ अयंलोकःपरोलोकःपरात्परतरोपिते॥जितस्त्वनेनकृत्येनकिंपुनःपरिपृच्छसि ॥१०॥ त्वदीयसाधनस्यास्यमहिमानंद्विजोत्तम ॥ नाहंवक्तुंसमर्थोस्मिकथमन्यःक्षमोभवेत् ॥ ११ ॥ सुदेवउवाच ॥ कोसौमासस्त्वयावि ष्णोवर्ण्यतेबहुविस्तरम् ॥ किमस्मिन्करणीयंस्यात्कोविधिर्नियमश्चकः ॥ १२ ॥ किंप्रदेयंचकोदेवःसर्वंविष्णोवदस्वमे ॥ इष्टदेवोसि मेस्वामिन्भुक्तिमुक्तिप्रदप्रभो ॥ १३ ॥ नारायणउवाच ॥ मासाःसर्वेद्विजश्रेष्ठसूर्यदेवस्यसंक्रमाः ॥ अधिमासस्त्वसंक्रांतिर्मासो सौशरणंगतः ॥ १४ ॥

विष्णुजी ! वह क्या महीना है जिसका आपने बडा विस्तार वर्णन किया है क्या इसमें कर्तव्य है इसकी विधि और नियम क्या है ॥ १२ ॥ इसमें क्या देना चाहिये कौन इसका देवता है यह आप हमसे वर्णन कीजिये हे स्वामिन् ! मुक्ति भुक्ति देनेवाले आप मेरे इष्ट देवही हो ॥ १३ ॥ हे द्विजश्रेष्ठ ! संपूर्ण महीने सूर्यदेवकी संक्रांतिके कारण होते हैं अधिमासमें संक्रांति नहीं होती यह इस कारण मेरी शरणमें प्राप्त हुआ ॥ १४ ॥

तबसे यह पुरुषोत्तम मास मुझे सबसे अधिक प्रिय है. हे विप्र ! मैं सर्वथा इस पुरुषोत्तम मासके स्वामित्वमें कल्पित हुआ हूं ॥ १५ ॥ मेरा प्रिय होनेसेही इसकी पुरुषोत्तम संज्ञा हुई है और महीनोंमें इस प्रकारसे मैं प्रियता नहीं करता ॥ १६ ॥ और महीनोंमें जो कृत्य हैं उसके स्वामी सूर्यदेव हैं परन्तु पुरुषोत्तम मासमें जितने कृत्य हैं ॥ १७ ॥ उनका मैं प्रभु अच्छीप्रकारसे फलका देनेवाला हूं हे पापरहित ! जो इसमें कर्तव्य हैं सो सुन ॥ १८ ॥ जो फल भलीप्रकार सौ वर्ष तप करनेसे प्राप्त होता है वह फल इस महीनेमें एक दिन व्रत करनेसे प्राप्त होता है ॥ १९ ॥

ममप्रियतमोऽत्यंतंमासोयंपुरुषोत्तमः॥अस्याहंसततंविप्रस्वामित्वेपर्यवस्थितः॥१५॥ पुरुषोत्तमतातस्मादस्यजातामदात्मनः॥ मासेष्वन्येषुमेस्वाम्यमीदृशंनकदाचन॥१६॥सर्वमासेषुयत्कृत्यंतत्स्वामीकश्यपात्मजः॥पुरुषोत्तममासेषुयानिकृत्यानिमानद॥१७॥ तेषामहंप्रभुःसम्यक्फलदातास्मिसर्वदा॥शृणुविप्रफलंह्यस्मिन्कर्त्तव्यस्यचमेऽनघ॥१८॥सम्यक्चीर्णेनतपसाशतवर्षमितेनच॥ यत्फलंलभतेविप्रमासेस्मिन्नेकवासरात्॥१९॥कोटिशोब्राह्मणान्सम्यक्संभोज्यस्वर्णभाजने॥विविधैःशोभनैरत्नैर्यत्पुण्यमुपलभ्यते २०॥ सावित्रीलक्षजाप्येनलभ्यतेयत्फलंनरैः॥सकृन्मंत्रजपेनैवमासेस्मिन्नुपलभ्यते॥२१॥तत्पुण्यंलभ्यतेमासिसकृद्ब्राह्मणतर्पणात्॥नालभ्यंदृश्यतेकिंचिन्मत्प्रियेपुरुषोत्तमे ॥ २२ ॥द्वादशाक्षरमत्रोयंयोजपेत्कृष्णसंनिधौ ॥ दशवारमपिब्रह्मन्सकोटिफलमश्नुते ॥ २३ ॥

जो स्वर्ण पात्रोंमें करोडोंसौ ब्राह्मणोंके जिमानेका फल है जो पुण्य अनेक सुवर्ण और रत्न दानसे प्राप्त होताहै ॥ २० ॥ तथा जो फल लाख गायत्रीके जपनेसे प्राप्त होताहै वह फल इस महीनेमें एकही बार मंत्रके जपनेसे प्राप्त होताहै ॥ २१ ॥ अथवा इस महीनेमें एकही बार ब्राह्मणको तृप्त करनेसे वह पुण्य फल मिलताहै मेरे प्रिय पुरुषोत्तम मासमें जपादि करनेसे संसारमें कोई वस्तु अलभ्य नहीं रहती ॥ २२ ॥ जो नारायणके निकट द्वादशा

क्षरका जप करताहै वा दशवारभी जप करताहै वह अनन्त फलको प्राप्त होताहै अर्थात् उसे एक करोड मंत्र जपनेका फल मिलताहै ॥ २३ ॥ पुरुषोत्तम मासमें सुकृत करनेसे सात कुल तक पवित्र कर देताहै इसमें पंचाक्षरी महाविद्याको जो पांचवार भी जपताहै ॥ २४ ॥ वह सैकडों पाप दूर करके परम पदको प्राप्त होजाता है यदि आसक्त होकर फल मूलादिसे ब्राह्मणको तृप्त करै तो ॥ २५ ॥ उसको पुरुषोत्तम मासमें सैकडों ब्राह्मणोंको भोजन करानेका फल मिलता है छः वा आठ वर्णमें कोई हो जो पुरुषोत्तम भगवानका स्मरण करता है ॥ २६ ॥ हे ब्राह्मण सौवार स्मरण करनेसे

कृत्यंपुरुषोत्तमेयत्तुपुनात्यासप्तमंकुलम् ॥ पंचाक्षरींमहाविद्यांपंचकृत्वोऽपियोजपेत् ॥२४॥ विधूयाघसहस्राणिसयातिपरमंपदम् ॥ सुभक्त्याफलमूलाद्यैर्यदितर्पयतेद्विजम् ॥ २५ ॥ तेनस्युर्भोजिताविप्राःशतशःपुरुषोत्तमे ॥ षड्वर्णमष्टवर्णवायःस्मरेत्पुरुषोत्तमे ॥ २६ ॥ शतवारमपिब्रह्मन्सकोटिफलमश्नुते ॥ दरिद्रार्णवमुत्क्रम्यवैभवंभुविलभ्यते ॥२७॥ विष्णोरनुग्रहंप्राप्यगाणपत्यपदं व्रजेत् ॥ मासंसर्वोत्तमंप्राप्यजानकीजीवनंहरिम् ॥ २८ ॥ नपूजयतिमंदात्मासगच्छेन्नरकंचिरम् ॥ ध्वजारोपणमुच्चैर्योमासेऽस्मिन्हरिमंदिरे ॥ २९ ॥ करोतिचैलखंडेनतस्यपुण्यफलंशृणु ॥ वीणावाद्यमृदंगाद्यैर्वादित्रैर्नृत्यगायनैः ॥ ३० ॥

करोड मंत्र जपनेका फल होता है और दरिद्रसागरके पार होकर ऐश्वर्यमें लय होजाता है ॥ २७ ॥ फिर विष्णुके अनुग्रहको प्राप्त हो गाणपत्यके पदको प्राप्त होताहै इस सर्वोत्तम मासको प्राप्त होकर जानकीजीवन नारायणको ॥ २८ ॥ जो मंदात्मा पूजन नहीं करते हैं वह चिरकालतक नरकमें जाते हैं जो इस महीनेमें हारिमंदिरमें ध्वजारोपण करते हैं ॥ २९ ॥ अथवा जो वस्त्रसे ध्वजा चढाते हैं उसके पुण्यका फल

सुनो वीणा बाजे मृदंगादि बाजे नृत्य गायन ॥ ३० ॥ आदि ऊँचे स्वरसे विष्णुकी स्तुति करता है वह आनंदको प्राप्त होता है वह सहस्र युग पर्यन्त आनंद कर फिर विष्णुके लोकको प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥ सहस्र दीपदानका सब भय हरनेवाला फल सुनो सुवर्णके चांदीके ताम्बेके अथवा पीतलके पात्रमें॥ ३२॥तेलका अथवा घृतके पात्रमें जो मनुष्य दीपदान करता है वह अत्यन्त सुखको प्राप्त हो मेरा प्रिय होता है ॥ ३३ ॥ वह अनेक वर्षोंतक नाना प्रकारके भोगोंको भोगकर पीछे परब्रह्म परमात्माके सालोक्यको प्राप्त होता है ॥ ३४ ॥ इस कारण सब प्रकार विष्णुमंदिरमें

स्तुतिंविष्णोःकरोत्युच्चैर्मोदत्याखण्डलांतिके ॥ मोदित्वायुगसाहस्रंपश्चाद्धरिपदंव्रजेत्॥३१॥दीपदानस्यसाहस्रंशृणुसर्वभयापहम् ॥ सौवर्णेराजतेताम्रेपैत्तलेपार्थिवेऽपिच॥३२॥तैलेनचघृतेनापिभाजनेदीपदोनरः।अत्यन्तंसुखमाप्नोतिमत्प्रियेपुरुषोत्तमे॥३३॥भुक्त्वा भोगाञ्छुभान्सर्वान्संवत्सरगणान्बहून् ॥ पश्चात्प्रयातिसालोक्यंब्रह्मणःपरमात्मनः॥ ३४॥ तस्मात्सर्वात्मनाकार्योदीपःश्रीविष्णुमंदिरे॥मन्मंदिरगतंध्वांतंयेनदीपैर्विनाशितम् ॥ ३५॥तस्यत्वंतर्गतध्वांतंक्षिणोम्यंतस्थितोह्यहम् ॥ ३६॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येपुरुषोत्तमेकर्तव्यतायावर्णनंनाम सप्तदशोऽध्यायः॥१७॥विष्णुरुवाच ॥ समाप्यैवंशुभंमासमेकस्मिन्नपिवासरे ॥ सुरसद्मनिदीपोवैनकृतोमन्दभाग्यतः ॥ १ ॥ कथंतस्याल्पभाग्यस्यजन्मकोटिगतंदृढम् ॥ दारिद्र्यंनाशमायातिदुर्भाग्यस्याकृतात्मनः ॥ २ ॥

दीपक बालना उचित है मेरे मंदिरमें प्रकाश करनेसे यमलोकका अंधकार दूर होता है ॥ ३५ ॥ और मैं उसके हृदय अन्तरका अन्धकार दूर करदेताहूं ॥३५॥इति श्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्ये पुरुषोत्तमे कर्तव्यतायावर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥श्रीविष्णुजी बोले॥इसप्रकार इस मासको समाप्त कर एक दिनमेंभी जिसने नारायणके आगे दीपदान नहीं किया वह बडा मन्दभागी है ॥ १॥उस अल्पभाग्यके अनेक कोटि जन्म वृथा गये भी

क्षरका जप करताहै वा दशवारभी जप करताहै वह अनन्त फलको प्राप्त होताहै अर्थात् उसे एक करोड मंत्र जपनेका फल मिलताहै ॥ २३ ॥
पुरुषोत्तम मासमें सुकृत करनेसे सात कुल तक पवित्र कर देताहै इसमें पंचाक्षरी महाविद्याको जो पांचवार भी जपताहै ॥ २४ ॥ वह सैकडों पाप
दूर करके परम पदको प्राप्त होजाता है यदि आसक्त होकर फल मूलादिसे ब्राह्मणको तृप्त करै तो ॥ २५ ॥ उसको पुरुषोत्तम मासमें सैकडों ब्राह्मणोंको
भोजन करानेका फल मिलता है छः वा आठ वर्णमें कोई हो जो पुरुषोत्तम भगवानका स्मरण करता है ॥ २६ ॥ हे ब्राह्मण सौवार स्मरण करनेसे

कृत्यंपुरुषोत्तमेयत्तुपुनात्यासप्तमंकुलम् ॥ पंचाक्षरींमहाविद्यांपंचकृत्वोऽपियोजपेत् ॥२४॥ विधूयाघसहस्राणिसयातिपरमंपदम् ॥
सुभक्त्याफलमूलाद्यैर्यदितर्पयतेद्विजम् ॥ २५ ॥ तेनस्युर्भोजिताविप्राःशतशःपुरुषोत्तमे ॥ षड्वर्णमष्टवर्णवायःस्मरेत्पुरुषोत्तमे
॥ २६ ॥ शतवारमपिब्रह्मन्सकोटिफलमश्नुते ॥ दरिद्रार्णवमुत्क्रम्यवैभवंभुविलभ्यते ॥२७॥ विष्णोरनुग्रहंप्राप्यगाणपत्यपदं
व्रजेत् ॥ मासंसर्वोत्तमंप्राप्यजानकीजीवनंहरिम् ॥ २८ ॥ नपूजयतिमंदात्मासगच्छेन्नरकंचिरम् ॥ ध्वजारोपणमुच्चैर्योमासे
ऽस्मिन्हरिमंदिरे ॥ २९ ॥ करोतिचैलखंडेनतस्यपुण्यफलंशृणु ॥ वीणावाद्यमृदंगाद्यैर्वादित्रैर्नृत्यगायनैः ॥ ३० ॥

करोड मंत्र जपनेका फल होता है और दरिद्रसागरके पार होकर ऐश्वर्यमें लय होजाता है ॥ २७ ॥ फिर विष्णुके अनुग्रहको प्राप्त हो गाणपत्यके
पदको प्राप्त होताहै इस सर्वोत्तम मासको प्राप्त होकर जानकीजीवन नारायणको ॥ २८ ॥ जो मंदात्मा पूजन नहीं करते हैं वह चिरकालतक
नरकमें जाते हैं जो इस महीनेमें हरिमंदिरमें ध्वजारोपण करते हैं ॥ २९ ॥ अथवा जो वस्त्रसे ध्वजा चढाते हैं उसके पुण्यका फल

सुनो वीणा वाजे मृदंगादि बाजे नृत्य गायन ॥ ३० ॥ आदि ऊँचे स्वरसे विष्णुकी स्तुति करता है वह आनंदको प्राप्त होता है वह सहस्र युग
पर्यन्त आनंद कर फिर विष्णुके लोकको प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥ सहस्र दीपदानका सब भय हरनेवाला फल सुनो सुवर्णके चांदीके ताम्बेके अथवा
पीतलके पात्रमें॥ ३२॥ तेलका अथवा घृतके पात्रमें जो मनुष्य दीपदान करता है वह अत्यन्त सुखको प्राप्त हो मेरा प्रिय होता है ॥ ३३ ॥ वह
अनेक वर्षोंतक नाना प्रकारके भोगोंको भोगकर पीछे परब्रह्म परमात्माके सालोक्यको प्राप्त होता है ॥ ३४ ॥ इस कारण सब प्रकार विष्णुमंदिरमें

स्तुतिंविष्णोःकरोत्युच्चैर्मोदत्याखण्डलांतिके ॥ मोदित्वायुगसाहस्रंपश्चाद्धरिपदंव्रजेत्॥ ३१॥ दीपदानस्यसाहस्रंशृणुसर्वभयापहम् ॥
सौवर्णेराजतेताम्रेपैत्तलेपार्थिवेऽपिच॥ ३२॥ तैलेनचघृतेनापिभाजनेदीपदोनरः।अत्यन्तंसुखमाप्नोतिमत्प्रियेपुरुषोत्तमे॥ ३३॥ भुक्त्वा
भोगाञ्छुभान्सर्वान्संवत्सरगणान्बहून् ॥ पश्चात्प्रयातिसालोक्यंब्रह्मणःपरमात्मनः॥ ३४॥ तस्मात्सर्वात्मनाकार्योदीपःश्रीविष्णुमं
दिरे॥मन्मंदिरगतंध्वांतंयेनदीपैर्विनाशितम्॥ ३५॥ तस्यत्वंतर्गतध्वांतंक्षिणोम्यंतस्थितोह्यहम्॥ ३६॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममा
हात्म्येपुरुषोत्तमेकर्तव्यतायावर्णनंनाम सप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥ विष्णुरुवाच ॥ समाप्यैवंशुभंमासमेकस्मिन्नपिवासरे ॥ सुरसद्मनिदी
पोवैनकृतोमन्दभाग्यतः ॥ १ ॥ कथंतस्याल्पभाग्यस्यजन्मकोटिगतंदृढम् ॥ दारिद्र्यंनाशमायातिदुर्भाग्यस्याकृतात्मनः ॥ २ ॥

दीपक बालना उचित है मेरे मंदिरमें प्रकाश करनेसे यमलोकका अंधकार दूर होता है ॥ ३५ ॥ और मैं उसके हृदय अन्तरका अन्धकार दूर करदेताहूं
॥ ३६॥ इति श्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्ये पुरुषोत्तमे कर्तव्यतायावर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥ श्रीविष्णुजी बोले॥ इसप्रकार इस मासको समाप्त
कर एक दिनमेंभी जिसने नारायणके आगे दीपदान नहीं किया वह बडा मन्दभागी है ॥ १॥ उस अल्पभाग्यके अनेक कोटि जन्म वृथा गये भी

उस अकृतात्मा पुरुषका दरिद्र कैसे नाशको प्राप्त होजाताहै॥२॥जिसने दीपज्योतिसे समान प्रकाशमान विष्णुका मुख नहीं देखा उसको इस सर्वोत्तम मासमें क्या फल प्राप्त होताहै वह आप सुनिये॥३॥दरिद्र व्याधिवान् मूर्ख शठ सर्वत्र निन्दित होताहै और जहां जहां उसका जन्म होताहै वहां वहां वह नेत्ररोगी व्रणवाला और जड होता है ॥ ४ जो जो मनुष्य पृथ्वीमें महानेत्ररोगी देखे जाते हैं हे द्विजश्रेष्ठ उन उनको तुम पराई स्त्रियोंका देखनेवाला जानो ॥ ५ ॥ अग्नि धाता रवि चन्द्र गौ ब्राह्मण संन्यासी गुरु हरि ब्रह्मा ईशानः इनके भक्तोंको तथा परस्त्रीको ॥ ६ ॥

नालोकिविष्णुवदनंदीपज्योतिःप्रकाशितम् ॥ मासेसर्वोत्तमेपुण्येतस्यकिंस्याच्छृणुष्वतत् ॥ ३ ॥ दारिद्र्योव्याधितोमूर्खःषंढःसर्वत्र निंदितः ॥ यत्रयत्रावतारीस्यान्नेत्ररोगीव्रणीजडः ॥ ४ ॥ येयेनयनरोगाढ्याहृश्यंतेभुविमानवाः ॥ तेतेज्ञेयाद्विजश्रेष्ठपरदारावलोकिनः ॥ ५ ॥ अग्निंधातुंरविंचन्द्रंगांविप्रंन्यासिनंगुरुम् ॥ हरिंब्रह्माणमीशानमेषांभक्तंपरस्त्रियम्॥६॥ उच्छिष्टानिर्विशंकाश्चप्रेक्षंतेयेनराधमाः ॥ पतंतिनरकेघोरेपश्चान्नयनरोगिणः ॥ ७ ॥ सकथंपातकान्मर्त्योमुच्यतेभवपाशतः ॥ नालोकयतिमासेऽस्मिन्दीपज्योतिर्गतंहरिम् ॥ ८ ॥ येनाहंकमलानाथोनार्चितस्तुलसीदलैः ॥ सुगन्धैःकोमलैर्गंधैः सकथंमुक्तिमाप्स्यति ॥ ९ ॥ अन्यैःकोटिमितैः पुष्पैःपूजानारायणेकृता ॥ सुगन्धतुलसीपत्रैरेकेनापिकृताभवेत् ॥ १० ॥

उच्छिष्ट निश्शंकित हो जो क्रूर दृष्टिसे देखते हैं वे दुष्ट पहले घोर नरकमें पडकर पीछे जहां जन्मते हैं नेत्ररोगी होते हैं ॥ ७ ॥ वह मनुष्य किस प्रकार यमराजके घोर पाशों और पातकोंसे छूट सकता है जो पुरुषोत्तम मासमें दीपक बालकर नारायणका दर्शन नहीं करता है ॥८॥ जिन्होंने तुलसी दलसे कमलानाथका पूजन नहीं कियाहै अथवा सुगंधिवाले कोमल पुष्प नहीं चढाये वह किसप्रकार मुक्तिका भाजन होसक्ताहै ॥९ ॥ जिसने एकभी

सुगंधित तुलसीपत्रसे नारायणकी पूजाकीहै ऐसा जानो कि उन्होंने करोडों दूसरे फूल चढा दियेहैं ॥ १० ॥ जो भक्तिसे तुलसीदल द्वारा नारायण जगन्नाथका पूजन करताहै वह अपने दश पहले और दश अगले पितरोंका उद्धार करताहै ॥ ११ ॥ वह परम स्थानको प्राप्त होता है जहां जाकर शोच करना नहीं पडता । जिसने पुरुषोत्तमम समें शालग्रामका पूजन कियाहै ॥ १२ ॥ वह फिर माताके उदरमें शयन नहीं करता जिसने अप्रमादसे शालग्रामके स्नानका जलपान किया है ॥ १३ ॥ उस बुद्धिमान्‌को फिर माताका दुग्धपान नहीं करना पडता चंपक, करवीर, चमेली, मुद्गर ॥ १४ ॥ कर्णिकार

वृंदादलैर्जगन्नाथंभक्त्यासंपूजयन्नमन् ॥ आत्मनासाकमुद्धृत्यदशपूर्वान्दशापरान् ॥ ११ ॥ प्रयातिपरमंस्थानंयत्रगत्वानशोचति ॥ शालग्रामशिलायेनपूजितापुरुषोत्तमे ॥ १२ ॥ जननीजठरावासीनभूयोजायतेनरः ॥ शालग्रामशिलातोयंपीतंयेनाप्रमादिना ॥ ॥ १३ ॥ नभूयःपिबतिप्राज्ञःस्तन्यंमातुःकदाचन ॥ चंपकैःकरवीरैश्चजातीचंपकमुद्गरैः ॥ १४ ॥ कर्णिकारैश्चकमलैर्बिल्वपत्रैः सुशोभनैः ॥ मल्लिकायूथिकाकुंदैर्मालतीकिंशुकोत्करैः ॥ कैलासनिलयःशर्वश्चार्चितःपुरुषोत्तमे ॥ १५ ॥ तेनसर्वंजितंमन्येत्रैलोक्यंस्वीकृतंपुनः ॥ १६ ॥ नतदस्तिपदंब्रह्मंस्तदलभ्यंतुयद्भवेत् ॥ शर्वःशतधृतिर्विष्णुर्नानृणस्तस्यकुत्रचित् ॥ १७ ॥ तिलतुल्यं नमेध्यंस्याज्जगत्सुद्विजसत्तम ॥ पृथिव्यांसर्वदानेभ्यस्तिलदानंविशिष्यते ॥ १८ ॥

कमल सुन्दर बेलपत्र चमेलीकी लता कुंद मालती किंशुकोत्करद्वारा ॥ १५ ॥ कैलासवासी शंकरका जिन्होंने पुरुषोत्तममासमें पूजन किया उसने मानो तीनों लोकोंको जीतकर अपने वशमें करलियाहै ॥ १६ ॥ हे ब्राह्मण ! ऐसा कोई पद नहीं है जो इस मासमें पूजन करनेसे प्राप्त न हो इससे शिव विष्णु उससे अनृण नहीं होते ॥ १७ ॥ हे द्विजश्रेष्ठ ! संसारमें तिलकी बराबर कोई वस्तु पवित्र नहीं है सब दानोंसे पृथ्वीमें तिलदान अधिक

९

श्रेष्ठ है ॥ १८ ॥ जो द्रोणमात्र तिल सुवर्णसहित ब्राह्मणके निमित्त प्रदान करता है वह इस विष्णुमासके प्रसादसे कहीं जन्म पावै ॥ १९ ॥ कुरूप कुत्सित अल्पायु मत्सरवाला दारद्री अत्यागी कृपण दुर्भागी ॥ २० ॥ अनाडी दुर्बुद्धि पापी रोगी नहीं होता है, तिलका देनेवाला पुरुष धन्य और तिलकांही देनेवाला पवित्र है ॥ २१ ॥ पितरोंको तिल और जल देनेसे अक्षय होता है तिलसे अग्निमें हवन करनेसे देवताओंकीभी तृप्ति होती है



तिलद्रोणंद्विजेंद्रायसहिरण्यंप्रयच्छति ॥ यत्रकुत्रापिसंयातिविष्णुमासप्रभावतः ॥ १९ ॥ कुरूपःकुत्सितोनस्यान्नाल्पायुर्नच मत्सरी ॥ नदरिद्रीनचात्यागीकृपणोनचदुर्भगः ॥ २० ॥ नानार्योनचदुर्मेधानपापीनचरोगवान् ॥ तिलदःपुरुषोधन्यस्तिलदः पुरुषःशुचिः ॥ २१ ॥ तिलोदकंपितृगणेदत्तंभवतिचाक्षयम् ॥ तिलहोमकृतोवह्निर्देवानामपितृप्तिदः ॥ २२ ॥ तिलान्दत्त्वा सकृद्धुत्वापुरुषोत्तमवासरे ॥ आत्मबुद्धिंप्रपद्याशुब्रह्मलोकेमहीयते ॥ २३ ॥ तिलमेकमपिप्राज्ञेविप्रेदत्त्वाभवेच्छुचिः ॥ विक्रयंच पुनःकुर्वन्नरकेयातिदारुणे ॥ २४ ॥ तिलधेनुं गुडधेनुंमधुधेनुंजलस्यच ॥ विष्णोर्मासिद्विजेंद्रायप्रयच्छन्गर्भगोनहि ॥ २५ ॥ शय्यांसोपस्करांधेनुंभूषणानिशुभानिच ॥ व्यंजनानिविचित्राणिकर्पूरागरुचन्दनम् ॥ २६ ॥

॥ २२ ॥ जो पुरुषोत्तम मासके दिनोंमें तिलदानकरता तथा हवन करता है वह आत्मज्ञानको प्राप्तहो ब्रह्मलोकमें गमनकरता है ॥ २३ ॥ एक तिलभी पितरोंके उद्देशसे ब्राह्मणोंको देकर पवित्र होता है और ब्राह्मण तिल बेचनेसे दारुण नरकमें पडता है ॥ २४ ॥ तिलधेनु गुडधेनु मधुधेनु जलधेनु पुरुषोत्तम मासमें विष्णुके निमित्त दान करनेसे फिर उसका जन्म नहीं होता है ॥ २५ ॥ सामग्रीसहित शय्या धेनु सुन्दर भूषण विचित्र व्यंजन कर्पूर अगर

चंदन ॥ २६ ॥ सोने चांदी कांसी तांबेके बरतन धन हाथी घोडे दिव्य महिषी रथ ॥ २७ ॥ पालकी नौकर चाकर स्त्री गहने यह सब उमामहेश्वरको तिलपात्रके साथ समर्पणकर तथा घृतभी निवेदनकर ॥ २८ ॥ यह सब वस्तु अपने वित्तके अनुसार ब्राह्मणको प्रदान करै यह पवित्र पुरुषोत्तम मास विष्णुकी सन्तुष्टिके अर्थ है ॥ २९ ॥ जो मनुष्य नित्य अन्य ब्राह्मणके घरमें भोजन करता है वह एकसेर अन्न लेकर कुंभमें पूजन करै ॥ ॥ ३० ॥ हे विप्र जबतक हमारा प्रियदिन द्वादशी आवे तबतक नारायणकी बराबर पूजा करता रहै कलश और दक्षिणा भक्तिसे उनको देनी

स्वर्णरूप्यकांस्यताम्रभाजनानिधनानिच ॥ गजंचवाजिनंदिव्यंमहिषींस्यंदनानिच ॥ २७ ॥ शिबिकानुचरादास्योवनिताभूषणानिच ॥ उमामहेश्वरंविप्रतिलपात्रंहवींषिच ॥ २८ ॥ सर्वंदेयंद्विजेंद्रायआत्मवित्तानुसारतः ॥ पुण्येविष्णुप्रियेमासिपुरुषोत्तमतुष्टये ॥ ॥ २९ ॥ यद्यश्नातिनरोनित्यंगृहेह्यन्यस्यब्राह्मणाः ॥ अन्नप्रस्थमुपादायकुम्भेनित्यंप्रपूजयेत् ॥ ३० ॥ यावन्ममदिनंविप्रद्वादश्यामर्चयेद्धरिम् ॥ कलशंदक्षिणांतस्मैभक्त्यादद्यात्समाहितः ॥ ३१ ॥ तत्कर्ताचजनःकश्चिन्नान्यपीडामवाप्नुयात् ॥ नकदाचिद्भवेद्दुःखीसंकटंनाभिपद्यते ॥ ३२ ॥ नकश्चिन्नरकंपश्येन्नापिजाठरवेदनाम् ॥ सदाभोगीसदादातानकदाचिदृणीभवेत् ॥ ३३ ॥ नियमान्पालयेन्नित्यंयावन्मासावधिर्भवेत् ॥ मासांतेमंडलंकृत्वादिव्यैर्धान्यैस्सुशोभनम् ॥ ३४ ॥

चाहिये ॥ ३१ ॥ इस विधानका कर्ता कोई मनुष्य पीडाको प्राप्त नहीं होता न कभी दुःखी और न संकटको प्राप्त होता है ॥ ३२ ॥ न कभी नरक न कभी गर्भवासकी वेदनाको प्राप्त होता है सदा भोगी सदा दाता और कदाचित्भी ऋणी नहीं होता है ॥ ३३ ॥ जबतक मासकी पूर्तिहो नियमोंका पालन करे मासान्तमें दिव्य धान्यका सुंदर मंडल करके ॥ ३४ ॥

सोने या चांदीका व्रणरहित कुंभ स्थापन करै तांबेके वा अन्य पात्रको अन्नसे पूर्ण करै ॥ ३५ ॥ पुरुषोत्तमकी सुवर्णमूर्तिको रेशमी वस्त्रोंसे लपेटे और उस पात्रमें स्थापन करिकै सर्व साधनोंसे पूजै ॥ ३६ ॥ सोलह उपचारोंसे पुरुषोत्तम देवका पूजन करै और उतने दिनकी संख्यासे गुणसम्पन्न ब्राह्मणोंका वरण करै ॥ ३७ ॥ कुंडल कंकण मनोहर छत्र वस्त्र यज्ञोपवीत पद मुद्रा आसन आदिसे नारायणका पूजन करै ॥ ३८ ॥ और भक्तिमान् मनुष्य विष्णुकी समान ब्राह्मणोंका पूजन करै ब्राह्मण और नारायणमें भेद माननेसे मनुष्यको पाप लगता है ॥ ३९ ॥ जो विष्णुका

अव्रणंस्थापयेत्कुंभंसौवर्णंराजतंपुनः ॥ ताम्रजंमार्तिकंवापित्वन्नेनैवप्रपूरयेत् ॥ ३५ ॥ वेष्टयेत्पट्टकूलैस्तुसौवर्णंपुरुषोत्तमम् ॥ स्थापयित्वाचतत्पात्रेपूजयेत्सर्वसाधनैः॥३६॥उपचारैःषोडशभिःपूजयेत्पुरुषोत्तमम्॥ब्राह्मणान्गुणसंपन्नान्वरयेद्दिनसंख्यया ॥३७॥ कुंडलैःकंकणैर्हृद्यैश्छत्रवस्त्रोपवीतकैः ॥ पदमुद्रासनाहारैरर्चयेद्द्विजसत्तम॥३८॥ यथाविष्णुंतथाविप्रान्पूजयेद्भक्तिमान्नरः॥विप्रेनारायणेभेदंकुर्वन्प्राप्नोतिकिल्बिषम् ॥ ३९ ॥ विष्णुंसंपूजयन्भक्त्याब्रह्मद्वेषंसमाचरेत् ॥ महाव्रतंकृतंतस्यसर्वंभवतिनिष्फलम् ॥४०॥ तस्माद्विप्रेऽच्युतेनैवविभेदंकारयेत्सुधीः ॥ एवंदिवानिशंविष्णुंसंपूज्योत्सवकीर्त्तनैः ॥ ४१ ॥ भास्करोदयवेलायांप्रार्थयेज्जगदीश्वरम् ॥ देवदेवजगत्स्वामिन्प्रसीदजगदीश्वर ॥ ४२ ॥ कृतेनानेनमेदेवत्राहिमांभवसागरात् ॥ कृतंन्यूनाधिकंयन्मेविष्णोर्मासेतवप्रिये ॥ ४३ ॥

पूजन करता हुआ ब्राह्मणसे द्वेष करता है उसका किया सम्पूर्ण महाव्रत नष्ट हो जाता है ॥ ४० ॥ इस कारण बुद्धिमान् ब्राह्मण और नारायणमें भेद न करै इस कारण रात दिन विष्णुका उत्सव और कीर्तन द्वारा पूजन करै ॥ ४१ ॥ सूर्योदयके समय जगदीश्वरकी पूजा करै और कहे-हे देव देव ! जगतके स्वामी परमेश्वर आप प्रसन्न हूजिये॥४२॥ हे देव ! इस कृत्यसे आप मुझे भवसागरसे पार करो. हे विष्णो ! जो इस आपके प्रिय मासमें

मैंने न्यूनाधिक किया है ॥ ४३ ॥ स्नान दान तप होम वेदपाठ पितृतर्पण उपोषण नित्यदान नियमादि देवार्चन ॥ ४४ ॥ द्विजपूजा भूतरक्षा जो कुछ मैंने की है हे पुरुषोत्तम ! जो कुछ पूर्ण अपूर्ण हो ॥ ४५ ॥ वह सब आपके प्रसाद और पुरुषोत्तमके सेवनसे तथा ब्राह्मणोंके वचनसे परिपूर्ण हो ॥ ४६ ॥ इस प्रकार सब ब्राह्मणोंको प्रणाम कर स्वस्तिवाचन कराय विसर्जन करे वह लक्ष्मी और विष्णुमंडल ब्राह्मणोंके निमित्त निवेदन

स्नानंदानंतपोहोमःस्वाध्यायःपितृतर्पणम् ॥ उपोषणंनित्यदानंनियमादिसुरार्चनम् ॥ ४४ ॥ द्विजपूजांभूतरक्षांयत्किंचित्कृतवानहम् ॥ अतिरिक्तंखिलंवापियद्भवेत्पुरुषोत्तम ॥ ४५ ॥ सर्वंतवप्रसादेनपुरुषोत्तमसेवनात् ॥ द्विजेंद्रवचनाद्वापियातुमेपरिपूर्णताम् ॥ ४६ ॥ इत्यानम्यद्विजान्सर्वान्स्वस्तिवाच्यविसर्जयेत् ॥ लक्ष्मींविष्णुंमंडलंचविप्रायविनिवेदयेत् ॥ ४७ ॥ यदिष्टंस्वस्यसततंदेयंवित्तानुसारतः ॥ ब्राह्मणान्भोजयेद्भक्त्यादक्षिणांभूरिदापयेत् ॥ ४८ ॥ पश्चात्स्वजनमध्यस्थःस्वयंभुंजीतवाग्यतः ॥ अनेनविधिनाचीर्णव्रतोयातिकृतार्थताम् ॥ ४९ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येकृतस्यकर्मणोमहिमवर्णनंनामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ दुर्लभंमानुषंजन्मलब्ध्वंपूर्वकृतैःशुभैः ॥ पश्चान्नश्चितयन्मूढःपुनर्मेकिंभविष्यति ॥ १ ॥

करे ॥ ४७ ॥ जो जो वस्तु अपनेको इष्ट हों वह वह अपने वित्तके अनुसार दान करे भक्तिसे ब्राह्मणोंको भोजन करावे दक्षिणा अधिक दे ॥ ॥ ४८ ॥ पीछे अपने कुटुम्बियोंके साथ स्थित हो स्वयं भोजन करे इसप्रकार विधिपूर्वक व्रत करके कृतार्थ होजाता है ॥ ४९॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये कृतस्य कर्मणो महिमवर्णनं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ श्रीभगवान् बोले यह मनुष्य जन्म बडा दुर्लभ है बडे श्रेष्ठ कर्मोंसे

प्राप्त होता है मूर्ख इस बातको नहीं विचारता कि, फिर मेरा क्या होगा ॥ १ ॥ अहो ! मनुष्योंकी अत्यन्त मूर्खता तो देखो जो मेरे मुखसे पुरुषोत्तम मासका माहात्म्य श्रवण करकेभी ॥ २ ॥ उसे छोड मृगतृष्णाकी समान इधर उधर धावमान होते हैं अर्थात् वे शीतल जलसे भरी गंगाको त्यागकर ॥ ३ ॥ मोहको प्राप्त हो चेतनारहित बावडी देखनेको भ्रमण करते हैं ऐसे पुरुषोत्तमको छोडकर वृथा अन्यकर्मोंमें आसक्त होरहे हैं॥ ४ ॥हे विद्वन् ! उन दुरात्माओंको अवश्य नरककी प्राप्ति होगी वे अभागी पुरुषोत्तम भगवान्‌का किसप्रकार भजन करसकते हैं ॥ ५ ॥ जो मेरे पुरुषोत्तममासको वृथा

अहोमौढ्यंजनेऽत्यंतंरूढंसर्वत्रपश्यत॥पुरुषोत्तममासंतुश्रुत्वाभुक्तिप्रदंसुखात् ॥२॥ विहायपरिधावंतिसर्वतोमृगतृष्णया॥शीतपानीयसंपूर्णांगंगामुत्सृज्यपार्श्वतः ॥ ३ ॥ वापींसुमोहमापन्नाभ्रमंतिगतचेतसः ॥ अन्यकर्मसमासक्ताविहायपुरुषोत्तमम् ॥ ४ ॥ तेषांदुरात्मनांविद्वन्नियतंनिरयस्थितिः॥भजंत्यभाग्यसंपूर्णाःकथंतेपुरुषोत्तमम्॥५॥ एषामनियमाद्यातोमन्मासःपुरुषोत्तमः॥ जन्मजन्मनिदुर्भाग्याःपरभाग्योपजीविनः ॥ ६ ॥ रोगिणोभग्नसंकल्पादारिद्र्येणोपजीविनः ॥ यत्रयत्रापिकुर्वंतितत्रतत्रातिदुःखिनः ॥ ७ ॥ कुरूपाःकुत्सितारौद्रामूर्खामूढातिलोलुपाः॥पुत्रपौत्रसुखातुष्टाःपापिनोनष्टजीविनः॥८॥स्त्रियोपिविधवाहीनाःकुरूपाःक्षीणवैभवाः॥ मातृकैःपैतृकैःसौख्यैर्भ्रातृपितृसुखैरपि ॥९॥ वर्जितानाथविकलागुणचारित्रदूषिताः ॥ यत्रयत्रप्रदीयंतेतत्राप्यत्यंतदुःखिताः॥१०॥

व्यतीत करदेते हैं वे दुर्भाग्य जन्मजन्ममें पराये भाग्यसे जीनेवाले होतेहैं ॥ ६ ॥ वे रोगी भग्नसंकल्प दारिद्रतासे जीवन धारण करते हैं जहां कहीं स्थित हों वहीं दुःखी होते हैं ॥७॥ कुरूप कुत्सित रौद्र मूर्ख मूढ अति लालची पुत्रपौत्रके सुखसेही सन्तुष्ट होनेवाले पापी नष्टजीवी होते हैं ॥ ८ ॥ स्त्री विधवा हीन कुरूप क्षीण ऐश्वर्यवाली होती है माता पिताके सुख, भाई पिताके सुखोंसे ॥ ९ ॥ रहित अनाथ विकलअंग गुणचरित्रसे

दूषित होती है जहांजहां दीजाय वहीं वहीं अत्यन्त दुःखी होती है ॥ १० ॥ हे उत्तम भूसुर ! इसप्रकार जो पृथ्वीमें देखेजाते हैं उन मूर्खोंको तुम इसीप्रकार वृथा जन्मवाले पंडितमानी जानो ॥ ११ ॥ वे क्षुद्रकर्मा पुरुषोत्तम माससे विमुख हैं इसकारण हे विप्र ! तुम सब प्रकारसे इस समय धन्यहो ॥ १२ ॥ जो इस मासमें तुमने बडा तप किया है यह पुरुषोत्तम मास नित्य मेरा प्रिय है ॥ १३ ॥ जो जो अत्यन्त दीन दिन रातमें भूखे रहते हैं दूसरे घरोंमें भिक्षा मांगते फिरते हैं जहां तहां अन्नके कारण धिक्कार पाते हैं ॥ १४ ॥ वे निराश सबप्रकार भग्नआशा हुए देवता

ईदृशायेप्रदृश्यंतेसृष्टौभूमिसुरोत्तम ॥ विद्धितानपिपापिष्ठान्मूढान्पंडितमानिनः ॥ ११ ॥ पुरुषोत्तममासस्यविमुखान्क्षुद्रकर्मिणः ॥ तस्मात्सर्वात्मनाविप्रभवान्धन्योसिसांप्रतम् ॥ १२ ॥ यदस्मिंस्तत्तवानुग्रंततःपरमभासुरम् ॥ ममप्रियात्मनानित्यंमन्मासःपुरुषोत्तमः ॥ १३ ॥ येयेदीनतरानित्यंदिवारात्रौबुभुक्षिताः ॥ भ्रमंतिपरगेहेषुधिक्कारामान्नतुष्टयः ॥ १४ ॥ निराशाभग्नसर्वाशाःसुरविप्रपराङ्मुखाः ॥ सदादुर्बुद्धिबहुलाःकटुवाक्याःकुचैलिनः ॥ १५ ॥ आनिशीथमपिग्रासंसर्वेषुकांक्षिणःक्षितौ ॥ सदारोगसमायुक्ताविप्रियाःसर्वजंतुषु ॥ १६ ॥ जायंतेईदृशाःसर्वेयेषांव्यर्थोगतोमम ॥ अत्यंतवल्लभोमासोमत्प्रियःपुरुषोत्तमः ॥ ॥ १७ ॥ तस्मात्सर्वात्मनाविप्रसंसेव्यःपुरुषोत्तमः ॥ समत्प्रियःपुमाँल्लोकेसधन्योभाग्यपारगः ॥ १८ ॥

ब्राह्मणोंसे पराङ्मुख सदा महादुर्बुद्धि कटुवाक्यभाषी मैले वस्त्र पहरे ॥ १५ ॥ आधीराततक ग्रासके निमित्त पृथ्वीमें विचरनेवाले सदा रोगी सब प्राणियोंके विप्रिय ॥ १६ ॥ वे प्राणी इसप्रकारके जन्म लेते हैं जिनका यह पुरुषोत्तम मास मेरा अत्यन्त प्रिय और वल्लभ है ॥ १७ ॥ हे विप्र ! इससे सबप्रकार पुरुषोत्तम मासका सेवन करना चाहिये वही पुरुष लोकमें मेरा प्रिय और वही धन्य बडा भाग्यवान् होता है ॥ १८ ॥

जो मनुष्य पुण्यराशि मेरे मासका आराधन न करके अन्य कर्म करते हैं तो मेरे माससे विमुख होनेके कारण सब निष्फल होता है ॥ १९ ॥ वाल्मी
किजी बोले,इसप्रकारसे गरुडवाहन हरि उसे प्रीतिसे कहकर अपने स्थान वैकुण्ठको चलेगये ॥२०॥ वह गौतमी और सुदेव महा प्रसन्न हुए पुरुषोत्तम
मासका प्रभाव सुन बडे हर्षित हुए ॥ २१ ॥ उस दिनसे वह ब्राह्मण इस मासकी अर्चा करता रहा और उस पुत्रसे ऐसे शोभित हुए जैसे जयन्त
के सहित इन्द्र ॥ २२ ॥ शुकदेवभी अपने पिताको प्रसन्न करता रहा सुखपूर्वक बहुत समय बीतगया ॥ २३ ॥ सुदेवने वह बीतते हुए दिन

नाराधयतिमांपुण्यराशिरन्यःकृतोनरैः॥मन्मासविमुखैस्तेषांसर्वंभवतिनिष्फलम् ॥१९॥ वाल्मीकिरुवाच॥एवमुक्त्वासहस्राक्षोहरिर्ग
रुडवाहनः॥जगामाकाशमाविश्यवैकुंठनिलयंप्रभुः ॥२०॥गौतमीचसुदेवश्चमुमुदातेचहर्षितौ॥अतीवहर्षितौश्रुत्वाप्रभावंपुरुषोत्तमम्
॥२१॥ततःप्रभृतिविप्रोऽसौतंमासंमुदितोऽर्चयत् ॥ तेनपुत्रेणशुशुभेजयंतेनेवनाकराट्॥२२॥पितरंशुकदेवोऽपिनंदयामासतत्कृतम् ॥
क्रमंतंबहुलंकालंयत्सुखाविष्टचेतनम् ॥२३॥ बुबुधेनसुदेवोऽपिह्यहोरात्रमिदंभ्रमात् ॥ वसिष्ठःशक्तिनायद्वत्कुमारेणसतीपतिः ॥२४॥
प्रद्युम्नेनरमाधीशःपांडुर्यद्वत्किरीटिना ॥ जयंतेनयथाशक्रःकानीनेनपराशरः ॥२५॥मुमुदेसचधर्मात्मातेनपुत्रेणधीमता॥ध्यायन्देवं
जगन्नाथंचक्रपाणिंतमीश्वरम् ॥२६॥ स्तुवन्मासंचविष्णुंचप्रेम्णासंपूजयन्नमन् ॥ ब्रह्मलोकप्रदेभ्योऽपिकर्मभ्योमन्यताद्भुतम् ॥२७॥

रात न जाने जिसप्रकार शक्ति पुत्रके साथ वसिष्ठ और कुमारसे शिव प्रसन्न हुएथे ॥ २४ ॥ वा प्रद्युम्नको प्राप्त होकर श्रीकृष्ण और अर्जुनको प्राप्त
होकर जैसे पाण्डु प्रसन्न हुएथे अथवा जैसे पराशर व्यासजीके जन्मसे प्रसन्न हुएथे ॥२५॥ इसप्रकार वह धर्मात्मा उस पुत्रसे प्रसन्न हुए चक्रपाणि ईश्वर
देव जगन्नाथको ध्यान करता रहा ॥ २६ ॥ इस मास और विष्णुकी स्तुति करता हुआ प्रेमसे पूजन करता हुआ तथा ब्रह्मलोकके देनेवाले कर्मों

सेभी अद्भुत है ॥ २७ ॥ यह पुरुषोत्तम मास सब दुःखका दूर करनेवालाहै इसमें यज्ञ जप तप दान करनेसे सब सुख मिलता है ॥ २८ ॥ यथा योग्य सहस्र वर्षतक अनेक भोगोंको भोगकर वह शीत उष्णता रहित ब्रह्मलोकको चलागया ॥ २९ ॥ जहां तप करनेवाले ज्ञानियोंके सिवाय दूसरे लोग नहीं जाते हैं असत्यवादी लोभी तथा बड़े व्रत करनेवाले वहां नहीं जासक्ते ॥ ३० ॥ जहां जाकर शोच नहीं करते और ब्रह्माके निकट निवास करते हैं ब्रह्माके संवत्सर पर्यन्त वह ब्राह्मण श्रेष्ठ सुख पाते रहे ॥ ३१ ॥ वही अब आप दृढधन्वा नामसे उत्पन्न हुएहो और देवताओंको

सर्वदुःखापहंमासंवरिष्ठंपुरुषोत्तमम् ॥ ददावीजेजपीपाठीतस्मिन्नेवाभजद्धरिम् ॥२८॥ भुक्त्वाभोगान्यथाकामंवर्षसाहस्रकालिकम् ॥ जगामब्रह्मणोलोकंनातिशीतंनघर्मदम् ॥ २९ ॥ यत्रनायज्विनोयांतिनातप्ततपसोजनाः ॥ असत्यवादिनोलुब्धानत्वचीर्णबृहद्व्रताः ॥३०॥ यत्रगत्वानशोचंतिवसंतिब्रह्मणोऽतिकम् ॥ब्राह्मःसंवत्सरोयावत्सौख्यमापद्द्विजोत्तमः॥३१॥सोयंभवान्समुत्पन्नोदृढधन्वेतिविश्रुतः॥लब्धवानतुलंसौख्यंसुराणामपिदुर्लभम् ॥ ३२ ॥ तेनपुण्येनभूपालःसत्यंसत्यंनसंशयः ॥ एतत्तेसर्वमाख्यातंपृष्टवानसियन्मम ॥ ३३ ॥ सौख्यकारणमत्युग्रंजातंतेपूर्वदैहिकम् ॥ शृणुत्वंशुकवृत्तांतंपृष्टंयद्भवतामम ॥ ३४ ॥ पूर्वजन्मनितेभूपशुकदेवोऽभवत्सुतः॥ साक्षात्सुपर्णःस्वांशेनसमुत्पन्नःकृपावशात् ॥ ३५ ॥

भी दुर्लभ तुम सुखको प्राप्त हुएहो ॥ ३२ ॥ हे राजन् ! इसमें सन्देह नहीं वह सब उसीका पुण्य है यह जो आपने पूछाथा सो सब आपको श्रवण कराया ॥ ३३ ॥ यह पूर्वजन्मके पुण्यसे इसप्रकार तुमको सुखकी प्राप्ति हुई है अब जो तुमने पूछा है वह शुक कौनथा उसका वृत्तान्त श्रवण करो ॥ ३४ ॥ हे राजन् ! यह पूर्वजन्ममें तुम्हारा शुकदेव नाम पुत्र था. साक्षात् सुपर्णके अंशसेही कृपापूर्वक वह उत्पन्न हुएथे ॥ ३५ ॥

हे राजन् ! उसने यह वार्ता विचारी कि जिसका मैं पुत्र हूं उसका घोर संसारसागरमें फिर जन्म न हो ॥ ३६ ॥ तुम्हांराभी पुरुषोत्तम मास में महत्कृत्य है उससे कीररूपसे उसने तुमको दर्शन दिया है ॥ ३७ ॥ न्यग्रोधके पेडपर चढकर उस वचनको सुनाया जिससे विरक्तहो मनुष्य कृतार्थ होजाता है ॥ ३८॥ जो शुकका कारण है वह तुम्हारे सुखका कारण है; हे महाराज ! जो आपने पूछा सो वर्णन किया ॥ ३९ ॥ अब मैं जाने

तेनैतच्चिंतितंभूपयस्यकुक्षावहंसुतः ॥ तस्यमास्तुपुनर्जन्मघोरेसंसारसंकटे॥ ३६॥ तवाप्यस्तिमहत्कृत्यंपुरुषोत्तमसंभवम्॥ तेनासौकीररूपेणदर्शयामासतेऽग्रतः ॥ ३७ ॥ न्यग्रोधविटपारूढःश्रावयामासतद्वचः॥ येनवैराग्यमापन्नोजनोयातिकृतार्थताम् ॥ ३८ ॥ शुकस्यकारणंयत्तत्तवसौख्यप्रदायकम् ॥ श्रावितंतेमहाराजपृष्टोहंयत्त्वयानघ॥ ३९॥ अथोऽनुज्ञातुमिच्छामिघोरासंध्याप्रवर्त्तते ॥ सरयूमापगांपुण्यांयास्याम्याप्लुवनायवै ॥ ४० ॥ इत्यादिश्यमुनिश्रेष्ठस्तमामंत्र्यमहीपतिम् ॥ पूजितस्तेनचात्यर्थंविस्मितेनपुनःपुनः॥ ४१॥ जगामाकाशमाविश्यब्रह्मभूतोमुनीश्वरः ॥ राजाप्यत्यंतचकितश्चिंतयामासचेतसा ॥ ४२ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्ये वाल्मीकिनादृढधन्वनःपूर्ववृत्तांतकथनानंतरंवाल्मीकिप्रस्थानंनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

की इच्छा करता हूं कारण कि इस समय घोर संध्या प्रवृत्त होती है अब मैं स्नान करनेको सरयूको जाता हूं ॥ ४० ॥ इसप्रकार मुनिश्रेष्ठ राजा को आमंत्रणकर उनसे वारंवार पूजित होकर ॥ ४१ ॥ ब्रह्मभूत मुनि आकाशमार्गमें स्थित होकर चले गये और राजाभी चकितचित्तहो चिन्ता करने लगा ॥ ४२ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये वाल्मीकिनादृढधन्वनःपूर्ववृत्तान्तकथनं नामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

सूतजी बोले यह अधिक मासका माहात्म्य श्रेष्ठसेभी श्रेष्ठ है इससे अधिक क्षणमात्रमें पापका दूर करनेवाला क्या होगा यह राजाने मनमें विचार किया कि मुनिने क्षणमात्रमें मेरा घोर अज्ञान दूर करदिया ॥ १ ॥ काम क्रीडामें लोलुप भोगेच्छामें तत्पर मुझको धिक्कार है जो अज्ञानमें पडा हुआ स्त्रियोंका क्रीडामृग हो रहाहूं ॥ २ ॥ इस स्थावरजंगमात्मक जगत्में कुछभी स्थायि नहीं है मेरी अधिक क्रिया अध्यक्षता दृढता और महाचतुरताको धिक्कार है ॥ ३ ॥ विद्या बडे गुणकोभी धिक्कार है जिसको प्राप्त होकर मृत्यु न निवृत्त हुई यह ब्रह्मांडका भक्षण करनेवाला काल बडा दुर्घट वर्त्तमानहै ॥ ४ ॥

सूतउवाच ॥ अहोमासस्यमाहात्म्यंमहाश्चर्योत्तरंपरम् ॥ किमेतन्मुनिनामह्यंध्वांतौघोदारितःक्षणात् ॥ १ ॥ धिङ्मांभोगेच्छयामूढ कामक्रीडासुलंपटम् ॥ अज्ञानपीडितंक्षुद्रस्त्रीणांक्रीडामृगंखलम् ॥ २ ॥ नकिंचिद्दृश्यतेस्थायिजगत्स्थावरजंगमम् ॥धिक्क्रियांधि क्चह्याध्यक्ष्यंधिक्चातुर्यमकल्पकम्॥३॥धिग्विद्यांधिग्गुणान्प्रौढान्यन्मृत्युर्ननिवर्त्तते॥ ब्रह्मांडंकवलीकुर्वन्वर्त्ततेऽतीवदुर्घटः ॥४॥ वाल्मीकिगमनादूर्ध्वमतिनिर्विण्णचेतसा॥चिंतयन्मुनिराजानमिदमाहमहीपतिः॥ ५ ॥ किंमयाक्रियतेऽत्यंतमूढबुद्ध्याकुमेधसा ॥ नमयाराधितोविष्णुःकोटिब्रह्मांडनायकः ॥६॥ चिंताशानुतुदन्नित्यंतुच्छभोगायुतान्विता ॥ कामलुब्धाचविक्षिप्तादुर्गाविषयवागुरा ॥ ७ ॥ पंगुंकरोतिसत्पादमंधयत्यतिसेक्षणात्॥मच्चित्तंचेतनाहीनंसुवाचंमूकतांगतम् ॥ ८ ॥

इस प्रकार चित्तसे महाव्याकुल होकर मनमें मुनिराजको चिन्तन करता हुआ राजा इस प्रकारके वचन कहनेलगा ॥ ५ ॥ हे भगवन् ! मूढबुद्धि अब मैं क्या कर सकताहूं कोटिब्रह्माण्डनायक विष्णुका मैंने आराधन नहीं किया ॥ ६ ॥ नित्य चिन्तारूपी आशा मुझे व्याकुल करती है और अनेक तुच्छ भोग चित्तको व्याकुल करते हैं लुब्ध होकर विक्षिप्तता प्राप्त करती है और कठिन विषयकी लगाम है ॥ ७ ॥ जो सत्पादको पंगु करती

नेत्रवालेको अन्धा करती मंद करती मेरा चित्त चेतना हीन और वाणी मूकताको प्राप्त हुई है ॥ ८ ॥ मैं किसप्रकार नारीके सद्रूप सम्पत्तिसे अत्यन्त मोहित हो रहाहूं और कलुषित चित्तमें किसप्रकारसे निवृत्तिको प्राप्त हो सकताहूं ॥ ९ ॥ आंतोंके बंधनसे अखण्ड और रक्त मज्जा नखोंसे युक्त केश रक्त कफ विष्ठा मूत्र और रोम लारसे विडम्बित शरीरमें ॥ १० ॥ महा अद्भुत मोहका माहात्म्य तो देखो जो क्लेदमांस कर्दमसे लिप्त कोटर है उसमें ॥ ११ ॥ जिसके कि नौ द्वारोंसे विष्ठा मूत्र कीट निकलतेहैं जिसमें कृमिकीटकी उत्पत्ति होतीहै जो थोडे जीवन और निर्लज्जतासे युक्त है॥ १२॥

किमहंमोहितोऽत्यंतंनारीसद्रूपसंपदा॥केनवापुनरावृत्तिंगतःकलुषचेतनः ॥ ९ ॥ आंत्रनिर्बंधसकलेरक्तमज्जानखायुते ॥ केशासृक्कफ विण्मूत्ररोमलालाविडंबिते ॥ १० ॥ अहोमोहस्यमाहात्म्यंपश्यताऽद्भुतमुद्भतम् ॥ क्लेदस्थितिचयोमांसकर्दमालिप्तकोटरे ॥ ११ ॥ नवकोटरनिर्गच्छद्विष्ठामूत्रकफान्विते॥कृमिकीटगद्रव्याप्तेस्वल्पायुषिगतत्रपे ॥ १२ ॥नारीकलेवरेतुच्छेकिमहंमोहितश्चिरम् ॥ यतो नज्ञातवान्कालंममायुर्दलनक्षमम्॥ १३॥एवंपापतरानारीसन्मार्गप्रतिबंधिनी ॥ कामधीवरदुर्जालंनानाविषयमामिषम् ॥ १४ ॥ मत्तुल्यानेकशफरीबंधनार्थंप्रसारितम् ॥ दुस्तीर्णेदुःखसलिलपूर्णेसंसारवारिधौ ॥ १५ ॥ केमत्पुत्राःकुतोराज्यंकुत्रगेहानिवापुरम्॥ कुत्रैतेस्वजनामात्याःपाशपाणावुपस्थिते ॥ १६ ॥

ऐसे स्त्रीरूप कलेवरमें-मैं किसप्रकार बहुतकालपर्यन्त मोहित रहा जो मैंने अपनी अवस्था नष्ट करनेवाले कालको न जाना ॥ १३ ॥ इसप्रकार सत्मार्गसे वंचित करनेवाली पापात्मा स्त्रीही है कालरूपी धीवरने नाना विषयरूपी मांसयुक्त जाल पसारे हैं ॥ १४ ॥ यह जाल मेरे तुल्य अनेक मछलियोंके पकडनेको फैलाये जातेहैं यह दुःखरूपी जलसे भरा संसारसागर दुष्पार है ॥ १५ ॥ कौन मेरा पुत्र घर वा पुर है कहां

यह स्वजन अमात्य हैं यह पाश हाथमें लिये उपस्थित हैं ॥ १६ ॥ पुत्र पिता माता भाई बंधु शरीर मित्र कोश सुहृद् सखा कोई नहीं है ॥ १७ ॥ न घर न मित्र न चार प्रकारका ऐश्वर्य न गुणवती स्त्री न अधिक विद्या बुद्धि ॥ १८ ॥ कुटिलताके वेगसे उठा जिसकी भ्रूलतासेही जीवन आकर्षित हो जाता है ऐसे दुर्धर्ष वेतालरूपी कालसे मनुष्य क्षेम कहां पासकते हैं ॥ १९ ॥ देवदेव सनातन विष्णु नारायणके भजन विना कुशल नहीं है इस कारण मैं उन्ही गदाधर देवकी शरणमें जाताहूं ॥ २० ॥ इसप्रकार विचारकर राजाने गुणसुन्दरी रानीसे कहा हे प्रिये ! तुम्हारे साथ बहुत

नसुतानपितामातानभ्रातानापिबांधवाः ॥ नशरीरंनमित्राणिनकोशःसुहृदःसखा ॥ १७ ॥ नगृहाणिनमित्राणिवैभवंनचतुर्विधम् ॥ नापिदारागुणारामानविद्यासौष्ठवंसुधीः ॥ १८ ॥ संरंभकुटिलोद्भूतभ्रूलताकृष्टजीवितात् ॥ कालदुर्दर्शवेतालात्क्षेमंगच्छंतिमानवाः ॥ १९ ॥ विनानारायणंविष्णुंदेवदेवंसनातनम् ॥ यास्यामिशरणंतस्मान्मंक्षुदेवंगदाधरम् ॥ २० ॥ इतिनिश्चित्यभूपालःप्रोवाचगुणसुन्दरीम् ॥ प्रिये बहुतरंकालंभुक्तंसौख्यंत्वयासह ॥ २१ ॥ इदानीमस्मिसंवृत्तोमामनुज्ञातुमर्हसि ॥ इत्युक्तवतिराजेंद्रेकिंचिन्मानमुपेयुषी ॥ २२ ॥ उवाचपृथिवीपालंसुन्दरीगद्गदाक्षरम् ॥ राजन्ममममनोबुद्धिःशरीरंजीवितंत्वयि ॥ २३ ॥ प्राणेशोऽस्तिभवान्मह्यंत्यक्त्वाकिंनुप्रयास्यसि ॥ त्वयासार्द्धंसुखंभुक्त्वाकुत्रस्थास्यामिमेवद ॥ २४ ॥

दिनोंतक सुख भोगा ॥ २१ ॥ इस समय मैं वन जानेको तत्पर हूं सो तुम मुझको आज्ञा दो । राजाके यह कहनेपर कुछेक मानको प्राप्त होनेवाली ॥ २२ ॥ वह सुन्दरी गद्गद अक्षरसे राजाके प्रति कहने लगी हे राजन् ! मेरा मन बुद्धि जीवन शरीर तुममेंही है ॥ २३ ॥ तुम मेरे प्राणेश हो मेरे प्रति ऐसा कहकर कहां जाते हो आपके साथ सुख भोगकर अब मैं कहां स्थित हूंगी यह तो मुझसे कहो ॥ २४ ॥

हे राजन् ! मुझे आप अपनी देहकी छाया स्वरूपिणी जानिये अपनी स्त्रीके वचनसे संतुष्ट हो राजा कहने लगा ॥ २५ ॥ हे सुन्दरी ! तुम बहुत धन्य हो मैं तुमको त्यागन नहीं करूंगा वनको हमारे साथ चलो तुम्हारे साथ दुष्कर तप करूंगा॥ २६॥ आजसे आठ दिनके उपरान्त पुरुषोत्तम मास आवेगा और तुम्हारे शरीरसे उत्पन्न गुणोंमें श्रेष्ठ ज्येष्ठ पुत्रको अभिषिक्त करेंगे॥ २७॥ धर्मकी रक्षा और दुष्ट जनोंको शान्त करनेको राजाने विचारकर पुत्रको राज्यमें

त्वद्देहवर्तिनींछायांमांविजानीहिभूमिप ॥ कांतावचनसंतुष्टःप्रोवाचनृपतिःप्रियाम् ॥२५॥ अतिधन्यासिसुश्रोणिनत्वांत्यक्ष्यामिसुंदरि ॥ एहिसाकंमयारण्यंचरिष्येदुश्चरंतपः ॥ २६ ॥ इतोऽष्टमदिनादूर्ध्वंमासोऽस्तिपुरुषोत्तमः ॥ तावत्तनूद्भवंज्येष्ठंवरिष्ठंगुणभूषणम् ॥ २७ ॥ धर्मसंरक्षणार्थायप्रशमायेतरस्यच ॥ इतिनिश्चित्यभूपालःपुत्रंराज्येऽभ्यषेचयत् ॥ २८ ॥ ब्राह्मणांकेसमाधायमंत्रिषुन्यस्यसत्क्रियाः ॥ वरवैराग्यमापन्नोजगामदिशमुत्तराम् ॥ २९ ॥ यतःप्रवर्ततेगंगास्वर्धुनीसरितांवरा ॥ तस्याःकूलंसमाश्रित्यसपत्नीकःस्थितोमुनिः ॥ ३० ॥ प्राप्तंहरिप्रियंवीक्ष्यतंमासंपुरुषोत्तमम् ॥ तपस्तेपेसधर्मात्मानिर्जरायेनविस्मिताः ॥ ३१ ॥ ऊर्ध्वबाहुर्निरालंबःपादांगुष्ठाश्रितावनिः ॥ ऊर्ध्वदृष्टिर्निराहारःस्थिरचित्तःसमानतः ॥ ३२ ॥

अभिषेक करदिया ॥ २८ ॥ उसे ब्राह्मणोंकी गोदीमें रख मंत्रियोंको सत्क्रियामें लगाय महा वैराग्यको प्राप्त हो उत्तर दिशामें गमन किया ॥ २९ ॥ जहांसे नदीश्रेष्ठ गंगाजी प्रवृत्त होती हैं उसके किनारे वह राजा स्त्रीसहित स्थित हुआ ॥ ३० ॥ फिर नारायणके प्रिय पुरुषोत्तम मासको आया देख उस धर्मात्माने इसप्रकारका तप किया जिससे देवता विस्मित हो गये ॥ ३१ ॥ ऊपरको भुजा उठाये निरालम्ब चरणके अँगूठेके बलसे पृथ्वीमें

स्थित हुए ऊपरको दृष्टि किये निराहार स्थिरचित्त समान वर्ण ॥ ३२ ॥ राजाको देखकर सिद्धजन धन्यवाद करने लगे और यह नारायण हरिको स्मरण करता परम जप करने लगा ॥ ३३ ॥ इस प्रकार कृष्णपक्षकी त्रयोदशीतक उसको तप करते करते त्रयोदशीके दिन राजा अन्धकारसे परे ॥ ३४ ॥ देवताओंसे प्रार्थित नारायणके धामको गया. हे शौनक ! उसी शरीरसे वह नारायणके लोकको चला गया ॥ ३५ ॥ वह स्त्रीभी अपने पतिको वैकुंठमें जाता देखकर कुछ मलिन मुखकर क्षणमात्रको दुःखी हुई ॥ ३६ ॥ और यूथसे भ्रष्ट हुई मृगीकी समान संभ्रान्तचित्त होगई और

धन्योऽयमितिसिद्धौघैःसादरंप्रविलोकितः ॥ जजापपरमंजाप्यंस्मरन्नारायणंहरिम् ॥ ३३ ॥ एवंव्रतपतस्तस्ययावत्कृष्णत्रयोदशी ॥ दिनेतस्मिन्महीपालोजगामतमसःपरम् ॥ ३४ ॥ वैकुंठाख्यंहरेर्धामस्पृहणीयंसुरैरपि ॥ तेनैववपुषाविद्वन्गतोऽसौहरिमंदिरम् ॥ ३५ ॥ सानारीस्वपतिंवीक्ष्ययातंवैकुण्ठसद्मनि ॥ किंचिन्म्लानमुखीसाध्वीक्षणंदुःखान्विताभवत् ॥ ३६ ॥ संभ्रांतायूथविभ्रष्टामृगीवायतलोचना॥दृष्ट्वानिर्ज्जरचक्रैश्चदिक्चक्रंवीक्ष्यविस्मिता ॥ ३७ ॥ स्थिताभूमौविशुद्धेनस्वासनंपरिकल्प्यच ॥ पार्ष्णिनागुदमापीड्यवायुमुत्सारयच्छनैः॥३८॥ततःसमानंनाभिस्थंकृत्वासोपानमूर्ध्वगे॥हृदिप्राणंसमाधायप्राणसोपानमूर्ध्वगम् ॥३९॥ आज्ञाचक्रमुपाधायभ्रूमध्यमनयच्छनैः ॥ सर्वतोव्यानमाकृष्यतत्रानीयगतत्वरा ॥ ४० ॥

देवसमूहयुक्त निर्जरचक्रको देखकर विस्मित हुई ॥ ३७ ॥ और विशुद्ध आसनकी कल्पना कर पृथ्वीमें स्थित हुई एडीसे गुदास्थानको पीडितकर शनैःशनैः वायुको निकालती ॥ ३८ ॥ नाभिमें समान वायुको स्थितकर उसको पवनके जानेकी ऊर्ध्वसोपान बनाकर हृदयमें प्राणोंको समाधान कर ऊर्ध्वगामी सोपान कल्पनाकर ॥ ३९ ॥ आज्ञाचक्रसे आगे शनैः २ भ्रूमध्यमें ले जाकर सब ओरसे व्यानको खेंचकर वहां ले जाय शीघ्रता

न कर ॥ ४० ॥ वह सुन्दरी हाथकी अंगुलियोंसे नासिकादिके छिद्रोंको रोक स्वामीके चरणोंको हृदयमें धारणकर जो उसने चिरकालतक उपासना कियेथे ॥ ४१ ॥ प्राण अपानकी गतिको रोक पापरहित हो वह सुन्दरी अग्निकी धारणा कर देहको भस्म करती हुई ॥ ४२ ॥ देह क्षयके पहले उसका प्राण ब्रह्मरंध्र भेदकर उसके स्वामीके सालोक्यको गया जहां पतिव्रता जाती हैं ॥ ४३ ॥ इस प्रकार दृढधन्वा राजा इस मासकी उपासनाकर पुरुषोत्तम मासके माहात्म्यसे परमपदको गया॥ ४४ ॥मैं क्या वर्णन करूं कारण कि, मेरे एकही जिह्वा है. हे भृगुकुलोत्पन्न ! इस प्रकारके माहा

करांगुलीभिःसंरुध्यखानिसर्वाणिसुंदरी।भर्तृपादौहृदिध्यात्वाचिरोपास्तावतिप्रियौ॥४१॥प्राणापानगतीरुद्धासाध्वीविगतकल्मषा ॥ कृत्वाग्निधारणांदेहंभस्मीभूतंचकारसा॥४२॥साचदेहक्षयादर्वाग्आस्फोटचब्रह्मरंध्रतः॥जगामभर्तृसालोक्यंयत्रयांतिपतिव्रताः ॥४३॥ एवमाराध्यमासाद्यदृढधन्वामहीपतिः॥पुरुषोत्तममाहात्म्याज्जगामपरमं पदम्॥४४॥ वर्णयामिकिमद्याहंयदेकारसनामम ॥ नेदृशोऽस्तिमहामासःसत्यंसत्यंभृगूद्वह॥४५॥इहलोकेऽतुलंसौख्यंपरलोकेऽतुलांगतिम्।पूजितोभगवान्यस्मिन्कोटिकल्मषनाशकृत् ॥४६॥ व्याजेनापिकृतेह्यस्मिन्स्नानेदानेकृतेशुभे॥कोटिजन्मकृतानेककिल्बिषौघनिकृंतनम्॥४७॥जायतेमुनिशार्दूलयथाशाखामृगोगतः ॥ अज्ञानतःकृतेनापित्रिरात्रस्नानमात्रतः॥४८॥पुराकृतानांदुर्गाणांकर्मणांनिष्कृतिःप्रभो॥ततोविश्वंभरप्राप्तिर्महिमावर्ण्यतेकिमु ॥४९॥

त्म्यसे युक्त कोई महीना नहीं है ॥ ४५ ॥ जिससे इसलोकमें अतुल सुख और परलोकमें अतुलगतिकी प्राप्ति हो जिसने करोडों पापके दूर करनेवाले भगवान्का उस मासमें पूजन किया है ॥ ४६ ॥ और किसी बहानेसे भी इसमें स्नान दान किया है तो करोडों जन्मके अनेक पाप नाश हो जाते हैं ॥ ४७ ॥ हे मुनिराज ! इस प्रकार एक वानरराज अज्ञानसे तीन दिन स्नान करके पातकरहित होगया ॥४८॥ हे प्रभो ! उसके कठिन पुरातन

पाप नष्ट होगये; फिर विश्वम्भरकी प्राप्ति हुई है. इसकी महिमा हम तुमसे क्या कहैं ॥ ४९ ॥ वानरकी क्या श्रद्धा है जिससे नारायण प्रसन्न होजाते हैं तीन दिन स्नान करने मात्रसे बडी शक्ति हो जाती है ॥ ५० ॥ अहो अज्ञानी मनुष्य इस मासका सेवन क्यों नहीं करते इसमें विष्णुका प्रिय माहात्म्य विख्यात है ॥ ५१ ॥ वे धन्य और पुण्यात्मा हैं जो पुरुषोत्तमको जानते हैं नामसेही मनुष्यको पवित्र कर देता है; दान जपकी कौन कहै ॥ ५२ ॥ दूसरे उपयोगी फलोंको मुखरोगके कारण त्यागन करकेही इस दानसे एक कपिराज उत्तम गतिको प्राप्त हुआ ॥ ५३ ॥

कानामवानरश्रद्धा ययातुष्टोहरिःस्वयम् ॥ त्रिरात्रस्नानमात्रेणवस्तुशक्तिर्बलीयसी ॥ ५० ॥ अहोनरैर्मूढतरैःकिमुमासोनसेव्यते ॥ विष्णुप्रियंप्रतापाढ्यमुत्तमंपुरुषोत्तमम् ॥ ५१ ॥ तेधन्याःकृतपुण्यास्तेज्ञातोयैःपुरुषोत्तमः ॥ नाम्नापिपावयत्यज्ञंकिमुदानजपादिभिः ॥ ५२ ॥ मुखरोगपरित्यक्तफलैरन्योपयोगिभिः ॥ एतद्दानेनकपिराड्गतोगतिमनुत्तमाम् ॥ ५३ ॥ इति श्रीपुरुषोत्तममाहात्म्येदृढधन्वनःसपत्नीकस्यवैकुण्ठप्राप्तिवर्णनंनामविंशतितमोऽध्यायः ॥ २० ॥ छ ॥ शौनकउवाच ॥ सूतसूतमहाभागविस्मयोमेमहानिह ॥ सर्वार्थसाधनोदेहोमानुषोऽयमितिश्रुतः ॥ १ ॥ अन्येषुसर्वदेहेषुसाधनेनमतिर्भवेत् ॥ कथंशाखामृगोऽप्यद्धामुक्तोयस्यप्रभावतः ॥ २ ॥ किमसौवर्ण्यतेवीरमासोवैपुरुषोत्तमः ॥ कथयस्वकथामेतांममचित्तप्रसादिनीम् ॥ ३ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये दृढधन्वनः सपत्नीकस्य वैकुण्ठप्राप्तिवर्णनं नाम विंशोध्यायः ॥ २० ॥ शौनकजी बोले हे महाभाग सूतजी ! इसमें मुझको महान् विस्मय है यह मनुष्यदेह सम्पूर्ण अर्थका साधन करनेवाला ऐसा विख्यात है ॥ १ ॥ और सम्पूर्ण देहोंमें साधनमें मति नहीं होती शाखामृग इसके प्रभावसे कैसे मुक्त होगया ॥ २ ॥ हे वीर ! क्या पुरुषोत्तममासकी यह भी महिमा है हमारे चित्त प्रसन्न करनेवाली यह कथा

कहिये ॥ ३ ॥ हे सूतनन्दन ! तीन दिनतक उसने कहां व्रत कियाथा इस कपिका क्या नाम क्या आहार और क्या आचार था तथा यह कहां रहताथा ॥ ४ ॥ आप पुरुषोत्तममाहात्म्य विस्तारसे कहिये आपसे कथामृत श्रवण करनेसे मेरी तृप्ति नहीं होती है ॥ ५ ॥ सूतजी बोले हे द्विजराज ! मैं सावधानतासे इस कथाको विस्तारसे कहता हूं जिसके सुननेसे पाप समूह नष्ट होजाते हैं ॥ ६ ॥ कोई केरलदेशवासी ब्राह्मण बडा लोभी था नित्यही धन संग्रह करनेमें तत्पर मधुमक्षिकाकी समान था ॥७॥ इसी कर्मसे लोकमें उसको कदर्य कहतेथे, इससे पहले उसका चित्रक नाम था ॥ ८ ॥

कुत्रासौकृतवान्कृत्यंत्रिरात्रंसूतनंदनः।कोसौकपिःकिमाहारःकिमाचारःकुतोवसन्॥४॥वदश्रीकृष्णमासस्यमाहात्म्यमतिविस्तरात्। नतृप्तिर्जायतेत्वत्तःशृण्वतोमेकथामृतम् ॥ ५ ॥ सूतउवाच॥द्विजराजकथामेतांवर्णयामिसमाहितः ॥ यद्विश्रुतिसुपर्णेनलीयन्तेकल्मषाहयः ॥६॥कश्चित्केरलदेशीयोद्विजःपरमलोभवान् ॥ नित्यंधनचयेदक्षःसरघावद्वसुप्रियः॥७॥लोकेकदर्यइत्याख्यांगतस्तेनैवकर्मणा ॥ चित्रकेतिपुरानामतस्याभूत्पितृकल्पितम् ॥ ८ ॥ नान्नमश्नातिनोवस्त्रंपरिधत्तेशुभंक्वचित् ॥ नजुहोतिददात्यन्नंनकदापिद्विजातये॥९॥महाश्रमेणसततमकरोद्भूरिसंचयम् ॥ पंचसूनादोषनाशनिमित्तंनचकारसः ॥१०॥ पितृपक्षेपितृदिनेनश्राद्धंकृतवानसौ॥ नचमाघेकृतंतेनतिलदानंकदाचन ॥११॥ कार्तिकेदीपदानंचनारायणपदाप्तये ॥ वैशाखेधान्यदानानिव्यतीपातेकदाचन॥ १२ ॥

न वह कभी अच्छा अन्न खाता न अच्छा वस्त्र पहरता न होम करता और न कभी ब्राह्मणोंको दान करताथा ॥ ९ ॥ केवल अपने स्थानमें धनसंचय करता था. तथा पांच स्थानोंमें जो नित्य हत्या होती है उसके दोष शान्त करनेके निमित्तभी उसने कुछ नहीं किया ॥ १० ॥ पितृपक्षमें पिताके निमित्त कुछ दान न किया न श्राद्ध किया न कभी माघके महीनेमें तिलदान किया ॥ ११ ॥ न नारायणपदकी प्राप्तिके निमित्त कार्त्तिकमें

दीपदान किया वैशाख और व्यतीपातमें न कभी धान्यदान किया ॥ १२ ॥ दही बूरा गुडयुक्त लड्डू तथा वैधृतयोगमें चांदीका दान द्वादशीमें अन्नदान ॥ १३ ॥ तथा संक्रान्ति और चन्द्र सूर्यके ग्रहणमें भी कभी कुछ दान न किया कृपणवासनायुक्त सर्वत्र दीन वाक्य बोलताथा ॥ ॥ १४ ॥ अहो मैं बडा भूंखा हूं मेरे पास कुछ नहीं है चौथे वा पांचवें दिन कभी एक समय भोजन मिलनेपर खाताथा ॥ १५ ॥ और जो कभी अधिक मिलगया तौ उसे एकान्तमें बेंचलेताथा बडे पुराणे कपडे लपेटे विचरण करताथा ॥ १६ ॥ वर्षा पवन धूप शीत झेलनेसे नित्य

दधिचशर्कराचैवगुडमिश्रंनलड्डुकम् ॥ वैधृतौरूप्यदानंचद्वादश्यामन्नमेवच ॥ १३ ॥ संक्रमेचैवनोदत्तंचन्द्रसूर्यग्रहेकिमु ॥ सर्वत्रदीनवाक्यानिवक्तिकृपणवासनः॥ १४॥ अहोबुभुक्षितोऽस्त्यंतंममकिंचिन्नविद्यते॥ चतुर्थेपंचमेवापिभुंक्तेऽसौवासरेशठः ॥ १५॥ कदाचिन्नियतंलब्धंविक्रीणातिरहःकुधीः ॥ जीर्णेनवाससाच्छन्नःपापकृद्विचरत्यसौ ॥ १६॥ वर्षवातातपैःशीतैर्नित्यंश्यामकलेवरः॥ बभ्रामपृथिवींसर्वांमहालौल्यातिपीडितः ॥ १७ ॥ तस्यातिमित्रंसद्वाटीपतिःकश्चिद्वनेचरः ॥ मालाकारःप्रसन्नात्मादीनंज्ञात्वाऽकरोत्कृपाम् ॥ १८ ॥ धिक्कृतंसर्वलोकेषुस्थितितत्रचकारसः ॥ नित्यंतन्निकटस्थायीतस्याज्ञापरिपालकः ॥ १९ ॥ अतिविश्वस्तचित्तेनतेनासौवाटिकावने ॥ कृतःसर्वात्मनासम्यङ्ममायमितिबुद्धिना ॥ २० ॥

श्यामशरीर होगयाथा और महाचंचलतासे पीडित हो सारी पृथ्वीमें भ्रमण करताथा ॥ १७ ॥ उसका एक मित्र वाटीपति वनचर था यह मालाका बनानेवाला प्रसन्नात्मा इसको दीन जान सदा कृपा करताथा ॥ १८॥ कारण कि यह सब लोगोंसे धिक्कारको प्राप्त हो वहीं निवास करताथा यह नित्य उसके निकट रहकर उसकी आज्ञा मानता था ॥ १९ ॥ यह उसके साथ वाटिकावनमें बडे विश्वस्त चित्तसे रहताथा और अपनेहीकी

समान मानकर वह फलादि लेलेता ॥ २० ॥ वह माली राजकाजमें लगनेके कारण उस बगीचामें नहीं आता और कभी स्वामीके साथ कहीं चला
जाताथा कभी शीघ्र चला आता॥२१॥उस समय यह फलोंको तोडकर खाता और संचय करताथा पक्के फल खाता और बेंचभी डालताथा॥२२॥
और उस द्रव्यको आशंकित हो स्वयं ग्रहण करलेताथा जब वनका स्वामी पूछता तब लज्जा त्याग उत्तर देताथा ॥२३ ॥ मैं तो सदा भिक्षा लाताहूं

राजकार्यगरीयस्त्वान्नायातिवाटिकावनम् ॥ कदाचित्स्वामिनासार्द्धंसमायातिससत्वरम् ॥ २१ ॥ चित्रकःसततंचिन्वन्भक्षयन्फ
लसंचयम् ॥ पक्वान्यश्नन्स्वयंनित्यंविक्रीणन्सफलानिच ॥ २२ ॥ द्रविणंतद्भवंसर्वंस्वयंगृह्णात्यशंकया ॥ यदापृच्छद्वनाधीशस्त
दावदतिनिस्त्रपः ॥ २३ ॥ भिक्षामश्नामिसततंपरिचर्यामितेवनम् ॥ तथापिपत्रिणःसर्वेफलान्यश्नंतिनित्यशः ॥ २४ ॥ पश्याश्नं
तोमयाकेचिन्नाशितागगनेचराः ॥ तेषामस्थीनिमांसानिपिच्छानिपतितानिच ॥ २५ ॥ प्रत्ययार्थंवधंचक्रेपक्षिणांवसुलोलुपः ॥
एवंप्रवर्त्तमानस्यजग्मुर्वर्षाणिदुर्द्धियः ॥ २६ ॥ सप्ताशीतिर्द्विजेशानोजराजर्जरितस्तदा ॥ कृतांतलुलितःकालकल्पदर्वीकरा
र्दितः ॥ २७ ॥ तमीयुःसहसाकालानुचराःकृष्णपिंगलाः ॥ यदालोकनतःसद्योजीर्णंहृदयपंजरम् ॥ २८ ॥

और सदा तुम्हारे वनकी सेवा करता हूं तोभी पक्षी बहुतसे फल भक्षण करजाते हैं ॥ २४ देखो कुछ पक्षियोंको मैंने माराभी है उनके अस्थि
और मांस पडेहुए हैं ॥ २५ ॥ उस लालचीने उसके विश्वासके निमित्त पक्षियोंका वध किया इस प्रकार उस दुर्बुद्धिको बहुत दिन बीतगये ॥
॥ २६ ॥ सतासी. वर्षकी अवस्थामें शरीर जराग्रस्त होगया उस समय कालरूपी सर्पने उसको दबाया ॥ २७ ॥ कृष्णपिंगल नेत्रवाले

यमके दूत उसके निकट गये जिनके देखनेसे हृदयपंजर शीघ्रही जीर्ण होजाय ॥ २८ ॥ अन्तमें उस दुर्बुद्धिकी मृत्यु हुई और अग्निसंस्कारभी प्राप्त न हुआ. पाप अभक्तोंको बहुत शीघ्रफल देते हैं विना भोगे नहीं जाते ॥ २९ ॥ यमदूतोंसे घसीटा हुआ नेत्रोंसे जल बहाता को डोंके आघातसे हाहाकार करता ॥ ३० ॥ पापात्माओंके भीषण मार्गमें गमन करने लगा और पूर्वजन्मके किये अपने अपराधको स्मरणकर गद्गद स्वरसे रुदन करने लगा ॥ ३१ ॥ और कहने लगा; अहो ! मुझ अनाड़ी दुर्वृत्तका अज्ञान तो देखो जो देवताओंकोभी दुर्लभ मनुष्य देहको

ममारमूढधीर्नासौलब्धवानग्निसत्क्रियाम् ॥ पापानिफलदानिस्युर्नाभुक्त्वाप्रव्रजंतिहि ॥ २९ ॥ सौरिसेविकराकृष्टःस्रवन्नयननीर वाद् ॥ हाहाकुर्वन्महानादंकशाघातनिपीडितः ॥ ३० ॥ जगामकृच्छ्रतोमार्गमपुण्यजनभीषणम् ॥ स्मरन्पूर्वकृतंकर्मप्रलपन्ग द्गदाक्षरम् ॥ ३१ ॥ अहोहापश्यताज्ञानंममानार्यस्यदुर्मतेः ॥ आसाद्यमानुषंदेहंदुर्लभंत्रिदशैरपि ॥ ३२ ॥ किंकृतंधनलोभेन व्यर्थंनीतंशुभंवयः ॥ किंकरोमिपराधीनःकालपाशवशंगतः ॥ ३३ ॥ चिरकालार्जितंसर्वंमहायासैःकुमेधसा ॥ किंकरोमिपरा धीनःकालपाशवशंगतः ॥ ३४ ॥ नमयामानुषंजन्मलब्ध्वाकिंचिच्छुभंकृतम् ॥ हुतंनह्यग्नौकिंचिच्चनदत्तंदानमर्थिने ॥ ३५ ॥ क्षुधितेनान्नमुत्सृष्टंननीरंतृषितेजने ॥ तिलोदकंपितृभ्योपिनसुरेभ्योयवोदकम् ॥ ३६ ॥

प्राप्त होकर ॥ ३२ ॥ धनके लोभसे अपना सुन्दर शरीर व्यर्थ गमादिया; अब पराधीन कालपाशके वशीभूत हुआ मैं क्या करूं ॥ ३३ ॥ मुझ कुबुद्धिने सब कार्य चिरकालके उपार्जन योग नष्टकर दिये अब मृत्युपाशके वशीभूत हुआ मैं क्या करूं ॥ ३४ ॥ मैंने मनुष्यजन्मको पायकर कुछभी शुभकार्य न किया न अग्निमें हवन और न अर्थीको कुछ दान दिया ॥ ३५ ॥ न भूँखेको अन्न और न प्यासेको पानी दिया पितरोंको तिलोदक

और न देवताओंको यव और जल दिया ॥ ३६ ॥ न माघमें गंगा यमुनामें स्नान किया न वैशाखमें मुक्तिदाता नर्मदामें स्नान किया ॥ ३७ ॥ न सरस्वतीके किनारे तीन रात स्नान किया न यमुनाके किनारे सात दिन निवास किया ॥ ३८ ॥ और मुझ पापीने एकहीबारमें करोडों पापोंकी दूर करनेवाली गंगाका सेवन नहीं किया ॥ ३९ ॥ और तो क्या मुझ पापात्मा दुष्टबुद्धिने विष्णुके प्रिय पुरुषोत्तममासमें कहीं स्नानतकभी न

नमाघेश्यामलश्वेतेपानीयेमज्जनंकृतम् ॥ नमाधवेमुक्तिकर्तृनर्मदामज्जनाच्छुचः ॥ ३७ ॥ त्रिरात्रमुषितोनापिश्रीमत्सारस्वते तटे ॥ नकालिंदीतटंदिव्यमाश्रितःसप्तवासरम् ॥ ३८ ॥ सद्यःपातककोट्योघशोषिशुभ्रसुरापगा ॥ विगाहितामहापुण्यानैवदु ष्कृतकारिणा ॥ ३९ ॥ नचविष्णुप्रियेमासेविख्यातेपुरुषोत्तमे ॥ कुत्रापिस्नातवान्मूढोनाहंपाप्मातिदुष्टधीः ॥ ४० ॥ नमया सेवितागंगाश्रीमन्मासेहरिप्रिये ॥ गोमतीवापिकावेरीप्रियावापिकलिंदजा ॥ ४१ ॥ ख्यातासरस्वतीक्षिप्रायावाकापिसमुद्रगा ॥ अहोमत्संचितंद्रव्यंस्थितंभूमौनिरर्थकम् ॥ ४२ ॥ यावज्जीवंपरिक्लिष्टःस्वात्मादुर्बुद्धिनामया ॥ कदापिजाठरोवह्निर्नान्नैःसंत र्पितोमया ॥ ४३ ॥ नापिसद्वाससाच्छन्नःस्वदेहःकृपणात्मना ॥ नज्ञातयोबांधवाश्चस्वजनाःपार्श्ववर्तिनः ॥ ४४ ॥ भागिनेयाः सुताजामिर्जनित्रीजनकोनुजाः ॥ वध्वोऽनुजांगनाजायाह्यन्येऽपिमानवास्तथा ॥ ४५ ॥

किया ॥ ४० ॥ न मैंने हरिके प्रियमहीनेमें गंगाका सेवन किया गोमती कावेरी वा यमुनामें कभी स्नान न किया ॥ ४१ ॥ सरस्वती क्षिप्राका कभी सेवन न किया अहो मेरा संचित द्रव्य निरर्थक भूमिमें पडा रहगया ॥ ४२ ॥ जबतक जिया तबतक दुर्बुद्धिसे आत्माको क्लेश दिया कभी मैंने जठराग्निको तृप्त नहीं किया और न कभी अपने देहको वस्त्रसे आच्छादित किया जातिके बन्धु तथा पार्श्ववर्ती स्वजन॥ ४३ ॥ ४४ ॥ भानजे भगिनी

पुत्र यामि माता पिता छोटे भाईकी स्त्री स्त्री उनका सम्बन्धवाला तथा दूसरे मनुष्य ॥ ४५ ॥ अच्छे अन्नसे कभी मैंने तृप्त नहीं किये अडतालीस संस्कारोंमें एकभी मैंने सेवन नहीं किया ॥ ४६ ॥ मनुष्यदेहका संस्कार न होनेसेही दुर्गति होती है मैं आत्मवंचन करनेवाला किस गतिको प्राप्त हूंगा ॥ ४७ ॥ अब मैं अपने कृत्यको भोगूंगा मेरी मुक्ति कभी न होगी इसप्रकार उस विलाप करते हुएको दूत यमके लोकको लेगये ॥ ४८ ॥ उसकी आज्ञासे तत्काल इसको प्रेतयोनि मिली पीछे यमराजने मंत्रीसे कहा ॥ ४९ ॥ हमारी आज्ञासे सौवर्षतक प्रेतयोनि दो; कारण कि यह

सदन्नैरेकवारंच तर्पितानमयाक्वचित्॥अष्टचत्वारिंशकेषुसंस्कारेषुनमेऽभवत् ॥४६॥ संस्कारोमानुषेदेहेदुर्गतिंयेननाप्नुयाम् ॥कांगतिं
नुगमिष्यामितरण्यात्मजलंभिताम्॥४७॥भुक्त्वाजीवकृतंकर्ममुक्तिर्नास्तिकदापिमे॥ एवंविलपमानंतंनिन्युर्वैवस्वतांतिकम् ॥४८॥
तदाज्ञयाप्रेतयोनिमापन्नस्तत्क्षणादसौ॥पश्चात्तमूचिवान्सौरिरभ्यर्णासन्नमंत्रिणः।४९।अहोऽयंनीयतांविप्रःपापबुद्धिर्मदाज्ञया॥शतायु
तानिवर्षाणांप्रेतत्वमतिदारुणम्॥५०॥परकीयाणिभुक्तानिसुधाकल्पान्यसंख्यया॥फलान्यनेनचौर्येणतस्मादस्मैप्रदीयताम् ॥५१॥
त्रयोदशायुतंकृत्वाकपिजन्मभयप्रदम् ॥ वर्षवातातपहिमक्षुत्तृड्व्याधिभयाकुलम् ॥५२॥ पश्चादहम्प्रदास्यामिबह्वीर्नरकयातनाः ॥
दशार्बुदानिवर्षाणिप्रतिकुंडंनिवत्स्यति॥५३॥इतितेनसमादिष्टामंत्रिणोभीषणाननाः॥ तदाचक्रुःप्रभोराज्ञांदुष्टविप्रेसमाहिताः॥५४॥

दुर्बुद्धि है इसे बडा दारुण प्रेतत्वप्रदान करो ॥ ५० ॥ इसने सदा पराये अपरिमित अन्न भक्षण किये हैं और फल चुराये हैं इसकारण इसको यह योनि दो ॥५१॥ फिर तेरह जन्म इसको भयंकर वानरके दो वर्षा वात गरमी हिम क्षुधा तृषा व्याधि भयसे व्याकुल रहै ॥५२॥ पीछे इसको मैं अनेक नरककी यातना दूंगा यह दशदश अर्ब वर्ष प्रत्येक नरककुंडमें निवास करैगा ॥५३॥ जब इसप्रकार भयंकर मुखवाले मंत्रियोंको उन्होंने आज्ञा दी तब

वे उस दुष्ट विप्रकी वही दशा करने लगे ॥ ५४ ॥ तब वह वृक्षरहित वनमें प्रेतदेह भोगकर फिर निर्जन स्थानमें वानरके शरीरको प्राप्त हुआ॥५५॥ दिव्य कालिंजर पर्वतके मनोहर जम्बूखण्डमें वहां एक दिव्य सरोवर इन्द्रका बनायाथा ॥५६॥ जहांके जलके समीप कुररी पक्षी बोलतेथे जहांके जलके उछलनेसे पक्षछायाकी समान छबि दीखतीथी ॥५७॥ वह मृगतीर्थनामसे विख्यात देवताओंको दुर्लभ था जहां प्राप्त हो पितर अपनी गतिको प्राप्त हुएथे॥५८॥ किंचित् कारणके उद्देशसे यह मृगरूपी होगया सो यह दुष्ट पहले जन्ममें कपित्वको प्राप्त हुआ॥५९॥ शौनकजी बोले; हे सूतजी!

प्रेतदेहंततोभुक्त्वाकाननेद्रुमवर्जिते ॥ निर्जलेबहुकालंसकपित्वमगमद्द्विजः ॥ ५५ ॥ दिव्येकालंजरेशैलेजंबूखंडेमनोहरे ॥ तत्रदिव्यसरःप्रख्यंकुंडंशक्रविनिर्मितम् ॥ ५६ ॥ कुररीमुररीकृत्यकुररःकिलकूजति ॥ यत्रोच्छलज्जलच्छन्नपक्षच्छायालसच्छुचि ॥५७॥ मृगतीर्थमितिख्यातंसुराणामपिदुर्लभम् ॥ यत्रेयुःस्वर्गतिंशुभ्रांपितरःपूर्वदैहिकीम् ॥ ५८ ॥ किंचित्कारणमुद्दिश्यजातायेमृगरूपिणः ॥ तत्रासौप्रथमंजन्मकपित्वंलब्धवान्खलः ॥ ५९ ॥ शौनकउवाच ॥ पौराणिकममब्रूहितीर्थेत्रैलोक्यपावने ॥ उवाससकथंशाखामृगःपातककोटिमान् ॥ ६० ॥ सूतउवाच ॥ ब्रह्मन्धन्योसिसच्छ्रोताकृतकृत्योत्म्यहंत्वया ॥ सामान्यंकारणंकिंचिदत्रास्त्यतिपुरातनम् ॥ ६१ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्येकदर्यविप्राख्यानएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ सूतउवाच ॥ यदादाशरथीरामोनाममात्रभयापहः ॥ यन्नामस्मृतिमात्रेणतरेदंजोभवांबुधिम् ॥ १ ॥

यह तो आप कहिये कि अनेक पातक करनेवाला वह शाखामृग किसप्रकारसे इस त्रिलोकीके पवित्र करनेवाले तीर्थमें निवास करता हुआ॥६०॥ सूतजी बोले हे शौनकजी ! धन्य हो आपने मुझे कृतकृत्य करदिया इसमें एक साधारण पुरातन कारण है ॥ ६१ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्ये कदर्यविप्राख्याने एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ सूतजी बोले, जिस समय दशरथपुत्र रामचन्द्र नाममात्रसेही भयके दूर करनेवाले कि

जिनके नामस्मरणमात्रसे मनुष्य संसारसागरके पार होजाता है ॥ १ ॥ सागरमें पुल बांधकर रावण शत्रुको मारते हुए केवल एक विभीषणजी अवशेष रहे ॥ २ ॥ और फिर जानकीजी अग्निके द्वारा शुद्धि हुई और रावणके मरनेपर ब्रह्मा रुद्र सुरेश्वर ॥ ३ ॥ प्रसन्न हो रामसे कहने लगे कि आप वर मांगिये यह सुन रघुनाथजी बोले जो कमललोचन राम कालकी समान दुरासद हैं ॥ ४ ॥ वे बोले देवताओ यदि वरदान देतेहो तो यह

हतवान्रावणंयुद्धेबद्ध्वासेतुंमहोदधौ ॥ विभीषणादृतेकोपिराक्षसोनावशेषितः ॥ २ ॥ ततस्तनूनपाच्छुद्धाजानकीस्वीकृतामुना ॥ रावणेचहतेतस्मिन्ब्रह्मरुद्रसुरेश्वरैः ॥ ३ ॥ प्रीतैर्वरंवृणीष्वेतिवचस्युक्तेततोऽब्रवीत् ॥ रामोराजीवपत्राक्षःकालकोटिदुरासदः ॥ ४ ॥ सुराःशृणुध्वंमेवाक्यंयदिदेयोवरोऽस्तिमे ॥ एतेवैवानराःशूरारक्षोभिर्भक्षिताहताः ॥५॥ अक्षताजीवमानास्तेसंतुमत्प्रियकारिणः ॥ यत्रयत्रवनेवीरावसेयुर्मेवनेचराः ॥ ६ ॥ पत्रपुष्पफलैर्नम्राःसुच्छायाःसंतुतेद्रुमाः ॥ करलभ्यानिवारीणिशीतलानिवनानिच ॥ ७ ॥ एषोऽस्तुमेवरोदेवाःकपिजातिर्ममप्रिया ॥ तथेत्युक्तेतुतेसर्वेजग्मुर्देवास्त्रिविष्टपम् ॥ ८ ॥ अतोरामप्रभावेणयत्रशाखामृगो भवेत् ॥ तद्वनंफलपानीयपुष्पपत्रचयावहम् ॥ ९ ॥

शूर वानर रीछ जो राक्षसोंसे मारेगये हैं ॥ ५ ॥ यह मेरे हितकारी होनेसे क्षतरहित हो पुनर्जीवित होजांय और यह वीर जिस जिस वनमें निवास करैं ॥ ६ ॥ वहां वहांके वृक्ष पत्र पुष्प फल छायासे युक्त हों वहां सुन्दर जल और शीतल वन होजाय ॥ ७ ॥ हे देवताओं ! मुझे यह वर दो यह वानरजाति मेरी प्रिय है. ऐसाही हो; यह कह देवता स्वर्गको गये ॥ ८ ॥ इससे रामके प्रभावसे जहां कहीं शाखामृग होता है वहां वन फल पानी

पुष्प पत्रादिसे युक्त होताहै ॥ ९ ॥ परन्तु पाप पुण्यके अनुसार सुख दुःख उनके पीछे जाता है वह बडे वानररूपसे पर्वतकी समान बढा ॥ १० ॥ और बडे पापसे क्षुधातुर हो दीर्घ प्याससे व्याकुल होनेलगा और जन्मसेही उसके मुखमें दारुण व्यथा हुई ॥ ११ ॥ निरन्तर उसमेंसे रुधिर और राद निकलतीथी और अत्यन्त वेदनाको प्राप्त हो वह कुछ खानेको समर्थ न हुआ ॥ १२ ॥ पूर्वजन्मके पापसे वह जलभी पान नहीं करसकताथा परन्तु चपलतासे वृक्षोंके अनेक फल तोड डालता ॥ १३ ॥ परन्तु खा नहीं सकता इससे बडा कष्ट होता जठराग्नि उसको महाकष्ट देती ॥ १४ ॥

परंतुपापपुण्याभ्यांसुखदुःखान्यनुव्रजेत् ॥ महावानररूपेणववृधेपर्वतोपमः॥ १० ॥ क्षुधातुरोतिपापेनदीर्घतृडतिलोलुपः ॥ जन्मत स्तस्यवक्रेऽभूद्व्यथापरमदारुणा ॥ ११ ॥ ययानवनवस्राविशोणितंवर्त्ततेऽनिशम् ॥ अत्यंतवेदनाविष्टोभोक्तुंकिंचिच्छशाकन ॥१२॥ पानीयमपिनोपातुंसेहेप्राक्तनकर्मतः ॥ सचवानरचापल्याद्द्रुमेभ्यःफलकोटयः॥१३॥लुनातिवदनाभ्याशमानीयत्यजतित्वरन् ॥ समि द्धोजाठरोवह्निरनिशंदहतेभृशम् ॥१४॥ तृषाकुलितसर्वांगःसशुष्कगलकंदरः ॥ इतस्ततोलुण्ठमानोह्यतीववेदनातुरः ॥१५॥ द्रुमाद्द्रुमं भ्रमन्दीनोमेनेमृत्युंसुखावहम् ॥ कदाचित्पततेपृथ्व्यांजल्पतेविकलस्वरम् ॥१६॥ रौतिग्लानिमवाप्नोतिनीरभ्रष्टोयथाझषः ॥ कापे यचापलत्वेनभ्रमन्गच्छतिवासरम् ॥ १७ ॥ एवंक्षुधासमाविष्टःश्लथद्गात्रोवमन्मुखः ॥ पेतुर्दंतास्ततःसर्वेव्रणिनोरुधिराप्लुताः ॥ १८॥

तृषासे सब अंग व्याकुल कंधे सूखगये इधर उधर लोटता हुआ महावेदनाको प्राप्त हुआ ॥ १५ ॥ इस वृक्षसे उस वृक्षपर घूमता हुआ मृत्युकोही सुख दायक मानता हुआ कभी पृथ्वीमें गिरकर महाशब्द करताथा ॥ १६ ॥ और बडी ग्लानिको प्राप्त होता जैसे जलसे भ्रष्ट मच्छी, वानरी चपलतासे फिर इधर उधर धावमान होता ॥ १७ ॥ इसप्रकार क्षुधासे व्याकुलहो भ्रमण करताथा रुधिर गिरने और व्रण होनेसे उसके दांत गिरगये ॥ १८ ॥

इसप्रकार उसके नित्य निराहार रहनेसे दैवयोगसे पुरुषोत्तममास प्राप्त होगया ॥ १९ ॥ उस महीनेमेंभी शीत वातादिसे व्याकुल वह उसी प्रकार स्थित रहा. कदाचित् गहन वनमें विचरण करता हुआ ॥२०॥ प्यासा होकरभी कुंडके निकट जलपान न करसका और भूंखा हो चपलताके कारण वृक्षपर चढगया ॥२१॥ वृक्षसे वृक्षके ऊपर जाता हुआ जलके कुंडमें गिरपडा बहुत काल निराहार रहनेसे उसकी इन्द्रियें सूख गईथीं ॥२२॥ निर्बल और

एवंप्रवर्ततस्तस्यनिराहारस्यनित्यशः॥ दैवयोगादुपागच्छत्सश्रीमान्पुरुषोत्तमः ॥१९॥ तस्मिन्नपितथैवास्तेशीतवातातपादिषाट् ॥ कदाचिद्वहुलेपक्षेविचरन्गहनेवने॥२०॥तृषितःकुंडनिकटेपानीयंनापिबत्क्वचित् ॥ क्षुधितश्चपलत्वेनतत्रोच्चैर्वृक्षमारुहत्॥२१॥ वृक्षाद्वृक्षान्तरंगच्छन्न्यपतज्जलकुंडके ॥ चिरंतननिराहाराच्छुष्कसर्वेंद्रियप्रभः ॥ २२ ॥ निर्बलःशिथिलप्राणःपतन्निवविनिर्गतः ॥ भ्रमतीतस्ततस्तत्रभुजाभ्यांवारिदोलयम्॥२३॥सोपानमाजगामाशुपतञ्छैवालतःक्षणात् ॥ नचकश्चित्समागत्यवारयामासवानरम्॥२४॥ एवंदिनत्रयंयावद्भ्रामजलमध्यतः ॥ तदेवास्यतपोजातंभगवत्कृपयाद्विज॥२५॥तृतीयदिवसेमध्यंगतेभास्वतिवानरः॥ परासुरपत्तीर्थवारिक्लिन्नकलेवरः ॥ २६ ॥ उत्सृज्यसहसादेहंकापेयंगतकल्मषः ॥ सद्योदेवत्वमापन्नोरेजेतीतमनोहरः ॥ २७ ॥

शिथिलप्राण होकर उसमेंसे निकलने लगा और भुजाओंसे जलको ताडन करता फिरने लगा ॥ २३ ॥ फिर सोपानमार्गको प्राप्त होकर गिरपडा परन्तु किसीने उसको निवारण न किया ॥२४॥ इसप्रकार तीन दिनतक जलमें विचरतारहा वही उसका तप नारायणकी कृपासे होगया ॥ २५ ॥ तीसरे दिन दुपहरके समय वह वानर जलमें प्राणरहित होकर गिरपडा॥२६॥ और तत्काल वानरी शरीरको त्याग पापरहितहो शीघ्र देवत्वको प्राप्तहो

बड़े मनोहर शरीरसे शोभित हुआ ॥ २७ ॥ करोड़ कंदर्पकी समान शोभायमान नीले मेघकी समान कान्तिमान् स्फुरायमान किरीट और कंकण बिजलीकी समान कान्तिमान् ॥२८॥ बाजूबंद अंगूठी हार खडुए नूपुर पहरे कटिसूत्र यज्ञोपवीत धारे चलायमान मकराकृत कुंडलसे युक्त ॥२९॥ कांची समूहसे विराजित कमरमें मणिमय बाजूबंद पहरे त्रिलोकीको मोहनेवाला रूप किये सब दिशाओंको विराजित किये ॥ ३० ॥ नीले घूंघर

कंदर्पकोटिलावण्योनीलनीरदसन्निभः ॥ स्फुरत्किरीटवलयोविलसच्चपलांबरः ॥२८॥ केयूरमुद्रिकाहारोलसत्कटकनूपुरः ॥ कटिसूत्रोब्रह्मसूत्रश्चलन्मकरकुंडलः ॥ २९ ॥ कांचीकलापविभ्राजत्कटिर्मणिमयांगदः ॥ त्रैलोक्यमोहनंरूपंबिभ्रन्विभ्राजयन्दिशः॥३०॥ नीलकुंचितसुस्निग्धचिकुरावृतसन्मुखः ॥ चतुर्बाहुर्लसन्मूर्त्तिर्यामिनीपतिसच्छविः ॥ ३१ ॥ तद्भासाकाननंसर्वंरुरुचेकांचनप्रभम् ॥ यावदाक्रम्यगगनमास्थितःपुरुषोत्तमः ॥ ३२ ॥ तावद्विमानमागच्छद्धरिसेवकवेष्टितम् ॥ वीणामृदंगपटहपणवानकगोमुखान् ॥ ३३ ॥ भेरभेरीलसच्छंखनिःसाणमुरुजादिकान् ॥ वादयद्भिर्नरवरैराश्रितंबहुलोत्सवैः ॥ ३४ ॥

वाले बालोंको धारणकर श्रेष्ठ शोभासे युक्त होकर चार भुजाओंसे युक्त मूर्ति चन्द्रवत्प्रियदर्शन ॥ ३१ ॥ उसकी कान्तिसे सारा वन प्रकाशित हो गया जबतक वह पुरुषोत्तम वनको आक्रमणकर स्थित होता है ॥ ३२ ॥ तबतक हरिके सेवकोंसे युक्त विमानको देखा वीणा मृदंग पटह पणव नामक बाजे बजने लगे ॥३३॥ भेर भेरीसे शोभित निशान मुरजादि बाजे बजने लगे उनको बजाते हुए मनुष्य बड़े उत्सवको करने लगे ॥३४॥

चित्र विचित्र स्त्री चारोंओरसे उनको घेरने लगीं॥ ३५॥ विद्याधर अप्सरा गंधर्व किन्नर उरग यह अनेक क्रियासे व्यग्र हो उसको देख प्रसन्न हुए॥ ३६॥
यह अपनी दशा देखकर वह बडा विस्मित हुआ और कोई उनके ऊपर सुंदर छत्र चन्द्रमाकी समान॥ ३७॥ धारण करता हुआ कोई जय उच्चारण करने
लगा कोई चमर कोई ताम्बूल ग्रहण करता हुआ॥ ३८॥ सहस्रों रत्नोंसे खचित सुवर्णके पात्रोंको कोई ग्रहण कर कोई उनमें अमृतकी समान जल भरकर

प्रमदाभिर्विचित्राभिरनुकूलाभिरावृतम् ॥ ३५ ॥ विद्याधरैरप्सरोभिर्गंधर्वैःकिन्नरोरगैः ॥ नानासेवाक्रियाव्यग्रैस्तदालोक्यमहो
त्सवैः ॥३६॥ विलोक्यविस्मितोऽतीवस्मृतपूर्वंकृताञ्जलिः ॥ कश्चित्तदुपरिच्छत्रंपांडुरंशशिभासुरम् ॥३७॥ दधारव्यजनैरेवंवीजयन्नु
परिस्थितः॥चामरंजगृहेकश्चित्तांबूलान्यग्रतोपरः ॥ ३८ ॥ खचितंरत्नसाहस्रैःपात्रंस्वर्णविनिर्मितम्॥काचिद्गृह्यस्थिताभ्यर्णंस्वर्धुनी
वारिसंभृतम् ॥ ३९ ॥ पीयूषापूरितंपात्रंसंगृह्यचापरास्थिता ॥ काश्चिन्नृत्यविशेषेणतोषयामासुरीश्वरम् ॥४०॥ काचिद्गानेनरम्ये
णवाद्यैरन्यासुशोभनैः ॥ एवंवैभवमालोक्यचित्रन्यस्तइवाभवत् ॥ ४१ ॥ किमेतत्केनपुण्येनप्राप्तोऽयंवैफलोदयः ॥ भ्रांतिर्ममाद्य
संजाताइतिसंचिंतयन्स्थितः ॥ ४२ ॥

उसके निकट स्थित हुए॥ ३९॥ कोई अमृतमय पात्र ले उसके समीप स्थित हुई कोई उसको नृत्यकरके संतुष्ट करने लगीं ॥ ४० ॥ कोई मनो
हर गान और बाजेसे इसे प्रसन्न करती हुई यह इसप्रकारका वैभव देख चित्रलिखेकी समान होगया ॥ ४१ ॥ यह क्या है और किस पुण्यके प्रता

पसे मुझे प्राप्त हुआ है यह मुझे बडी भ्रांति है यह विचारता हुआ वह स्थित हुआ ॥४२॥ कि मुझे उस कृत्यका स्मरण नहीं होता जिसके प्रतापसे मैं इस गतिको प्राप्त हुआहूं इसप्रकार उस सन्देहको प्राप्त हुएसे विष्णुभक्त कहने लगे ॥ ४३ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तममाहात्म्ये विष्णुदूतागमनं नाम द्वाविंशोध्यायः ॥ २२ ॥ विष्णुके दूत बोले हे प्रभो ! वैकुंठको जाओ बहुत कालतक क्यों विलम्ब करतेहो तुमको सालोक्य मुक्ति प्राप्त हुई है मनमें संदेह न करो ॥ १ ॥ देवताने कहा अहो आश्चर्य है कि तुम मुझे ज्ञानसे वा अज्ञानसे लेनेको आगये हो मेरे तो बहुतसे कुत्सित

नतत्स्मरामिमत्कृत्यंयेनाहंप्राप्तवानिदम्॥इतिसंशयमापन्नंविष्णुभृत्यौतमूचतुः ॥ ४३ ॥ इति श्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्ये विष्णुदूतागमनंनाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ विष्णुदूताऊचुः ॥ प्रभोप्रयाहिवैकुंठंचिरंकिमिहतिष्ठसि ॥ सार्ष्टिमुक्तिस्त्वयालब्धा मास्तुतेसंशयोयदि॥ १ ॥देवउवाच॥अहोज्ञानादथाज्ञानान्नेतुंमांवामिहागतौ॥बहूनिममकर्माणिसंतिभोगर्हितात्मनः ॥ २ ॥ केनमे निष्क्रयोजातःसहसोदयकर्मणाम्॥नाचेष्टंविद्यतेकर्मनमयाहिकृतंपुरा ॥ ३ ॥ यावत्योवर्षतोधारास्तृणानिभुविपांसवः ॥ द्युभासोगगनेदेवौतावत्पापानिसंतिमे ॥४॥ किमेतद्दृश्यतेचित्रंमंडपंहरिसुन्दरम्॥नयातिप्रत्ययोमह्यंवैकुंठभुवनंप्रति॥ ५ ॥ इतिवाचमुपाकर्ण्यविष्णुदूतावथोचतुः ॥ नाथनाथकिमेतत्तेह्यज्ञानंसाधनंकुतः ॥ ६ ॥

कर्म भोगनेके हैं ॥ २ ॥ सो कौनसे कर्मसे मैं निष्क्रिय हो कर्मोंका आनंद भोगनेवाला हुआ जो मैंने पहले किया है वह ऐसा नहीं जो अनिष्टरूप न हो ॥ ३ ॥ जितनी बर्षाकी धारा अथवा पृथ्वीमें रजके कण हैं तथा जितनी तारा हैं उतनेही मेरे पाप हैं ॥ ४ ॥ यह सुन्दर चित्रमण्डप कैसा दीखता है मैं वैकुण्ठके योग्य हूं यह मुझे विश्वास नहीं आता ॥ ५ ॥ वह वचन सुन विष्णुके दूत कहने लगे हे स्वामिन्!आपको यह क्या अज्ञान साधन

कुछ नहीं है ॥ ६ ॥ हम विष्णु भगवान्‌की आज्ञाहीसे तुमको लेने आये हैं जो विष्णुका प्रिय पुरुषोत्तम मास है ॥ ७ ॥ इसमें देवताओंकोभी दुर्लभ तपस्या तैने की है. हे महाराज वानरदेहसे जो आपने पुण्य किया है वह आपको ज्ञात नहीं है ॥ ८ ॥ जो तुमने परोक्ष वनमें किया है वह अनन्त हो जायगा परोक्ष उपाधि रहित जो किया जाय वह अनन्त होजाता है ॥ ९ ॥ जो कि तुमने मुखरोगके मिषते आहार नहीं किया है और वानरी स्वभावसे वनके फल तोडे ॥ १० ॥ और पृथ्वीपर डाले उससे दूसरे मनुष्य तृप्त होगये मूल फल समर्पण किये किन्तु स्वयं भक्षण नहीं किये ॥ ११ ॥

श्रीविष्णोराज्ञयात्वांवैनेतुमत्रसमागतौ ॥ विष्णुप्रियोमहापुण्योनाम्नायःपुरुषोत्तमः ॥७॥ यस्मिंस्त्वयातपश्चीर्णंयदलभ्यंसुरैरपि ॥ अविज्ञातंमहाराजकपिदेहेनयत्कृतम् ॥ ८ ॥ परोक्षंकाननेकृत्यंतदनंत्यायकल्पते ॥ निरुपाधिप्रियोविष्णुःपरोक्षंहरिवल्लभम् ॥९॥ मुखरोगमिषेणैवनाहारमकरोद्भवान् ॥ कापेयचापलत्वेनफलान्युत्कृत्यवृक्षतः ॥ १० ॥ क्षिप्तानिधरणीपृष्ठेतृप्तास्तैरितरेजनाः॥फलं मूलंतथापर्णंनत्वयाभक्षितंक्वचित् ॥ ११ ॥ पानीयमपिनोपीतमेतत्तेदुश्चरंतपः॥ परोपकारःसुमहान्कृतस्तेफलदानतः ॥१२॥ शीत वातातपारौद्राःसोढाविचरतावने ॥ महातीर्थवरेरम्येत्र्यहमाप्लवनंकृतम् ॥ १३ ॥ तवकृत्यस्यलक्षांशंकोटचंशमपिकश्चन॥करोतिनर शार्दूलःसोऽपिविष्णुपदंव्रजेत् ॥१४॥ किंपुनस्तवकृत्येनमुक्तिर्भवतिशाश्वती॥ यस्त्वयासाधितःस्वार्थोनान्यःकर्तुंक्षमःक्षितौ॥१५॥

और पानीभी न पिया यही तुम्हारा दुश्चर तप हुआ. फलदानसे तैने महान् उपकार किया है ॥ १२ ॥ कठिन शीत वात आतप झेलकर वनमें विचरते हुए महातीर्थमें तीन दिनतक स्नान किया ॥ १३ ॥ तुम्हारे कृत्यका यदि कोई लक्ष अंशभी करे तो वह विष्णुपदको प्राप्त होता है ॥१४॥ फिर आपकी बराबर तप करनेसे किसप्रकार शाश्वती मुक्ति न होगी जो आपने अर्थ साधन किया वह तेरे सिवाय कोई नहीं करसकता है ॥ १५ ॥

हे देव ! तुमने पुरुषोत्तम मासका प्रभाव क्यों नहीं जाना जिसके एक दिन उपासना करनेपरभी अनेक पाप दूर होजाते हैं ॥ १६ ॥ इसकी बराबर त्रिलोकीमेंभी पुण्य नहीं है कोई इसकी समान सुन्दर चित्त और न कोई इसकी समान हरिका प्रिय है ॥ १७ ॥ वे मनुष्य धन्य और कृतपुण्य हैं वही पृथ्वीमें श्रेष्ठ हैं तैने पुरुषोत्तम मासभी बीता न जाना ॥ १८ ॥ उनका जीना सफल है उनकी क्रिया सफल है उनके ब्रह्मचर्य और अध्ययन

नविज्ञातःकथंदेवप्रभावःपौरुषोत्तमः॥ यस्मिन्नेकोपवासेनमुच्यतेकोटिकिल्बिषैः ॥ १६ ॥ नानेनसदृशंपुण्यमस्तिलोकत्रयेऽपिच ॥ नैतत्तुल्यंशुभंचित्तंनैतत्तुल्यंहरिप्रियम् ॥ १७ ॥ तेधन्याःकृतपुण्यास्तेतएवभुविमानवाः ॥ नाविज्ञातोगतोयेषांमासःश्रीपुरुषोत्तमः ॥ १८ ॥ सफलंजीवितंतेषांसफलाश्चपरिक्रियाः ॥ ब्रह्मचर्यादिवृत्तानिश्रुतान्यध्ययनानिच ॥ १९ ॥ दानानिपितृकार्याणिसौराणि क्रतवोऽमलाः ॥ दुर्लभंमानुषंजन्मभूखंडेभारतेशुभे ॥ २० ॥ येषांसर्वोत्तमोमासःस्नानदानजपैर्गतः ॥ सर्वसाधनभूयिष्ठोवैष्णवः पुरुषोत्तमः ॥ २१ ॥ धिगसौपापकोरौद्रःपापकार्यजितेंद्रियः ॥ विष्णुप्रियतमेमासेसत्क्रियावर्जितश्चयः ॥ २२ ॥ इतितद्वर्णितं विष्णुदूताभ्यामनुभूयसः ॥ अत्यंतचकितोहृष्टःपुलकांचितसद्वपुः ॥ २३ ॥

सफल हैं ॥ १९ ॥ दान पितृकार्य सूर्ययज्ञ निर्मल कर्मयुक्त भारतखण्डमें जन्म होना बडा दुर्लभ है ॥ २० ॥ जिनका यह पूर्ण मास स्नान दान और जपमें बीतगया है वही सब साधनसे पुरुषश्रेष्ठ वैष्णव हैं॥ २१ ॥ वह पापकर्ममें निरत अजितेन्द्रिय धिक्कारके योग्य है जो विष्णुके प्रिय मासमें कोई सत्क्रिया नहीं करता है ॥ २२ ॥ इसप्रकार वह विष्णुदूतोंके वचन श्रवणकर अत्यन्त चकित होकर रोमांचितशरीर होगया ॥ २३ ॥

तीर्थ देवता और कालंजर पर्वतको आमंत्रणकरके वनदेवी देवता सब गुल्मलता वृक्षोंकी ॥२४॥ प्रदक्षिणाकर देवताओंके दुर्लभ विमानमें चढ विचित्र शरीर चारभुजा ॥२५॥ अनेक देवताओंको देख उनसे पूजितहो अनेक बाजों और फूलोंसे अर्चितहो ॥ २६ ॥ अनेक प्रकारके प्रमदाजनोंसे युक्त स्वर्गकी स्त्रियोंके रूपसंपदासे चलायमान ॥ २७ ॥ अनेक प्रकारकी चतुरतासे वीक्षित इन्द्र रुद्रादि देवताओंसे अच्छीप्रकार पूजित हो ॥२८॥

तीर्थदैवतमामंत्र्यगिरींकालंजरंततः॥वनदेवींवनस्थांश्चसर्वान्गुल्मलतातरून् ॥२४॥ ततःप्रदक्षिणीकृत्यविमानंसुरदुर्लभम् ॥ समारुह्यचतुर्बाहुर्विचित्रवपुषालसन् ॥२५॥ पश्यत्सुसुरवृंदेषुनानालेखगणार्चितः ॥ नानावादित्रनिनदैःकुसुमासारवीजितः॥२६॥ साकंजयारवैरुच्चैर्वेष्टितःप्रमदाजनैः॥स्वर्गसीमंतिनीलौल्यकारिसद्रूपसंपदा॥२७॥रोचन्वैविबुधाँह्लोकांश्चतुरापांगवीक्षितः॥सेंद्ररुद्रादिभिर्देवैःसम्यक्चपरिपूजितः॥२८॥जगामनित्यधिष्ण्यानियद्विष्णोःपरमंपदम्॥यद्गत्वातीवमोदंतेशुद्धाःसंन्यासिनोऽमलाः॥२९॥नयत्रकालचक्रस्यभयंनचजरामृतिः॥नशोकोनचमात्सर्यंनाधिर्व्याधिःकलिर्भ्रमः॥३०॥नमोहोनाशुभाबुद्धिर्नार्तिर्लोभगदादयः॥नतमोनरजःसत्त्वंताभ्यांमिश्रःप्रवर्तते॥३१॥तत्रासौचित्रकोविप्रस्त्यक्त्वाकपिवपुःक्षणात्॥अवाप्यविपुलंसौख्यंरेमेनारायणात्मनः॥३२॥

विष्णुके परमपदको गया; जहांसे फिर कोई जाकर नहीं लौटता और संन्यासी जहां अनेक सुख भोगते हैं ॥२९॥ जहां कालचक्रका भय और जरा मृत्यु नहीं है। शोक मात्सर्य आधि व्याधि कलि भ्रम जहां नहीं हैं ॥३०॥ न मोह न अशुभबुंद्धि न दुःख न लोभ रोग आदिकहैं.तम रज सत्व जहां नहीं हैं.सत रज मिलाहुआ जहां वर्तता है ॥ ३१ ॥ वहां यह देव कपित्व शरीर त्यागनकर महासुख पाकर नारायणरूपसे रमण करने लगा ॥ ३२ ॥

हे ब्राह्मणो ! इसप्रकारसे उस ब्राह्मणका चरित्र हुआ है. हे भार्गवनंदन ! जो आपने पूछा सो तुमसे वर्णन किया ॥ ३३ ॥ हे विप्र ! इसप्रकार पुरुषोत्तममासका माहात्म्य है उसके उत्पन्न होनेसे क्या है जिसने नारायणका चिन्तन नहीं किया है ॥ ३४ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे पुरुषोत्तम माहात्म्ये चित्रकस्य वैकुंठप्राप्तिवर्णनं नाम त्रयोविंशतितमोऽध्यायः ॥ २३ ॥ सूतजीबोले ! स्वर्गमें इंद्रादिदेवता इस बातकी इच्छा किया करते हैं कि, किसी पुण्यके प्रतापसे हमारा मर्त्यलोकमें जन्महो ॥ १ ॥ इस भारत वर्षमें जन्म पानेसे सब साधन बनजाते हैं उस समय सब

सूतउवाच॥एवंवृत्तांतमात्रेणपुरावृत्तंयथाद्विजाः॥निवेदितंत्वयापृष्टंतवभार्गवनंदन॥३३॥एवंप्रभावोमासस्यविप्रेशपुरुषोत्तमः॥ किं तेनजायमानेननार्चितोयेनवैहरिः॥३४॥इतिश्रीप॰पुरुषोत्तममाहात्म्येचित्रकस्यवैकुंठप्राप्तिवर्णनंनामत्रयोविंशतितमोऽध्यायः२३॥ सूतउवाच ॥ त्रिदिवस्थाःप्रशंसंतिसर्वेदेवाःसवासवाः ॥ केनचित्पुण्ययोगेनमानुषंजन्मलभ्यते ॥ १ ॥ सर्वसाधनसम्पन्नेऽजनाभेख ण्डनायके ॥ तर्हिसर्वात्मनामासंसेवयामोहरिप्रियम्॥२॥हरिलोकप्रदंपुण्यमंजसापुरुषोत्तमम्॥ईदृशंमानवामासंनार्चयंतिगतह्रियः॥ ॥३॥ कथंमुक्ताभविष्यंतिमृत्युजन्मभवाद्द्विजाः॥नचपुत्रसुखंतेषांनचमुक्तिःकदाचन ॥ ४ ॥ यातंयातंप्रकुर्वंतिकूपकुंभभ्रमिर्यथा ॥ विमानगायविप्रायचित्रकायमहात्मने ॥५॥ पुनरूचतुरन्योन्यंप्रेम्णामासस्यसद्विधिम्॥हरेर्दूतौगच्छमानौतद्गाथाकृतमानसौ ॥ ६ ॥

प्रकारसे नारायणके मासकी सेवाकरैं ॥ २ ॥ यह पुरुषोत्तममास एकही बार सेवनसे नारायणके लोककी प्राप्ति करता है. लज्जारहित मनुष्य इसप्रकारके मासकी सेवा नहीं करते हैं ॥ ३ ॥ वे मृत्यु जन्मको प्राप्त होनेवाले किसप्रकार मुक्तिको प्राप्त होंगे ? न उनको पुत्र और न मुक्तिका सुख प्राप्त होगा ॥ ४ ॥ कुंएके रहठपरोहेकी समान उनका वारंवार गमनागमन होताहै ॥५॥ फिर वे नारायणके दूत परस्पर जाते हुए एक दूसरेसे

पुरुषोत्तममासकी विधि कहते चले ॥६॥ हे द्विजश्रेष्ठ ! इस महीनेमें न तौ असद्वस्त्र धारण करै न दूसरेका जल पीये न दूसरेके लाये जलसे स्नान करै ॥ ७॥ न दूसरेकी शय्यामें सोवे न दूसरेकी अग्निका सेवन करै न पराया अन्न खाय न पराई क्रिया करै ॥ ८ ॥ दूसरेके वस्त्र जूते कमंडलु आदिका सेवन न करे; विषमबुद्धिसे देवताओंकी अर्चा न करै ॥ ९ ॥ न पराई निंदा करै, न सुने झूंठ बोले सम्पूर्ण अन्न न खाय जो फलादिसे देह धारणकर सके ॥ १० ॥ वित्तशाठ्य न करता हुआ ब्राह्मणोंको अन्न धन दे. धन होनेपर जो दान नहीं करता वह नरकगामी होताहै ॥ ११ ॥ नित्य २

अस्मिन्मासेद्विजश्रेष्ठनासद्वस्त्राणिधारयेत्॥नपिबेत्परपानीयंनस्नायात्परवारिणा ॥ ७ ॥ नस्वपेत्परशय्यायांनचसेवेत्पराग्निकम् ॥ परान्नंनोपभुंजीतनकुर्वीतपरक्रियाः ॥८॥ परकीयान्नसेवेतवस्त्रोपानत्कमंडलून् ॥ नार्चयेद्देवताःसर्वाधियाविषमयाक्वचित् ॥ ९ ॥ परापवादान्नब्रूयाच्छृणुयान्नानृतंवदेत्॥सर्वान्नंनोपभुंजीतशक्तश्चेत्तद्धुपोषणम्॥१०॥वित्तशाठ्यमकुर्वाणोधनंदद्याद्द्विजातये॥विद्यमाने धनेदौस्थ्यंकुर्वन्निरयगर्भगः ॥ ११ ॥ नित्यंनित्यंद्विजेंद्रेषुदत्त्वाभोजनमुत्तमम् ॥ भुनक्तिशेषमात्रंचतस्यपुण्यफलंशृणु ॥१२॥ ब्रह्मां डंतर्पितंतेनयेनविप्रात्मकोहरिः ॥ तोषितःश्रद्धयाविप्रपूजनाच्छादनाशनैः ॥ १३ ॥ मोदकैर्मधुरैर्नानाभक्ष्यैस्तांबूलवीटकैः ॥ वस्त्रै रुच्चावचैर्भोगैःसुगंधैश्चंदनैःशुभैः ॥ १४ ॥ कर्पूरागरुकस्तूरीकुंकुमैरर्चयेद्द्विजान् ॥ एवंयैरर्चिताविप्रामासेऽस्मिन्पुरुषोत्तमे॥१६॥

ब्राह्मणोंको उत्तम भोजन देकर जो शेष भोजन आप करता है उसके पुण्यका फल सुनो ॥ १२ ॥ जिसने ब्राह्मणात्मक नारायणको तृप्त किया उसने त्रिलोकीको तृप्त करदिया जिन्होंने पूजा आच्छादनसे नित्य ब्राह्मणको तृप्त किया है ॥ १३ ॥ अनेक प्रकारके मोदक नाना ताम्बूलके बीडे वस्त्र छोटे बडे भोग सुगंधित अच्छे चंदन॥ १४ ॥कर्पूर अगर कस्तूरी आदि द्रव्योंसे ब्रह्मणोंका पूजन करे। इसप्रकार जिसने पुरुषोत्तममासमें विष्णुका अर्चन

किया है ॥ १५ ॥ जो सौ सहस्र सुवर्ण दानका फल है वा राजसूय और अश्वमेधका जो फल है ॥ १६ ॥ और सौ अश्वमेधका जो फल है उससे अधिक पुरुषोत्तम मासका फल है ॥ १७ ॥ विष्णु भगवान्‌ने द्विजसे यह वार्ता कहदी है कि, इस माससे अधिक मुझे अन्य वस्तु प्रिय नहीं है यह सत्य है अन्यथा नहीं है ॥ १८ ॥ लोकमें वे पुरुष धन्य हैं जो नित्य मेरी पूजा करते हैं इसमासके पूजन किये विना लोग धन्य नहीं

स्वर्णभारसहस्रस्यदत्तेयत्फलमाप्नुयात् ॥ प्रत्यहंराजसूयस्यवाजिमेधसवस्यच ॥ १६ ॥ सदक्षिणंफलंलब्ध्यमंजसैवद्विजेश्वर ॥ किंचिदप्यधिकंमासिकुर्वतांपुरुषोत्तमे ॥ १७ ॥ विष्णुर्वदतिविप्रेभ्योमत्प्रियोवास्तिकश्चन ॥ मासेनानेनसदृशः सत्यमेतन्नचा न्यथा ॥ १८ ॥ धन्यास्तेपुरुषालोकेयेनित्यंपूजयंतिमाम् ॥ नतेधन्याःकदाचित्स्युर्मासेपूजनवर्जिताः ॥ १९ ॥ मासस्यैतस्यये भक्तास्तेयांतिपरमांगतिम् ॥ तेषांमुक्तिप्रदःसाक्षादहंतिष्ठामिपार्श्वतः ॥ २० ॥ तस्माद्भजतमेभक्ताःपवित्रंपुरुषोत्तमम् ॥ लोकानं त्यप्रदातारंजन्ममृत्युनिवारकम् ॥ २१ ॥ इन्द्रद्युम्नःशतद्युम्नोनहुषश्चभगीरथः ॥ मनोरथसमुद्रांतमीयुरन्येप्यनेकशः ॥ २२ ॥ मन्त्रराजमिमंविप्रशृणुतेवच्मिदुर्लभम् ॥ अन्येरितोपियच्छ्रुत्वामुच्यतेभ्रूणहत्यया ॥ २३ ॥

होते ॥ १९ ॥ जो इसके भक्त हैं वे परमगतिको प्राप्तहोते हैं. मैं सदा मुक्तिका देनेवाला स्थित हूं ॥ २० ॥ इसकारण मेरे भक्त इस पवित्र मास का भजन करते हैं मैं इनको जन्म मृत्युके निवारणकरनेवाले श्रेष्ठ लोक देताहूं॥ २१ ॥ इन्द्रद्युम्न शतद्युम्न नहुष भगीरथ यह अनेक अपने मनोरथसमुद्रके पारको प्राप्त हुए हैं ॥ २२ ॥ हे विप्र! यह श्रेष्ठ मंत्रराज है सुनो मैं इसे आपके प्रति कहताहूं दूसरे इसको श्रवणकर ब्रह्महत्यासे छूटजाते हैं॥ २३ ॥

"नमो भगवते वासुदेवाय" इस मंत्रको बडीश्रद्धासे या "ॐनमो विष्णवे" इसमंत्रको श्रद्धासे जपै ॥२४॥ वा "ॐ नमो नारायणाय" अथवा पंचा
क्षरका जप श्रद्धापूर्वक करनाचाहिये जिसमंत्रमें श्रद्धाहो उसीमें प्रभुको सन्तुष्ट करै ॥२५॥२६॥ इस मेरे प्रियमासमें एक लक्ष मंत्रजप करे और काले
वा श्वेत तिलोंमें शहत मिलाकर हवन करे॥२७॥उसका दशांश तर्पण और ब्राह्मणभोजन करावै. ऋषि देव और छंदोंका उच्चारण कर मंत्र जपै ॥२८॥

नमोभगवतेवासुदेवायमहत्याश्रद्धयायुतः ॥ २४ ॥ यद्वानारायणायेतिनमःप्रणवपूर्वकम् ॥ अथवानमोविष्णवेतिजपेत्प्रणवपूर्व
कम् ॥ २५ ॥ यद्वापंचाक्षरोजापःकार्यःश्रद्धासमन्वितैः ॥ यस्मिञ्छ्रद्धाभवेद्यस्यतेनैवतोषयेत्प्रभुम् ॥ २६ ॥ लक्षमेकंजपेदेनंमासे
स्मिन्ममवल्लभम् ॥ श्यामाञ्श्वेतान्मधुतिलाञ्जुहुयान्निर्जराननै ॥ २७ ॥ तर्पणंब्रह्मभोज्यंचजपंकुर्याद्दशांशतः ॥ मंत्रंजपेदृषिर्देव
श्छन्दोबीजान्वितंसदा ॥ २८ ॥ न्यासेनविनियोगेनजप्तश्चेत्किल्बिषापहः ॥ षडंगेषुन्यसेन्मंत्रंप्रणवाक्षरसंयुतम् ॥ २९ ॥ एवंजपँ
ल्लभेज्जीवोह्यंजसाभवमोचनम् ॥ चतुर्वर्गंलभेद्धीरोह्यनायासेनसर्वथा ॥३०॥ सदाध्यायेदिदंरूपंश्यामवर्णंचतुर्भुजम् ॥ शंखचक्रग
दापद्मजुष्टंभुवनभूषणम्॥३१॥ लभेतसकलान्कामान्विशेषात्पुरुषोत्तमे ॥ द्विजराजप्रवक्ष्यामितुभ्यंविधिमिहश्शृणु ॥ ३२ ॥

और न्यासादि द्वारा पापरहित इस परमपवित्र मन्त्रको जपै प्रणवाक्षरके सहित षडङ्गन्यासकर इस मन्त्रको जप करै ॥ २९ ॥ इसप्रकार जपकरनेसे
यह प्राणी बहुत शीघ्र संसारसागरके पार होजाता है, इस विधिके करनेसे चारों वर्गकी प्राप्ति होती है ॥ ३० ॥ सदा श्यामवर्ण चतुर्भुजरूपका
ध्यान करना शंख चक्र गदा पद्मधारी सुंदर भूषण पहरे ॥ ३१ ॥ ऐसा ध्यान करनेसे सम्पूर्ण कामनाओंको प्राप्त होता है । विशेषकर पुरुषोत्तममासमें

सब फल मिलते हैं. हे द्विजराज! मैं तुम्हारे प्रति यह सब विधान कहताहूं ॥ ३२ ॥ हे ब्राह्मण ! यह कभी किसीके आगे कहना न चाहिये सदा पुराणश्रवण करना चाहिये॥ ३३॥ जिसके पद श्रवणमात्रसे अनेक पापसमूह नष्ट होजाते हैं. गंगादि श्रेष्ठनदी सबतीर्थ और सागर॥ ३४॥ नैमिष आदि अरण्य हिमालय आदि पर्वत कूप कुंड गर्त सरोवर छोटे सरोवर ॥ ३५ ॥ देवताओंके प्राप्तकिये मुख्य तीर्थ देवताओंकी वाटिका जो पाप दूरकरनेवाली हैं ॥ ३६ ॥ वह उन सबमें स्नान करचुका और सब योगका करनेवाला है. सब विद्या व्रत और तपमें स्नान करचुका जिसने यह

नेदंकस्यापिकथितंकदाचिदपिभूसुर॥श्रोतव्यमेतत्सततंपुराणमृषिसंस्तुतम्॥३३॥यत्पदश्रुतिमात्रेणनश्यंतिपापराशयः ॥ गंगादिस रितःश्रेष्ठाःसर्वतीर्थानिसागराः॥३४॥नैमिषादीन्यरण्यानिहिमालयमुखानगाः ॥ कूपाःकुंडानिगर्त्ताश्चपल्वलानिसरांसिच ॥३५॥ सुरायतनमुख्यानितीर्थानिविविधानिच॥सुरारामाःसुरम्याश्चसर्वकिल्विषकृंतनाः॥३६॥तेषुसर्वेषुसुस्नातोसर्वयागकरःसच॥विद्याव्र ततपःस्नातःश्रुत्वाख्यानमिदंभवेत् ॥३७॥ जस्वामनुमिमंविप्रकोटिजन्मकृतापहः ॥ मुच्यतेनात्रसंदेहःसत्यंसत्यंपुनःपुनः ॥ ३८॥ सूतउवाच ॥ ॥ द्विजेशएतच्चरितंनिशम्यद्विजोत्तमःप्रीतमनाबभूव॥विमानमारुह्यजगामविष्णोःसारूप्यमासाद्यहरेर्निवासम्॥३९॥ निरंतरंश्राव्यमिदंपुराणमत्यंतशुद्धिंपठितंप्रयच्छेत् ॥ धर्मार्थकामानपुनर्भवंचयच्छेतवाक्शुद्धिमतुल्यरूपाम् ॥ ४० ॥

आख्यान सुनलिया ॥ ३७ ॥ हे मुनिराज ! कोटि जन्मके उसके पाप दूर होजाते हैं और मुक्त हो जाता है इसमें सन्देह नहीं यह सत्य है ॥ ३८॥ सूतजी बोले, इस प्रकारके वचन सुनकर वह ब्राह्मण प्रसन्न हुआ और विमानके ऊपर चढकर हरिके निवासस्थान विष्णुकी सायुज्यताको प्राप्त हुआ॥ ३९॥ निरंतर यह पुराण सुननेसे अत्यन्त शुद्धिकी प्राप्ति होती है. धर्म अर्थ काम मोक्ष वाक्शुद्धि तथा अतुलरूपता प्राप्त होती है ॥ ४० ॥

धन यश सुख पुत्र पौत्र आरोग्य प्रताप वांछित फल आयुष्य मोक्ष कुलवृद्धिको नारायण प्रदान करते हैं ॥ ४१ ॥ यह वचन सुनकर शौनकादि ब्राह्मण कहने लगे हे सूत ! तुम धन्यहो धन्यहो तुम जगत्के पवित्र करनेवालेहो ॥ ४२ ॥ जिसप्रकार विष्णु जगत्के दुःख हरनेवाले हैं हे सूत ! इसी प्रकारका नाम तुम्हारा है।तुम हमारे गुरु पूज्यतम और विष्णुकी भक्ति देनेवाले हो हम तुमसे क्या कहैं॥४३॥तुम्हारी कीर्ति जगत्में बडी प्रशस्त

धन्यंयशस्यंसुखपुत्रपौत्रारोग्यप्रतापाद्भुतवांछितंच ॥ आयुष्यमोक्षंकुलवृद्धिमुग्रांददातिलोकंप्रचुरंद्विजेशाः ॥४१ ॥ श्रुत्वेतिविप्राः किलशौनकाद्याःसूतंतदोचुर्विनयानतास्ते ॥ धन्योऽसिधन्योऽसिचिरंतनोऽसिजगत्पवित्रीकरणोऽसिसूत ॥ ४२ ॥ यथैव विष्णो र्जगदार्तिहारिनामत्वदीयंचतथैवसूत ॥ त्वंनोगुरुःपूज्यतमश्चविष्णोर्भक्तिप्रदस्त्वंकिमुतेवदामः ॥ ४३ ॥ तवास्तुकीर्तिर्जगतिप्र शस्ताछन्दांसियावद्धिततानिवीर ॥ तावत्प्रतापोऽस्तुतवोग्रतेजसस्तवानृणानोवयमत्रजातु ॥ ४४ ॥ तवाननोद्गीतहरिप्रधानश्लो काक्षराणांप्रतिकोटिदानैः ॥ स्यामोऽनृणानापिसमुद्रनेमिप्रदाःसुराणामपिराज्यदानात् ॥ ४५ ॥ प्रयाहिमाविस्मरनोमनोज्ञवयंचते प्रीतियुताभवामः ॥ संदर्शनन्तेनिमिषेणसाधोसुखेनगच्छस्वचिरागमाय ॥ ४६ ॥ इत्याशिषःसंप्रतिगृह्यधीमान्प्रदक्षिणावर्त्तनजा तहर्षः ॥ नत्वाजगामाशुधरासुरेशान्स्वधामविप्राश्चकिताःस्मतस्थुः ॥ ४७ ॥

है हे वीर ! जिसप्रकार छन्द हैं तैसेही तुम्हारा प्रतापउग्रतेजसे युक्त हम तुम्हारी प्रार्थना करते हैं ॥ ४४ ॥ तुम्हारे मुखसे निकले हुए नारायणके नामरूपी श्लोक अक्षरके प्रति कोटि दानसे हम अनृण नहीं । समुद्रपर्यन्त पृथ्वीदानसेभी उऋण नहीं होसकते ॥ ४५ ॥ हे मनोज्ञ ! विस्तारसे आपने चारित्र सुनाया हम आपसे प्रसन्न हैं हे साधो ! इसी बहानेसे हमें आपका दर्शन हुआ आप शीघ्र आनेको सुखसे जाइये ॥ ४६ ॥ वह बुद्धिमान् इसप्रकार ब्राह्मणोंके आशीर्वादको ग्रहणकर उनकी प्रदक्षिणा करनेसे प्रसन्नहो उन्हैं नमस्कारकर अपने स्थानको गये और ब्राह्मण अपने स्थानमें

स्थित हुए ॥ ४७ ॥ अहो ब्राह्मणो ! तुमने सुन्दर यह पुराण सुना यह बडा श्रेष्ठ है इस श्रेष्ठ आख्यानको श्रवणकरो, यह पुरुषोत्तममास जगत्का
अहोकिमेतत्कथितंद्विजेंद्रावरिष्ठमाख्यानमिदंपुराणम् ॥ मासस्यदिव्यंपुरुषोत्तमस्यमाहात्म्यमग्र्यंजगदार्तिहारि ॥ ४८ ॥ इति
श्रीपद्मपुराणेपुरुषोत्तममाहात्म्ये नियमनिरूपणंनामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ ॥ संपूर्णमिदमधिकमासमाहात्म्यम् ॥
दुःख दूर करनेवाला है ॥ ४८ ॥ इति श्रीपुरुषोत्तममाहात्म्ये पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायांनियमनिरूपणं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥

दोहा–आदिपुरुष अव्यक्त अज, गुणागारगुणधाम ॥ जगपालक घालक असुर, जगद्विदित गुणग्राम ॥ १ ॥
हरिहररूप अनन्त प्रभु माया गुण गोपार ॥ माधव अशरणके शरण, पुनि दायक फल चार ॥ २ ॥
रामरूप बहुरूप प्रभु, भक्तनके शिरताज ॥ विष्णु जिष्णु मण्डन भुवन, जनके साधत काज ॥ ३ ॥
वासुदेव व्यापक सबल, विबुधगणनके ईश ॥ हरत पीर जनकी तुरत, जबहिं नवावत शीश ॥ ४ ॥
है यह प्रभुकी बानि नित, राखत जनकी लाज ॥ सोइ प्रभु मम सब भाँतिसे, पूरे करि हैं काज ॥ ५ ॥
प्रेमसहित करजोर कर, तिनके चरण मनाय ॥ एहि पुरुषोत्तममासकर, टीका कियो बनाय ॥ ६ ॥
संवत गुण शर अंक विधु, ज्येष्ठ कृष्ण रविवार ॥ छठ तिथि सब विधि सुख करनि, पूरण ग्रन्थ विचार ॥७॥
दीन बंधु अशरण शरण, सकल सुमंगल मूल ॥ प्रभु ज्वालाप्रसादपर, सदा रहहु अनुकूल ॥ ८ ॥
वसत रामगंगा निकट, शहर मुरादाबाद ॥ गुण गावत श्रीकृष्णके; नित ज्वालापरसाद ॥ ९ ॥

इदं पुस्तकं क्षेमराज–श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना मुम्बय्यां ( खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन ) स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) यन्त्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् । संवत् १९७४, शके १८३९.

[OrderDescription]
,CREATED=23.12.19 14:56
,TRANSFERRED=2019/12/23 at 15:23:10
,PAGES=175
,TYPE=STD
,NAME=S0002382
,Book Name=M-2304-PURUSHOTAMMAS MAHATMAY BHASHA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF

FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF
,FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF

FILE26=00000026.TIF
,FILE27=00000027.TIF
,FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF
,FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF
,FILE32=00000032.TIF
,FILE33=00000033.TIF
,FILE34=00000034.TIF
,FILE35=00000035.TIF
,FILE36=00000036.TIF
,FILE37=00000037.TIF
,FILE38=00000038.TIF
,FILE39=00000039.TIF
,FILE40=00000040.TIF
,FILE41=00000041.TIF
,FILE42=00000042.TIF

FILE43=00000043.TIF
,FILE44=00000044.TIF
,FILE45=00000045.TIF
,FILE46=00000046.TIF
,FILE47=00000047.TIF
,FILE48=00000048.TIF
,FILE49=00000049.TIF
,FILE50=00000050.TIF
,FILE51=00000051.TIF
,FILE52=00000052.TIF
,FILE53=00000053.TIF
,FILE54=00000054.TIF
,FILE55=00000055.TIF
,FILE56=00000056.TIF
,FILE57=00000057.TIF
,FILE58=00000058.TIF
,FILE59=00000059.TIF

FILE60=00000060.TIF
,FILE61=00000061.TIF
,FILE62=00000062.TIF
,FILE63=00000063.TIF
,FILE64=00000064.TIF
,FILE65=00000065.TIF
,FILE66=00000066.TIF
,FILE67=00000067.TIF
,FILE68=00000068.TIF
,FILE69=00000069.TIF
,FILE70=00000070.TIF
,FILE71=00000071.TIF
,FILE72=00000072.TIF
,FILE73=00000073.TIF
,FILE74=00000074.TIF
,FILE75=00000075.TIF
,FILE76=00000076.TIF

FILE77=00000077.TIF
,FILE78=00000078.TIF
,FILE79=00000079.TIF
,FILE80=00000080.TIF
,FILE81=00000081.TIF
,FILE82=00000082.TIF
,FILE83=00000083.TIF
,FILE84=00000084.TIF
,FILE85=00000085.TIF
,FILE86=00000086.TIF
,FILE87=00000087.TIF
,FILE88=00000088.TIF
,FILE89=00000089.TIF
,FILE90=00000090.TIF
,FILE91=00000091.TIF
,FILE92=00000092.TIF
,FILE93=00000093.TIF

FILE94=00000094.TIF
,FILE95=00000095.TIF
,FILE96=00000096.TIF
,FILE97=00000097.TIF
,FILE98=00000098.TIF
,FILE99=00000099.TIF
,FILE100=00000100.TIF
,FILE101=00000101.TIF
,FILE102=00000102.TIF
,FILE103=00000103.TIF
,FILE104=00000104.TIF
,FILE105=00000105.TIF
,FILE106=00000106.TIF
,FILE107=00000107.TIF
,FILE108=00000108.TIF
,FILE109=00000109.TIF
,FILE110=00000110.TIF

FILE111=00000111.TIF
,FILE112=00000112.TIF
,FILE113=00000113.TIF
,FILE114=00000114.TIF
,FILE115=00000115.TIF
,FILE116=00000116.TIF
,FILE117=00000117.TIF
,FILE118=00000118.TIF
,FILE119=00000119.TIF
,FILE120=00000120.TIF
,FILE121=00000121.TIF
,FILE122=00000122.TIF
,FILE123=00000123.TIF
,FILE124=00000124.TIF
,FILE125=00000125.TIF
,FILE126=00000126.TIF
,FILE127=00000127.TIF

FILE128=00000128.TIF
,FILE129=00000129.TIF
,FILE130=00000130.TIF
,FILE131=00000131.TIF
,FILE132=00000132.TIF
,FILE133=00000133.TIF
,FILE134=00000134.TIF
,FILE135=00000135.TIF
,FILE136=00000136.TIF
,FILE137=00000137.TIF
,FILE138=00000138.TIF
,FILE139=00000139.TIF
,FILE140=00000140.TIF
,FILE141=00000141.TIF
,FILE142=00000142.TIF
,FILE143=00000143.TIF
,FILE144=00000144.TIF

FILE145=00000145.TIF
,FILE146=00000146.TIF
,FILE147=00000147.TIF
,FILE148=00000148.TIF
,FILE149=00000149.TIF
,FILE150=00000150.TIF
,FILE151=00000151.TIF
,FILE152=00000152.TIF
,FILE153=00000153.TIF
,FILE154=00000154.TIF
,FILE155=00000155.TIF
,FILE156=00000156.TIF
,FILE157=00000157.TIF
,FILE158=00000158.TIF
,FILE159=00000159.TIF
,FILE160=00000160.TIF
,FILE161=00000161.TIF

FILE162=00000162.TIF
,FILE163=00000163.TIF
,FILE164=00000164.TIF
,FILE165=00000165.TIF
,FILE166=00000166.TIF
,FILE167=00000167.TIF
,FILE168=00000168.TIF
,FILE169=00000169.TIF
,FILE170=00000170.TIF
,FILE171=00000171.TIF
,FILE172=00000172.TIF
,FILE173=00000173.TIF
,FILE174=00000174.TIF
,FILE175=00000175.TIF
,